Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

maj Foundation Chen

AYURVED MAHA SAMMELAN PATRIKA

1945 G. K. L.

Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
029428

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्री धन्वन्तरये नमः ❀ रजिस्टर्ड नं० एल०—५०८

COMPILED

079428

079428

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका

(भारतीयायुर्वेदमहासम्मेलनाज्ञया प्रतिमासं प्रकाश्यते)

प्रधान सम्पादक :— कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि एम० आर० ए० एस०, नई देहली।

सम्पादक :— रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य।

वर्ष ३२ अङ्क २	देहली, फरवरी १९४५ ई०	वार्षिक मूल्य ५) यह अङ्क ॥)

❀ लेख-सूची ❀

१—३३वें अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन का समाचार ५
२—३३वें अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव ११
३—३३वें अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन के अध्यापक सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव १६
४—विद्यापीठ कार्यकारिणी समिति के चतुर्थ अधिवेशन की कार्यवाही [illegible]
५—नि० भा० आ० [illegible] समिति के चतुर्थ अधिवेशन की कार्यवाही १६
६—आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा। २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागार्जुन

—ने—

अनेक शताब्दी पूर्व अपनी अलौकिक और असाधारण प्रतिभा के बल से गतगौरव आयुर्वेद को पुनः प्रतिष्ठापित किया था।

—आज—

आयुर्वेद फिर स्खलित-गौरव, हतमान और विपर्यस्त हो गया है अतः नागार्जुन के पवित्र नाम की ध्वजा लेकर,

कर्मकुशल और लब्धप्रतिष्ठ वैद्य

पाश्चात्यशिक्षानिपुण चिकित्सक

—एवं—

रसायनशास्त्र-निष्णात वैज्ञानिक

की देख-रेख में परिचालित

नागार्जुन आयुर्वेद रिसर्च इनस्टिट्युट

—ने—

आयुर्वेद की सेवा में आत्मनियोग किया है!

विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधियां प्रस्तुत करने के कारण इस संस्था को बत्तीसवें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से प्रथम श्रेणी का प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ है।

औषध-परिचय बिना मूल्य भेजा जाता है!

कार्यालय का पता—

४, बेलियाघाटा मेनरोड, कलकत्ता।

रसशाला का पता—

दमदम कैंट, (बंगाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्रता कीजिए, समय थोड़ा बाकी है।

वैद्य बंधुओ! लाभ उठाओ।

इस वर्ष हमारा अपनी ग्राहक संख्या को २०,००० तक पहुँचाने का निश्चय है। इसके लिये हमने वर्तमान महंगाई के बावजूद भी अपने लाभ का बड़ा भाग ग्राहकों में ही बांट देने की योजना तय्यार की है, जो इस प्रकार है—

जो सज्जन ३१ जनवरी १९४५ तक अपना नाम ग्राहक-सूची में दर्ज कराने के लिये भेज देंगे, उनको १९४५ के अन्त तक अर्थात् वर्ष भर उनके प्रत्येक सिद्ध औषधियों के आर्डर पर =) **दो आना प्रति रुपया कमीशन** दिया जाया करेगा।

आर्डर छोटा हो या बड़ा सब पर समान रूप से कमीशन दिया जायगा।

नाम दर्ज कराने की कोई फीस नहीं। केवल अपना नाम जवाबी कार्ड पर लिख भेजें। इसके आने पर हम आपको ग्राहक नम्बर लिख भेजेंगे।

इस समय जबकि सब ने कमीशन देना बन्द कर रखा है हमारी इस योजना से लाभ उठाएं। आज ही अपना नाम लिख भेजें।

हमारे यहां सब प्रकार की भस्में, रस, रसायन, पर्पटी, आसवारिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल, चूर्ण आदि सब प्रकार की शास्त्रीय औषधियाँ तय्यार होती हैं। जड़ी बूटियाँ और खनिज द्रव्य भी बहुत सस्ते मूल्य पर भेजे जाते हैं।

सूचीपत्र मुफ्त।

काश्मीर आयुर्वैदिक वर्क्स,

जी० टी० रोड, अमृतसर नं० ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद की महान् सेवा

अ मृ ती न

(श्रेष्ठतम आयुर्वेदीय खाद्य)

पथ्यव्यवस्था करते समय विदेशी पेटेएट पथ्यों की ओर निहारने की आवश्यकता नहीं। आपका अपना सम्पूर्णतया आयुर्वेदीय पथ्य अमृतीन शतशः श्रेष्ठ एवं निर्विकार है। प्रत्येक रोग की प्रत्येक अवस्था में दिया जा सकता है। इसका निर्माण अमृतासत्त्व तथा अन्य दीपक, पाचक, ज्वरघ्न, बलप्रद तथा सौम्य औषधियों के सत्त्वों से हुआ है। जिन बच्चों को मां का दूध न मिलता हो या जो बच्चे कमजोर हों वे अमृतीन देने से ताकतवर एवं मोटे तगड़े हो जाते हैं। रोगियों को पथ्य में अमृतीन देने के माने हैं :—

१– आयुर्वेद का प्रचार

२– रोगी का शीघ्र अच्छा होना

और

३– आपका यश

इसी लिये सभी अच्छे चिकित्सकों की पथ्य व्यवस्था है —

अमृतीन

(रोगियों के लिए एक आदर्श पथ्य)

निर्माताः— राका फूड मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी

[उच्च कोटि के आयुर्वेदीय खाद्य निर्माता]

१५, सदर बाजार, कानपुर।

सर्वत्र स्टाकिस्टों की आवश्यकता है। वैद्यों को विशेष सुविधायें और कमीशन दिया जाता है। नियम मुफ्त मंगाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज प्रकाशित अत्युत्तम वैद्यक ग्रन्थ

१—**सचित्र रसरत्नसमुच्चय**—अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित ५)

२—**मेघविनोद**—सरल हिन्दी। आयुर्वेद का अपूर्व ग्रन्थ है, पहली बार छपा है ४)

३—**चरकसंहिता**—श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया तथा श्रीवाग्भट-शिष्याचार्यवर-जेज्जटविरचितया निरन्तरपदव्याख्यया च संवलिता। आयुर्वेदाचार्येण श्री० पं० हरिदत्तशास्त्रिणा संशोधिता। दो जिल्दों में सम्पूर्ण। मूल्य ११)

४—**भैषज्यरत्नावलिः**— श्रीगोविन्ददासप्रणीता। कविराजश्रीज्ञानेन्द्रनाथमित्रैः संस्कृता परिवर्द्धिता च। आयुर्वेदाचार्य-कविराज-श्रीनरेन्द्रनाथशास्त्रिणा विरचितया रत्नोज्ज्वलाख्यया संस्कृतटीकया समलंकृता। मूल्य ८)

५—**चक्रदत्तः**—श्रीशिवदासेन कृतया तत्त्वचन्द्रिकासमाख्यया टीकया समलंकृतः। ३॥)

६—**त्रिदोषविमर्शः**—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गतत्रिदोष-वाक्यसंग्रहश्च। ले० पण्डितो धर्मदत्तः। मूल्य १॥)

७—**रसेन्द्रचूडामणिः**—श्रीसोमदेवविरचितः। मूल्य २)

८—**सुश्रुतसंहिता** (सचित्रा)—मूलमात्रम्। मूल्य ३)

९—**माधवनिदानम्**—मधुकोशव्याख्यया समुल्लसितम्, परिशिष्टनिदानेन च संयोजितम्। २॥)

१०—**अष्टाङ्गहृदयम्** — विद्वद्वरश्रीमदरुणदत्तकृता सर्वाङ्गसुन्दराख्या टीका तथा मौद्गल्यटिप्पणी च। ६)

११—**रसहृदयतंत्रम्**—भगवद्गोविन्दपादविरचितं तथा मुग्धावबोधनीव्याख्यासहितम् २।)

१२—**रसेन्द्रसारसंग्रहः**—मूलमात्र, गुटका। १)

१३—**भावप्रकाशनिघंटु**—श्री पं० विश्वनाथजी कृत सरल हिन्दी अनुवाद। अनुवाद में कोई बात छूटने नहीं पाई। अत्यन्त विस्तृत तथा उपयोगी। ४॥)

१४—**चरकसंहिता**—श्री जयदेवविद्यालङ्कारकृत सरलहिन्दी अनुवादसहित। द्वितीयसंस्करण। सम्पूर्ण मूल्य २५)

१५—**योगरत्नाकार**—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। १५)

१६—**भैषज्यरत्नावली**— श्री जयदेव विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीयावृत्ति। संपूर्ण पुस्तक १८०० पृष्ठों में समाप्त है। मू० १०), दो बढ़िया जिल्दों में।

१७—**गुणों का खजाना** — स्वा० परमानन्दकृत। इसमें अनेक आजमाये हुए फकीरी नुसखे हैं। २)

१८—**शल्यतन्त्र** (सचित्र)—श्री अत्रिदेवकृत, सरलहिन्दी में। शल्य (चीरफाड़ जर्राही) विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ। ४)

१९—**ज्वरतिमिरभास्कर**—कायस्थचण्डविरचित तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४)

२०—**सचित्र रसेन्द्रसारसंग्रह**—कविराज श्री विद्याधरकृत हिन्दी अनुवाद। जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण ६०० पृष्ठ। ४)

२१—**नवनावनीतक**—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सरलहिन्दी अनुवाद सहित। ३)

२२—**भावप्रकाश**—केवल ज्वराधिकार। श्री पं० हरिदत्त जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित १।)। इनके अतिरिक्त हमारे यहां सब प्रकार के चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत रियायत से मिलते हैं। प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता—

मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदोद्धारक श्रीयादवजी त्रिकमजी आचार्य (बम्बई) द्वारा लिखित

सिद्धयोग-संग्रह

पहला संस्करण समाप्त।

द्वितीय के आर्डर रिजर्व हो रहे हैं।

इस ग्रन्थ के विषय में हमारे पास भारत के बड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों व डाक्टरों के जो प्रशंसा-पत्र व सर्टिफिकेट आये हैं, यदि उन्हें एकत्र छापा जाय तो मूलग्रन्थ के समान ही इसका अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार हो सकता है। उपयोगिता की दृष्टि से इस ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा हुई है, उतनी आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की आज तक नहीं हुई — यदि यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। प्रथम संस्करण के छपते-छपते ही हमारे पास इतने आर्डर जमा हो गये कि १००० प्रतियां और बढ़ा कर कुल २००० प्रतियां छापनी पड़ीं और वे सब ही हाथोंहाथ छः महीने के अन्दर ही बिक गईं। जिस शीघ्रता से इस ग्रन्थ की बिक्री हुई उस अनुपात से आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की नहीं हुई होगी। ६२५ आर्डर एडवांस जमा हैं। श्रीयादवजी महाराज द्वारा ही परिवर्द्धित व संशोधित द्वितीय संस्करण ३-४ महीनों में छप जायेगा। यह प्रथम संस्करण से भी उपयोगी होगा। इसकी ३००० प्रतियां छपेंगी जो कि बहुत जल्दी ही समाप्त हो जायेंगी। इसका मूल्य वही २।।) डाक व्यय सहित। १) या समग्र मूल्य पेशगी भेज कर आर्डर बुक करा लेने वाले बुद्धिमानों को ही यह समय पर मिल सकेगा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन,

कलकत्ता, पटना, झांसी और नागपुर।

नोट—पुस्तक युद्धकालीन हेडआफिस पटना में ही छपी है। अतः पुस्तक मंगाने वाले सज्जनों को पटना ही पत्र लिखना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

कविराज आशुतोष मजुमदार ।

३३ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन (वेजवाड़ा) समाचार ।

(२६ दिसम्बर १६४४ से १ जनवरी १६४५ तक)

अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन के इतिहास में यह सब से पहला सम्मेलन है जो निरन्तर सप्ताह भर होता रहा और जिसके कार्यक्रम-पट्टिका में निर्दिष्ट सब विषय पूरे किये गये । इस सम्मेलन की सफलता का सारा श्रेय स्वागत-समिति के प्रधान मन्त्री डा० ए० लक्ष्मीपति को है जिन्होंने अपने अदम्य उत्साह, अथक परिश्रम और अद्वितीय प्रबन्ध-पटुता से इस सम्मेलन को राष्ट्रीय महासभा के सम्मेलनवत् बना दिया । प्रत्येक कार्य का यथासमय और यथानियम होना, प्रत्येक उत्सवाङ्ग (Function) में एक भारी संख्या में जनता का सम्मिलित होना, प्रत्येक कार्य निर्विवाद शान्ति के साथ पूरा होना, नगरोपान्त में होते हुये भी सम्मेलन में ग्रामीणता का रूप आजाना तथा योग-व्यायामादि के प्रदर्शनों की प्रचुरता होना इस सम्मेलन की विशेषतायें थीं । ताडपत्रों से निर्मित सभामण्डप और प्रतिनिधि-निवासगृह भी दर्शनीय थे । सत्कार में भी कोई कमी नहीं रखी गई । अब की बार एक विशेषता यह थी कि सम्मेलन को निरन्तर ७ दिन तक भोजन देने का प्रबन्ध शङ्कर फाउंडरी के संस्थापक तथा दुर्गापुरम् में श्री दुर्गा मल्लेश्वर मन्दिर के प्रतिष्ठापक सेठ श्री पा० कोटय्या एवं बी० वी० सरभैया ने किया था । यही नहीं सरभैया महोदय ने ५ एकड़ भूमि और कुछ सहस्र रुपये भी प्रदान किये । सरभैया महोदय के सत्कार और विनीत व्यवहार की जितनी भी सराहना की जाय उतनी थोड़ी है । निःसन्देह वे सम्मेलन के धन्यवाद के पात्र हैं ।

इस सम्मेलन की एक और विशेषता त्रिदोषचर्चापरिषत् थी । यह ६, ७ दिन लगातार होती रही; परन्तु भारतवर्ष के गण्यमान्य विद्वानों ने इसमें अपना सहयोग देने की उदारता नहीं दिखाई । ऐसी परिषदों में विशेषज्ञों को अवश्य भाग लेना चाहिये, अन्यथा किसी महत्त्वपूर्ण अनिर्णीत विषय का निर्णय होना कठिन है । परिषत् के अन्त में परिषदध्यक्षमहोदय ने परिषत् का निर्णय एक प्रस्ताव के रूप में उपस्थित किया था, परन्तु बाबासाहब डा० एन० एस० परांजपे ने इसका विरोध किया । अन्त में यह निर्णय हुआ कि यह परिषत् अपने कार्य में जहां तक पहुंचने में सफल हुई है, वहां से आगे पुनः किसी परिषत् में विचार हो । परिषत् का पूरा कार्यविवरण उसके संयोजक अथवा अध्यक्षमहोदय प्रकाशित करेंगे ।

नीचे सम्मेलन का अति संक्षिप्त समाचार दिया जाता है :—

(२५-१२-४४)

रात को ६ बजे से दुर्गा मन्दिर की धर्मशाला में स्थायी समिति का अधिवेशन हुआ जिसमें विषय-निर्धारणी समिति में भेजे जाने वाले प्रस्तावों तथा अन्य विषयों पर विचार हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२६=१२-४४)

प्रातःकाल ८ बजे सभापति का जुलूस निकाला गया। १० बजे आयुर्वेदभूषण श्री एम० बी० शास्त्री ए० एम० ए० सी० (मङ्गलौर) ने धन्वन्तरि भगवान् का परिचय तथा पताका का महत्त्व बतलाते हुये वाद्यपुरःसर धन्वन्तरि-पताका-उत्तोलन किया। तदनन्तर सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। स्वागतसमिति के अध्यक्ष श्री ए० कालेश्वरराव बी० ए०, बी० एल०, एम० एल० ए० ने अपना भाषण पढ़ कर सुनाया, जिसके अन्त में उन्होंने सम्मेलन के मनोनीत सभापति कविराज एम० के० मुखर्जी से सभापति के आसन पर विराजमान होंने के लिये प्रस्ताव किया। इस प्रस्ताव का प्रत्येक प्रांत के प्रतिनिधियों ने अनुमोदन तथा समर्थन किया। डा० लक्ष्मीपति ने शुभसन्देश के तार पत्रादि भेजने वालों के नाम पढ़कर सुनाये।

योगव्यायाम-परिषत् का उद्घाटन राजा साहब वूयूर ने किया। अपने भाषण आपने कहा कि बौद्धिक उन्नति के लिये शारीरिक उन्नति की आवश्यकता है। स्वस्थ शरीर में ही मन और बुद्धि स्वस्थ रह सकते हैं। अतः योगव्यायामादि साधनों से शारीरिक स्वास्थ्य सम्पादन करना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है।

दोपहर बाद ३॥ बजे सभापति का भाषण हुआ। तदनन्तर प्रदर्शन-स्वागताध्यक्ष रावसाहब डा० डी० गोविन्दराजुलू नायडू, म्युनिसिपल कौंसिलर, वेजवाड़ा, ने अपने भाषण में कहा कि यूनानी आयुर्वेद का ही एक बच्चा है (Unani is but a Child of Ayurved)। आयुर्वेद का द्रव्यज्ञान गुरुपरम्परा से जीवित है। परन्तु बहुत से लोग अपना ज्ञान अपने साथ ही ले जाते हैं। ऐलोपैथी सर्वथा अपूर्ण है। प्रदर्शनाध्यक्ष श्री राजासाहब मुक्त्याला ने अपने भाषण में प्रदर्शनी का महत्त्व बतलाया और महामण्डल से यह अनुरोध किया कि वह युद्ध समाप्त होते ही आयुर्वेदीय औषधि द्रव्यों पर रिसर्च प्रारम्भ करदे। तदनन्तर प्रदर्शनोंद्घाटक श्री पैडा सूर्यनारायणमूर्ति गारु, कोकनाडा, ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

सायंकाल ५॥ बजे त्रिदोषचर्चापरिषत् के स्वागताध्यक्ष वैद्य विद्यानिधि आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री टी० पी० रामानुज स्वामी, रामतीर्थम्, ने परिषत् का उद्घाटन करते हुए अपने भाषण में त्रिदोषसिद्धान्त पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् परिषदध्यक्ष वै० भू० श्री पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर, अमरावती, का भाषण हुआ जिसमें आपने त्रिदोषचर्चा का इतिहास बताते हुए उसकी आवश्यकता पर जोर डाला। आपने आरम्भ में ही यह स्पष्ट कर दिया कि 'त्रिदोष द्रव्य हैं' यह सिद्धान्त स्थिर हो चुका है, अतः 'त्रिदोष द्रव्य हैं या शक्ति' इस विवाद को उठाकर हमें अपना बहुमूल्य समय नष्ट नहीं करना चाहिये।

सायंकाल ७ बजे अ० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-स्नातक सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन राजवैद्य श्री पं० रामेश्वर शास्त्री शुक्ल, ग्वालियर, की अध्यक्षता में हुआ। धन्वन्तरि-बन्दना और पताका-गायन के पश्चात् स्नातक-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष भिषग्वर श्री येटूरी शङ्कर शास्त्री, मुक्त्याला, ने अपने भाषण में कहा कि हमको तुलनात्मक अध्ययन से अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिये जिससे निकृष्टता की भावना दूर होकर स्वाभिमान की वृद्धि हो और हम अन्य पैथियों के विद्वानों के सामने सिर ऊंचा करके चल सकें। तत्पश्चात् स्नातकसम्मेलन के अध्यक्ष का भाषण हुआ और प्रधानमन्त्री श्री ब्रजवल्लभ पाण्डेय (कानपुर) द्वारा सम्मेलन का वार्षिक कार्यविवरण पढ़े जाने के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि को ६ बजे से महामण्डल विषयनिर्धारणी समिति की बैठक सभामण्डप में हुई जिसमें खुले अधिवेशन के लिये प्रस्ताव तैयार किये गये।

(२७-१२-४४)

प्रातःकाल ६ बजे से चिकित्सासम्भाषा-परिषत् कविराज श्री राखालदाससेन (कलकत्ता) की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् आपने अपने चिकित्सासम्बन्धी अनुभव बताये। अन्त में परिषत् के स्वागताध्यक्ष आयुर्वेदाचार्य आई० वी० शर्मा ए० एम० ए० सी० (मद्रास) का भाषण हुआ। तत्पश्चात् शिवाजी व्यायाम मण्डल ने व्यायाम और योगासनों का प्रदर्शन किया। योगव्यायाम-परिषत् के अध्यक्ष ने तैलगू में और डा० लक्ष्मीपति ने अंग्रेजी में योगव्यायाम पर भाषण दिया।

सायंकाल ३॥ बजे से विषमज्वर चिकित्सा (मलेरिया) परिषत् कविराज श्री विजयकाली भट्टाचार्य एम० ए० (कलकत्ता) की अध्यक्षता में, दैवव्यपाश्रयचिकित्सा-परिषत् राजवैद्य श्री रामप्रसादजी (पटियाला) की अध्यक्षता में, निदानसंभाषा-परिषत् श्री टी० एल० कान्ताराव की अध्यक्षता में, और सन्दिग्धद्रव्यसंभाषा-परिषत् आयुर्वेदाचार्य पं० एन० माधव मेनन ए० एम० ए० सी० (मद्रास) की अध्यक्षता में हुई। अनेक विद्वानों के भाषण हुये। सन्दिग्धद्रव्य-सम्भाषापरिषत् के अध्यक्ष के भाषण में जो शंकायें उठाई गई थीं उनका स्पष्टीकरण राजवैद्य श्री रामप्रसादजी तथा आ० म० पं० भागीरथजी स्वामी ने सम्यक्तया कर दिया। इन परिषदों के स्वागताध्यक्षों के भी भाषण हुये।

रात्रि को ११ बजे से १२ बजे तक विद्यापीठ-कार्यकारिणी तथा विषयनिर्वाचनी की बैठक हुई, जिसमें अध्यापक-सम्मेलन के लिये प्रस्ताव तैयार किये गये। १२ बजे से त्रिदोषचर्चापरिषत् हुई, जिसमें अध्यक्षमहोदय ने परिषत् के नियम पढ़कर सुनाये।

(२८-१२-४५)

प्रातः ८ बजे से त्रिदोषचर्चापरिषत् आरम्भ हुई जिसमें आरम्भिक विवेचन और कुछ शास्त्रार्थ हुआ। १० बजे रसोपरससम्भाषा-परिषत् श्री पं० शिवरामजी द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य एम० एल० ए० (लखनऊ) की अध्यक्षता में हुई। ११ बजे इतिहास-सम्भाषापरिषत् श्रीयुत डा० राधाकुमुद मुखर्जी, लखनऊ विश्वविद्यालय (लखनऊ) की अध्यक्षता में हुई। आपने अपने भाषण में आयुर्वेद के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालते हुये कहा कि ईसा से २५० वर्ष पूर्व अशोक सम्राट् ने देशभर में आयुर्वेदीय चिकित्सालय स्थापित किये थे, वैद्यों की शिक्षाव्यवस्था की थी, औषधनिर्माणशालायें स्थापित की थीं, तथा अनेक वनस्पति उद्यान लगवाये थे। आप लोग अभी बहुत पीछे हैं। आपको अब निद्रा त्याग कर यह मालूम करना चाहिये कि आप कहां खड़े हैं। भारतवर्ष का स्वास्थ्यसुधार तभी हो सकता है, जब सम्पूर्ण देश के लिये आयुर्वेदीय चिकित्सा की उचित व्यवस्था हो जायगी; और यह सब आप ही को करना है। इस सम्मेलन का सर्वप्रथम कर्त्तव्य यह होना चाहिये कि वह अध्यापकों को शिक्षित करे जो योग्य स्नातकों को जन्म दे सकें, जिससे चिकित्साकुशल वैद्य तैयार हों और आयुर्वेद का मस्तक ऊंचा हो।

मध्यान्होत्तर ३॥ बजे से अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ, जिसमें कई उपयोगी प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुये (जो इसी अंक में आगे मुद्रित हैं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी ३४वें सम्मेलन के लिये कर्णाटक, कानपुर और सीलोन से निमन्त्रण आये थे । इनमें से कर्णाटक का निमन्त्रण स्वीकृत हुआ । कानपुर तथा सीलोन को आश्वासन दिया गया कि कर्णाटक के बाद उनका निमन्त्रण स्वीकार्य होगा। प्रदर्शनीय वस्तुओं के परीक्षण के लिये एक उपसमिति बनाई गई । आगामी वर्ष के लिये पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। स्थायी समिति के ५० सदस्यों के नाम पढ़ कर सुनाये गये । नियमावली स्वीकृत हुई। धन्यवादादि के बाद अधिवेशन समाप्त हुआ ।

४॥ बजे प्रसूतितन्त्रसम्भाषा-परिषत् श्रीमती डा० के० अचम्मा एल० आर०, सी० पी० एस०, एल० एम० (बेजवाड़ा) की अध्यक्षता में हुई। श्रीमती अचम्भा ने अपने भाषण में कहा कि सुश्रुत का गर्भविज्ञान और प्रसूतिविज्ञान बिलकुल आधुनिक-सा मालूम पड़ता है। फिर भी हमको अपनी प्राचीनता पर गर्व न करके पाश्चात्य ऋण स्वीकार करना ही होगा । तत्पश्चात् स्वास्थ्यरक्षा सम्भाषापरिषत् श्रीयुत पं० एम० दुरैराम स्वामी आयंगर वैद्यरत्न (मद्रास) की अध्यक्षता में हुई ।

रात्रि को ११ बजे त्रिदोषचर्चापरिषत् आरम्भ हुई । परिषत् के संयोजक कविराज धीरेन्द्रनाथ बनर्जी ने स्पष्ट किया कि इस परिषत् का प्रधान उद्देश्य त्रिदोष के स्वरूप का निर्णय करना है । तत्पश्चात् अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये ।

(२९-१२-४४)

प्रातःकाल ६ बजे त्रिदोषचर्चापरिषत् आरम्भ हुई और परिषत्— स्वागताध्यक्ष के निबंध पाठ के पश्चात् १० बजे स्थगित हो गई। व्यवहारायुर्वेदसम्भाषा-परिषत् श्री एन० मेनन की अध्यक्षता में और निबन्धसम्भाषापरिषत् श्री परमेश्वर पिल्ले (त्रिवेन्द्रम्) की अध्यक्षता में हुई ।

१०॥ बजे अ०भा० आयुर्वेदअध्यापकसम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ। स्वागताध्यक्ष आ० भू० श्री पं० नोरीरामजी शास्त्री (बेजवाड़ा) के भाषण के पश्चात् अध्यापकसम्मेलन के अध्यक्ष कविराज ज्योतिषचन्द्रजी सरस्वती ने अपना भाषण पढ़ कर सुनाया । तत्पश्चात् कई उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत हुये, जो इसी अंक में आगे मुद्रित हैं । विद्यापीठ-मन्त्री द्वारा वार्षिक विवरण पढ़े जाने के पश्चात् अधिवेशन समाप्त हुआ ।

मध्यान्ह में २॥ बजे से त्रिदोषचर्चापरिषत् आरम्भ हुई जिसमें अनेक विद्वानों ने भाग लिया।

सायंकाल ४॥ बजे सम्मेलन के सत्कर्ता श्री सेठ बी० वी० सरभैया ने अतिथियों तथा विशिष्ट विशिष्ट व्यक्तियों का रेशमी रूमाल, फल और पुष्पहार सप्रेम भेटस्वरूप समर्पित करके सत्कार किया । 'आयुर्वेदशिक्षा' नामक पुस्तक लिखने पर तथा अन्य आयुर्वेद-सेवाओं के उपलक्ष्य में डा० ए० लक्ष्मीपति को स्वागतसमिति की ओर से 'आयुर्वेदोद्धारक' की उपाधि प्रदान की गई।

सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक पुनः त्रिदोषचर्चा-परिषत् हुई। रात को अ० भा० विद्यापीठ-स्नातकसम्मेलन की बैठक हुई, जिसमें कई उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत हुये। आन्ध्र प्रान्तीय सम्मेलन का भी अधिवेशन हुआ ।

(३०-१२-४४)

प्रातःकाल ६ बजे त्रिदोषचर्चापरिषत् आरम्भ हुई । इसी समय योगव्यायाम-परिषत् भी योगिराज श्री ओरुगन्टी नरसिंहम् (गांटी) की अध्यक्षता में आरम्भ हुई जिसमें शरीर-मर्दन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि का प्रदर्शन किया गया। मध्यान्होत्तर ३ बजे से पुनः कार्यारम्भ हुआ। कई व्यायाम संस्थाओं ने योगासन, व्यायाम आदि का प्रदर्शन किया। हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस के व्यायामसञ्चालक श्री मुनिरावजी तथा उनके एक शिष्य ने जमनास्टिक्स के कई खेल दिखलाये। प्रो० घोष तथा मुनिरावजी ने युयुत्सुकला का प्रदर्शन किया और उसका मल्लयुद्ध से भेद बताया। घोष महोदय अखिल भारतीय प्रसिद्धि के व्यक्ति हैं तथा मुनिरावजी जमनास्टिक्स के कृत-दिग्विजय (Champion) हैं। तत्पश्चात् योगिराज ने भी आसन, नेती, व्यायाम आदि करके दिखाये। पुनः स्वागतसमिति की ओर से पारितोषिक, सम्मान, प्रमाणपत्र, पदक आदि का वितरण आरम्भ हुआ। एक प्रस्ताव द्वारा अखिलभारतवर्षीय योगव्यायाम-महासभा की स्थापना हुई और निश्चय हुआ कि इसके अधिवेशन प्रतिवर्ष महासम्मेलनाधिवेशन के साथ हुआ करें।

सायंकाल ३ बजे से ४ बजे तक और पश्चात् ५ बजे से ८ बजे तक त्रिदोषचर्चापरिषत् हुई।

(३१-१२-४४)

प्रातःकाल ६ बजे त्रिदोषचर्चापरिषत् आरम्भ हुई। अगले दिन नागार्जुन पर्वतयात्रा की तैयारी करनी थी अतः आज ही परिषत् की कार्यवाही समाप्त करनी पड़ी।

ता० १-१-४५ को अनेक महानुभाव नागार्जुनपर्वत देखने के लिये चले गये। यात्रा का सारा प्रबन्ध स्वागतसमिति की ओर से किया गया था।

—रामचन्द्र शर्मा

ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर। (स्थापित १६२३ ई०)

(१) दमानाशक (रजि०) — खांसी, श्वास, और राजयक्ष्मा की अचूक औषधि। कीमत ३२ मात्रा १), १२५ मात्रा ३)

(२) अमृतविलासवटी (रजि०) — बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष के सम्पूर्ण रोगों की एक ही औषधि। कीमत २५ मात्रा १), १०० मात्रा ३)

(३) गुप्त रोग का दारू (रजि०) — स्त्रियों के मासिक धर्म की खराबी को दूर करके सन्तान पैदा करती है। कीमत १४ मात्रा २), ५०) मात्रा ६)

(४) डाइवटी (रजि०) — मधुमेह की अचूक औषधि। कीमत २५ मात्रा ३), १०० मात्रा १०)। डाक-व्यय सबका पृथक्।

पता:- डा० जी०डी० शर्मा, बी० एल०, एम०एस०, वी० आर० एम० पी०, पी० ए० सी०, अध्यक्ष, ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर।

अ० भा० आ० विद्यापीठ की भिषक् तथा विशारद परीक्षाओं में निर्धारित

"स्वास्थ्यसंहिता"।

(ले०—आयुर्वेदाचार्य कविराज पं० नानकचन्द वैद्यशास्त्री, आयुर्वेदरत्न, मच्छीहट्टा, लाहौर)

इस पुस्तक में स्वास्थ्यसम्बन्धी सभी विषयों का वर्णन विशद रूप से किया गया है। साथ ही प्रारम्भिक सहायता (First Aid) का, जो वैद्य बनने वालों के लिए अत्यन्त आवश्यक है, उल्लेख कर दिया गया है। पुस्तक का मूल्य १॥) डाक-व्यय पृथक्। परीक्षार्थियों के लिये 'स्वास्थ्यसंहिता' के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई, अतः मूल्य १॥) ही लिया जायगा। मिलने का पता:—

कविराज पं० देवकीनन्दन शर्मा बी० ए० प्रभाकर,

मैनेजर—श्री शैलेन्दु रसशाला, मच्छीहट्टा, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AYURVEDIC INJECTIONS

PREPARED AT INDIA'S PIONEER
AYURVEDIC LABORATORY.
(Established in A.D. 1914)

THE APOLLO PHARMACY
MANUFACTURING CHEMISTS
P.O. JHARIA, E. I. Rly.

Branches & Agencies:

Ahmedabad, Ajmer, Anjar-Cutch, Bagalkot, Baroda, Bavla, Belgaum, Bhavnagar,, Bombay, Botad, Broach, Cairo (Egypt), Cawnpore, Chhindwara, Chuda, Davangere, Devpur, Dhandhuka, Dhrol, Ilkal, Jammu, Jamnagar, Jodia, Kapadwanj, Karachi, Kosamba, Lahore, Lakhtar; Latur, Limbdi, Marwar-Mundwa, Mehsana, Morvi, Nadiad, Nairobi (East Africa) Nasik City, Palitana, Patan, Patna, Patiala, Rajkot, Raver, Srinagar-Kashmir, Secundrabad, Shiroda, Sihor, Surat, Visnagar, Wadhwan Camp and City.

Apollo injections are being used by many leading physicians and surgeons of India, who are interested in the Indian system of medicine. This is the only Indian laboratory well known for their high standard of accuracy and purity. Some leaders of Ayurvedic Congress have praised our products with open hearts.

Our products are available from your city agent at our fixed rates. They are highly beneficial and used with success by millions of people throughout India and abroad.

Medical practitioners get reasonable commission. For further details see our agent or write to the Pharmacy. We are writing to appoint more agents in non-represented areas.

आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स

दि अपोलो फार्मेसी, झरीया ई० आई० आर०

एपोलो आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स लाखों रोगियों पर परीक्षित किये गये हैं। अल्प मूल्य होने पर भी अधिक गुणकारी हैं। भारतवर्षके आयुर्वेदके महान् नेताओंने उनकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। आप अपने शहरके हमारे एजेण्टसे खरीद कर थोड़े व्ययमें ही आरोग्यता प्राप्त कीजिये। आपके यहां न मिलने पर फार्मेसीसे मंगवालें। विशेष विवरण हमारे एजेण्ट द्वारा ज्ञात करें।

WAR—TIME BRANCH—OFFICE

The Apollo Pharmacy
Pratapganj, BARODA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३वें अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन (बेजवाड़ा) में सर्वसम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव ।

१- यह सम्मेलन इस वर्ष में श्री गणनाथसेन जी (कलकत्ता), श्री ब्रजबिहारी चतुर्वेदी (पटना), श्री श्यामाचरणसेन जी (चट्टग्राम), श्री पी० वी० कृष्णराव, श्री वाल्मीकिप्रसाद जी, श्री डी० जनार्दन स्वामी (हैदराबाद दक्षिण), श्री भजनलाल जी तथा श्री भीमराज गोस्वामी (फतेहपुर), श्री मुलुगु रामलिंगय्या (टिनाली), श्री डी० सुब्बावधानी, श्री बालंकेश्वर आचार्य (कटक), श्री कस्तूरी सुब्बावराव (कोकनाडा), सर पी० सी० राय तथा श्रीमती कस्तूरबा गांधी आदि के देहावसान से आयुर्वेद की अपार हानि का अनुभव करते हुए हार्दिक शोक प्रकट करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह स्वर्गीय आत्माओं को शान्ति और सद्गति प्रदान करे। (सभापति द्वारा)

२-यह सम्मेलन सर्वशक्तिमान् परमात्मा से प्रार्थना करता है कि भारतप्राण महात्मा गांधी शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करें और कम से कम १२५ वर्ष की आयु तक जीवित रहें ।

(सभापति द्वारा)

३—आयुर्वेद के प्रति सरकार की उपेक्षा तथा विरोधियों के प्रहार देखकर यह सम्मेलन निश्चय करता है कि प्रत्येक वैद्य तथा आयुर्वेदप्रेमी सामूहिक रूप से उनके प्रतिकार का वास्तविक प्रयत्न करें—जिसमें जनता में सामूहिक प्रचार और राजनैतिक अधिकारप्राप्त्यर्थ स्थानिक स्वायंत्त-शासनप्राप्त संस्थाओं से लगाकर धारासभाओं तक के निर्वाचन-कार्यों में भी सक्रिय भाग लेना हो।

४-भारतसरकार का आयुर्वेदविभाग पर किया जाने वाला व्यय केवल ऐलोपैथी पर ही होता है और उससे केवल नागरिक जनता को ही लाभ पहुंचता है—इसलिये यह सम्मेलन तीव्र असन्तोष प्रकट करता है और केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों से अनुरोध करता है कि वे आयुर्वेद के लिये भी व्यय करें तथा प्रत्येक प्रान्त, जिले, मण्डल आदि में सरकारी आयुर्वेदिक औषधालय खोलें जिससे ग्रामीण जनता को भी चिकित्सालाभ हो सके।

५—यह सम्मेलन मलेरिया आदि विविध रोगों से पीड़ित बंगाल की ३ करोड़ जनता के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करता है तथा इस सम्बन्ध में बंगाल आयुर्वेदीय सहायता समिति की सेवाओं की प्रशंसा करता है। निःसन्देह ऐसे जनहित के कार्यों में आयुर्वेद की सेवा अन्तर्निहित है। अतः यह सम्मेलन स्थायी समिति को अधिकार देता है कि वह इस समिति के जनसेवा कार्यों में यथाशक्ति सहायता प्रदान करती रहे तथा आयुर्वेदप्रेमियों, वैद्यों और आयुर्वेदीय संस्थाओं से भी प्रार्थना करता है कि वे स्वयंसेवक, धन एवं औषधि द्वारा इस समिति की सहायता करते रहें। [नोट—यह समिति श्रीयुत कविराज एम० के० मुखर्जी के नेतृत्व में बंगाल प्रान्तीय आयुर्वेद महामण्डल के सहयोग से बंगाल में जनसेवा कार्यों में तत्पर है]।

६—आयुर्वेदीय मान्य चिकित्सा ग्रन्थों में योगों के अनेक पाठ उपलब्ध होने के कारण वैद्यसमाज में भी तत्तत् ग्रन्थीय भिन्न पाठों का उपयोग प्रचलित है। यद्यपि प्रत्येक ग्रन्थ के समस्त प्रयोग लाभदायक एवं उपादेय हैं, तथापि वैद्यों के पारस्परिक विचारविनिमय में सुगमता तथा सर्वत्र औषधिप्राप्ति में सुलभता की दृष्टि से यह सम्मेलन अनुभव करता है कि प्रचलित ग्रन्थ पाठों के अधिकाधिक लाभदायक एवं वैद्यसमाज द्वारा अनुभूत योगों का संग्रह कर एक सर्वमान्य आयुर्वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग-संग्रह-ग्रन्थ निर्माण किया जावे। अतएव इस कार्य के सम्पादन हेतु निम्नलिखित महानुभावों की एक उपसमिति निर्मित कर आदेश देता है कि यह समिति आयुर्वेदीय योग-संग्रह की पाण्डु-लिपि तैयार कर आगामी सम्मेलनाधिवेशन में उपस्थित करे। [उपसमिति के सदस्य—सर्वश्री पं० शिवशर्मा जी (लाहौर), क० ज्योतिषचन्द्र जी सरस्वती (देहली), क० एम० के० मुखर्जी (कलकत्ता) आचार्य यादवजी त्रिकमजी (बम्बई), पूर्णचन्द्र वर्मन (डा० एस० के० वर्मन् लि०, कलकत्ता)]

७—आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि 'मृतसंजीवनी सुरा' सरकार के आबकारी नियमों के अनुकूल विशुद्ध रूप में नहीं बनाई जा सकती। अतः यह सम्मेलन भारत सरकार से प्रार्थना करता है कि वह इस औषधि के विशुद्ध रूप में बनाये जाने पर लगाये गये कानूनी प्रतिबन्धों को हटा ले।

८—आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि 'मृतसंजीवनी सुरा' को तैयार करने, बाहर ले जाने तथा भेजने की आज्ञा सरकार दिल्ली प्रान्त को नहीं दे रही है। अतः यह सम्मेलन सरकार से प्रार्थना करता है कि वह दिल्ली प्रान्त को ऐसी आज्ञा प्रदान करे।

९—यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि 'आयुर्वेद-पुनरुद्धार' के लिये निम्नलिखित महानुभावों की एक योजना-समिति बनाई जावे जो आयुर्वेदविषयक समस्याओं पर विचार करे और उनकी पूर्ति के लिये पृथक् पृथक् विभाग खोले। यह समिति समयानुसार अन्य महानुभावों को भी सम्मिलित कर सकती है। [समिति के सदस्य—महासम्मेलन-सभापति (सभापति), आचार्य यादवजी त्रिकमजी, पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, पं० शिवशर्मा जी, डा० ए० लक्ष्मीपति, वैद्य गणेशदत्त सारस्वत, पं० शिवराम जी द्विवेदी (संयोजक)।

१०—यह संमेलन आवश्यक समझता है कि महामण्डल अपनी निजी रसायनशाला खोलने की व्यवस्था करे। यह कार्य एक लक्ष की निधि से आरम्भ किया जाय, तथा एक सौ से एक हजार तक के भाग (शेयर) रखे जायें, ताकि जनता को विशुद्ध आयुर्वेदीय शास्त्रोक्त औषधियां प्राप्त हो सकें।

११—यह सम्मेलन स्थायी समिति द्वारा अपने १०-११-४४ के अधिवेशन में निर्मित निधिरक्षक-समिति (Board of Treasurers) को स्वीकार करता है।

१२—यह सम्मेलन निकट भविष्य में वर्धा में होने वाले बेसिक शिक्षा-सम्मेलन से प्रार्थना करता है कि वह अपने तत्त्वावधान में बनाई जाने वाली राष्ट्रीय बेसिक शिक्षापद्धति में आयुर्वेद के कामचलाऊ ज्ञान का भी समावेश करे।

१३—यह सम्मेलन देश के सम्पूर्ण आयुर्वेद-वैद्यों और विद्यार्थियों को प्रेरित करता है कि वे गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम को, विशेषकर सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता, तथा सस्ती और साधारण देशी औषधियों के प्रयोग विषयक कार्यक्रम को राष्ट्रीय महासभा के कार्यकर्ताओं के सहयोग से पूरा करने का प्रयत्न करें।

१४—यह सम्मेलन श्रीमती कस्तूरबा-स्मारक फण्ड के ट्रस्टियों से प्रार्थना करता है कि वे देहात में खोले जाने वाले आतुरालयों में आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली का ही प्राधान्य रखें, जिससे जनता एवं राज्य का ध्यान और श्रद्धा आकर्षित होवे।

१५—यह सम्मेलन भारत-सरकार तथा देशी-नरेशों से प्रार्थना करता है कि जहां-जहां राजकीय सहायता से आयुर्वेद के विद्यालय तथा महाविद्यालय स्थापित हों वहां वहां पाठ्यक्रम विशुद्ध आयुर्वेदीय रखा जावे तथा विशुद्ध आयुर्वेदीय पाठ्यक्रमानुसार उत्तीर्ण संपूर्ण स्नातकों को रजिस्ट्रेशन के लिये स्वीकृत किया जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कार्य के प्रचार के लिये प्रत्येक प्रान्त में विशुद्ध आयुर्वेदपक्षपाती वैद्यों की एक उपसमिति बनाई जावे ।

१६—अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन के आजीवन सदस्य स्वामी हरिशरणानन्द जी (अमृतसर) ने, महामण्डल के आद्य संस्थापक व आत्मस्वरूप स्व० पं० शंकरदाजी शास्त्री पदे की स्मारक-योजना का पूर्ण उत्तरदायित्व लेकर आज तक कुछ नहीं किया — इसके लिये यह सम्मेलन खेद प्रकट करता है तथा महासम्मेलन-सभापति को आदेश देता है कि वे इस सम्बन्ध में आवश्यक जांच-पड़ताल करके उसका विवरण पत्रिका में प्रकाशित करा दें, जिससे आवश्यक कार्यवाही की जा सके ।

१७—यह सम्मेलन श्रीमान् बड़ौदानरेश की आयुर्वेद-प्रचार की भावना को देख कर उन्हें सहर्ष धन्यवाद देता है तथा उनसे प्रार्थना करता है कि वे बड़ौदाशहर में शुद्ध आयुर्वेदपद्धति पर एक आदर्श महाविद्यालय स्थापित कर आयुर्वेदशास्त्र का पुनरुद्धार करें ।

१८—यह सम्मेलन कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट समिति से अनुरोध करता है कि वह स्वास्थ्य, सफाई आदि विषयों में परामर्श देने और मार्ग प्रदर्शन करने के लिये तथा चिकित्सा—सहायता की व्यवस्था के सम्बन्ध में, विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां केवल इसी देश की अपनी चिकित्सापद्धति 'आयुर्वेद' को जनता अपनाती है, क्योंकि केवल आयुर्वेदीय चिकित्सापद्धति ही भारतवर्ष की जलवायु और प्रकृति में दृढ़मूल है, अन्य किसी चिकित्सापद्धति को नहीं, सक्रिय सुझाव पेश करने के लिये, आयुर्वेद के एक प्रतिनिधि को भी समिति में लेने की आवश्यकता समझे । यह सम्मेलन समिति से यह भी प्रार्थना करता है कि वह प्रस्तावित चिकित्सा-सहायता-केन्द्रों के उद्घाटन के सम्बन्ध में आयुर्वेदीय चिकित्सापद्धति को प्रधानता दे । यह सम्मेलन उक्त समिति से प्रार्थना करता है कि वह अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन के, जो कि आयुर्वेद-संसार का एक मात्र प्रतिनिधि और जनतन्त्रात्मक अखिल भारतीय सङ्गठन है, अधिकृत प्रतिनिधि को ग्रहण करे ।

१९—यह सम्मेलन भारतीय चिकित्सापद्धति के स्कूलों और कालेजों के स्नातकों को दिये जाने वाले दर्जे, वेतन, भविष्य और सुविधाओं का घोर विरोध करता है तथा सरकार से प्रार्थना करता है कि वह भारतीय चिकित्सापद्धति की संस्थाओं के स्नातकों के साथ कम से कम वैसा ही व्यवहार करे जैसा कि ऐलोपैथी के स्कूलों और कालेजों के स्नातकों के साथ किया जाता है ।

२०—क्योंकि मद्रास के गवर्नमेंट स्कूल आफ इन्डियन मेडिसिन में विद्यार्थियों के समुचित शिक्षण के लिये आवश्यक साधनों और अध्यापकों सम्बन्धी तथा स्नातकों के भविष्य और श्रेणी सम्बन्धी स्थिति उन उद्देश्यों की सिद्धि के लिये, जिनके लिये स्कूल स्थापित किया गया था तथा स्कूल के लिये स्वीकृत पाठ्यविधि के संचालन और संस्था के प्रति अच्छे व्युत्पन्न विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिये, असन्तोषजनक है, अतः यह सम्मेलन सरकार से साग्रह अनुरोध करता है कि वह उपर्युक्त दोषों को अतिशीघ्र दूर करने का प्रयत्न करे ।

२१—इस सम्मेलन की यह सम्मति है कि भारतवर्ष में चिकित्सा-शिक्षा और चिकित्सा-सहायता सम्बन्धी आवश्यकतायें भारतीय चिकित्सापद्धति के स्कूलों और कालेजों को प्रत्येक जिला वा तहसील के अस्पताल से, जहां कि चिकित्सा-सम्बन्धी पर्याप्त साधनसामग्री उपलब्ध हो, सम्बन्धित कर देने से, तथा इन संस्थाओं को चिकित्सा-शिक्षा, चिकित्सा-सहायता और चिकित्सा-अनुसन्धान के साधारण केन्द्रों के रूप में परिचालित करने से, सर्वोत्तम प्रकार से तथा अनायास ही पूरी हो सकती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२—यह सम्मेलन संस्था के मुद्रित गत वार्षिक आय-व्यय-विवरण और सन्तुलनपत्र को तथा सन् १९४५ के आनुमानिक आय-व्यय-पत्र कों स्वीकृत करता है। (नोट—यह जनवरी १९४५ की पत्रिका में प्रकाशित हो चुका है।)

२३—आयुर्वेदमहामण्डल के बीस हजार रुपये के कैश-सर्टिफिकेट्स कविराज प्रतापसिंह जी और वैद्य रामशङ्कर जी की व्यक्तिगत संपत्ति के रूप में पोस्ट आफिस में होने से आडिटरों की कई वर्षों से निरन्तर कठोर शब्दों में की गई आपत्तियों पर, तथा प्रधान जी, कविराज प्रतापसिंह जी एवं वैद्य रामशङ्कर जी के इस वर्ष के पत्रव्यवहार पर, विचार करते हुये, यह सम्मेलन महामण्डलाध्यक्ष को आदेश देता है कि वे महामण्डल के इस धन को हस्तगत तथा सुरक्षित करने के लिये, स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि द्वारा शीघ्र कानूनी कार्यवाही करें और इसके लिये आवश्यक व्यय कार्यकारिणी स्वीकृत करती रहे।

२४—रजतजयन्तीग्रन्थ के २५ सैट कविराज प्रतापसिंह जी ने बहुत दिनों से अपने पास रख छोड़े हैं और कार्यालय के अधिकारियों के कई बार लिखने पर भीं महामण्डल को नहीं लौटाये। अतः यह सम्मेलन महामण्डलाध्यक्ष को अधिकार देता है कि वे इन (ग्रन्थों) कों अथवा स्थायी-समिति द्वारा निश्चित इनके मूल्य को प्राप्त करने लिये उचित कानूनी कार्यवाही करें।

२५—क्योंकि कविराज प्रतापसिंह जी और वैद्य रामशङ्कर जी ने महामण्डल के स्पष्ट आदेशों और प्रस्तावों का तिरस्कार करके अनुशासन भंग कर दिया है, अतः यह सम्मेलन निश्चय करता है कि जब तक वे महामण्डल के धन द्वारा खरीदे हुये अपने नाम के कैश-सर्टिफिकेटों में अटके हुये धन को महामण्डल को न लौटा दें, तब तक उन्हें महामण्डल की सदस्यता के अधिकारों से वञ्चित रखा जाय। परन्तु यदि यह धन उनसे न्यायालय में अभियोग द्वारा ही प्राप्त करना पड़े तो उन्हें महामण्डल की सदस्यता से पृथक् कर दिया जाय।

२६—कविराज प्रतापसिंह जी के प्रधानमन्त्रित्वकाल में १ नवम्बर १९३६ से ३१ अक्टूबर १९३७ तक आये हुये मान्यसदस्य-शुल्क में से केवल ३९०) जमा दिखाये गये हैं, जब कि इस वर्ष में १७० से अधिक मान्य सदस्य हुये। निश्चय हुआ कि इस सम्बन्ध में जांच करके आवश्यक कार्यवाही की जावे।

२७—चौंतीसवें अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन के लिये कर्णाटक प्रान्तीय वैद्यमण्डल का निमन्त्रण स्वीकृत हुआ।

२८—अग्रिम वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुये :—

महासम्मेलन के लिये—सभापति—कविराज एम० के० मुखर्जी। उपसभापति—क० ज्योतिर्मयसेन (कलकत्ता), पं० शिवराम द्विवेदी (लखनऊ)। प्रधानमन्त्री—क० विजयकाली भट्टाचार्य एम० ए० (कलकत्ता)। संयुक्त मन्त्री—क० गणेशदत्त सारस्वत बी० ए० (देहली)। सहायक मन्त्री—क० यादवेश्वर भट्टाचार्य, बी० ए० (कलकत्ता), वैद्य ब्रह्मदत्त शर्मा (भुसावल)। कोषाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द्र वर्मन (डा० एस० के० वर्मन लि०, कलकत्ता)।

विद्यापीठ के लिये—सभापति—कविराज ज्योतिषचन्द्र सरस्वती। उपसभापति—वैद्य मनोहरलालजी (देहली), वैद्य नानकचन्दजी (लाहौर)। मन्त्री—क० उपेन्द्रनाथदास। सहायक-मन्त्री—वैद्य लक्ष्मीकान्त शास्त्री। कोषाध्यक्ष—क० शिवनाथ शर्मा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६—अग्रिम वर्ष के लिये निम्नलिखित ५० सदस्य स्थायी समिति के लिये निर्वाचित हुये—
सर्वश्री पं० चावली राममूर्त्ति शास्त्री (राजमहेन्द्री), टी० एल० कान्ताराव (गण्टूर), हनुमत् शास्त्री (नीलौर), जानकीनाथधर (काश्मीर), एस० सूर्यनारायण शास्त्री (विजगापट्टम्), डा० एम० वेंकटा शास्त्री (आन्ध्र), एन० एस० प्रभु (मंगलोर), महाशंकर नरोत्तम भट्ट (गु०), वी० बी० नटराज शास्त्री (त्रिचनापल्ली), अमरनाथजी राजवैद्य (धौलपुर), जीवनलाल हरिशंकर (मोर्वी), शंकरलाल छगनलाल (अहमदाबाद), ललिताबेन प्राणलाल (सूरत), नित्यानन्द शर्मा (देहली), एन० माधव मेनन (मद्रास), रामधन शर्मा (आगरा), बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर), सोमदेव शास्त्री (पीलीभीत), शिवशर्मा जी (मेरठ), ओंकारलालजी (उदयपुर), नानकचन्द्रजी (लाहौर), सौमित्र शर्मा (झांसी), चक्रपाणि शास्त्री (मथुरा), गौरीदत्त शर्मा (अमृतसर), विरिंचिलाल शर्मा (राज०), एम० आर० मलेकर (बम्बई), भिकाजी विनायक डेग्वेकर (जबलपुर), के० एम० वाकणकर (गवालियर), पी० एच० देशपाण्डे (पूना), खूबचन्द्र शर्मा (जोधपुर), हरिकृष्ण 'कमलेश' (भरतपुर), मोतीशंकर सनाढ्य (कोटा), शंकरदत्त वैद्य (बीकानेर), अवधविहारीशरण वाजपेयी (अमरावती), नागरदत्त जोशी (वैद्यनाथ-देवघर), रामरक्ष पाठक (हरद्वार), तेजभानुदास पुरुषोत्तमदास (सिन्ध), जटाशंकर धनेश्वर (कराची), सूर्यप्रसाद शर्मा (दक्षिण), किशोरी मोहनदास (बंगाल), दयानिधि स्वामी (हृषीकेश), कुमुदनाथसेन (बंगाल), लोचनानन्द ठाकुर (बंगाल), विभूतिभूषण भट्टाचार्य (बंगाल), सत्यकिंकरसेन बंगाल), जुगलकिशोरसेन (बंगाल), परमानन्ददास गुप्त (बंगाल), देवदेव भट्टाचार्य (बंगाल), मनोरञ्जन भट्टाचार्य (बंगाल), कालीदासराय चौधरी (बंगाल)।

महासम्मेलन का वार्षिक कार्यविवरण (१६४४)

गत वर्ष की भांति यह वर्ष भी उन्नति का वर्ष रहा है । लाहौर तथा कानपुर से कार्यालयों के बदले जाने से जो परिवर्तन और सामंजस्य करने पड़े हैं उनके कारण तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रबन्धसम्बन्धी वर्तमान असुविधाओं के कारण, कार्य की उत्तमता को कायम रखने के लिये बड़े-बड़े प्रयत्न करने पड़े तथा कोई बात उठा न रखी गयी। अनेक आजीव और मान्य सदस्यों के अतिरिक्त ३ नये संरक्षक सदस्य और ३ आश्रयदाता सदस्य बनाये गये। इस वर्ष सम्बद्ध संस्थाओं की सख्या २८ है । वैद्य सदस्यों तथा सर्वसाधारण से महासम्मेलन का सीधा सम्बन्ध स्थापित करके आयुर्वेदसंसार के सम्पूर्ण क्षेत्रों में जागृति और उत्साह उत्पन्न किया गया है, जिससे महासम्मेलन के मामलों और क्रियाकलापों में उनकी दिलचस्पी बढ़ती जा रही है । यदि इस कार्य को और विशालता दी जाय तो महासम्मेलन देश में एक लोकप्रिय और शक्तिशाली संगठन बन सकता है । जो महत्त्वपूर्ण कार्य अधूरे पड़े थे वे पूरे किये जा रहे हैं । सब प्रश्नों के सन्तोषजनक हल की आशा है । महासम्मेलन-संसार में साधारणतया शान्त वातावरण रहा है । मैं महासम्मेलन के सम्पूर्ण सदस्यों से प्रार्थना करता हूँ कि वे महासम्मेलन की शान्तिपूर्ण उन्नति एवं समृद्धि में सहयोग प्रदान करें ।

—विजयकाली भट्टाचार्य, प्रधानमन्त्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ. भा. आयु. अध्यापकसंमेलन (बेजवाड़ा) में स्वीकृत प्रस्ताव।

१—यह सम्मेलन भारतवर्ष में स्त्रीचिकित्सिकाओं की कमी का अनुभव करता है और स्त्रियों के लिये पृथक् उपाधिपरीक्षा की आवश्यकता समझता है, जिसकी व्यवस्था विद्यापीठ की ओर से शीघ्र होनी चाहिये।

२—यह सम्मेलन निश्चय करता है कि आयुर्वेदाचार्य के बाद अन्वेषणात्मक विशेष ज्ञान सम्पादन करने वाले व्यक्तियों के लिये एक वर्ष का और अतिरिक्त अध्ययनकाल (Post Graduate Course) रखा जावे, जिसमें परीक्षार्थी आयुर्वेद के अष्टांगों में से किसी एक निर्धारित विषय पर विस्तृत निबन्ध किं वा पुस्तक लिख कर आयुर्वेदविद्वत्समिति के समक्ष उपस्थित करे और उत्तीर्ण होने पर उसे 'आयुर्विज्ञानाचार्य' अथवा 'प्राणाचार्य' की उपाधि एवं एक सौ रुपया पारितोषक विद्यापीठ की ओर से दिया जावे तथा वह निबन्ध या पुस्तक विद्यापीठ की सम्पत्ति मानी जावे।

३—यह सम्मेलन निश्चय करता है कि विद्यापीठ—परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र-निर्माता और परीक्षक केवल महासंमेलन तथा विद्यापीठ के सदस्य ही नियुक्त किये जायें।

४—यह सम्मेलन निश्चय करता है कि जिन प्रान्तों में महासंमेलन की प्रान्तीय शाखायें मौजूद हैं उन प्रान्तों में विद्यापीठ—परीक्षाओं का प्रबन्ध-भार प्रान्तीय शाखाओं को सौंप दिया जाय तथा जहां प्रान्तीय शाखायें न हों वहां महासंमेलन तथा विद्यापीठ की विश्वसनीय सम्बद्ध संस्थाओं को सौंपा जाय।

५—यह सम्मेलन निश्चय करता है कि अ० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ को शीघ्रातिशीघ्र सरकारी मान्यता प्रदान कराई जावे अन्यथा उसे क्षति पहुँचने की संभावना है।

६—(क) सन् १९४१ में तपसीबाबा डा० एन० एस० परांजपे की अध्यक्षता में आवड़ी, मद्रास में, आयुर्वेदाध्यापक—शिक्षापरिषत् के रूप में जो आरम्भिक कार्य हुआ था, तथा उसमें जो सामग्री संग्रहीत हुई थी, उसको ध्यान में रखते हुये, यह सम्मेलन निश्चय करता है कि आयुर्वेद के विभिन्न विभागों (स्थानों) के प्रत्येक विषय की पूर्ति के लिये सामग्री—संचय का कार्य जारी रखा जाय।

(ख) यह सम्मेलन निश्चय करता है कि जो सामग्री अब तक संग्रहीत हो चुकी है उसी के आधार पर आयुर्वेदविद्यार्थियों की भावी शिक्षा के लिये विभिन्न विषयों पर संस्कृतभाषा में उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें बनवाने के लिये विद्वान् आयुर्वेदज्ञों की एक समिति बनाई जावे, जिसकी नियुक्ति कार्यकारिणी करे। निश्चय हुआ कि इस समिति का संयोजक डा० लक्ष्मीपति को बनाया जावे।

७—यह संमेलन निश्चय करता है कि कविराज ज्योतिषचन्द्र जी सरस्वती की 'शारीर विनिश्चय' नामक पुस्तक को, जो अब तैयार हो गई है, शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित कराने का प्रबन्ध किया जाय तथा उसे १९३९ के जोधपुर-सम्मेलन के प्रस्तावानुसार पाठ्यक्रममें सम्मिलित किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

—उपेन्द्रनाथदास, विद्यापीठ—मन्त्री।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-कार्यसमिति का चतुर्थ अधिवेशन

स्थान — अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन-सभामण्डप, बेजवाड़ा।
समय — ता० २७-१२-४४, रात्रि ६ बजे।

उपस्थिति—सर्वश्री पं० शिवराम जी द्विवेदी (लखनऊ), शान्तादेवी वैद्या (लखनऊ), पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर (अमरावती), विजयकाली भट्टाचार्य (कलकत्ता), रामेश्वर शास्त्री शुक्ल (ग्वालियर), बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर), राजवैद्य रामप्रसाद जी (पटियाला), डा० ए० लक्ष्मीपति (बेजवाड़ा), पाण्डुरंग हरि देशपाण्डे (पूना), डी० के० भारद्वाज (बंगलौर), आशुतोष मजुमदार (देहली), शिवशर्मा जी आयुर्वेदाचार्य (लाहौर), ज्योतिषचन्द्र जी सरस्वती (देहली), उपेन्द्रनाथदास जी (देहली)। इनके अतिरिक्त जिन उपस्थित महानुभावों ने अपने हस्ताक्षर नहीं किये उनके नाम देने में हम असमर्थ हैं।

सभापति श्री ज्योतिषचन्द्र जी सरस्वती के सभापतित्व में कार्यवाही आरम्भ हुई।

१—गताधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई तथा सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई।

२—सन् १६४५ के लिए निम्नलिखित संस्थाओं की सम्बद्धता स्वीकृत हुई, तथा विद्यापीठ-मन्त्री को अधिकार दिया गया कि जिन पुरानी सम्बद्धसंस्थाओं का सम्बद्धता-शुल्क अभी तक कार्यालय में नहीं आया उनका शुल्क प्राप्त होने पर उन्हें स्वीकार कर लें — श्री मोहता आयु० विद्यालय (बीकानेर), एस० वी० जे० वी० आयु० कालेज (कोबूर), पुराणिक आयु० विद्यालय (नागपुर) लक्ष्मणदास आयु० विद्यालय (खुर्जा), राजकीय सं० आ० पाठशाला (पेटलाद), बम्बई आयु० विद्यालय (बम्बई), दिगम्बर जैन सं० कालेज (जयपुर), राजस्थान आयु० कालेज (सीकर), वाल्मीकि आयु० कालेज (ग्वालियर), सं० आ० विद्यालय (शाह-फतेहपुर), व्रजमोहन आयु० विद्यालय (बरेली), सं० आयु० विद्यालय (खेखड़ा-मेरठ), साङ्ग आयु० विद्यालय (चिड़ावा), महाराणा आयु० कालेज (उदयपुर), ग० रा० तिवारी सं० आ० विद्यालय (कानपुर), सं० पाठशाला (हर्दा), अवन्तिका आ० विद्यालय (उज्जैन), जी० बी० रुइया आ० विद्या० (रामगढ़), अष्टाङ्ग आ० सं० महावि० (सिवनी), आयु० विद्या० (कानपुर), ऋषिकुल सं० आ० विद्या० (मेरठ), सं० आ० पाठ० (फर्रुखाबाद), विदर्भ आ० विद्या० (अमरावती), ऋषिकुल आ० कालेज (मुरादाबाद), आ० सं० विद्यालय (हर्दा), अष्टांग आ० महावि० (पूना), द्विवेदी आ० विद्या० (कानपुर), सं० आ० विद्या० (अजमेर), नारायण आ० विद्या० (खुर्जा), वि० दु० रुइया सं० पाठशाला (रामगढ़), राजकीय आ० विद्या० (मथुरा), माधव आ० पाठशाला (चित्तौडगढ़), सांग आ० विद्या० (इन्दौर), तापी० ब्रह्म० आ० विद्या० (सूरत), मनोहर सं० आ० विद्यालय (अहमदाबाद), सरसपुर सं० पाठ० (अहमदाबाद), बाबा कालीकमली० आ० विद्या० (ऋषीकेश), आयुर्वेदसभा—महाविद्यालय (मथुरा)।

३—गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन, की 'आयुर्वेदभूषण' उपाधि परीक्षा को विद्यापीठीय 'विशारद' तुल्य स्वीकार किया गया।

४—कार्यालय-कर्मचारियों के अवकाशादि के सम्बन्ध में उपसमिति की रिपोर्ट पढ़ी गई, जो कुछ संशोधनों के साथ निम्नलिखित रूप में स्वीकृत हुई।

(क) निश्चित अवकाश—प्रति शनिवार को ३। बजे के बाद तथा प्रति रविवार को कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अवकाश रहेगा। इसके अतिरिक्त पर्वों और त्यौहारों के उपलक्ष्य में कर्मचारियों को वर्ष में ३० दिन का अवकाश मिलेगा।

(ख) आकस्मिक अवकाश (Casual Leave)—वर्ष भर में १२ दिन मिलेगा।

(ग) स्थायी अवकाश (Leave on full average Pay)—कार्यालय की सुविधा के अनुसार वर्ष भर में एक मास का अवकाश सवेतन दिया जायगा। यदि कर्मचारी इस अवकाश को सुरक्षित रखना चाहे तो रख सकता है, परन्तु ऐसी अवस्था में दो मास से अधिक का अवकाश सुरक्षित नहीं रह सकेगा।

(ग) रुग्णावकाश—स्थायी अवकाश के समाप्त होने पर ही आवश्यकतानुसार वर्ष भर में एक मास का रुग्णावकाश पूरे वेतन पर मिल सकेगा।

५—विद्यापीठ-पुस्तकालय-स्थापना के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि युद्ध-काल के पश्चात् ही इस पर विचार किया जावे।

६—अध्यापक-सम्मेलन के लिये आये हुए प्रस्तावों पर विचार हुआ और स्वीकृत प्रस्तावों को विषय-निर्वाचनी समिति में भेज दिया गया।

७—निश्चय हुआ कि पत्रिका-कार्यालय का व्यय विद्यापीठ से ही दिया जाय। दोनों विभागों के आनुमानिक व्ययार्थ स्वीकृत धन को बैंक के चालू हिसाब (Current Account) में रखा जाय तथा विद्यापीठ-मन्त्री को अधिकार दिया जाय कि वे इसकी यथोचित व्यवस्था करें।

८—मिश्रित-बंगलौर और हैदराबाद के उपकेन्द्रों को केन्द्र स्वीकार किया गया। तदनन्तर सभापति का धन्यवाद करते हुए अधिवेशन समाप्त हुआ।—श्रीं० उपेन्द्रनाथदास, विद्यापीठ-मन्त्री।

उत्तम लोह भस्म

२०) प्रति सेर। यह हमारे कार्यालय में सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार तीक्ष्ण लोह से करीब ५ मन के प्रतिवर्ष तैयार होती है। बहुत सी प्रसिद्ध प्रसिद्ध फार्मेसियां तथा वैद्य हमसे थोक परिमाण में मंगाते हैं। आप भी एक बार मंगा कर परीक्षा करें।

हमारे यहां सब प्रकार की भस्में, रस, रसायन, पर्पटी, जौहर, आसवारिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल, चूर्ण आदि सर्व प्रकार की शास्त्रीय औषधियां उत्तम तथा रियायती मूल्य पर बनती और भेजी जाती हैं।

शुद्ध शिलाजीत

हमारे अपने कार्यालय में प्रति वर्ष करीब ३०० मन शास्त्रविधि अनुसार शोधित की जाती हैं। सूर्यतापी २०), अग्नितापी १२) प्रति सेर। वज्राभ्रक उत्तम १।|।) सेर, अष्टवर्ग ६) प्रति सेर।

सब प्रकार के विषोपविष, खनिज-द्रव्य, जड़ी बूटियां, प्राणिज पदार्थ हमसे सस्ते मूल्य पर मिल सकते हैं।

"सूचीपत्र मुफ्त"

किसी अन्य स्थान से मंगाने से पहिले हमारे भाव अवश्य देखें।
धर्मार्थ संस्थाओं को विशेष रिआयत से माल भेजा जाता है।

काश्मीर आयुर्वेदिक वर्क्स, जी० टी० रोड, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन
स्थायी समिति का चतुर्थ अधिवेशन

स्थान—महामण्डल-कार्यालय । समय—४ बजे, ता० २२-१२-४४

महासम्मेलन-सभापतिमहोदय, जिन्होंने सभापति का आसन ग्रहण किया, के अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्यगण उपस्थित थेः—कविराज श्री विभूतिभूषण भट्टाचार्य, श्री रवीन्द्रदेव भट्टाचार्य, श्री सत्यकिंकरसेन, श्री राजेन्द्रनाथ भट्टाचार्य, श्री मनोरंजन भट्टाचार्य, श्री शैलेन्द्रचन्द्र चौधरी, श्री युगलकिशोर सेन, श्री यादवेश्वर भट्टाचार्य, श्री किशोरीमोहनदास, श्री विजयकाली भट्टाचार्य ।

विचारणीय विषयों के सम्बन्ध में निम्नलिखित सदस्य महानुभावों की सम्मतियां आई थींः—वैद्य श्री वंशीधर मोहनलाल शर्मा (अजमेर), पं० गणेशदत्त वैद्य (मेरठ), मंत्री, आयुर्वेदसंरक्षकमण्डल (बम्बई), मंत्री, सिन्धप्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल (कराची), श्री माधव गणेश जोशी (पूना), वैद्य डी० के० भारद्वाज (बंगलौर), क० कुमुदनाथसेन (नाटौर), वैद्य सूर्यप्रसाद शर्मा (सिकन्दराबाद—दक्षिण), स्वामी मंगलदास जी (जयपुर), वैद्य राममोहन शर्मा (आगरा), श्री चुन्नीलाल रेवाशङ्कर (बड़ौदा) ।

१, २—गताधिवेशन की कार्यवाही की स्वीकृति के अनन्तर निम्नलिखित महानुभावों की सदस्यता स्वीकृत हुईः—आश्रयदाता सदस्य — क० अमरभूषणराय (कलकत्ता) । आजीवन सदस्य—श्री बलदेव शर्मा आयुर्वेदाचार्य (लाहौर), श्री सूर्यकान्त शर्मा (खाटू—जयपुर), श्री मणिशङ्कर लक्ष्मीशंकर (नलिया—कच्छ), श्री गुलराज शर्मा (नागपुर) । सम्बद्धसंस्था—आयुर्वेदपरिषत् (रामगढ़), वैद्यमण्डल (जूनागढ़), द्रविड़वैद्यमण्डल । तदनन्तर कुछ मान्य सदस्यों की स्वीकृति हुई ।

३—सन् १६४४-४५ के लिये महामण्डल के आय-व्यय के आनुमानिक विवरण के साथ सन् १६४३-४४ का आय-व्यय तथा स्थितिपत्र पेश हुआ । उसके साथ ही उपस्थित आडिटर की रिपोर्ट समालोचनार्थ आई । रिपोर्ट में उत्थापित आडिटर के कतिपय विषयों के स्पष्टीकरण के बाद ये सब स्वीकृत हुये । तदनन्तर महासम्मेलन में उपस्थित करने के लिये सदस्यों तथा सम्बद्ध संस्थाओं की ओर से प्राप्त प्रस्तावावली प्रधान मंत्री ने उपस्थित की । यथोचित विचारविनिमय के पश्चात् यह प्रस्तावावली महासम्मेलन में उपस्थित करने के लिये स्वीकृत हुई । सभा विसर्जित होने से पूर्व निम्नलिखित ३ प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुये :—

(१) सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया लि० लाहौर में स्थित २६०००) की फिक्स्ड डिपोजिट को ब्याजसहित संस्था के रजिस्टर्ड नाम (आल इण्डिया-आयुर्वेद कांग्रेस) पर फिर एक वर्ष के लिये जमा किया जाय ।

(२) कविराज मनोरंजन पकराशी महोदय को कार्यालय के अवैतनिक कार्यदर्शी के पद पर स्वीकृत किया जाय ।

(३) स्थायी समिति के सदस्य कविराज श्री लोचनानन्द ठाकुर के पदत्याग के कारण रिक्त स्थान पर क० श्री राखालदास सेन को चुना जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री विजयकाली भट्टाचार्य, प्रधानमन्त्री ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलेरिया बुखार में कुनीन की जगह क्या इस्तैमाल करेंगे ?

— ऊंझा फार्मेसी की —

एल्स्टो पिल्स (सप्तपर्णावटी)

क्योंकि—

मलेरिया के लिये यह अक्सीर साबित होचुकी है। सप्तपर्ण (Alstonia Scholaris) कालमेघ, कुटकी आदि के घनसत्त्वों से बनाई गई है। डीमक वो० २ पृ० ३८७-८८ पर लिखा है कि सप्तपर्ण की छाल में डीटेन नाम का सत्त्व है। मलेरिया, जीर्णज्वर, शीतज्वर और विषमज्वर में यह कुनीन-सल्फ से हजारगुनी अच्छी है। ६ या १२ गोली से ज्वर दूर हो जाता है। कीमत में भी दूसरी दवाइयों से सस्ती पड़ती है। सैकड़ों वैद्यों, डाक्टरों और धर्मार्थ औषधालयों ने आजमाइश करके इसे मलेरिया बुखार के लिये अक्सीर साबित किया है।

आज से ही कुनीन की जगह इस्तेमाल कीजिये

कीमत ४२ गोली ।।~), ५०० गोली (१० तो०) ३।।)

अधिक विवरण के लिये पैम्फिलिट मुफ्त मंगाइये।

ऊंझा फार्मेसी- ऊंझा (उ० गु०); गांधी रोड, अहमदाबाद; कालवादेवी रोड, बम्बई नं० २; और पूना सिटी।

रक्त-शुद्धि के लिये

रक्त दोष

त्वग्रोग

आतशक

रटोना

रक्त दोष नाशक

सूजाक

(पीव प्रमेह)

वगैरह पर

फायदे मन्द

श्री धूतपापेश्वर पनवेल लिमिटेड

लखनऊ शाखा-३७ लाटूशरोड। बनारस- हरिकिशोर एण्ड ब्रदर्स, ब्रह्मघाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०८५४२८

आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा

(पश्चिमभारत और राजपूताना में)

(गताङ्क से आगे)

मोहता आयुर्वेद विद्यालय बीकानेर के प्रिंसिपल श्री शङ्करदत्त जी वैद्य का जवानी तार मुझे देहली मिला, जिसमें मुझे बीकानेर आने के लिये निमन्त्रित किया गया था। मैं ३ मार्च को बीकानेर पहुंचा। यात्रा बड़ी लम्बी थी। मार्ग उजाड़ भूखण्डों में होकर था। रेगिस्तान के वक्षःस्थल पर निविष्ट इस आधुनिक नगर में पहुँचकर कुछ शान्ति मिली। स्टेशन पर हमारे स्वागतार्थ वैद्य चन्द्रशंकर जी के साथ लगभग सभी प्रतिष्ठित वैद्य आये। जब मुझ से यह पूछा गया कि आपके साथ कितने व्यक्ति हैं तो मैंने मुस्कराते हुये अपनी पत्नी की ओर इंगित करते हुये बताया कि केवल एक हीं साथी मेरी यात्रा में मेरे साथ रहा है। तब हम महन्त महाराज रामनारायण जी वैद्य के आनन्द आश्रम में गये। यहां पर हमें जो आराम मिला, वह सम्पूर्ण यात्रा में कहीं नहीं मिला था। हमारे आराम की छोटी से छोटी बात पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। रामनारायण जी तो भद्रता और सौम्यता के मानो अवतार ही थे। बीकानेर का कार्यक्रम निश्चित करते समय मैंने अपने मित्रों को बता दिया था कि न तो किसी काम में व्यर्थ जल्दबाजी की जाय और न मुझे व्यर्थ रोका ही जाय।

विश्राम के पश्चात् सन्ध्या समय महन्त जी ने हमारे नगर-भ्रमण का प्रबन्ध कर दिया। एक लम्बा रास्ता तय करके और यत्रतत्र स्थित विशाल देवमन्दिरों तथा अन्य प्रसिद्ध स्थानों का निरीक्षण करते हुये हम नगर के बाहर उपनगरों तक गये। रात्रि को स्थानीय वैद्य मिलने के लिये आये। मैंने उनको संगठन, शुद्ध आयुर्वेद तथा महासम्मेलन को शक्तिशाली बनाने का अपना सन्देश दिया।

४ मार्च को दादू धर्मार्थ औषधालय का निरीक्षण किया तथा प्रतिष्ठित नागरिकों एवं राज्याधिकारियों से भेंट की। अपराह्न में विशाल मोहता संस्था का निरीक्षण किया तथा उसके ट्रस्टियों से संक्षिप्त वार्तालाप किया। संस्था के आयुर्वेद विभाग ने कालेज के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों की सभा का आयोजन किया। मैंने अपने भाषण में विद्यार्थियों को बतलाया कि वे श्रद्धा और विश्वास के साथ केवल शुद्ध आयुर्वेद का अध्ययन करें। संस्था की ओर से मुझे आयुर्वेदीय सेवाओं के लिये १०१) तथा एक सुन्दर हाथ का बुना हुआ ऊनी कम्बल प्रदान किया गया। आयुर्वेद-संसार तभी उन्नति कर सकता है, जब वह अपने विश्वासपात्र सेवकों की निःस्वार्थ और ठोस सेवाओं का सच्चा आदर करना सीख जायगा।

५ मार्च को बाबूदयालु दातव्य औषधालय का निरीक्षण किया, जिसकी ओर से मुझे आयुर्वेदीय कार्यों के लिये ५०) प्रदान किये गये। सायंकाल बीकानेर सरकार के प्रधानमन्त्री श्रीयुत ठाकुर सूरजपालसिंह जी के सभापतित्व में श्री रत्नबिहारी मन्दिर की वाटिका में एक सार्वजनिक सभा हुई। दर्शकों की सुविधा के लिये ध्वनिक्षेपक और ध्वनिविस्तारक यन्त्रों की व्यवस्था की गई थी। मैंने एक लम्बा भाषण दिया जिससे दर्शक अत्यन्त प्रभावित हुये तथा प्रार्थना की कि इसे विभिन्न भाषाओं में पुस्तकाकार छपा लेना चाहिये। भाषण अंग्रेजी में आरम्भ करके हिन्दी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त किया गया था। अन्त में अध्यक्ष महोदय ने मुझे धन्यवाद दिया। वे आयुर्वेद के बड़े प्रशंसक हैं। सभा की समाप्ति पर हम बीकानेरी इक्का में सवार होकर पार्कों, सड़कों और भवन-पंक्तियों के, जो महाराजा साहब के परिवार में किसी विवाहोत्सव के कारण विशेष रूप से सजाये तथा प्रदीप्त किये गये थे, बीच से होकर अत्यानन्द का अनुभव करते हुये गये।

अगले दिन बीकानेर के सरकारी गजट में प्रकाशित करने के उद्देश्य से मेरे कल के भाषण को लिखने के लिये ठाकुर साहब के दफ्तर से प्रतिनिधि लघुलेखक को साथ लेकर आये। जब मेरे भाषण की टाइप की हुई प्रतिलिपि मुझे दिखाई गई तो ज्ञात हुआ कि उसमें अनेक अशुद्धियां रह गई थीं; अतः मुझे एक दिन और रुकना पड़ा और मैंने चलते समय अपनी संशोधित भाषण प्रतिलिपि उन्हें दे दी। इस दिन का भी अन्य प्रकार से सदुपयोग किया गया। बीकानेर में अनेक आयुर्वेदीय कार्य और धर्मार्थ संस्थायें हैं। सरकार ने भी ग्रामों में आयुर्वेदीय चिकित्साव्यवस्था के अतिरिक्त बीकानेर में एक आयुर्वेदीय कालेज खोलने की स्वीकृति दे दी है। प्रातःकाल हम प्राचीन राजभवन, दुर्ग और देवमन्दिरों की ओर आकर्षित हुये। ऊंचाई पर से देखने से नगर बड़ा सुन्दर लगता है। ऊंट की सवारी का भी सुझाव किया गया। बीकानेर की सड़कों और गलियों में ऊंट उसी तरह मिल जाते हैं जिस तरह अन्य शहरों में मोटर बसें और रिक्शा मिल जाते हैं। ये 'रेगिस्तानी जहाज' मनुष्य को हर समय इस बात को याद दिलाते रहते हैं कि वह रेगिस्तानी शहर में है। महाराजा साहब से भेंट करने का अवसर भी ढूँढ़ा गया। क्योंकि बीकानेर में आयुर्वेद का कालेज स्थापित होने वाला है, अतः शुद्ध आयुर्वेद का पक्ष उनके सामने रखना था। एक बात और बड़ी गम्भीर थीं, जो उनसे कहनी थी। जर्मनी के एक निर्वासित यहूदी ने, जो राज्य का प्रधान चिकित्साधिकारी (Chief Medical Officer) है, एक पुस्तिका प्रकाशित करके आयुर्वेद का अपमान किया था, जिसकी सूचना वहां के वैद्यों ने मुझे दे दी थी। आयुर्वेद-व्यवसाय का तत्कालीन प्रमुख होने के कारण मुझे यह मामला महाराजा साहब के सामने रखना था। दोपहर को श्रीसर्वजनहितैषी औषधालय का निरीक्षण किया। सायंकाल वैद्य श्री दीनानाथ व्यास पारीख का निमन्त्रण स्वीकार करके उनकी श्री धन्वन्तरि रसायनशाला का निरीक्षण किया और उनको महासम्मेलन का आजीवन सदस्य बना लिया।

७ मार्च को धर्मार्थ संस्था श्री कृष्ण आयुर्वेद औषधालय का निरीक्षण किया। ये संस्थायें प्रायः उन सेठों द्वारा स्थापित की गई हैं जो बंगाल में उद्योगपति बन कर धनकुबेर होगये हैं। एक मित्र ने यह ठीक ही कहा था कि "कलकत्ता बीकानेर में है।" रात्रि को राज्य के महकमा खास की ओर से निम्नलिखित सूचना प्राप्त हुई — "मुझे बड़े दुःख के साथ यह कहना पड़ता है कि कुछ राजकीय अतिथियों के आजाने, आवश्यक कार्यों के लिये पहले ही समय निश्चित हो जाने, तथा अन्य कार्यों के अति बाहुल्य के कारण महाराजासाहब आपसे न मिल सकेंगे।"

दूसरे दिन मध्यान्ह के समय वैद्य चन्द्रशंकर जी मुझे राजगुरु श्री शङ्कर भारती जी के यहां ले गये। महन्त जी ने मुझे और मेरे द्वारा प्रतिनिहित पक्ष को सपुष्पमिष्टान्न आशीर्वाद दिया तथा १०१) की एक थैली प्रदान की, जिससे मैंने उन्हें महासम्मेलन का आश्रयदाता सदस्य बना लिया।

मध्यान्होत्तर काल में बीकानेर का कार्यक्रम सफलतापूर्वक समाप्त करके मैंने जयपुर के लिये प्रस्थान किया। विदा होते समय महन्त रामनारायण जी ने इस बात के लिये दुःख प्रकट किया कि मैं दो एक दिन और न ठहरा। चलने से पूर्व मैं गवर्नमेंट हाई स्कूल के हैडमास्टर से मिला। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीकानेर में विद्यापीठ के परीक्षा केन्द्र का बड़ी उत्तमता से परिचालन कर रहे हैं। वे इस बात में मुझ से सहमत थे कि केन्द्र का प्रबन्धभार वैद्यों को ही लेना चाहिये। इसके अतिरिक्त मैंने इस बात के लिये भी आग्रह किया कि स्थानीय वैद्यसभा को महासम्मेलन से सम्बद्ध हो जाना चाहिये, जिसका मुझे यह निराशाजनक उत्तर मिला कि उस दशा में वैद्यबन्धुओं में ईर्ष्या-द्वेष की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक है। मुझे यह ज्ञात करके अति दुःख होता है कि हम अपनी इज्जत के प्रश्न को सर्वोपरि नहीं समझते।

रेलगाड़ी में अत्यन्त भीड़ के कारण जयपुर-यात्रा सुखकर न रही। गाड़ी दोपहर को जयपुर पहुंची। स्वामी जयरामदास जी राजपूताना प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल के मन्त्री के साथ स्टेशन पर मौजूद थे। हमें स्व० स्वामी लक्ष्मीराम जी की हवेली में लेजाकर बड़े आराम से ठहराया गया। स्वामी जयरादास जी ने सब प्रकार का सत्कार किया। प्रा० आयुर्वेदमण्डल के मन्त्री श्री निरंजन जी ने हमारी सेवा में कोई त्रुटि नहीं होने दी। जयपुर-यात्रा प्रधानतया एक मनोरंजन-यात्रा थी, फिर भी वह बड़ी सफल रही। वहां मेरे अवस्थान के ५ दिन प्रायः इस्ततः भ्रमण, दृश्य-दर्शन एवं प्रिय 'अकिञ्चित्करण' में ही बीते। आयुर्वेद की सेवा में लगने वाले मेरे इस समय के व्यर्थ नष्ट होने के अपराध का मैं अनुभव करता हूं। अथवा, जैसा कि स्वामी मंगलदास जी ने कहा, मेरी यह यात्रा निष्फल नहीं समझी जानी चाहिये तथा मेरा अनुभव प्रान्तीय मण्डल की, जो केवल दो वर्ष से स्थापित है, और जिसको बिलकुल स्थानीय समर्थन प्राप्त नहीं है, उन्नति के लिये उपाय निकालने में कारण बन सकता है। राजवैद्य नन्दकिशोर जी ने भी, जिन्होंने मेरी भेंट के लिये ५ मिनिट का समय देकर बड़ी उदारता दिखाई, इस बात का समर्थन किया। उन्होंने बताया कि जयपुर में आयुर्वेद का अर्थ है तीन व्यक्ति — वे स्वयं, स्वामी जयरामदास जी, तथा स्वामी मंगलदास जी। स्वामी जयराम दास जी एक विवाहोत्सव में भाग लेने के लिये बाहर चले गये थे। लौटने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि किसी सभा अथवा भेंट का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ था। स्वामी मंगलदास जी मेरे पास दो तीन बार आये थे। उनका कहना था कि जयपुर का सार्वजनिक जीवन इतना निर्जीव है कि आप जैसे व्यक्ति के शुभागमन के अवसर पर किये जाने योग्य कार्यों के लिये लगभग १ मास की तैयारियों की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस समय विवाहादि के दिन हैं, जिससे सभा आदि की आयोजना में बाधा होती है। फिर भी उन्होंने प्रान्तीय मण्डल के मन्त्री को परामर्श दिया कि वे वैद्यों को सभापति जी से भेंट करने के लिये सूचना निकाल दें। स्थानीय वैद्यसभा के कर्णधार ने इसे भी असम्भव बताया। ऐसी सूचनाओं से कम से कम वैद्यबन्धुओं को यह पता चल गया कि महासंमेलन-प्रधान आये थे; मिलने के लिये वे चाहें आये या न आये। संगठन की दिशा में यह भी कुछ न कुछ हुआ ही। मंगलदास जी ने भी यह स्वीकार किया। मेरी अन्तिम निराशा पर स्वामी जयरामदास जी को हार्दिक दुःख हुआ। यदि मैं राज० प्रा० वैद्यमण्डल पर निर्भर न रह कर स्वतन्त्र रूप से जयपुर जाता तो कम से कम वैद्यों के सम्पर्क में आने में तथा दीवान-साहब से भेंट करने में अवश्य समर्थ हो जाता जिसका परिणाम आयुर्वेद के लिये हितकर होता। कुछ मित्रों का कहना है कि अहमदाबाद की भांति जयपुर को भी मेरी आवश्यकता नहीं थी। परन्तु दोनों स्थानों में अन्तर था। यदि यह कथन सत्य है तो, अहमदाबादवालों के व्यवहार के विषय में तो कोई सन्देह ही नहीं था, और मैं पहले से ही यह जान गया था कि मुझे क्या करना चाहिये, तथा कुछ न कुछ किया ही। परन्तु जयपुर के निमन्त्रण-संकेत से मैं भ्रान्त हो सकता था। कुछ भी हो, मैं कम से कम एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र की वस्तुस्थिति को तो जान ही गया। असफलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी सफलता का बीज अन्तर्निहित रहता है। मुझे इस बात से भी बड़ी प्रसन्नता है कि मैं जयपुर की प्रतिष्ठित व्यक्तित्रयी के सीधे सम्पर्क में आगया, तथा स्वामी मंगलदास जी के साथ संगठन एवं शुद्ध आयुर्वेद सम्बन्धी वार्तालाप विशेषतया रोचक था। स्वामी मंगलदास जी का कहना था कि महासम्मेलन केवल अपनी सम्बद्ध संस्थाओं से वार्षिक शुल्क इकट्ठा करने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझे, बल्कि अपने विस्तार तथा क्रियाशीलता के लिये कार्यक्रम तैयार करके उनका मार्ग प्रदर्शन करे। उन्होंने बताया कि कैसे स्व० स्वामी लक्ष्मीराम जी को आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में एलोपैथी के विषयों को सम्मिलित करने के पक्ष में प्रभावित किया गया था, तथा कैसे वे अपने पूज्य गुरु जी के जीवनकाल में ही उनसे भिन्न सम्मति रखते थे। जब मैंने उनसे यह निवेदन किया कि आप जयपुर को राज० प्रान्तीय मण्डल का केन्द्र बना कर प्रान्तीय संगठन का कार्य आरम्भ कर दीजिये तो उन्होंने यह कह कर अपनी असमर्थता प्रकट की कि न तो मैं इसके योग्य हूँ, और न मेरा स्वास्थ्य ही अच्छा है, तथा अपनी सस्था के कार्यों से भी अवकाश नहीं मिलता। उन्होंने यह भी कहा कि मेरा परिस्थिति का अध्ययन यह बताता है कि यहां के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में भी इतनी त्याग-भावना नहीं है जो आपकी लम्बी चौड़ी मांग की पूर्ति के लिये समय दे सकें। निरंजन जी ने स्वामी जी के दादू आयुर्वेदविद्यालय तथा स्व० स्वामी लक्ष्मीराम जी के निभृत-उद्यान-निवासको दिखाने की व्यवस्था की। प्रतिदिन मैं इसी आशा में रहता था कि मेरे आगमन के उपलक्ष्य में कुछ न कुछ जरूर होगा। परन्तु जब सब आशायें नष्ट हो गईं, तो मैं विचलित हो गया और स्वामी जयरामदास जी पर अपना रोष प्रकट किया। इस आत्म–विस्मृति के लिये मुझे अत्यन्त पश्चात्ताप है, तथा मेरे पक्ष के समर्थन में चाहे कुछ भी युक्तियां हों, मैं स्वामी जी से सहस्रशः क्षमा-याचना करता हूँ। व्यवहार में मैं शान्त और दृढ़ रहने के लिये प्रसिद्ध हूँ। लगभग दो घण्टे में मैं शान्त हो गया। १३ मार्च को प्रातः काल मैंने कहा कि मेरा आपे से बाहर हो जाना इस बात का प्रमाण है कि वातावरण मेरे अनुकूल नहीं है, अतः मुझे सामान सहित आपका आतिथ्य–आश्रय छोड़ देना चाहिये तथा अपने मित्र वैद्य नारायणाचार्य के, जो बंगाल-सगठन के समय कलकत्ते में मेरे साथ थे तथा अब यहां अपने घर पर ठहरे हुए हैं, निवास-स्थान पर एक दिन शान्ति से बिताना चाहिये। स्वामी जी मुझे जाने से तो नहीं रोकते थे परन्तु जिस ढंग से मैं उनसे विदाई ले रहा था उसमें उनको आपत्ति थी। अतः अपने मित्र के साथ मैं चला तो गया, परन्तु रात को फिर आना पड़ा। प्रातःकाल प्रस्थान करना था। वैद्य नारायणप्रसाद जी को जितने घण्टों का समय मिला, उतने ही घण्टों में उन्होंने अपने यहां वैद्यों की एक सभा का आयोजन कर डाला। सायंकाल एक एक करके लगभग दस वैद्य मुझसे भेंट करने आये और मेरे साथ दिल खोल कर विचार विनिमय किया। अधिकांश वैद्यों ने जयपुर की वैद्यसभा तथा मण्डल की शिकायत की। मैंने उत्तर दिया कि आपकी उदासीनता ही संगठन न होने में उत्तरदायी है। आप लोग वास्तविक प्रान्तीय मण्डल की स्थापना का उद्योग कीजिये तथा जयपुर की परम्परा की रक्षा कीजिये। १४ मार्च को प्रातःकाल स्वामी जयरामदास जी ने स्वामी लक्ष्मीराम ट्रस्ट के प्रकाशन मुझे भेट किये तथा कुछ जलपान करा कर मेरी निराशा के लिये दुःख प्रकट करते हुए एवं मेरी आशाओं की पूर्त्ति का विश्वास दिलाते हुये, हमें बिदा किया। चलते समय मेरे अन्दर कोई दुर्भावना न थी। यदि कोई व्यक्ति मुझे न भी चाहे तो भी मुझे उसकी कुछ चिन्ता नहीं। मैं तो इस आशा से अपने कर्त्तव्य का पालन करता रहूँगा कि आज बोया हुआ बीज कल उगेगा। मैं अपने जयपुरी मित्रों के अपनी यात्रा जन्य रोष को समाप्त करके सुख का अनुभव कर रहा हूँ।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद के परीक्षार्थियों को आवश्यक-सूचना

सभी स्थानों की आयुर्वैदिक परीक्षाओं में शत प्रतिशत सफलता के लिए हम आचार्य श्री-नित्यानन्दजी सारस्वत शास्त्री, साहित्यरत्न, प्रधानाध्यापक, बिरला आयुर्वेद विद्यालय, पिलानी से 'आयुर्वेदीय छात्र हितकारी ग्रन्थमाला' लिखवा रहे हैं। लेखक ने जयपुर राजकीय एवं विद्यापीठकी आयुर्वैदिक परीक्षाओं के सर्वप्रथम (प्रथमश्रेणी में) एवं विविध विषयों की करीब ३० परीक्षाओं में सफलता पाकर भी आज तक तृतीय श्रेणी नहीं ली है। उनकी छात्रावस्था, अध्यापन एवं परीक्षकत्व के अनुभवों सहित सटीक लघुत्रयी पर लिखे पांचों भाग प्रेस में हैं। प्रचार के लिये मूल्य बहुत कम होगा। पं० रूपराम जी शास्त्री, पो० पिलानी (जयपुर राज्य) के पते पर आठ आने पेशगी भेजकर माला के स्थायी-सदस्य बनने वालोंको सभी पुस्तकें पौने दामों पर मिलेंगी। किसी भी आयुर्वैदिक औषधिके लिए हमें लिखिए।

पता—मैनेज़र, आनन्द आयुर्वैदिक फार्मेसी, पो० पिलानी (राजपूताना)

महेशानन्द एण्ड सन्स, **नन्दप्रयाग—गढ़वाल**
शिलाजीत विशेषज्ञ **(यू० पी०)**

प्रिय महोदय, हमारा कार्यालय अपने उत्कृष्ट शिलाजीत के लिए समस्त भारतवर्ष में पिछले ५० वर्षों से सुविख्यात है। यह वही कार्यालय है जिसमें सन् १८९४ ई० से निरन्तर शुद्ध शिलाजीत आयुर्वैदिक पद्धति से तैयार किया जाता है। यही कारण है कि अनेक विक्रेताओं के होते हुए भी हमारे शिलाजीत की शुद्धता व श्रेष्ठता का लोहा सारा देश मानता है और प्रमाणस्वरूप हजारों वैद्यों, डाक्टरों, संस्थाओं व मान्य सज्जनों के प्रशंसापत्र हमारे यहां सुरक्षित रक्खे हुए हैं।

अपने कार्यालय के स्वर्णजयन्ती के सुअवसर पर हमने उत्तम शिलाजीत का मूल्य घटाकर २०) सेर कर दिया है। इस सुविधा से अनेक वैद्य व औषधालय अनुपम लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक बार परीक्षार्थ मंगाकर इस दिव्य महौषधि के प्रचार करने की कृपा करें।

विशेष विवरण जानने के लिये सूचीपत्र मंगाइये। कृपाकांक्षी—गोविन्दप्रसाद नौटियाल

छप गया ! श्रीमान् माधवाचार्यकृत **छप गया !**

आयुर्वेदाचार्य श्रीगुलराज शर्मा मिश्र कृत अर्थविद्योतिनी तथा भावार्थप्रकाशिनी संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेदप्रकाश

यह एक ही अध्याय की टीका नहीं है किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ (छठों अध्याय) की ऐसी सरल टीका है कि इसके पढ़ने वाले छात्र आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदविशारद और आयुर्वेदभिषक् परीक्षाओं को सहज में पास कर सकते हैं। वस्तुतः यह टीका इसलिए लिखी गई है कि आयुर्वेद महाविद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों के अध्यापन और अध्ययन में अच्छी सहायता दे सके। इन टीकाओं से विभूषित इस एक ही ग्रन्थ के पास रहने से रसकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसेन्द्रसारसंग्रहादि किसी भी रसग्रन्थ की आवश्यकता नहीं रहती। विद्वान् टीकाकार ने नाना तन्त्रों के उद्धरण दे देकर विषय को नितान्त स्पष्ट कर दिया है। हाथ कंगन को आरसी क्या ? इस ग्रन्थ की विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इतने पर भी कागज की महंगाई आदि की ओर न देखकर इसका लागत-मात्र मूल्य ४) ही रक्खा गया है ताकि अध्यापकों एवं छात्रों को लाभ पहुंचे।

मिलने का पता—प्राणाचार्य श्री गोवर्धनदास शर्मा छांगाणी,
आचार्य—श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदमहाविद्यालय, सीताबर्डी, नागपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैत्रेयप्राश :— जिसे सिर्फ इसी रिसर्च इन्स्टिट्यूट ने प्राचीन अर्वाचीन मिश्रित वैज्ञानिक ढंग से तैयार करवा कर, युद्ध के सबब बहुत सारी चीजें न मिलने से रह जाने वाली कमियों के कारण हजारों वर्षों से प्रसिद्ध रसायन आधुनिक च्यवनप्राश में उन चामत्कारिक बलवर्धक गुणों के न होने से निराश जनता की सेवामें उपस्थित करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। कौन २ औषधिविशेष किस २ अंगविशेष पर क्या प्रभाव डालती है और किस अंगविशेष की कार्यरचना में कैसे सहायक होसकती है—इस बात का पूर्ण ध्यान रखते हुए यह च्यवनप्राश जैसी प्रणाली से निर्मित महान् उच्चतम रसायन है—

जो कि आज गत कई वर्षों से आयुर्वेदिक रसायनों पर आक्षेप करने वालों को मुंहतोड़ जवाब देकर अपने चामत्कारिक गुणों के ही कारण फिर से सिद्ध रसायनों की उसी प्राचीन गुण गौरवित पताका को लहराता हुआ सैकड़ों तपेदिक के बीमारों को मौत के मुंह से बचाकर दमा, हर किस्म की खांसी, नजला, पुराने ज्वर तथा वीर्य विकारों से क्षीण से क्षीण प्रत्येक युवा नर, नारियों के हृदय, मस्तिष्क, फेफड़े, यकृत्, प्लीहा और पेट की सारी खराबियों को दूर करता हुआ स्नायुमण्डल को वलिष्ठ बनाकर नपुंसकत्व जैसी घोरतर बीमारियों को भी जड़ से उखाड़कर बाजीकरणों का सरताज यह मैत्रेयप्राश आज हजारों निराश रोगियों को जीवन दान दे रहा है।

खासकर उन बहिनों के लिये यह बेजोड़ महौषधि सिद्ध होचुकी है जिनको बच्चा पैदा होने के बाद खून की कमी, हर प्रकार के दर्द, प्रदर (ल्युकोरिया) और प्रसूत ज्वर से अपनी और अपने बच्चे की खुशहाल जिन्दगी से मायूस रहना पड़ता है। इस प्राश को उचित मात्रा में हरकिस्म की प्रकृति वाला मनुष्य सर्दी, गर्मी, वर्षा हर ऋतु में खा सकता है। कीमत २१ दिन की ४२ खुराकों को सिर्फ ४) है। डाकखर्च अलग।

पता—दी मैत्रेय आयुर्वेदिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट, एन० डब्ल्यू आर०, छहरटा, अमृतसर।

आयुर्वेदिक परीक्षाओं तथा चिकित्सा में सफलता प्राप्त करने के लिये

(१) **आयुर्वेदप्रकाश** (दो विस्तृत संस्कृत हिन्दी टीकाओं सहित)—आयुर्वेदमहासम्मेलन से स्वर्णपदकविभूषित। भिषक्, विशारद तथा आयुर्वेदाचार्य के रसशास्त्र के प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण होने के लिये परमोपयोगी ग्रन्थ है। अन्त में रसशास्त्र के प्रश्नोत्तर भी दिये हैं। पृ० सं० ७००, मू० ४)।

(२) **आयुर्वेदिक प्रश्नोत्तरावली** —भिषक्, विशारद तथा आयुर्वेदाचार्य परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होने के लिये यह परम सहायक पुस्तक है। मू० ४)

पता—वाइस प्रिंसिपल पं० सोमदेव शास्त्री, साहित्यायुर्वेदाचार्य ए०एम०एस०,
ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज, पीलीभीत (यू० पी०)

आयुर्वेदसेवासंघ, अहमदनगर के ३ उत्कृष्ट चिकित्साग्रन्थ।

—✶✶✶—

१—**आयुर्वेदीय औषधिगुणधर्मशास्त्र** (हिन्दी में)
ले०—वै० पं० गुणेशास्त्री, पृ० सं० १५०, मू० १।।), पो० ।=)।

२—**निविड़क रुग्ण चिकित्सा** (मराठी में)
२२९ रोगियों की चिकित्सा, पृ० सं० २६२, मू० ३), पो० ।।–)।

३—**क्षयरोग चिकित्सा** (मराठी में)
२१ वैद्य डाक्टरों के अनुभव। पृ० सं० २२५, मू० २।।), पो० ।।–)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ लाख का दान !

इस विज्ञप्ति को पढ़ कर वैद्य समाज को तथा जनता को अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि **मुरारि एण्ड कम्पनी, मुरारि कैमीकल एण्ड फार्मेस्युटिकल वर्क्स** तथा **मुरारि विद्यालय** के संस्थापक और **विश्वहितैषी औषधालय** के प्रधान चिकित्सक तथा संस्थापक कविराज श्री **पं० धर्मेन्द्रनाथ शर्मा** शास्त्री, व्याकरणतीर्थ, आयुर्वेदाचार्य-धन्वन्तरि ने ऐसे समय में जब कि प्रत्येक वस्तु का दाम १० गुना अधिक बढ़ गया है वैद्यसमाज को तथा जनता को १ लाख द्राक्षासव की बोतलें १।) प्रति बोतल के हिसाब से बेचना स्वीकार किया है। वैद्यसमाज स्वयं जानता है कि घर में भी द्राक्षासव १।) में नहीं पड़ता। अगर बहुत बड़ी तादाद में बनाया जाय तब घर में इतनी लागत आती है। यह आयुर्वेद-संसार के लिये शास्त्री जी का महान् त्याग व दान है।

निम्नलिखित शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक औषधियां भी इतने ही स्वल्प मूल्य में बेची जावेंगी :—

रस सिन्दूर	२।।) तोला	च्यवनप्राश अष्टवर्ग सहित	५) प्रति सेर
स्वर्णवंग	२।।) तोला	लोहासव	१।) प्रति बोतल
		अशोकारिष्ट	१।) प्रति बोतल

मुरारि एण्ड कम्पनी की पेटेन्ट औषधियों को भी इतने ही स्वल्प मूल्य में बेचने का निश्चय किया गया है। उदाहरणार्थ— मुरारि का बालामृत, जिसका मूल्य युद्ध से पूर्व ।।।) और युद्धकाल में १) प्रति शीशी रहा है, अब केवल ।।=) में दिया जायगा। १ ग्रोस (१४४ शीशी) का मूल्य ७२) होगा।

नोट—(१) यह रियायत केवल ३१ मई १९४५ तक ही दी जायेगी। बाद में आये हुए आर्डर वापस किये जायेंगे। हम अपने नियमों का सख्ती से पालन करते हैं।

(२) द्राक्षासव, लोहासव तथा अशोकारिष्ट १२ बोतल से कम नहीं भेजा जायगा। इसी प्रकार च्यवनप्राश १ सेर से कम नहीं भेजा जायगा।

(३) आर्डर भेजते समय २) पेशगी भेजने होंगे जो वी० पी० में मुजरा कर दिये जायेंगे।

हमारी विशेषता—

हमारी बनाई हुई शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक औषधियों को १२ प्रान्तों के २५ उद्भट विद्वान् तथा औषधिनिर्माणकला के विशेषज्ञ जब परीक्षण करके हमें औषधियों की विशुद्धता तथा ठीक शास्त्रोक्त विधि से बनी हुई होने का लिखित प्रमाण-पत्र दे देते हैं तभी हम उन्हें ग्राहकों को बेचते हैं। हमारी इस समिति के अध्यक्ष आयुर्वेद-संसार के प्रसिद्ध विद्वान् वयोवृद्ध श्री पं० घनानन्द जी पन्त विद्यार्णव हैं।

माल मंगाने का पता—

मुरारि एण्ड कम्पनी, कूंचा पातीराम,

देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिये एक अनुपम औषधि—

❋ महिलाजीवन- रस ❋

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, कानपुर इस अपूर्व औषधि को बहुत दिनों से बना कर काम में ला रहा है। सैकड़ों रुग्णायें इसे सेवन कर मनोवांछित लाभ उठा चुकी हैं। आयुर्वेद की महातम औषधि का अधिकाधिक प्रचार हो इसलिये इसकी निर्माण विधि पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है:—

निर्माण विधि—हीरा भस्म ५ रत्ती, पन्ना भस्म ६ रत्ती, माणिक्य भस्म ७ रत्ती, पुखराज भस्म ८ रत्ती, नीलम भस्म ९ रत्ती, वैडूर्य भस्म १० रत्ती, गोमेद भस्म ११ रत्ती, मोती भस्म १२ रत्ती, प्रवाल भस्म १३ रत्ती, वैक्रान्त भस्म ७॥ तोला, स्वर्ण माक्षिक भस्म ७॥ तोला, रौप्य माक्षिक भस्म ७॥ तोला सब को एक में पीसे और सबसे तिगुना सम भाग पारा गंधक से बना कज्जली रस डाल बकरी के दूध से घोट सुखा पर्पटी बनाले। फिर इसको बांझ ककोड़े के काढ़े से पीस सुखा सकोरे में बन्द कर २० विनवा कण्डों की आंच में फूंके। इस प्रकार १६ दफे इसी के काढ़े से पीस कर फूंके। बस औषधि तैयार हो गई।

यह औषधि आयुर्वेद की अनुपम देन है। स्त्रियों के लिये इससे अधिक अमृत स्वरूप औषधि अब तक ईजाद ही नहीं हुई है। प्रदर, प्रसूत, मासिक धर्म की खराबियां, गर्भाशय की खराबियां, स्त्रियों की किसी भी कारण से उत्पन्न कमजोरी को ठीक करने में इसकी शानी की कोई भी औषधि है ही नहीं। जिनके बच्चा नहीं होता उनके पेट (उत्पादक अङ्गों) की तमाम खराबियों को दूर कर गर्भ स्थापन योग्य कर देता है। जिससे अवश्यमेव सन्तान होती है। गर्भावस्था में इसको सेवन करते रहने से गर्भपात नहीं होता, बच्चा पैदा होते समय अधिक कष्ट नहीं होता, साथ ही बच्चा पुष्ट, दीर्घायु, देखने में सुन्दर और बुद्धिमान् पैदा होता है। अतः ऐसी स्त्रियों के लिये जिन्हें गर्भपात हो जाता है या बच्चे नहीं जीते अथवा बच्चा होने के समय अत्यन्त तकलीफ होती है उनके लिये तो यह एक ईश्वरीय देन है। इसके सेवन करने वाली स्त्री को बुढ़ापा के लक्षण देर में प्रगट होते हैं तथा जोरदार नहीं होते, क्योंकि यह एक उत्कृष्ट रसायन है। स्त्रियों को हर अवस्था हर मौसम में पूर्व लाभप्रद है। बनाकर लाभ उठाइये। यह आयुर्वेद का शास्त्रीय योग है, जिसे आश्रम ने नाम की सुविधा के लिये महिला जीवन रस नाम से पेटेन्ट औषधि के रूप में प्रचारित किया है। आश्रम इस औषधि की ४० मात्रा की १ शीशी ९) में और ३ शीशी २६) में देता है। वैद्य मात्र से अनुरोध है कि अमृत स्वरूप इस औषधि को बनाकर यश लाभार्थ अवश्य प्रयोग करें। कोई बात मालूम करनी हो तो नीचे पते से पत्र व्यवहार करें।

उच्च श्रेणी की आयुर्वेदीय तथा पेटेन्ट औषधियों के निर्माता—

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, २७ कानपुर।

वैद्यों को अत्यधिक रिआयत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार का पता— 'साधना' ढाका। टेलीफोन—१२२ ढाका।

महान् वैज्ञानिक का

आयुर्वेद को दान।

आयुर्वेद का पुनरुद्धार और देशविदेशों में प्रचार।

अब वैद्यों को स्वयं औषधियां तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। साधना औषधालय हर समय उनकी सेवा के लिए तैयार है। यहां पर शुद्ध शास्त्रीय विधि से औषधियां तैयार की जाती हैं और उचित मूल्य पर बेची जाती हैं। महायुद्ध के कारण भी औषधियों के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई। वैद्यों को चाहिये कि वे दवाइयां बनाने के झंझट में न पड़ कर अपना समय और दिमाग रोगियों की चिकित्सा में लगावें।

साधना की सभी शाखाओं में रोगियों को चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श मुफ्त दिया जाता है।

अध्यक्ष—डा० योगेशचन्द्र घोष एम.ए.
आयुर्वेदशास्त्री, एफ०सी०एस०(लन्दन),
एम० सी० एस० (अमेरिका),
भागलपुर कालेज के केमिस्ट्री के
भूतपूर्व अध्यापक।

साधना औषधालय ढाका (बंगाल)

(शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों की प्रसिद्ध निर्माणशाला)

सारे संसार में इसकी शाखायें और एजेन्सियां हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Reg. No. L.—5082

आपकी शुभाशीर्वादयुक्त शुभ कामना

के लिये

अपका प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

कलकत्ता

सन् १८८४ ई० में संस्थापित होकर सन् १९४४ ई० की समाप्ति पर ६० वर्षों की सेवाओं के बाद "हीरक जयन्ती" के स्मरणीय अवसर पर आदरणीय आयुर्वेद के कर्णधार, प्रत्येक भारतीय वैद्य, आयुर्वेद हितैषी, आयुर्वेद पत्रकार, आयुर्वेदिक औषधालय, आयुर्वेदिक पुस्तकालय, आयुर्वेदिक विद्यालय, आयुर्वेद शिक्षक, आयुर्वेद विद्यार्थी तथा विभिन्न आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से आयुर्वेद की निरन्तर सेवा के हेतु

प्रोत्साहन प्राप्ति के लिये

प्रार्थना करता है।

कृपया शुभाशीर्वाद प्रेषित कर अनुग्रहीत करें।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि० कलकत्ता

युद्धकालीन प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ—देवघर (S. P.)

शाखाएं—

(१) हाथरस (U. P.) (२) नागपुर (C P.)

सेलडिपो—

पटना (Bihar)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशक—क० आशुतोष मजुमदार, नई देहली। मुद्रक—अर्जन प्रेस, देहली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्री धन्वन्तरये नमः ❀ रजिस्टर्ड नं० एल०—५०[illegible]

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका

(भारतीयायुर्वेदमहासम्मेलनाज्ञया प्रतिमासं प्रकाश्यते)

प्रधान सम्पादक :— कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि
एम० आर० ए० एस०, नई देहली।

सम्पादक :— रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य।

वर्ष ३२
अङ्क ५

देहली, मई १९४५ ई०

वार्षिक मूल्य ५)
यह अङ्क ॥)

❀ लेख-सूची ❀

१ सम्पादकीय। ३
२—हम इन सांपों को जानते थे। (ले०-श्री रामेशवेदी) ५
३—अ० भा० आ० महासम्मेलन-स्थायीसमिति के प्रथम अधिवेशन की कार्यवाही। ९
४—आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा। १५
५—गांधी जी के पत्र का उत्तर। १८
६—नूतन समाचार। १९
७—विद्यापीठ की सूचनायें। २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागार्जुन

—ने—

अनेक शताब्दी पूर्व अपनी अलौकिक और असाधारण प्रतिभा के बल से गतगौरव आयुर्वेद को पुनः प्रतिष्ठापित किया था।

—आज—

आयुर्वेद फिर स्खलित-गौरव, हतमान और विपर्यस्त हो गया है अतः नागार्जुन के पवित्र नाम की ध्वजा लेकर,

कर्मकुशल और लब्धप्रतिष्ठ वैद्य

पाश्चात्यशिक्षानिपुण चिकित्सक

—एवं—

रसायनशास्त्र-निष्णात वैज्ञानिक

की देख-रेख में परिचालित

नागार्जुन आयुर्वेद रिसर्च इनस्टिट्यूट

—ने—

आयुर्वेद की सेवा में आत्मनियोग किया है !

विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधियां प्रस्तुत करने के कारण इस संस्था को बत्तीसवें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से प्रथम श्रेणी का प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ है।

औषधि-परिचय बिना मूल्य भेजा जाता है !

कार्यालय का पता—

४, बेलियाघाटा मेनरोड, कलकत्ता।

रसशाला का पता—

दमदम कैंट, (बंगाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज प्रकाशित अत्युत्तम वैद्यक ग्रन्थ

१—**सचित्र रसरत्नसमुच्चय**—अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित ५)

२—**मेघविनोद**—सरल हिन्दी। आयुर्वेद का अपूर्व ग्रन्थ है, पहली बार छपा है ४)

३—**चरकसंहिता**—श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया तथा श्रीवाग्भट-शिष्याचोर्यवर-जेज्जटविरचितया निरन्तरपदव्याख्यया च संवलिता। आयुर्वेदाचार्येण श्री० पं० हरिदत्तशास्त्रिणा संशोधिता। दो जिल्दों में सम्पूर्ण। मूल्य ११)

४—**भैषज्यरत्नावलिः**— श्रीगोविन्ददासप्रणीता। कविराजश्रीज्ञानेन्द्रनाथमित्रैः संस्कृता परिवर्द्धिता च। आयुर्वेदाचार्य-कविराज-श्रीनरेन्द्रनाथशास्त्रिणा विरचितया रत्नोज्ज्वलाख्यया संस्कृतटीकया समलंकृता। मूल्य ८)

५—**चक्रदत्तः**—श्रीशिवदासेन कृतया तत्त्वचन्द्रिकासमाख्यया टीकया समलंकृतः। ३॥)

६—**त्रिदोषविमर्शः**—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गतत्रिदोष-वाक्यसंग्रहश्च। ले० पण्डितो धर्मदत्तः। मूल्य १॥)

७—**रसेन्द्रचूडामणिः**—श्रीसोमदेवविरचितः। मूल्य २)

८—**सुश्रुतसंहिता** (सचित्रा)—मूलमात्रम्। मूल्य ३)

९—**माधवनिदानम्**—मधुकोशव्याख्यया समुल्लसितम्, परिशिष्टनिदानेन च संयोजितम्। २॥

१०—**अष्टाङ्गहृदयम्** — विद्वद्वरश्रीमदरुणदत्तकृता सर्वाङ्गसुन्दराख्या टीका तथा मौद्गल्यटिप्पणी च। ६)

११—**रसहृदयतंत्रम्**—भगवद्गोविन्दपादविरचितं तथा मुग्धावबोधनीव्याख्यासहितम् २।)

१२—**रसेन्द्रसारसंग्रहः**—मूलमात्र, गुटका। १)

१३—**भावप्रकाशनिघंटु**—श्री पं० विश्वनाथजी कृत सरल हिन्दी अनुवाद। अनुवाद में कोई बात छूटने नहीं पाई। अत्यन्त विस्तृत तथा उपयोगी। ४॥)

१४—**चरकसंहिता**—श्री जयदेवविद्यालङ्कारकृत सरलहिन्दी अनुवादसहित। द्वितीयसंस्करण। सम्पूर्ण मूल्य २५)

१५—**योगरत्नाकर**—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। १५

१६—**भैषज्यरत्नावली**— श्री जयदेव विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीयावृत्ति। संपूर्ण पुस्तक १८०० पृष्ठों में समाप्त है। मू० १०), दो बढ़िया जिल्दों में।

१७—**गुणों का खज़ाना** — स्वा० परमानन्दकृत। इसमें अनेक आजमाये हुए फकीरी नुसखे हैं। २)

१८—**शल्यतन्त्र** (सचित्र)—श्री अत्रिदेवकृत, सरलहिन्दी में। शल्य (चीरफाड़ जर्राही) विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ। ४)

१९—**ज्वरतिमिरभास्कर**—कायस्थचण्डविरचित तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४)

२०—**सचित्र रसेन्द्रसारसंग्रह**—कविराज श्री विद्याधरकृत हिन्दी अनुवाद। जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण ६०० पृष्ठ। ४)

२१—**नवनावनीतक**—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सरलहिन्दी अनुवाद सहित। ३)

२२—**भावप्रकाश**—केवल ज्वराधिकार। श्री पं० हरिदत्त जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित १।)। इनके अतिरिक्त हमारे यहां सब प्रकार के चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत रियायत से मिलते हैं। प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता—

मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AYURVEDIC INJECTIONS

PREPARED AT INDIA'S PIONEER
AYURVEDIC LABORATORY.
(Established in A.D. 1914)

THE APOLLO PHARMACY

MANUFACTURING CHEMISTS
P.O. JHARIA, E. I. Rly.

Branches & Agencies:

Ahmedabad, Ajmer, Anjar-Cutch, Bagalkot, Bangalore City, Baroda, Bavla, Belgaum, Bhavnagar, Bombay, Botad, Broach, Cairo (Egypt), Cawnpore, Chhindwara, Chuda, Davangere, Devpur, Dhandhuka, Dhrol, Ilkal, Jammu, Jamnagar, Jodia, Kapadwanj, Karachi, Kosamba, Lahore, Lakhtar, Latur, Limbdi, Marwar-Mundwa, Mehsana, Morvi, Nadiad, Nairobi (East Africa) Nasik City, Palitana, Patan, Patna, Patiala, Rajkot, Raver, Srinagar-Kashmir, Secundrabad, Shiroda, Sihor, Surat, Visnagar, Wadhwan Camp and City.

Apollo injections are being used by many leading physicians and surgeons of India, who are interested in the Indian system of medicine. This is the only Indian laboratory well known for their high standard of accuracy and purity. Some leaders of Ayurvedic Congress have praised our products with open hearts.

Our products are available from your city agent at our fixed rates. They are highly beneficial and used with success by millions of people throughout India and abroad.

Medical practitioners get reasonable commission. For further details see our agent or write to the Pharmacy. We are writing to appoint more agents in non-represented areas.

आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स

दि अपोलो फार्मेसी, झरीया ई० आई० आर०

एपोलो आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स लाखों रोगियों पर परीक्षित किये गये हैं। अल्प मूल्य होने पर भी अधिक गुणकारी हैं। भारतवर्षके आयुर्वेदके महान् नेताओंने उनकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। आप अपने शहरके हमारे एजेण्टसे खरीद कर थोड़े व्ययमें ही आरोग्यता प्राप्त कीजिये। आपके यहां न मिलने पर फार्मसीसे मंगवालें। विशेष विवरण हमारे एजेण्ट द्वारा ज्ञात करें।

WAR—TIME BRANCH—OFFICE

The Apollo Pharmacy

Pratapganj, BARODA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

कविराज आशुतोष मजुमदार ।

केन्द्रीय आयुर्वेद विश्वविद्यालय की आवश्यकता

इस समय विश्वयुद्ध अपने अन्तिम दौर में है। युद्ध-समाप्ति के अनन्तर ही मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नानाविध परिवर्तन और उथल-पुथल होना स्वाभाविक है। आयुर्वेद-विज्ञान और आयुर्वेद व्यवसाय भी इस विश्वव्यापी उथल-पुथल से अछूते नहीं रह सकते। हमको इस उथल-पुथल के लिए अभी से तैयार रहना चाहिये।

सरकार के दृष्टिकोण को हम भली भांति जान गये हैं। अब तक उसकी नीति यह रही है कि आयुर्वेद को किसी भी तरह पनपने न दिया जाय। परन्तु भविष्य में वह इससे भी आगे बढ़ने वाली है। अब उसकी नीति यह होगी कि आयुर्वेद-पादप को समूल उखाड़ कर उसके स्थान पर ऐलोपैथी का वृक्ष आरोपित कर दिया जाय। इस नीति को अपनाने में सरकार केवल एक ही हेतु देती है और वह यह कि आयुर्वेद 'अवैज्ञानिक' है और सब वैद्य 'कठवैद्य' हैं। इस उक्ति के मूल में कुछ भ्रान्त धारणा और अधिकतर पक्षपात है। हमारा भी दोष कुछ न कुछ अवश्य है। हम अपने आपको सर्वज्ञ समझते हैं और आगे बढ़ कर समय के साथ चलने का प्रयत्न नहीं करते। हमको यह दोष दूर करना होगा, और संसार के सामने यह प्रमाणित करना होगा कि हमारा शास्त्र 'वैज्ञानिक' है तथा हम एक निश्चित सिद्धान्त पर रोग-परीक्षा करके चिकित्सा करते हैं। ऐसा करने से हम सरकार की भ्रान्त धारणा को दूर करने में समर्थ होजायेंगे। केवल 'पक्षपात' रह जायगा, उसकी हमें चिन्ता नहीं क्योंकि वह तो तब तक बना ही रहेगा जब तक हमारी अपनी सरकार न हो जायगी। उसको दूर करना हमारी शक्ति से बाहर की बात है। परन्तु जितना हम आसानी से कर सकते हैं, उतना तो करना ही चाहिये।

अब सोचना यह है कि हम अपने शास्त्र की वैज्ञानिकता किस प्रकार प्रमाणित कर सकते हैं। इसका एक मात्र उपाय यह है कि एक ऐसा केन्द्रीय आदर्श विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय जिसमें आयुर्वेदविज्ञान के अष्टांगों की पूरी शिक्षा दी जा सके और आयुर्वेद के स्नातकों को इस योग्य बनाया जा सके कि वे अपने चिकित्सा-कौशल से विरोधियों का मुख-मुद्रण करते रहें। जब तक हम ऐसे स्नातक तैयार न करेंगे, तब तक हम संसार के सामने अपने शास्त्र की उत्कृष्टता एवं वैज्ञानिकता प्रमाणित नहीं कर सकते।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि ऐसे स्नातक तैयार कैसे किये जा सकते हैं। जब योग्य अध्यापक ही नहीं तो योग्य स्नातक कहां से आयेंगे। विश्वविद्यालय भी स्थापित कर लिया जाय, तब भी जब तक योग्य और सुशिक्षित अध्यापक न होंगे तब तक विद्यार्थी योग्य और सुशिक्षित कैसे हो सकते हैं। वास्तव में यह प्रश्न बड़ा टेढ़ा है, परन्तु इसको निम्न लिखित विधि से बड़ी सरलता से हल किया जा सकता है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामण्डल को चाहिये कि वह कुछ योग्य और विद्वान् विद्यार्थियों को अध्यापनकार्य के लिये चुने और उनसे इस शर्त पर कि वे अध्ययनानन्तर कम से कम ५ वर्ष तक एक निश्चित वेतन पर विश्व-विद्यालय में अध्यापन--कार्य करेंगे, बोंड भरवाकर अपने व्यय से देश-विदेश में चिकित्साविज्ञान के ज्ञानार्थ भेजे। इन विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये देश की प्रमुख आयुर्वेदीय शिक्षासंस्थाओं में अध्ययन-केन्द्र रहेंगे, और प्रत्येक केन्द्र में एक निश्चित अवधि तक रहकर विद्यार्थी को ज्ञानोपार्जन करना होगा। इस प्रकार विभिन्न केन्द्रों में पढ़ने से विद्यार्थी को आयुर्वेद का संपूर्ण विशिष्ट ज्ञान प्राप्त हो जायगा। यही नहीं, भारतवर्ष में जहां कहीं भी कोई किसी अंगविशेष का विशेषज्ञ हो वहीं विद्यार्थी को शिक्षार्थ भेजा जायगा। इस प्रकार विभिन्न स्रोतों से आयुर्वेद के अष्टांगों का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थी अन्य चिकित्सापद्धतियों का सापेक्षिक अध्ययन (Comparative Study) करेगा और तदनन्तर अपने चिकित्साज्ञान की पूर्त्यर्थ विदेशों में भी जायगा। इस क्रम में ३, ४ वर्ष लग जायेंगे। इधर तीन, चार वर्ष में विश्व-विद्यालय भी स्थापित किया जा सकता है, और उसमें उन अध्यापकों को अध्यापनकार्य के लिये तुरन्त नियुक्त किया जा सकता है। समस्या को हल करने का इससे सरल और आशुफलप्रद और कोई उपाय नहीं है।

विश्वविद्यालय की स्थापना भी कोई साधारण काम नहीं है। परन्तु यह जितना कठिन प्रतीत होता है उतना कठिन नहीं है। यदि हम थोड़ा त्याग और उत्साह दिखावें तो बड़ी सरलता से २, ३ वर्ष में ही विश्वविद्यालय स्थापित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के स्थापित न होने में यह युक्ति दी जाती है कि हमारे पास धन नहीं है, परन्तु आज तक कोई भी विश्वविद्यालय अपने धन से नहीं बना। इसके लिये तो उद्योग और परिश्रमपूर्वक धन संग्रह करना होता है। हमारे आयुर्वेदराष्ट्रपति जी गत दो वर्षों से भारतवर्ष के प्रान्तों का भ्रमण कर रहे हैं और वहां आयुर्वेद का प्रचार कर रहे हैं। परन्तु यदि वे ५) या १००) के सदस्य बनाने के बजाय विश्वविद्यालय की योजना को सामने रख कर चलें तो ५) देने वाला ५००) और १००) देने वाला १००००) आसानी से दे सकता है। वे कई राजा-महाराजाओं से भी मिले हैं, विश्वविद्यालय के नाम पर एक एक महाराजा एक २ लाख रुपया आसानी से दे डालता। आयुर्वेदराष्ट्रपति जी से हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि वे इस बात पर तुरन्त ध्यान दें और विश्वविद्यालय के लिये धन संग्रह करना अपना प्रमुख लक्ष्य बनालें। वे धन-संग्रह के लिये एक कमेटी भी बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रान्तीय वैद्यमण्डल को यह अधिकार दिया जा सकता है कि वह ऐसी ही कमेटियां बनाकर धनसंग्रह करे। इस प्रकार चलने से सम्पूर्ण समस्यायें स्वयमेव सुलझ जायेंगी और हम पतन से बच जायेंगे। अन्यथा, पीछे पछताना ही होगा।

आगामी नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन की स्वागत-समिति।

हमें यह सूचित करते हुये परम हर्ष होता है कि नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का ३४वां वार्षिक अधिवेशन मंगलौर (कर्नाटक प्रान्त) में होगा। इसके लिये एक शक्तिशाली स्वागतसमिति का निर्माण हो चुका है, जिसके पदाधिकारी कर्नाटक प्रान्त के सम्पूर्ण जिलों के प्रतिनिधियों के रूप में निर्वाचित किये गये हैं। स्वागतसमिति के प्रधानमन्त्री श्रीयुत एम० आर० भट्ट, जेपू, मंगलौर, सम्मेलन की सफलता के लिये विशेष रूप से प्रयत्नशील हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम इन सापों को जानते थे

(ले०— श्री रामेश वेदी, लाहौर)

(गताङ्क से आगे)

राजिमन्तों की जातियां *

(८६) पुण्डरीक (सं० १८ देखें), (९०) अङ्गुलराजि—अंगुली की मोटाई के बराबर चौड़ी रेखायें जिस पर हों, अथवा एक २ अंगुल के फासले पर रेखाये हों। यह चितकौड़िया साँप हो सकता है। (९१) राजिचित्र—रेखाओं से चित्रित, धारीदार, (९२) बिन्दुराजि—रेखायें छोटे २ बिन्दुओं से बनी हों। धारियों के बीच बिन्दु हों। (९३) कर्दमक—दलदल वाले प्रदेशों या कीचड़ में रहने वाला, (९४) तृणशोषक—प्रचलित विश्वास के अनुसार इतना जहरीला कि अपने विष से या फूत्कार से घास को भी सुखा दे, (९५) सर्षपक—सरसों जैसी छोटी २ बिन्दियों वाला, (९६) श्वेतहनु—सफेद ठोड़ीवाला, (९७) दर्भपुष्पक (सं० १६ देखें), (९८) चक्रक—जिसके शरीर पर चक्र की तरह गोल निशान हों, (९९) गोधूमक—गोधूलिवेला (सायंकाल) में बाहर निकलने वाला अथवा गौओं के पैरों से बनी नरम धूल वाली सड़कों पर सायंकाल लेटने वाला। ये आदतें कौड़ियों में होती हैं। (१००) किक्किसाद—चातक पक्षियां (किक्कि) को खाने (साद) वाला।

सुश्रुत ने राजिमन्तों की दस जातियां लिखी हैं, परन्तु ये बारह होगई हैं। राजिचित्र, अंगुलिराजि और बिन्दुराजि को एक ही जाति की उपजातियां मानने से दस हो सकती हैं।

नारायणशर्मा* ने राजिल सांप १३ गिनाये हैं। उनमें से पुण्डरीक, कर्दम, तृणशोष, श्वेतहनु और चक्रक को सुश्रुत भी जानते थे। इन्होंने जिन नये राजिल साँपों का पता लगाया था उनके नाम ये हैं:—(१०१) अहिराज—साँपों का राजा, (१०२) चित्रक—चितकबरा, (१०३) सर्पप—सर्षपक (सं० ९५) का अपभ्रंश हो सकता है, अथवा सांपों को खाने (प—पीने) वाला। कौड़िये में यह आदत होती है। (१०४) लोध्रपुष्प (सं० ३३ देखें), (१०५) कल, (१०६) आक्षनाग, (१०७) लोहिताक्ष (सं० ६ देखें), (१०८) कृत्तिशर, (१०९) कृष्णराज—काला सर्पराज।

केरल देश के एक दूसरे लेखक * (तेरहवीं शताब्दी) ने भी राजिल सांपों की तेरह जातियां लिखी हैं। उसकी लिखी पुण्डरीक, चित्रक, कर्दम, तृणशोष, सर्पप, लोध्रपुष्प, चक्रक,

---

* राजिमन्तस्तु पुण्डरीको राजिचित्रोऽङ्गुलराजिर्बिन्दुराजिः कर्दमकस्तृणशोषकः सर्षपकः श्वेतहनुर्दर्भपुष्पकश्चक्रको गोधूमकः किक्किसाद इति। सु० क० अ० ४; ३६।

* त्रयोदशात्र राजीलाः............ । कथ्यन्ते संप्रदायेन देशिकेशहितेच्छया॥
पुण्डरीकोऽहिराजश्च चित्रकः कर्दमस्तथा। तृणशोषः सर्पपश्च लोध्रपुष्पस्तथा कलः॥
श्वेतहन्वाक्षनागश्च लोहिताक्षश्च चक्रकः। कृत्तिसारः कृष्णराज इत्थं संज्ञास्त्रयोदश॥
—वि० वै० ४, २०–२२।

* पुण्डरीकोऽहिश्रेष्ठचित्रककरमर्दाहितृणशोषसर्पपाहिलोध्रपुष्पालकश्वेतपिंजालोहिताक्षचक्रक-कृत्तिसारकृष्णराजिराजिलाः [illegible] —[illegible], पृ० ६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहिताक्ष, और कृत्तिसार जातियां नारायणशर्मा ने गिनाई हैं। उनका अहिश्रेष्ठ नामक राजिल सांप नारायणशर्मा के अहिराज से मिलता है। निम्न जातियां पहले नहीं आईं:—(११०) अलर्क या अलक, (१११) श्वेतपिञ्छ या श्वेतपिंजा, (११२) कृष्णराजि—काली रेखाओं वाला।

चरक, सुश्रुत और वाग्भट ने विषैले सांपों के तीन समूहों में राजिमान सांप गिनाये हैं। दर्वीकर और मण्डली इन दो समूहों को हम क्रमशः फनवाले सांपों (Cobras) और वाइपरीडी वंश के सांपों के रूप में जानते हैं। चिकने, रंग बिरंगे बिन्दु या अनेक प्रकार की तिरछी अथवा सीधी रेखाओं से चित्रित * राजिमन्त सांप शायद कौड़िये हैं। सुश्रुत ने दर्वीकर और राजिमन्त दोनों प्रकार के सांपों के विष के लिये एक दवा ★ लिखी है, जिससे विदित होता है कि इन दोनों के विष का कार्य एक समान ही है। फनियर और कौड़िये के विष का शरीर पर कार्य एक जैसा ही है। इस बात से भी हमें पता चलता है कि राजिमन्त सांप कौड़िये ही होंगे। कालिदास का यह कथन ठीक नहीं प्रतीत होता कि 'बड़े २ सांपों पर अपना जोर दिखाने वाले गरुड़ को क्या राजिल सांप ही जोर दिखाने को रह गये हैं?' ❀ इससे तो राजिमन्त सांप निर्विष मालूम पड़ते हैं, पर वास्तव में ये विषैले सांप हैं।

निर्विष सांपों की जातियां ❋

(११३) गलगोली—जिसमें विष की ग्रन्थि (गोली) गल गई है, (११४) शूकपत्र—जो के आवरण (शूक) की तरह आगे से पतला और पीछे से मोटा, (११५) अजगर—वैज्ञानिकों का अजगर (Python) गण, (११६) दिव्यक—चन्दन (दिव्य) पर रहने वाला, ११७) वर्षाहिक—वर्षाकाल में निकलने वाला, (११८) पुष्पशकली—जिसके शरीर के विविध भागों (शकल) पर पुष्प चित्रित हों, (११९) ज्योतिरथ—ध्रुव तारे के सदृश, (१२०) क्षीरिकापुष्पक—खिरनी के फूल के रङ्ग का, (१२१) अहिपातक—सांपों से गिरे हुये अर्थात् अविकसित सांप। टाइफ्लोपिडी वंश के सांप हो सकते हैं। (११२) अन्धाहिक—भूमि में गड़ने वाले छोटे अन्धे सांप, (१२३) गौराहिक—सफेद सांप, (१२४) वृक्षेशय—वृक्षों और वनस्पतियों पर रहने वाले।

वृद्ध वाग्भट ने निर्विषों की १६ जातियां लिखी हैं, यथा—दिव्यक, अजगर, सर्प, पताक, वृक्षशायिक, शकलीपुष्पक, क्षीरी, लासीनी, क्षारसाहिक, वर्षाहिक, ज्योतिरथ, शुकवक्त्र, वलाहक,

---

* (क) स्निग्धा विविधवर्णाभिस्तिर्यगूर्ध्वं च राजिभिः। चित्रिता इव ये भान्ति राजिमन्तस्तु ते स्मृताः॥ —सु० क० अ० ४, २३ और अ० सं० उ० अ० ४१।

(ख) बिन्दुलेखो विचित्राङ्गः पन्नगः स्यात्तु राजिमान्। —च० चि०अ० २३; १३४।

★ देखो सु० क० अ० ५, ७४।

❀ किं महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते। —रघु० सर्ग ११, श्लोक २७।

❋ निर्विषास्तु गलगोली शूकपत्रोऽजगरो दिव्यको वर्षाहिकः पुष्पशकली ज्योतीरथः क्षीरिकापुष्पकोऽहिपातकोऽन्धाहिको गौराहिको वृक्षेशय इति। —सु० क० अ० ४; ३७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गजभक्त, प्लव, और उद्वाही *। इनमें से ये जातियां सुश्रुत की गणना में नहीं आईं—(१२५) सर्प-सरकने वाला, (१२६) पताक—उछल उछल कर चलने वाला (उत्पतति), अथवा जो जमीन पर ही पड़ा रहे, सुस्त सांप। (१२७) लासीन—लिपट जाने वाला, (१२८) क्षारसादिक—कल्लर जमीन (क्षार) में पाया जाने वाला, (१२९) शुकवक्त्र—तोते की चोंच की तरह जिसका मुख नोकीला हो, (१३०) वलाहक—सुश्रुत के विषैले दर्वीकरों में इस नाम का एक सांप है (सं० ६ देखें), (१३१) गजभक्त—हाथी को खाजाने वाला, (१३२) प्लव—तैरने वाला। जलीय सांप हो सकता है। (१३३) उद्वाही—जमीन पर टेक कर जो अधिक ऊपर उठ सके। वृक्षशायिक, शकलीपुष्पक और क्षीरी सांप सुश्रुत के वृक्षेशय, पुष्पशकली और क्षीरिकापुष्पक से क्रमशः मिलते हैं। इसलिये इनकी अलग गणना यहां नहीं की गई।

वैंकरञ्जों की जातियां ★

(१३४) माकुली—फनियर और मण्डली के संयोग से उत्पन्न, (१३५) पोटलगल-कौड़िये और मण्डली के संयोग से उत्पन्न, (१३६) स्निग्धराजि—चिकनी धारियों वाला, फनियर और कौड़िये के संयोग से उत्पन्न, (१३७) दिव्येलक—इलायची (एलक) के फल के सदृश जिसका मुख हो, ऐसा श्रेष्ठ (दिव्य) या निर्विष सांप, (१३८) रोध्रपुष्पक (सं० १३ देखें), (१३९) राजि-चित्रक—चितकबरी धारियों वाला, (१४०) पोटगल—नडों और सरकण्डों (पोटगल) के झुण्डों में रहने वाला, (१४१) पुष्पाभिकीर्ण (सं० २१ देखें), (१४२) दर्भपुष्प—फनियर सांपों में भी (सं० १६) इस नाम का एक सांप है, (१४३) वेल्लितक—घूमने वाला सांप।

नारायण शर्मा ने दोगलों की इक्कीस ❀ जातियां लिखी हैं। ऊपर की दस उनमें से कम करदी जायें तो शेष ग्यारह नवीन जातियां नारायण शर्मा को मालूम थीं। (क्रमशः)

---

* दिव्यकोऽजगरः सर्पः पताको वृक्षशायिकः। शकलीपुष्पकः क्षीरी लासीनी क्षारसादिकः॥
वर्षाहिको ज्योतिरथः शुकवक्त्रो वलाहकः। गजभक्तः प्लवोद्वाही निर्विषाः षोडशाह्वयः॥
—अ० सं० उ० अ० ४१।

★वैकरञ्जास्तु त्रयाणां दर्वीकरादीनां व्यतिकराज्जाताः, तद्यथा—माकुलिः पोटगलः स्निग्धराजिरिति। तत्र कृष्णसर्पेण गोनस्यां वैपरीत्येन वा जातो माकुलिः। राजिलेन गोनस्यां वैपरीत्येन वा जातः पोटगलः। कृष्णसर्पेण राजिमत्यां वैपरीत्येन वा जातः स्निग्धराजिरिति। तेषामाद्यस्य पितृवद्विषोत्कर्षो द्वयोर्मातृवदित्येके। त्रयाणां वैकरञ्जानां पुनर्दिव्येलकरोध्रपुष्पकराजिचित्रकाः पोटगलः पुष्पाभिकीर्णो दर्भपुष्पो वेल्लितकः सप्त तेषामाद्यास्त्रयो राजिलवच्छेषाः मण्डलिवत्। एवमेतेषां सर्पाणामशीतिरिति। —सु० क० अ० ४, ३८-४१।

❀ ....मिश्राणामेकविंशतिः।—वि० वै० प०; २१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! श्रीमान् माधवाचार्यकृत छप गया !

आयुर्वेदाचार्य श्रीगुलराज शर्मा मिश्र कृत अर्थविद्योतिनी तथा भावार्थप्रकाशिनी
संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेदप्रकाश

यह एक ही अध्याय की टीका नहीं है किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ (छहों अध्याय) की ऐसी सरल टीका है कि इसके पढ़ने वाले छात्र आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदविशारद और आयुर्वेदभिषक् परीक्षाओं को सहज में पास कर सकते हैं। वस्तुतः यह टीका इसलिए लिखी गई है कि आयुर्वेद महाविद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों के अध्यापन और अध्ययन में अच्छी सहायता दे सके। इन टीकाओं से विभूषित इस एक ही ग्रन्थ के पास रहने से रसकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसेन्द्रसारसंग्रहादि किसी भी रसग्रन्थ की आवश्यकता नहीं रहती। विद्वान् टीकाकार ने नाना तन्त्रों के उद्धरण दे देकर विषय को नितान्त स्पष्ट कर दिया है। हाथ कंगन को आरसी क्या ? इस ग्रन्थ की विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इतने पर भी कागज की महंगाई आदि की ओर न देखकर इसका लागत-मात्र मूल्य ४) ही रक्खा गया है ताकि अध्यापकों एवं छात्रों को लाभ पहुंचे।

मिलने का पता—प्राणाचार्य श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी,
आचार्य—श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदमहाविद्यालय, सीताबर्डी, नागपुर।

-: आयुर्वेदीय औषधियों के लिये :-

५० वर्ष से सुप्रसिद्ध

ऊँझा फार्मेसी लिमिटेड

पो० ऊंझा (उत्तर गुजरात)

को याद कीजिये।

इस फार्मेसी में रस, भस्म, कूपीपक्व, गुटिका, गुग्गुल, चूर्ण, आसव, अवलेह, तैल, घृत आदि हरएक किस्म की आयुर्वेदिक औषधियां शास्त्रोक्त विधि से तैयार की जाती हैं, जिनकी उत्तमता के प्रमाण में अनेक सार्टिफिकेट और मैडिल मिले हैं। आज ही सूचीपत्र मंगाइये।

सब जगह एजेन्सियां हैं। न हों तो लिखिये !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन–स्थायीसमिति के प्रथमाधिवेशन की कार्यवाही।

(ता० ५-५-४५)

सभापति कविराज एम० के० मुखर्जी के अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे—(१) क० जुगलकिशोर सेन (२) क० शैलेन्द्रचन्द्र चौधरी (३) क० प्रेमानन्द दास गुप्ता (४) क० किशोरीमोहनदास (५) क० रवीन्द्रदेव भट्टाचार्य (६) क० विभूतिभूषण भट्टाचार्य (७) क० विजयकाली भट्टाचार्य (६) क० लोचनानन्द ठाकुर (१०) क० मनोरंजन भट्टाचार्य (११) वैद्य रामप्रसन्न मिश्र (१२) क० सत्कारी राय।

१—गताधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई और स्वीकृत हुई।

स्थायी समिति के रिक्त स्थानों पर निम्नलिखित सदस्य निर्वाचित हुए—श्री डी० लाइड डब्ल्यू० अभयरत्न, एम० डी० (आयु०) लंका; क० वैद्यरत्न पूर्णचन्द्र रथ, पुरी; क० सत्कारी राय, कलकत्ता, वैद्यराज रामप्रसन्न मिश्र कलकत्ता। सभापति जी ने रूलिंग दिया कि यदि इनमें से कोई सदस्य उपस्थित हो तो वह अधिवेशन में भाग ले सकता है।

३—तदनन्तर, नई नियमावली के अनुसार, चालू साल के लिए, निम्नलिखित सदस्य महामंडल की कार्यकारिणी समिति के लिए चुने गये:—(१) सर्वश्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य (बम्बई), (२) पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (इलाहाबाद), (३) पं० ख्यालीराम द्विवेदी (इन्दौर), (४) क० जानकीनाथ धर (काश्मीर), (५) पं० वी० वी० नटराज शास्त्री (त्रिचनापल्ली), (६) पार्थनारायण पण्डित (मैसूर), (७) एम० आर० भट्ट (मंगलोर), (८) वैद्य डी० के० भारद्वाज (बंगलोर), (६) श्रीमती ललिताबेन प्राणलाल पाटवाला (सूरत), (१०) क० जुगलकिशोर सेन (कलकत्ता), (११) क० ज्योतिषचन्द्र सरस्वती (देहली), (१२) क० शिवनाथ शर्मा (देहली), (१३) क० हरिरंजन मजुमदार (देहली), (१५) प० बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर), (१५) पं० विरिंचिलाल शर्मा (राज०), (१६) वैद्य रामधन शर्मा (आगरा), (१६) पं० एन० माधव मेनन (मद्रास), (१८) पं० शिवशर्मा (मेरठ), (१६) मंगलदास स्वामी (जयपुर), (२०) डी० लाइड डब्ल्यू० अभयरत्न (लंका), (२१) के० के० परमेश्वरम् पिल्ले (त्रिवेन्द्रम्), (२२) रविवर्मा राजा (त्रावणकोर), (२३) नानकचन्द्र शर्मा (लाहौर), (२४) हरिदत्त शर्मा (लाहौर), (२५) वैद्य के० एम० वाकणकर (ग्वालियर), (२६) पं० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल (ग्वालियर), (२७) पी० एच० देशपाण्डे (पूना), (२८) खूबचन्द शर्मा (जोधपुर), (२६) नागरदत्त जोशी (देवघर), (३०) डा० ए० लक्ष्मीपति (बेजवाड़ा), (३१) वैद्यरत्न पूर्णचन्द्र रथ (पुरी), (३२) तेजभानुदास पुरुषोत्तमदास (सिंध), (३३) सूर्यप्रसाद शर्मा (हैदराबाद-दक्षिण), (३४) क० किशोरीमोहनदास (बंगाल), (३५) क० सत्यकिंकर सेन (बंगाल), (३६) क० सत्यकारी राय (बंगाल), (३७) दयानिधि स्वामी (हृषिकेश), (३८) वैद्य रामप्रसन्न मिश्र (बं०), (३६) क० लोचनानन्द ठाकुर (कलकत्ता), (४०) क० प्रेमानन्ददास गुप्त (कल०), (४१) मनोरंजन भट्टाचार्य (कल०), (४२) प० रामप्रसाद जी (पटियाला), (४३) राजवैद्य जीवराम कालिदास (गोंडल),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४४) प्रो० डी० रंगाचार्युलु (गुन्टूर), (४५) पं० नटवरप्रसाद नारायणशंकर (अहमदाबाद), (४६) बलवन्त शर्मा दीक्षित (कच्छ), (४७) पं० नित्यानन्द शर्मा (लाहौर), (४८) पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर (अमरावती), (४९) वंशीधर मोहनलाल (अजमेर), (५०) भिकाजी विनायक डेग्वेकर (जबलपुर)।

४—वर्तमान वर्ष के लिये निम्नलिखित महानुभाव विद्यापीठ-कार्यकारिणी-समिति के सदस्य चुने गयेः—(१) सर्वश्री पं० गणेशदत्त वैद्य (मेरठ), (२) पं० बाबूराम मिश्र (हापुड़), (३) क० नलिनींरंजन सेन (कलकत्ता), (४) पं० शंकरदेव शर्मा (देहली), (५) शचीन्द्रनाथ चटर्जी (कल०), (६) पं० दयानिधि शर्मा (मेरठ), (७) क० मणीन्द्रकुमार मुखर्जी (कल०), (८) पं० घनानन्द पन्त (देहली), (९) पं० मणिराम शर्मा (रत्नगढ़), (१०) पं० मस्तराम शास्त्री (अमृतसर) स्वामी मंगलदास जी (जयपुर), (१२) पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर (अमरावती), (१३) पं० नोरीराम शास्त्री (बेजवाड़ा), (१४) नारायणदत्त शास्त्री (आगरा), (१५) पं० रामेश्वर शुक्ल (गवालियर), (१६) चावली राममूर्त्ति शास्त्री (राजमहेन्द्री), (१७) स्वा० जयरामदास (जयपुर) (१८) पं० वाचस्पति मिश्र (खुर्जा), (१९) पं० ख्यालीराम द्विवेदी (इन्दौर), (२०) पं० भिकाजी विनायक डेग्वेकर (जबलपुर), (२१) पं० शिवराम जी (लखनऊ), (२२) पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (इलाहाबाद), (२३) पं गोवर्धन शर्मा छांगाणी (नागपुर), (२४) पं० हरिदत्त शास्त्री (लाहौर), (२५) ऋषिदेवजी वैद्यभूषण (लाहौर); (२६) पं० बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर) (२७) पं० दयानिधि स्वामी (ऋषिकेश), (२८) शंकरदत्त शास्त्री (बंबई), (२९) पं० शिवदत्त मिश्र (बनारस), (३०) पं० हनुमत्प्रसाद शास्त्री (बनारस), (३१) पं० रंगलाल ओझा (करांची), (३२) पं० यादवजी त्रिक्रमजी-आचार्य (बम्बई), (३३) राजवैद्य रामगोपाल शास्त्री (मथुरा), (३४) मायाधारी शास्त्री (अमृतसर), (३५) पं० बी० बी० नटराज शास्त्री (त्रिचनापल्ली), (३६) के० के० परमेश्वरम् पिल्ले (त्रिवेन्द्रम्), (३७) पं० एम० के० वैद्य (मद्रास), (३८) पं० विश्वनाथ द्विवेदी (पीलीभीत), (३९) वैद्यराज रामरक्षा पाठक (हरद्वार), (४०) कालीचरण जी (लाहौर), ४१) वैद्यराज डी० ए० हलसीकर (हुंबली) (४२) प्रो० डी० रंगाचार्युलु (गुन्टूर), (४३) राजवैद्य जीवराम कालिदास (गोंडल), (४४) वैद्य डी० के० भारद्वाज (बंगलौर), (४५) वैद्य वामनराव दीनानाथ (बम्बई), (४६) पं० बलवन्त शर्मा दीक्षित (कच्छ), (४७) क० आनन्द महापात्र (पुरी), (४८) पुरुषोत्तमदत्त शास्त्री (जलन्धर), (४९) शंकरदत्त शास्त्री (बीकानेर), (५०) श्रीमती सुमति तारानाथ (तुंगभद्रा)।

वर्ष में कार्य-प्रगति के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर प्रधानमन्त्री ने निम्नलिखित वक्तव्य दियाः—

"ईश्वर की कृपा से इस वर्ष कार्य सन्तोषजनक ढंग से चल रहा है। युद्धकालिक परिस्थितियों और कठिनाइयों के, जिनमें से कुछ तो नियन्त्रणबाह्य हैं, होते हुए भी, हम यथाशक्ति सन्तोषजनक विधि से महामंडल की सेवा करने में कोई बात उठा नहीं रख रहे हैं। सभापति जी गत ११ अप्रैल को अपनी दीर्घ साढ़े तीन मास की अविश्रान्त लम्बी यात्रा से लौटे हैं। आयुर्वेदिक कांग्रेस के झण्डे के नीचे आने के लिए किये हुए उनके प्रयत्न का सर्वत्र स्वागत हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध आयुर्वेदवाद का भी अधिकाधिक आदर हो रहा है। इस वर्ष केरल प्रान्त में नई इकाई बनाई जायेगी। इसके अतिरिक्त उड़ीसा, जो अब तक महामण्डल में कोई प्रतिनिधित्व नहीं रखता था, महामण्डल से सम्बन्धित कर लिया गया है और अब वह प्रान्तीय इकाई की तरह प्रतिनिधित्व का अधिकारी होगा । सभापति जी की मध्यप्रान्त तथा बरार की यात्रा का प्रबन्ध हो चुका है। वे आगामी जून मास में यात्रा के लिए चल पड़ेंगे। इसी सिलसिले में संभव है, वे मध्यभारत की भी यात्रा करें, जिसका प्रबन्ध किया जा रहा है। अ० भा० आयुर्वेदिक कांग्रेस की ओर से, विशेषतया आयुर्वेद के युद्धकालिक निर्माण तथा युद्धोत्तरकालिक पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में देश का पथप्रदर्शन करने के लिए, महामण्डल की आयुर्वेद-योजना-समिति का एक अधिवेशन दिल्ली में होना निश्चित हुआ है, जो जून या जुलाई में होगा। निधि-समिति बन चुकी है और कार्य करने लगी है। इसके निर्वाचित सभापति और मन्त्री आ० कांग्रेस के भू० पू० सभापति और भू० पू० उपसभापति राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्री (गोंडल) तथा कविराज हरिरंजन मजुमदार (नई देहली) हैं। महामंडल-सम्बन्धी कागजात निधि-समिति के मन्त्री को दे दिये गये हैं। हम सब परिचितों और अपरिचितों से, जिनके पास महामंडल का धन या सामान पड़ा हो, निवेदन करते हैं कि उसे निधि-समिति द्वारा सुरक्षार्थ प्रदान कर दें। उन दो महानुभावों के, जो अब भी महामण्डल के निर्णयों की उपेक्षा कर रहे हैं और धन महामण्डल को नहीं लौटा रहे हैं, व्यक्तिगत नामों में बेनामी लेन-देन में अटके हुए महामंडल के धन को प्राप्त करने के लिये, अ० भा० आयु० कांग्रेस के गत बेजवाड़ा सम्मेलन के प्रस्तावों के अनुसार कार्य किया जा रहा है। कागज प्राप्त करने का उद्योग किया जा रहा है। समुचित परिमाण में कागज मिलते ही बेजवाड़ा-सम्मेलन द्वारा स्वीकृत नई नियमावली छपानी शुरू कर दी जायगी। महामंडल और विद्यापीठ के सदस्यों से विशेष रूप से प्रार्थना की जाती है कि समय-समय पर जो नियमोपनियम सूचित किये जाते रहे हैं तथा जिनको वे जानते हैं, उनका पालन करने की कृपा करें, जिससे उन्हें शिकायत का और पदाधिकारियों को असुविधा का अवसर प्राप्त न हो। गत महासम्मेलन के शंकरदा-पदे स्मारक कोष, फार्माकोपिया-कमेटी आदि से सम्बन्धित प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए वार्तालाप जारी है। हमारा सबसे यही निवेदन है कि हमारी बातों पर शीघ्रतया ध्यान दिया जाय। जो प्रान्त संगठन में पिछड़े हुए हैं वे अन्य प्रान्तों के समकक्ष बनने के लिये तुरन्त दृढ़ संगठन आरम्भ कर दें। अ० भा० आयु० कांग्रेस के ३५वें अधिवेशन के लिये निमन्त्रण आ चुका है। महासम्मेलन-राष्ट्र में सर्वत्र नवजीवन-संचार के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं।" इस वक्तव्य को सभी ने सहर्ष स्वीकृत किया।

२—अनेक मान्य सदस्यों के साथ-साथ निम्नलिखित सदस्यों की सदस्यता स्वीकृत हुई:—

संरक्षकसदस्य—(१) सर्वश्री विमलचन्द्रदास (कलकत्ता), (२) वैद्यराज ए० राम बर्मा राजा (त्रावणकोर), ३) पं० बी० वी० नन्जुण्डा स्वामी (नंजनगुड)।

आश्रयदाता सदस्य—(१) सर्व श्री एम० पी० कृष्ण वैद्यन् (क्लिोन), (२) कल्लाडी के० परमेश्वरम् पिल्ले (त्रिवेन्द्रम्), (३) बी० नीलकण्ठ वैद्यन् (नगरकोइल), (४) वी० आर० श्रीनिवासराव (कोयम्बटूर), (५) पी० वी० राम वारियर (कोयम्बटूर), (६) वी० आर० सुब्बाराव (कोयम्बटूर), (७) पी० एस० राम शर्मा (कारूर), (८) वाई० सूर्यनारायणराव (बेजवाड़ा), (९) धन्वन्तरिदास, बी० एन० नारायण [illegible] ([illegible])।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबद्धसंस्था—(१) नगर वैद्यसभा (कानपुर), (२) नि० भा० आयु० चिकित्साप्रचारक संघ (बाराबंकी)।

आजीवन सदस्य—(१) सर्वश्री पं० हरिदत्त शास्त्री (आगरा), (२) वैद्य ज्वालाप्रसाद शर्मा (बोडवाड), (३) प० जगदीशप्रसाद शर्मा (देहली), (४) वाई० पार्थ नारायण पण्डित (मैसूर), (५) बी० वी० कृष्ण शास्त्री (बंगलौर), (६) देवसिंह विट्ठल (कराची), (७) कल्याण जी नारायण जी सचदे (करांची), (८) ए० सी० शूलपाणि वारियर (अलिप्पी) (६) ए० एस० विश्वेश्वर (अलिप्पी), (१०) पी० पी० नारायण मेनन (अलिप्पी), (११) वैद्य खूबचन्द शर्मा (जोधपुर), (१२) मैथ्यू पित्तापल्लिल (त्रिवेन्द्रम्), (१३) नाथूराम बलराम शर्मा (पटना), (१४) राजवैद्य चन्द्रभानुसिंह (मैसूर), (१५) आर० डी० ऋषि (लाहौर छा०) (१६) पल्लायाडा वेंकटाचल पण्डित (मैसूर), (१७) क० उपेन्द्रनाथदास (देहली), (१८) दयानिधि शर्मा (मेरठ), (१६) भागीरथ शास्त्री (छारा)।

५—तदनन्तर निम्नलिखित प्रस्ताव कार्यालय की ओर से उपस्थित किये गये, जो विचार विमर्श के पश्चात् स्वीकृत हुये:—

१—कविराज जानकीनाथ धर के इस आशय के पत्र पर कि, काश्मीर राज्य में आयुर्वेद को प्रोत्साहन देने के लिये काश्मीर-सरकार को लिखा जाय, विचार होने के पश्चात् सभापति महोदय को अधिकार दिया गया कि वे इस सम्बन्ध में वहां की सरकार से लिखा-पढ़ी करें।

२—अ० भा० आयु० कांग्रेस के ३५वें अधिवेशन के लिये आया हुआ नगर वैद्यसभा, कानपुर (यू० पी०) का निमन्त्रण सहर्ष सुरक्षित कर लिया गया है। इस पर समय पर आवश्यक निर्णय होगा।

३—अ० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-कार्यालय, देहली, के आफिस-सुपरिन्टेन्डेन्ट पं० रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य, के प्रार्थनापत्र पर विचार हुआ और उनके ग्रेड की वृद्धि १ जनवरी १६४५ से स्वीकृत हुई तथा वर्तमान युद्ध-परिस्थितियों में १८) प्रतिमास महंगाई का भत्ता मई १६४५ से स्वीकृत हुआ।

४—सुविधा की दृष्टि से पत्रिका का व्ययभार विद्यापीठ द्वारा वहन किये जाने के प्रस्ताव के सम्बन्ध में सभापति जी को अधिकार दिया गया कि वे विद्यापीठ—अधिकारियों से परामर्श करके आवश्यक व्यवस्था करदें।

५—भविष्य में अ० भा० आयु० कांग्रेस के ब्याज पर उठाये हुये सम्पूर्ण धन (Investments) और सम्पत्ति का लेन-देन अ० भा० आयु० कांग्रेस की निधि-समिति के मन्त्री तथा अ० भा० आयु० कांग्रेस के प्रधानमन्त्री के सम्मिलित उत्तरदायित्व पर होगा।

सम्पूर्ण कार्यवाही सर्वसम्मति से हुई।

निम्नलिखित अनुपस्थित सदस्यों ने एजेण्डा के विषयों पर अपनी सम्मतियां भेजी थीं—सर्वश्री पं० शिवशर्मा द्विवेदी (अजमेर), पं० हरिदत्त शास्त्री (आगरा), जीवनलाल भट्ट (मोर्वी), त्रिकमलाल जे० रावल (पाटन), जी० वामनाचार्य (कोल्हापुर), नोरीराम शास्त्री (वेजवाड़ा), डा० के० भारद्वाज (बङ्गलोर), एन० माधव मेनन (मद्रास), पी० एस० राम शर्मा (कारूर), द्राविड़प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल, एल० आर० मलेकर (बम्बई), कवि० कुमुदनाथसेन (नाटार),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायणदत्त शास्त्री (इन्दौर), अहमदाबाद वैद्यसभा, विरिंचिलाल शर्मा (इस्लामपुर), बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर), गणेशदत्त शास्त्री (मेरठ), शिवशर्मा (मेरठ), सूर्यकान्त शर्मा (खाटू), सिन्ध प्रान्तीय आयु० मण्डल, प्रो० एन० एन० पाण्डेय (देहली), नन्दकिशोर त्रिपाठी (बनारस), बी० बी० कृष्ण शास्त्री (बङ्गलौर), कंवर रामेश्वरसिंह (पंजाब), चक्रपाणि शास्त्री (मथुरा), पी० एच० देशपाण्डेय (पूना), सूयप्रसाद शर्मा (सिकन्दराबाद), देवराज मिश्र (अमृतसर), ब्रह्मदत्त शर्मा (भुसावल)।

—विजयकाली भट्टाचार्य, प्रधानमन्त्री
अ० भा० आ० महामण्डल।

ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर। (स्थापित १९२३ ई०)

(१) दमानाशक (रजि०) — खांसी, श्वास, और राजयक्ष्मा की अचूक औषधि। कीमत ३२ मात्रा १), १२५ मात्रा ३)

(२) अमृतविलासवटी (रजि०) — बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष के सम्पूर्ण रोगों की एक ही औषधि। कीमत २५ मात्रा १), १०० मात्रा ३)

(३) गुप्त रोग का दारू (रजि०) — स्त्रियों के मासिक धर्म की खराबी को दूर करके सन्तान पैदा करती है। कीमत १४ मात्रा २), ५०) मात्रा ६)

(४) डाइबटी (रजि०) — मधुमेह की अचूक औषधि। कीमत २५ मात्रा ३), १०० मात्रा १०)। डाक-व्यय सबका पृथक्।

पता:- डा० जी०डी० शर्मा, बी० एल०, एम०एस०, वी० आर० एम० पी०, पी० ए० सी०, अध्यक्ष, ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर।

उत्तम लोह भस्म

२०) प्रति सेर। यह हमारे कार्यालय में सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार तीक्ष्ण लोह से करीब ५ मन के प्रतिवर्ष तैयार होती है। बहुत सी प्रसिद्ध प्रसिद्ध फार्मेसियां तथा वैद्य हमसे थोक परिमाण में मंगाते हैं। आप भी एक बार मंगा कर परीक्षा करें।

हमारे यहां सब प्रकार की भस्में, रस, रसायन, पर्पटी, जौहर, आसवारिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल, चूर्ण आदि सर्व प्रकार की शास्त्रीय औषधियां उत्तम तथा रियायती मूल्य पर बनती और भेजी जाती हैं।

शुद्ध शिलाजीत

हमारे अपने कार्यालय में प्रति वर्ष करीब ३०० मन शास्त्रविधि अनुसार शोधित की जाती है। सूर्यतापी २०), अग्नितापी १२) प्रति सेर। वज्राभ्रक उत्तम १॥) सेर, अष्टवर्ग ६) प्रति सेर।

सब प्रकार के विषोपविष, खनिज-द्रव्य, जड़ी बूटियां, प्राणिज पदार्थ हमसे सस्ते मूल्य पर मिल सकते हैं।

"सूचीपत्र मुफ्त"

किसी अन्य स्थान से मंगाने से पहिले हमारे भाव अवश्य देखें।
धर्मार्थ संस्थाओं को विशेष रिआयत से माल भेजा जाता है।

काश्मीर आयुर्वेदिक वर्क्स, जी० टी० रोड, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदोद्धारक श्रीयादवजी त्रिकमजी आचार्य (बम्बई) द्वारा लिखित

सिद्धयोग संग्रह

पहला संस्करण समाप्त ।

द्वितीय के आर्डर रिजर्व हो रहे हैं ।

इस ग्रन्थ के विषय में हमारे पास भारत के बड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों व डाक्टरों के जो प्रशंसा-पत्र व सर्टिफिकेट आये हैं, यदि उन्हें एकत्र छापा जाय तो मूलग्रन्थ के समान ही इसका अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार हो सकता है । उपयोगिता की दृष्टि से इस ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा हुई है, उतनी आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की आज तक नहीं हुई — यदि यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी । प्रथम संस्करण के छपते-छपते ही हमारे पास इतने आर्डर जमा हो गये कि १००० प्रतियां और बढ़ा कर कुल २००० प्रतियां छापनी पड़ीं और वे सब ही हाथोंहाथ छः महीने के अन्दर ही बिक गईं । जिस शीघ्रता से इस ग्रन्थ की बिक्री हुई उस अनुपात से आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की नहीं हुई होगी । ६२५ आर्डर एडवांस जमा हैं श्रीयादवजी महाराज द्वारा ही परिवर्द्धित व संशोधित द्वितीय संस्करण ३-४ महीनों में छप जायेगा । यह प्रथम संस्करण से भी उपयोगी होगा । इसकी ३००० प्रतियां छपेंगी जो कि बहुत जल्दी ही समाप्त हो जायेंगी । इसका मूल्य वही २।।) डाक व्यय सहित । १) या समग्र मूल्य पेशगी भेज कर आर्डर बुक करा लेने वाले बुद्धिमानों को ही यह समय पर मिल सकेगा ।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन,

कलकत्ता, पटना, झांसी और नागपुर ।

नोट—पुस्तक युद्धकालीन हेडआफ़िस पटना में ही छपी है । अतः पुस्तक मंगाने वाले सज्जनों को पटना ही पत्र लिखना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा

(केरल—द्रविड़—कर्णाटक में)

(गत अङ्क से आगे)

कोचीन राज्य की ओर से बंगलौर में जो पत्र मिला था उससे यह स्पष्ट नहीं था कि सभापति जी राज्य-आतिथ्य स्वीकार करने के लिये निमन्त्रित किये गये हैं। समय की पवित्रता का ध्यान करके सभापति जी केरल आयुर्वेद कारपोरेशन लिमि० को अन्तिम क्षण में तार देकर इर्नाकुलम् चले गये। कारपोरेशन ने सभापति जी के क्रियाकलाप की व्यवस्था के लिये सन्नद्धता पूर्व ही सूचित कर दी थी तथा बेजवाड़ा-सम्मेलन में भी अपने प्रबन्धक प्रतिनिधि डा० बेसिल को भेजा था। कोचीन राज्य की राजधानी इर्नाकुलम् में सभापति जी के शुभागमन की घोषणा के तुरन्त पश्चात् ही, सभापति जी को राजकीय आतिथ्य के लिये सविधि निमन्त्रित और स्थानान्तरित कर दिया गया, जिस के लिए केरल आयु० कारपोरेशन ने कोई आपत्ति नहीं की। तदनन्तर राज्य और कारपोरेशन की ओर से सम्मिलित सुविधायें मिलने पर सभापति जी का कार्यक्रम सफलतापूर्वक चला।

आगमन की तिथि (२० जनवरी) से ही सभापति जी को व्यस्त रहना पड़ा। उन्होंने सर्व प्रथम सरकार के संयुक्त मन्त्री श्री मैथ्यू से मुलाकात की, जिन्होंने राजकीय आयु० औषधालयों और अस्पतालों के निरीक्षण की व्यवस्था कराई तथा त्रिचूड़ को फोन किया जहां से राजकीय आयु० अस्पतालों के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने आकर सभापति जी का कार्यक्रम बनाया। राज्य के विभिन्न भागों में लगभग १० छोटे २ अन्तः और बाह्य व्यवस्था युक्त आतुरालय हैं। इनके सुपरिन्टेन्डेन्ट डा० मेनन का प्रधान कार्य-स्थान त्रिचूड़ में है, जो राज्य का द्वितीय बड़ा नगर है। इन में से कुछ आतुरालयों का निरीक्षण किया गया और अच्छी अवस्था में पाये गये। कुछ आतुरालयों में त्रिचूड़ की राजकीय आयु० औषधनिर्माणशाला की बनी हुई वस्तुओं के विक्रयविभाग भी विद्यमान हैं।

२३ तारीख को राज्य के मन्त्री महोदय ने सभापति जी को मुलाकात के लिये बुलाया। वे आयुर्वेद के अति प्रेमी हैं। उनकी यह अभिलाषा है कि उनके कार्यकाल में ही राज्य के ८७ तालुकों में से प्रत्येक में आयुर्वेदीय चिकित्सा के लिये एक २ औषधालय और आतुरालय स्थापित हो जाय। इस राज्य के कई महाराजा आयुर्वेद के प्रतिष्ठित और विशिष्ट विद्वान् थे। लोकप्रिय मन्त्री जी के साथ लम्बा विचारविनिमय हुआ। उन्होंने आयुर्वेद के सम्बन्ध में आयु० कांग्रेस के सहयोग की इच्छा व्यक्त की। जिस दिन सभापति जी ने त्रिचूड़ के प्रधान आतुरालय एवं औषधनिर्माणशाला का निरीक्षण किया था, उस दिन मन्त्री महोदय यात्रा पर त्रिचूड़ गये हुये थे। मन्त्री जी ने श्रीयुत मुखर्जी तथा उनके दल को भोजन के लिये निमन्त्रित किया, जिससे आयुर्वेद की समस्याओं पर विचार करने का एक और अवसर मिल गया। त्रिचूड़ आतुरालय में एक विषचिकित्साविभाग भी है। आयुर्वेद का अगदतन्त्र केरल में अब भी जीवित है, तथा इस विषय का अध्ययन करने के लिये पुस्तकें मौजूद हैं। केरल में रसचिकित्सा का प्रचार नहीं है, परन्तु वह प्राचीन आयुर्वेद की शुद्धता की रक्षा आज तक कर रहा है। शुद्ध आयुर्वेद का प्रचलन केरल प्रान्त में आज भी मौजूद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नमेंट संस्कृत कालेज में आयुर्वेदविभाग भी है। सभापति जी को इस संस्था के निरीक्षण के लिये निमन्त्रित किया गया और उन्होंने संस्कृत में अपना सन्देश सुनाया। इस कार्य-क्रम के सिलसिले में कोचीन के प्रथम राजकुमार से भी, जो संस्कृत के भी विशिष्ट विद्वान् हैं, मुलाकात करने का अवसर मिला।

ता० २६ को प्रेस-प्रतिनिधियों से वार्तालाप हुआ, जिसमें सभापति महोदय ने पत्रकारों को अपने विचारों और आयु० कांग्रेस के सन्देशों से अवगत कराया। सभापति जी से अगणित प्रश्न किये गये जिन का स्पष्टीकरण उन्होंने अद्वितीय प्रकार से किया। केरल आयुर्वेदिक कारपोरेशन की ओर से उपस्थित महानुभावों को जलपान कराया गया।

इसी बीच में राजप्रासाद से समाचार मिला कि श्रीमान् महाराजा साहब २७ ता० के अपराह्न में सभापति जी का स्वागत करने के लिये राजी हो गये हैं। इस राज्य के महाराजा अपनी सरलता के लिये प्रसिद्ध हैं। महाराजा साहब से लगभग आध घण्टे तक वार्तालाप हुआ जिसमें सभापति जी ने कोचीन में राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना पर बल दिया तथा अन्य आयुर्वेदीय सुधारों के लिये भी सुन्दर सुझाव पेश किये। सभापति जी ने स्व० महाराजा राम वर्मा का, जिन्होंने पूना में सप्तम आयुर्वेदमहासम्मेलन में सभापति का आसन सुशोभित किया था, जिक्र करते हुये वार्तालाप आरम्भ किया था। चलते समय महाराजा साहब ने सभापति जी से पूछा कि आप को राजकीय अतिथिशाला में कोई कष्ट तो नहीं है।

अगला दिन दूर दूर से आये हुए वैद्यों से मुलाकात करने के लिए सुरक्षित रख लिया गया। कार्यक्रम के इस विषय को सफल बनाने के लिये राजकीय आयुर्वेदिक अस्पतालों के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने अस्पतालों में नौकर वैद्यों का छुट्टी दे दी तथा इर्नाकुलम् के राजकीय आयुर्वेदिक आतुरालय के भवन को सन्ध्या के समय होने वाली सार्वजनिक सभा के लिए दे दिया। इसके पहले केवल वैद्यों की एक सभा केरल आयुर्वेदिक कारपोरेशन लिमि० के भवन में हुई थी, जिसमें बहुत से वैद्य सदस्य बने थे। सार्वजनिक सभा त्रावणकोर राज्य के अवसरप्राप्त डाइरेक्टर आफ आयुर्वेद श्रीयुत शंकरन् मेनन एम० ए० वैद्यराज की अध्यक्षता में हुई। सभापति जी के अंग्रेजी भाषण की सुन्दर व्याख्या उन्हीं ने उपस्थित विशाल जनसमूह के सामने की। कोचीन राज्य आयुर्वेदिक कांग्रेस के संगठन के लिए इसी वैद्य सभा में नियुक्त काम चलाऊ कमेटी के सभापति भी श्रीयुत मेनन ही निर्वाचित हुए।

२६ ता० को प्रातःकाल सभापति जी अलिप्पी (त्रावणकोर) के लिये रवाना हुये। अलिप्पी वैद्य सभा के प्रतिनिधि सभापति जी को निमन्त्रित करने के लिए पहले ही इर्नाकुलम् पहुंच गये थे। ओलेशा वैद्यशाला ने सभापति जी तथा उनके दल के ठहरने का प्रबन्ध कर दिया था। यहां पर महामंडल के आश्रयदाता सदस्य प० के० के० परमेश्वरम् पिल्ले (त्रिवेन्द्रम्) त्रावणकोर राज्य की ओर से यह निवेदन करने आये थे—कि वहां की सरकार, जिसने सभापति जी को राजकीय अतिथि के रूप में निमन्त्रित किया था, उन्हें त्रावणकोर राज्य में आयुर्वेद प्रचारार्थ फरवरी के मध्य के उपरान्त क्यों बुलाना चाहती है। वाइसराय महोदय राज्य का निरीक्षण करने वाले थे, जिसके कारण सम्पूर्ण राजधानी और राज्य में हलचल मच जाना स्वाभाविक थी। अतः यह उचित नहीं समझा गया कि ऐसे अवसर पर आयुर्वेद कांग्रेस के सभापति उपेक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भाजन बनें। इससे पूर्व, इर्नाकुलम् में सभापति जी के पास एक ट्रंक टेलीफोन समाचार भेजा गया था तथा उसके बाद त्रावणकोर राज्य के डाइरेक्टर आफ आयुर्वेद के पत्र भी पहुँचे थे। इस प्रकार कार्यक्रम में विघ्न पड़ गया, और उसका यय परिणाम हुआ कि सभापति जी को प्रत्येक प्रांत में विभिन्न समयों पर अनेक बार भ्रमण करना पड़ा। दूसरे दिन जब सभापति जी कायाकुलम् के वैद्य मित्रों से मिले और एक घण्टे के लिए भी न ठहर सके तो बड़ी निराशा हुई। सभापति जी किलोन जा रहे थे, जहां से वे द्रविड़ प्रान्त में जाने की सोच रहे थे। अलिप्पी में अतिव्यस्त रहना पड़ा। सभापति जी ने ए० बी० टोमस एण्ड कम्पनी से भेंट की और उनसे आग्रह किया कि वे स्व० डा० सामे (महामंडल-सदस्य) के, जो मृत्यु के समय तक उनकी नौकरी में थे, निःसहाय परिवार की सहायता के लिए कुछ प्रबन्ध करदें। प्रबन्धक प्रतिनिधि श्री टोनस ने विश्वास दिलाया कि उनकी आयुर्वेदिक टिन्क्चर्स मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी का डाइरेक्टरवर्ग मृतक के परिवार के लिए कुछ सन्तोषजनक भत्ता देने का विचार कर रहा है। आयुर्वेद कांग्रेस को भी ऐसे स्वर्गत सदस्यों के परिवारों के लिए सहायता कोष की स्थापना पर गंभीरता से विचार करना होगा। ऐसे प्रस्ताव महासम्मेलन के विभिन्न अधिवेशनों में आ भी चुके हैं। श्रीयुत टोमस ने आयुर्वेदराष्ट्रपति-कोष के लिए भी अच्छा दान दिया। अपराह्न के समय आयुर्वेदिक टिंक्चर्स कम्पनी का कारखाना देखा, जहां सभापति जी और उनके दल को जलपान कराया गया। सभापति जी को आयुर्वेदिक की टिंक्चरनिर्मित औषधियों के कुछ नमूने भेट किये गये। संध्या के समय वैद्यों और जनता की आम सभा हुई। इससे पूर्व इंगलिश हाईस्कूल, सनातनधर्म विद्यालय का निमन्त्रण स्वीकार कर विद्यार्थियों के सामने हिन्दी में भाषण दिया। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि लगभग एक सौ छात्र और छात्रायें स्वेच्छा से स्कूल में हिन्दी पढ़ रहे है। सार्वजनिक सभा में उपस्थिति अच्छी थी। इसका सभापतित्व म्युनिसिपलिटी के चेयरमेन ने किया था। सभापति जी के निवेदन करने पर अनेक महानुभाव आयु० कांग्रेस के साधारण तथा असाधारण सदस्य बन गये। रात्रि को प्रमुख वैद्यों ने सभापति जी से वार्तालाप किया। करांची के श्री कल्याण जी नारायण जी सचदे, जो वहां उपस्थित थे और आजीवन सदस्य बन गये थे, सिंध आयुर्वेदीय राजनीति पर सभापति से विचार-विमर्श करते रहे। सभापति जी ने सिंधप्रान्त के वैद्यों के पथप्रदर्शन के लिए वैधानिक रूप से अपनी संमति और हिदायतें दीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल १० बजे से पूर्व ही मधुरा की गाड़ी पकड़नी थी। बड़ी कठिनाई से ट्रेन में जगह मिल सकी। पहले तो टिकिट मिलना भी बन्द थीं। डा० वेसिल एवं केरल आयु० कारपोरेशन लि० के संचालक डा० जोन ने किलोन तक सभापति जी के साथ जाने की उदारता दिखाई। आयु० टिंकचर कम्पनी के श्री जोनसन तथा त्रिवेन्द्रम् के वैद्य परमेश्वरम् पिल्ले ने भी ऐसी ही उदारता का परिचय दिया। कोचीन राज्य इसलिए विशेष धन्यवाद का पात्र है कि उसने सभापति जी को इर्नाकुलम् से क़िलोन तक जो लगभग १०० मील दूर है बड़े आराम और सुविधा से अपनी कार में पहुँचा दिया। (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी के पत्र का उत्तर।

सभापति महोदय ने निम्नलिखित पत्र महात्मा गांधी को भेजा है:—

कलकत्ता, २१-४-४५

श्रद्धेय महात्मा जी!

डा० सुशीला नायर ने आपकी ओर से मुझे लिखा था कि आप आयुर्वेद-पद्धति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद की कुछ चुनी हुई पुस्तकें चाहते हैं। मैं सर जे० सी० बोस पुरस्कारविजेता तथा डालमिया पुरस्कारविजेता कविराज डी० एन० राय, एम० एस० सी०, कविशेखर द्वारा विरचित 'प्रिन्सिपल्स आफ त्रिदोष' नामक पुस्तक को पृथक् डाक से भेज रहा हूँ। यह पुस्तक उस प्रसिद्ध आयुर्वेद त्रिदोष सिद्धान्त की व्याख्या है जिस पर सम्पूर्ण आयुर्वेदविज्ञान आधारित है। इसे अन्तर्जातीयख्याति प्राप्त हो चुकी है! मैंने बेजवाड़ा के भिषग्रत्न डा० ए० लक्ष्मीपति से भी कुछ पुस्तकें भेजने को कहा है, जो आपको शीघ्र ही मिल जावेंगी। मैं आशा करता हूं कि ये पुस्तकें आपके महाबलेश्वर में विश्रामकाल में रोचक और स्वास्थ्यप्रद अध्ययन सामग्री प्रदान करेंगी।

अ० भा० आयु० कांग्रेस की ओर से आपके स्वास्थ्य तथा पूर्ण जीवन के लिये परमात्मा से प्रार्थना करता हुआ एवं भारतवर्ष के वैद्यक व्यवसायियों की ओर से श्रद्धा प्रदर्शित करता हुआ,

आपका विनम्र सेवक—

(ह०) एम० के० मुखर्जी।

पुनश्च—मैं अब तक अपनी दक्षिण भारत यात्रा में व्यस्त था। अभी ११ ता० को ही प्रधान कार्यालय में लौटकर आया हूं। इसी कारण पुस्तकें भेजने में देरी हो गयी, जिसके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ—एम० के० एम०

आयुर्वेदीय विश्व-कोष

एवं उसके लेखक की लिखी अन्य पुस्तकें लेखक के निम्न पते से मंगाइये। उक्त कोष खंडशः प्रकाशित हो रहा है। अब तक इसके तीन खंड प्रकाशित हो चुके हैं। हरेक खंड अजिल्द का मूल्य ६) है पर वही स्थायी ग्राहकों से ५) लिया जाता है। 'सर्पविषविज्ञान' का मूल्य १) है। यूनानी निघण्टु यूनानी-और योगसागर की भी पांडुलिपि प्रायः तैयार है। अवसर मिलते ही शीघ्र प्रकाशित होंगे। अस्तु, २) अग्रिम भेजकर स्थायी ग्राहकावली में नाम लिखा लें। मैनेजर—चुनार आयुर्वेदीय औषधालय व आयुर्वेद अनुसंधान कार्यालय, रायपुरी चुनार, (यू. पी.)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूतन समाचार ।

नि० भा० आयुर्वेदसम्मेलन स्वागतसमिति ।

३४ वें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन के लिये कर्णाटक प्रान्त के सम्पूर्ण जिलों के प्रतिनिधियों को लेकर मङ्गलौर में एक शक्तिशाली स्वागतसमिति का संगठन हो चुका है, जिसके पदाधिकारी निम्न प्रकार हैं:—

स्वागताध्यक्ष—श्री ए० लक्ष्मीनारायण राव, बी० ए०, बी० एल०, प्रेसिडेंट, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, द० कनाड़ा ।

उपस्वागताध्यक्ष—(१) डा० वी० राम कामठ, प्रेसीडेण्ट, मद्रास मेडिकल कौंसिल, (२) जनाब एच० हुसेन पुत्तूर साहब, चेयरमेन, मंगलौर म्युनिसिपलिटी, (३) आयुर्वेदभूषण एम० बी० शास्त्री ।

प्रधानमन्त्री —(१) वैद्यगुरु एम० आर० भट्ट, (२) श्री पनगल लक्ष्मीनारायण नायक ।

मन्त्री—(१) आयुर्वेदविद्वान् के० गोपाल आचार, (२) श्री एच० थिम्मप्पा पण्डित, (३) डा० एफ० एच० वोडेयर, (४) डा० बी० बी० सैथियाज, एल० आई० एम० ।

आयव्ययनिरीक्षक—श्री डॉ० पुत्तू स्वामी, बी० ए०, बी० एल० ।

—प्रधानस्वागतमन्त्री ।

राजपूतानाप्रान्तीय अष्टमवैद्यसम्मेलन ।

राजपूतानाप्रान्तीय वैद्यसम्मेलन का अष्टम वार्षिक अधिवेशन उदयपुर (मेवाड़) में होने जा रहा है । इसके लिये स्वागतसमिति का निर्माण हो चुका है । राजाधिराज श्री हरिसिंह जी साहब स्वागताध्यक्ष, वैद्यराज लक्ष्मीनारायण जी स्वागतमन्त्री और वैद्यराज अमृतलाल जी प्रदर्शन मन्त्री निर्वाचित हुये हैं ।

—प्रचारमन्त्री ।

आयुर्वेदविश्वविद्यालय कानपुर का द्वितीय (भूमिसंशोधन) महोत्सव ।

ता० १३-४-४५ से १६-४-४५ तक आयुर्वेदशिरोमणि श्री पं० देवसेन जी शुक्ल के सभापतित्व में हुआ । पहले ५ दिन नित्य प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक यज्ञ और सायं ५ बजे से ८ बजे तक व्याख्यानादि होते थे । ता० १८-४-४५ को वैद्यों और आयुर्वेदप्रेमी जनता की आम सभा हुई, जिसमें फुफुवार नरेश श्री रघुराजसिंह जी का उद्घाटन भाषण हुआ । तदनन्तर विश्व-विद्यालय की संचालनविधि पर विचार हुआ । पश्चात् नगरवैद्यसभा कानपुर का विशेषाधिवेशन श्री पं० रघुबरदयालु जी भट्ट के सभापतित्व में हुआ, जिसमें श्रीयुत पं० देवसेन जी शुक्ल ने प्रस्ताव किया कि नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का ३५ वां वार्षिक अधिवेशन कानपुर में निमन्त्रित किया जाय तथा उसकी सफलता के लिये पूर्ण व्यवस्था की जाय। इस प्रस्ताव का समर्थन सर्वश्री पं० रामेश्वर जी मिश्र, प० सत्यनारायण जी मिश्र, हकीम कन्हैयालाल जैन, पं० शम्भूनाथपाण्डेय, पं० नारायण प्रसादजी द्विवेदी आदि नगर के प्रतिष्ठित वैद्यों तथा आ० पं० श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल (प्रयाग) ने किया । प्रस्ताव निर्विरोध पास हुआ । तदनन्तर श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल के सभापतित्व में विद्वत्परिषद का कार्य और श्री हकीम कन्हैयालाल जी जैन के सभापतित्व में कानपुर जिला वैद्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन का कार्य आरम्भ हुआ । समयाधिक्य के कारण कार्य स्थगित कर दिया गया । ता०१९-४-४५ को ७ बजे पुनः कार्यारम्भ हुआ । विद्वत्परिषत् में स्नातकोत्तरविद्यालय के पाठ्यक्रम के निर्माण के लिये एक समिति बना दी गई । कानपुर जिला वैद्यसम्मेलन में कई प्रस्ताव स्वीकृत हुये जिनका आशय इस प्रकार था — कानपुर जिले के वैद्यों के संगठन के लिये तहसीलों तथा गांवों में वैद्य सभायें स्थापित करना एवं भाषणादि देना, आयुर्वेदविश्वविद्यालय की सुव्यवस्था के लिये सर्वात्मना सहायता प्रदान करना, तथा कानपुर में किये जाने वाले प्रान्तीय एवं अखिलभारतीय वैद्यसम्मेलनों की सफलता के लिये पूर्ण सहयोग प्रदान करना आदि ।

—प्रधानमंत्री

नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ स्नातक संघ, कानपुर ।

स्थायी समिति का अधिवेशन ता० १८-४-४५ को आयुर्वेदविश्वविद्यालय — मैदान (कानपुर) में श्री पं० रमेशचन्द्र जी शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ । उपस्थित सदस्यों की संख्या ५० थी और ४७ सम्मतियां बाहर से आई थीं । निश्चय हुआ कि द्वितीय स्नातकसम्मेलन के प्रस्तावों को शीघ्रतया कार्यरूप में परिणत किया जाय तथा आयुर्वेदविश्वविद्यालय के लिये धन संग्रह किया जाय ।

—प्र० मन्त्री ।

'राज्यभूषण' की उपाधि ।

श्रीमन्त युवराज माधवराव जी के बारसा के शुभावसर पर ग्वालियर सरकार ने निः भा. आयुर्वेदविद्यापीठ—स्नातकसंघ के सभापति राजवैद्य श्री पं. रामेश्वर जी शुक्ल वैद्य शास्त्री आयुर्वेदाचार्य (ग्वालियर) को 'राज्यभूषण' की उपाधि से विभूषित किया है ।

—संवाददाता

छांगाणी जी की हीरकजयन्ती ।

ता० ९—४—४५ को नागपुर के स्थानीय वैद्यों एवं स्नातकों की एक सभा हुई, जिसमें भारतविख्यात वै० भू० श्री पं० गोवर्धनदास शर्मा छांगाणी भिषक्केसरी के ७० वें वर्ष में पदार्पण करने पर 'हीरक जयन्ती' मनाने का निश्चय किया गया और तदर्थ एक कमेटी बना दी गई ।

विद्यापीठ की सूचनायें ।

१—परीक्षाफल जून की पत्रिका में छपेगा, जो ३० जून को प्रकाशित होगी और परीक्षा-फल शुद्धिपत्र जुलाई की पत्रिका में छपेगा, जो ३१ जुलाई को प्रकाशित होगी । छात्रों को दोनों पत्रिकाओं में अपना परीक्षाफल मिला कर देख लेना चाहिए ।

२—परीक्षाफल जानने के लिए व्यर्थ पत्र-व्यवहार न करें । आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका पढ़ें ।

३—पत्रिका के परीक्षाफलांक का मूल्य १) होगा, जो मनीआर्डर से पेशगी भेजना होगा । रजिस्ट्री से मंगाने वालों को ।) अतिरिक्त भेजने होंगे ।

४—जिन छात्रों पर विद्यापीठ का पैसा बकाया हो वे शीघ्र ही उसे मनीआर्डर से भेज दें, अन्यथा उनका परीक्षाफल रोक लिया जायगा ।

विद्यापीठ-मन्त्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा लाभ उठाने के लिये चन्द्रप्रभावटी आदि
— औषधियों में —
असली शुद्ध सूर्य्यतापी
(शिलाजीत)
का ही प्रयोग करें ।
मूल्य १ सेर २०) रु०, १ पाव ५।।), १ छटांक १।।), १ तोला ।≡)

पब्लिक आयुर्वैदिक फार्मेसी
पुरानी मण्डी, गुजरावांला (पंजाब)

रक्त-शुद्धि के लिये
रक्त दोष
त्वग्रोग
आतशक
रदोना
रक्त दोष नाशक
सूजाक
(पीव प्रमेह)
वगैरह पर
फायदे मन्द
श्री धूतपापेश्वर पनवेल लिमिटेड
लखनऊ शाखा—३८ लाटूशरोड । बनारस—हरिगणेश एण्ड ब्रदर्स, ब्रह्मघाट
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिये एक अनुपम औषधि—

❋ महिला-जीवन-रस ❋

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, कानपुर इस अपूर्व औषधि को बहुत दिनों से बना कर काम में ला रहा है। सैकड़ों रुग्णायें इसे सेवन कर मनोवांछित लाभ उठा चुकी हैं। आयुर्वेद की महात्तम औषधि का अधिकाधिक प्रचार हो इसलिये इसकी निर्माण-विधि पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है:—

निर्माण-विधि—हीरा भस्म ५ रत्ती, पन्ना भस्म ६ रत्ती, माणिक्य भस्म ७ रत्ती, पुखराज भस्म ८ रत्ती, नीलम भस्म ९ रत्ती, वैडूर्य भस्म १० रत्ती, गोमेद भस्म ११ रत्ती, मोती भस्म १२ रत्ती, प्रवाल भस्म १३ रत्ती, वैक्रान्त भस्म ७॥ तोला, स्वर्ण माक्षिक भस्म ७॥ तोला, रौप्य माक्षिक भस्म ७॥ तोला सब को एक में पीसे और सबसे तिगुना सम भाग पारा गंधक से बना कज्जली रस डाल बकरी के दूध से घोट सुखा पर्पटी बनाले। फिर इसको बांझ ककोड़े के काढ़े से पीस सुखा सकोरे में बन्द कर २० विनवा कण्डों की आंच में फूंके। इस प्रकार १६ दफे इसी के काढ़े से पीस कर फूंके। बस औषधि तैयार हो गई।

यह औषधि आयुर्वेद की अनुपम देन है। स्त्रियों के लिये इससे अधिक अमृत स्वरूप औषधि अब तक ईजाद ही नहीं हुई है। प्रदर, प्रसूत, मासिक धर्म की खराबियां, गर्भाशय की खराबियां, स्त्रियों की किसी भी कारण से उत्पन्न कमजोरी को ठीक करने में इसकी सानी की कोई भी औषधि है ही नहीं। जिनके बच्चा नहीं होता उनके पेट (उत्पादक अङ्गों) की तमाम खराबियों को दूर कर गर्भ स्थापन योग्य कर देता है। जिससे अवश्यमेव सन्तान होती है। गर्भावस्था में इसको सेवन करते रहने से गर्भपात नहीं होता, बच्चा पैदा होते समय अधिक कष्ट नहीं होता, साथ ही बच्चा पुष्ट, दीर्घायु, देखने में सुन्दर और बुद्धिमान् पैदा होता है। अतः ऐसी स्त्रियों के लिये जिन्हें गर्भपात हो जाता है या बच्चे नहीं जीते अथवा बच्चा होने के समय अत्यन्त तकलीफ होती है उनके लिये तो यह एक ईश्वरीय देन है। इसके सेवन करने वाली स्त्री को बुढ़ापा के लक्षण देर में प्रगट होते हैं तथा जोरदार नहीं होते, क्योंकि यह एक उत्कृष्ट रसायन है। स्त्रियों को हर अवस्था और हर मौसम में पूर्ण लाभप्रद है। बनाकर लाभ उठाइये। यह आयुर्वेद का शास्त्रीय योग है, जिसे आश्रम ने नाम की सुबिधा के लिये महिलाजीवन रस नाम से पेटेन्ट औषधि के रूप में प्रचारित किया है। आश्रम इस औषधि की ४० मात्रा की १ शीशी ९) में और ३ शीशी २६) में देता है। वैद्य मात्र से अनुरोध है कि अमृत स्वरूप इस औषधि को बनाकर यश लाभार्थ अवश्य प्रयोग करें। कोई बात मालूम करनी हो तो नीचे पते से पत्रव्यवहार करें।

उच्च श्रेणी की आयुर्वेदीय तथा पेटेन्ट औषधियों के निर्माता—

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, २७ कानपुर।

वैद्यों को अत्यधिक रिआयत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी चिकित्सा-प्रणाली को उन्नतिशील बनाइये।

विदेशी चिकित्सकों के उत्थान का रहस्य ही यह है कि वे औषधि-निर्माण में न लगकर अपना सम्पूर्ण समय, शक्ति तथा बुद्धि चिकित्सा-कार्य में लगा देते हैं तथा

औषधि बनाने का कार्य

उन विशाल कारखानों पर छोड़ देते हैं, जिनका काम केवल औषधि निर्माण करना ही होता है। आयुर्वेदीय औषधियों तथा उनके द्वारा चिकित्सा विज्ञानकी उन्नति एवं भारतीय वैद्यराजों की कमी को पूरा करने के लिये

माननीय पुरुषोत्तमदास जी टण्डन, स्पीकर लेजिस्लेटिव एसेम्बली, यू० पी० द्वारा उद्घाटित

भारतीय-रसशाला

कई विशेषतायें रखती है।

१—प्रत्येक योग विशुद्ध शास्त्रीय नियम से उत्तम प्रकारके मूल द्रव्यों से बनाये जाते हैं।
२—अधिक परिमाण में औषधियां निर्माण कर स्वल्प मूल्य पर वेची जाती हैं।
३—रसशाला के संरक्षक और अध्यक्ष जनता तथा आयुर्वेदजगत में ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं। केवल व्यापारी ही नहीं।
४—औषधि-निर्माण का कार्य कुशल तथा अनुभवी कार्यकर्त्ताओं द्वारा कराया जाता है। रसशाला प्रत्येक आयुर्वेदीय औषधियां—रस, भस्म, आसव, अरिष्ट, घृत, तैल, पाक, अवलेह, गुग्गुल, वटी, क्षार, सार, पर्पटी, लौह, मण्डूर, चूर्ण, अर्क तथा कूपीपक्व रसायन आदि निर्माणकर आयुर्वेदजगत की चिरकाल से सेवा कर रही है।

अतः

आप से तथा प्रत्येक आदरणीय वैद्यराजों, औषधि-विक्रेताओं, धर्मार्थ औषधालयों के माननीय संचालकों, गुणग्राही आयुर्वेदप्रेमी जनता, एवं म्युनिसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चिकित्सालयों के कर्णधारों से हमारा नम्र निवेदन है कि एक बार रसशाला की निर्मित औषधियां अवश्य व्यवहार कर उनकी उत्तमता की जांच करें। आशा है आपको सब प्रकार से संतोष होगा। पूर्ण विवरण के लिये सूचीपत्र मंगाकर लाभ उठावें।

संरक्षक—

माननीय आयुर्वेदाचार्य पं० शिवराम जी द्विवेदी, राजवैद्य, एम. एल. ए. (यू० पी०), सभापति—यू० पी० आयुर्वेद सम्मेलन, सदस्य—इण्डियन मेडिसिन बोर्ड, अध्यक्ष, रसायनशाला, अमीनाबाद, लखनऊ।

अध्यक्षा—

श्रीमती शान्तादेवी, वैद्या, सम्पादिका—आयुर्वेद-केसरी, संचालिका — स्त्री-चिकित्सालय, हजरतगंज, लखनऊ।

भारतीय रसशाला, हसनगंज, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखेबाजों से बचिये ! संस्थापित १९११ ई०

—शुभ सन्देश—

भारत की एक मात्र विराट आयुर्वैदिक-यूनानी संस्था,

बुन्देलखंड आयुर्वेदिक-यूनानी फार्मेस्यूटिकल वर्क्स, झांसी,

द्वारा निर्मित,

चिकित्सा—क्षेत्र में हलचल मचा देने वाले, तथा

रोगों को नष्ट करने में शतप्रतिशत सत्य प्रमाणित होने वाले

आयुर्वेदिक-यूनानी इन्जैक्शन

को प्रयोग कर धन तथा यश उपार्जन कीजिये ।

समस्त वैद्यों तथा हकीमों से निवेदन है कि वे हमारी रसायन-शाला द्वारा देशी जड़ी-बूटियों से निर्मित शुद्ध आयुर्वेदिक—यूनानी इन्जैक्शनों का प्रयोग कर लाखों रोगियों को कठिन से कठिन रोगों से मामूली खर्च में मुक्त करा कर उनके प्रशंसापात्र बनें ।

साथ ही, हमारे यहां आयुर्वेदिक—यूनानी इन्जैक्शनों की शिक्षा तथा चक्षु और दन्त शिक्षा वैद्यों और हकीकों को भी दी जाती है। स्टाकिस्टों और एजेन्टों की आवश्यकता है । कमीशन पर्याप्त दिया जाता है ।

हमारे यहां का सूचीपत्र और ऐजेन्सी के नियम मुफ्त मंगाइये ।

पता:—मैनेजर,

बुन्देलखंड आयुर्वेदिक-यूनानी फार्मेस्यूटिकल वर्क्स,

एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर,

प्रधान कार्यालय, मानिक चौक, झांसी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार का पता— 'साधना' ढाका। टेलीफोन—१२२ ढाका।

महान् वैज्ञानिक का

आयुर्वेद को दान।

आयुर्वेद का पुनरुद्धार और देशविदेशों में प्रचार।

अब वैद्यों को स्वयं औषधियां तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। साधना औषधालय हर समय उनकी सेवा के लिए तैयार है। यहां पर शुद्ध शास्त्रीय विधि से औषधियां तैयार की जाती हैं और उचित मूल्य पर बेची जाती हैं। महायुद्ध के कारण भी औषधियों के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई। वैद्यों को चाहिये कि वे दवाइयां बनाने के झंझट में न पड़ कर अपना समय और दिमाग रोगियों की चिकित्सा में लगावें।

साधना की सभी शाखाओं में रोगियों को चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श मुफ्त दिया जाता है।

अध्यक्ष—डा० योगेशचन्द्र घोष एम.ए.
आयुर्वेदशास्त्री, एफ०सी०एस०(लन्दन),
एम० सी० एस० (अमेरिका),
भागलपुर कालेज के केमिस्ट्री के
भूतपूर्व अध्यापक।

साधना औषधालय ढाका (बंगाल)

(शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों की प्रसिद्ध निर्माणशाला)
सारे संसार में इसकी शाखायें और एजेन्सियां हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. L.—5082

आपकी शुभाशीर्वादयुक्त शुभ कामना

के लिये

आपका प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

कलकत्ता

सन् १८८४ ई० में संस्थापित होकर सन् १९४४ ई० की समाप्ति पर ६० वर्षों को सेवाओं के बाद "हीरक जयन्ती" के स्मरणीय अवसर पर आदरणीय आयुर्वेद के कर्णधार, प्रत्येक भारतीय वैद्य, आयुर्वेद हितैषी, आयुर्वेद पत्रकार, आयुर्वेदिक औषधालय, आयुर्वेदिक पुस्तकालय, आयुर्वेदिक विद्यालय, आयुर्वेद शिक्षक, आयुर्वेद विद्यार्थी तथा विभिन्न आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से आयुर्वेद की निरन्तर सेवा के हेतु

प्रोत्साहन प्राप्ति के लिये

प्रार्थना करता है।

कृपया शुभाशीर्वाद प्रेषित कर अनुग्रहीत करें।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि० कलकत्ता

युद्धकालीन प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ—देवघर (S. P.)

शाखाएं—

(१) हाथरस (U. P.) (२) नागपुर (C P.)

सेलडिपो—

पटना (Bihar)

प्रकाशक—डा० आशुतोष मजूमदार, नई देहली। मुद्रक—अर्जुन प्रेस, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5082

❀ श्री धन्वन्तरये नमः ❀ रजिस्टर्ड नं० एल०—५०८२

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु ।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः ॥

आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका

(भारतीयायुर्वेदमहासम्मेलनाज्ञया प्रतिमासं प्रकाश्यते)

प्रधान सम्पादक :— कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि
एम० आर० ए० एस०, नई देहली।

सम्पादक :— रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य ।

वर्ष ३२ | अङ्क ६ — देहली, जून १६४५ ई० — वार्षिक मूल्य ५) | यह अङ्क १)

परीक्षाफलाङ्क—

❀ लेख-सूची ❀

१—हम इन सांपों को जानते थे । ... ३
२—आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा । ... ५
३—नूतन समाचार । ... ८
४—नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठस्य [illegible] वर्षीयं परीक्षाफलम् । ... ११-२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागार्जुन

—ने—

अनेक शताब्दी पूर्व अपनी अलौकिक और असाधारण प्रतिभा के बल से गतगौरव आयुर्वेद को पुनः प्रतिष्ठापित किया था।

—आज—

आयुर्वेद फिर स्खलित-गौरव, हतमान और विपर्यस्त हो गया है

अतः नागार्जुन के पवित्र नाम की ध्वजा लेकर,

कर्मकुशल और लब्धप्रतिष्ठ वैद्य

पाश्चात्यशिक्षानिपुण चिकित्सक

—एवं—

रसायनशास्त्र-निष्णात वैज्ञानिक

की देख-रेख में परिचालित

नागार्जुन आयुर्वेद रिसर्च इनस्टिट्युट

—ने—

आयुर्वेद की सेवा में आत्मनियोग किया है !

विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधियां प्रस्तुत करने के कारण इस संस्था को बत्तीसवें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से प्रमथ श्रेणी का प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ है।

औषधि-परिचय बिना मूल्य भेजा जाता है !

कार्यालय का पता—

लियाघाटा मेनरोड, कलकत्ता।

रसशाला का पता—

दमदम कैंट, (बंगाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज प्रकाशित अत्युत्तम वैद्यक ग्रन्थ

१—सचित्र रसरत्नसमुच्चय—अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित ५)

२—मेघविनोद—सरल हिन्दी। आयुर्वेद का अपूर्व ग्रन्थ है, पहली बार छपा है ४)

३—चरकसंहिता—श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया तथा श्रीवाग्भट-शिष्याचार्यवर-जेज्जटविरचितया निरन्तरपदव्याख्यया च संवलिता। आयुर्वेदाचार्येण श्री० पं० हरिदत्तशास्त्रिणा संशोधिता। दो जिल्दों में सम्पूर्ण। मूल्य ११)

४—भैषज्यरत्नावलिः— श्रीगोविन्ददासप्रणीता। कविराजश्रीज्ञानेन्द्रनाथमित्रैः संस्कृता परिवर्द्धिता च। आयुर्वेदाचार्य-कविराज-श्रीनरेन्द्रनाथशास्त्रिणा विरचितया रत्नोज्ज्वलाख्यया संस्कृतटीकया समलंकृता। मूल्य ८)

५—चक्रदत्तः—श्रीशिवदासेन कृतया तत्त्वचन्द्रिकासमाख्यया टीकया समलंकृतः। ३॥)

६—त्रिदोषविमर्शः—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गतत्रिदोष-वाक्यसंग्रहश्च। ले० पण्डितो धर्मदत्तः। मूल्य १॥)

७—रसेन्द्रचूडामणिः—श्रीसोमदेवविरचितः। मूल्य २)

८—सुश्रुतसंहिता (सचित्रा)—मूलमात्रम्। मूल्य ३)

९—माधवनिदानम्—मधुकोशव्याख्यया समुल्लसितम्, परिशिष्टनिदानेन च संयोजितम्। २॥

१०—अष्टाङ्गहृदयम् — विद्वद्वरश्रीमदरुणदत्तकृता सर्वाङ्गसुन्दराख्या टीका तथा मौद्गल्यटिप्पणी च। ६)

११—रसहृदयतंत्रम्—भगवद्गोविन्दपादविरचितं तथा मुग्धावबोधनीव्याख्यासहितम् २।)

१२—रसेन्द्रसारसंग्रहः—मूलमात्र, गुटका। १)

१३—भावप्रकाशनिघंटु—श्री पं० विश्वनाथजी कृत सरल हिन्दी अनुवाद। अनुवाद में कोई बात छूटने नहीं पाई। अत्यन्त विस्तृत तथा उपयोगी। ४॥)

१४—चरकसंहिता—श्री जयदेवविद्यालङ्कारकृत सरलहिन्दी अनुवादसहित। द्वितीयसंस्करण। सम्पूर्ण मूल्य २५)

१५—योगरत्नाकार—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। १५

१६—भैषज्यरत्नावली— श्री जयदेव विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीयावृत्ति। संपूर्ण पुस्तक १८०० पृष्ठों में समाप्त है। मू० १०), दो बढ़िया जिल्दों में।

१७—गुणों का खजाना — स्वा० परमानन्दकृत। इसमें अनेक आजमाये हुए फकीरी नुसखे हैं। २)

१८—शल्यतन्त्र (सचित्र)—श्री अत्रिदेवकृत, सरलहिन्दी में। शल्य (चीरफाड़ जर्राही) विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ। ४)

१९—ज्वरतिमिरभास्कर—कायस्थचण्डविरचित तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४)

२०—सचित्र रसेन्द्रसारसंग्रह—कविराज श्री विद्याधरकृत हिन्दी अनुवाद। जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण ६०० पृष्ठ।४)

२१—नवनावनीतक—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सरलहिन्दी अनुवाद सहित। ३)

२२—भावप्रकाश—केवल ज्वराधिकार। श्री पं० हरिदत्त जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित १)। इनके अतिरिक्त हमारे यहां सब प्रकार के चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत रियायत से मिलते हैं। प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित १८९३ ई०

नक्कालों से सावधान रहिये— संसार का एकदम नया आविष्कार !

वैद्य-बन्धुओं को शुभ-सन्देश !!

५० वर्ष पुरानी भारत की सर्वप्रथम विश्वसनीय रसायनशाला

जो अपनी प्रामाणिकता और निःस्वार्थ सेवा के कारण करोड़ों भारतीयों की प्रिय बन गई है और....जिसका सञ्चालन आयुर्वेदिक-इंजेक्शन-विज्ञान के प्रथम आचार्य आविष्कारक एवं यशस्वी लेखक—आयुर्वेदालङ्कार वैद्यशास्त्री डा० राधागोविन्द जी मिश्र के निरीक्षण में होता है।

जी० ए० मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी

[रजि०] झांसी (यू० पी०) द्वारा बनाये गये—

देशी जड़ी बूटियों द्वारा वैज्ञानिक ढंग से निर्मित और लाखों रोगियों पर परीक्षित—विशुद्ध—

मिश्रा-आयुर्वेदिक-इंजेक्शन

प्रयोग में लाकर कठिन से कठिन रोगों से थोड़े समय और मामूली खर्च में मुक्ति पाइये और भारतीय विज्ञान को प्रोत्साहन देकर देश-सेवा का यश लीजिये।

भारत और विदेशों में सर्वत्र इस अन्यतम आविष्कार का विराट् स्वागत किया जा रहा है। आप भी परीक्षा कीजिए और देखिए कि आपके आयुर्वेद में कितनी महान् शक्ति और चमत्कार विद्यमान है।

संसार की यह प्रथम वैज्ञानिक रसायनशाला है जिसने सर्वप्रथम आयुर्वेदिक इंजेक्शनों का आविष्कार कर भारत का मस्तक ऊंचा किया है और संसार को चकाचौंध कर दिया है। आयुर्वेद-जगत् के प्रसिद्ध-विद्वानों द्वारा सहस्रों प्रशंसा-पत्र और स्वर्ण-पदक प्राप्त किये हैं।

एजेन्टों की आवश्यकता है—कमीशन पर्याप्त दिया जाता है ! नियम मुफ्त मंगायें।

आयुर्वेदिक इंजेक्शनों का सांगोपांग परिचय जानने के लिए 'सचित्र-आयुर्वेदिक-इंजैक्शन-विज्ञान' पुस्तक अवश्य पढ़िये। इसके अब तक ४ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और आयुर्वेद-जगत् के प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा इसका अपूर्व स्वागत किया गया है।

एक प्रति का मूल्य ५) पोस्टेज ।।-)

वैद्य-बन्धुओं की सुविधार्थ हमारे यहां इंजेक्शन देने की शिक्षा भी दी जाती है। नियम मंगाइये।

पता— जी० ए० मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी (रजि०) झांसी यू० पी०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम इन सापों को जानते थे।

(ले०—श्री रामेश वेदी, लाहौर)
(गताङ्क से आगे)

वैदिक ऋषि इन जातियों को जानते थे।

वेदों में ऋक्, यजु और साम की अपेक्षा अथर्व में सांपों के विषय में अधिक ज्ञान मिलता है। सांपों की जो जातियां वेदों में हैं उनमें से अनेक अपेक्षाकृत नये लिखे गये संस्कृत ग्रन्थों में नहीं उपलब्ध होतीं। इसके विपरीत संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित सांपों के अनेक नाम वेदों में दिखाई नहीं देते। निम्नलिखित जातियों के नाम वैदिक साहित्य में आये हैं:—(१५५) अंग्य (ऋ० १–१९१–७)—अंगों पर लिपट जाने वाला, (१५६) अंस्य (ऋ० १–१९१–७)—कन्धे या बाहु पर लिपटने वाला, (१५७) अघाश्व (अ० १०–४–१०)—अघ पाप, अशूङ् व्याप्तौ, जो जीव पाप में व्याप्त है। पाप ही पाप करता है। अथवा अश्व (घोड़े) को मारने वाला (आ हन्तीति अघः)। अजगर (अ० १२–२–२५, २०–१२९–१७)—अज (बकरे) को निगल लेने से इस सांप का नाम अजगर पड़ा है (अजं गिरतीति अजगरः)। (१५८) अदृष्टत्वह (ऋ० १–१९१–४), (१५९) अपोदक (अ० ५–१३–६)—जल के बाहर रहने वाला भूसर्प, (१६०) अपोक (अ० ५–१३–६)—घरेलू सांप, अथवा घरों (ओक) में न (अप) रहने वाला, (१६१) अरस (अ० ७–५६–५)—हलका विषैला सांप, (१६२) अलीक (अ० ५–१३–५)—छोटा सांप, अथवा झूठा सांप (Pseudo Snakes), क्रमिक विकास में जो अभी पूर्ण रूप से सांप नहीं बन पाया है, (१६३) असिक्नी (अ० ५–१३–७)—काली सर्पिणी, (१६४) असित (अ० ३—२७१, ५–१३५)—जो सफेद (सित) नहीं है, अर्थात् काला सांप, (१६५) अहि (ऋ० ७–१०७–७, अ० १०–४–९)—घातक सांप (आ हन्तीति), (१६६) आलिग (अ० ५–१३–७)—इकट्ठा रहने का जिसका स्वभाव है, मण्डली सांपों के अन्तर्गत है, आशीविष (ऐ० ब्रा० ६–१)—जिसके मुख के अन्दर विष रहता है; सुश्रुत ने इसे फनियर सांपों में गिनाया है (सं० २७ देखें)। (१६७) उपतृण्य (अ० ५–१३–५)—घास में रहने वाला, तृणसर्प (Grass Snake), (१६८) उरुगूला (अ० ५–१३–८)—बहुत (उरु) क्रियाशील (गुदी उद्यमने); मण्डली वंश के अन्तर्गत है; (१६९) कंकत (ऋ० १–१९१–१)—कंघी जैसे बड़े और पैने जिसके दांत हैं, (१७०) कंकपर्व (अ० ७–५६–१), (१७१) कनिक्रत (अ० १०–४–१३)—सं० १७३ से मिलता है, (१७२) कर्ण्य (अ० ५–१३–९)—वह सांप जिसमें श्रवणशक्ति अधिक उन्नत हो गई है; अथवा पहले शायद कोई कान वाली जाति रही हो, (१७३) करिक्रत (अ० १०–४–१३)—क्री क्री करने वाला, घास के कर्कर सांप सं० २२८ से मिलता है, (१७४) कल्माषग्रीव (अ०)—गरदन हरी (कल्माष) हो, (१७५) कसर्णील (अ० १०–४–५) कास में रहने वाला नीला सांप, (१७६) कुशरास (ऋ० १–१९१–३)—छोटे (कु) सरकण्डों (शर) में छिपने वाला, (१७७) कैरात (अ० ५–१३–५)—कौड़िया सांप होगा, जिसे भारत में बहुतसी जगहों पर करैत कहा जाता है, (१७८) जूर्णी (अ० २–२४–५)—बूढ़ी सर्पिणी; बहुत देर तक जीने वाली कोई जाति है, (१७९) तिरश्चिराजि (अ० १०–४–१३)—तिरछी रेखाओं वाला; आयुर्वेदिक लेखकों का राजिमान् हो सकता है; (१८०) तिरश्चीनराजि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मै० सं० २-१३-२१)—सं० १७६ देखें, (१८१) तैमात (अ० ५-१३-६, ५-१८-४)—जल (तिमात, तिमु आर्द्रीभावे) में रहने वाला, (१८२) दर्भास (ऋ० १-१९१-३)—दर्भ (दाभ घास) के जंगलों में मिलने वाला, (१८३) दर्वि (अ० १०-४-१३)—फनियर, आयुर्वेदिक लेखकों का दर्वीकर होगा; (१८४) दर्वी (अ० १०-४-१३)—सं० १८३ देखें, (१८५) दशोनसी (अ० १०-४-१७)—दंश से नाश करने वाला; सम्भवतः यह शब्द शेषनाग के लिये प्रयुक्त हुआ है, जिसके दंश से मृत्यु बहुत शीघ्र होती है, (१८६) नाग (शत० ब्रा० ११-२-७-१२)—फनियर, (१८७) नीचीन (अ० ७-५६-५)—जो गरदन को ऊपर न उठा सकता हो, नीचे रखता हो; (१८८) प्रकंकत (ऋ० १-१९१-७)—फूर्सा (Achis Carinate) के शल्कों की तुलना आरे के दांतों अंग्रेजी नाम Saw—Slcaled Viper से की जाती है; सम्भवतः यह फूर्सा है, (१८९) पृदाकु (अ० १०-४-५)—आखुघ्नत्, चूहे खाने वाला सांप। क्लीवा (Ptyas) गण का सांप या अजगर हो सकता है। (१९०) पृश्न (अ ५-१३-५) —चितकबरा सांप, (१९१) पिपील (ऋ० १०-१६-६) —पीले रंग का, (१९२) बभ्र (अ० ५-१३-५)—सं० ६८ देखें, बभ्रु—भूरे रंग वाला सांप (सं० ४८), (१९३) महानाग (शत० ब्रा० ११-२-७-१२)—शेषनाग हो सकता है, (१९४) मौञ्ज (ऋ० १-१९१-३) मूंज घास या मूंज पर्वत में होने वाला, (१९५) रथर्वी (अ० १०-४ ५)—थर्वति गतिकर्मा, चंचल सांप। अथवा रथ के पीछे भाग कर चोट करने वाला। अध्याय ४ में फोर्डकार का पीछा करके हमला करने का एक उदाहरण शेषनाग सांप का दिया है। इस लिये यह शेषनाग या घोड़ा पछाड़ (धामन) सांप हो सकता है। (१९६) लोहिताही। (तै० सं० ५ ५-१४-१, मै० सं० ३-१४ १२, वा० सं० २४-३१) —लाल सांप अथवा जिसके काटने से शरीर के सब रास्तों से खून निकलने लगता है। मण्डली सांपों के विषलक्षण देखिये। (१९७) वाहस (तै० सं० ५-५-१३-१; मै० सं० ३-१४-१५; वा० सं० २४-३४)—वाहं स्यति, गति को रोकने वाला। खाने से पहले सांप शिकार को मार कर उसकी गतियों को बन्द कर देता है। (१९८) विलिगी (अ० ५-१३-७)—जिस का अलग रहने का स्वभाव है, मण्डली वंश के अन्तर्गत है। (१९९) विद्रुत (अ० ७-५६-२) कुटिल सांप, (२००) वैरिण (अ० १-१९१-३)—कल्लर (इरण) में रहने वाला, (२०१) शरास (ऋ० १-१९१-३) —सरकण्डे के झाड़ों का निवासी, (२०२) शर्कोट (अ० ७-५६-५)—सरकण्डों (शर) में जिसने घर (कोट) बनाया है। (२०३) श्वित्र (अ० १०-४-५-१३, तै० सं० ५-५-१०-२)—सफेद सांप या जिसके शरीर पर श्वित्र कुष्ठ की तरह सफेद धब्बे हों, (२०४) सतीन कंकत (ऋ० १-१९१-१) —जल (सतीन) में रहने वाला कंकत। सर्प (ऋ० १०-६-६)—वाग्भट (सं० १२५) ने इसे निर्विष सांपों में गिनाया है। (२०५) सात्रासह (अ० ५-१-३६)—युग्म सर्प। ....नवें अध्याय में 'द्विशिरी सांप' शीर्षक में देखें। (२०६) सूचीक (ऋ० १-१९१- ७)—मुंह पतला और नोंकदार सा हो, (२०७) सेरभ (अ० २-२४-१)—सोये हुये (शे) पर हमला (रभ—आरम्भ) कर देने वाला, (२०८) सेरभक (अ० २-२४-१)—सं० २०७, (२०९) सेवृध (अ० २-२४-१), (२१०) सेवृधक (अ० २-२४-१), (२११) सैर्य (ऋ० १-१९१-३)—जो हल (सीर) चले खेतों में कीड़े खाने पहुंच जाता है, (२१२) स्वज (अ० ७-३-५८; १०-४-४०)—स्वयं जायते। अण्डे को फोड़कर स्वयं बाहर निकल आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा

(केरल-द्रविड-कर्णाटक में)

[गताङ्क से आगे]

३० जनवरी को सायंकाल 'वैद्यचन्द्रिका' के सम्पादक वैद्यराज श्री एस० नारायण पण्डित के नेतृत्व में मधुरा स्टेशन पर स्वागत किया गया। दूसरे दिन सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष रामनद के डिस्ट्रिक्ट और सैशन जज श्रीमान् ए० एस० पी० अय्यर, एम० ए०, आई० सी० एस० थे, जो एक विशिष्ट विद्वान् और प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। एडवर्ड हाल के सामने का विस्तृत मैदान नागरिक जनता की भीड़ से खचाखच भरा था। आयुर्वेदराष्ट्रपति को एक अभिनन्दनपत्र भेंट किया गया, तथा स्वदेश वैद्यसभा ने उन्हें "वैद्यवाचस्पति" की उपाधि से विभूषित किया। उन्होंने आयुर्वेदविज्ञान का जो सन्देश दिया था उससे सभाध्यक्ष श्री अय्यर अत्यन्त प्रभावित हुए और दूसरे दिन उन्होंने उनके सम्मानार्थ अपनी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक "थ्री मैन आफ डेस्टिनी" (तीन भाग्यशाली महापुरुष) भेंटस्वरूप भेजी। सभापति मुखर्जी के भाषण ने आयुर्वेद के विषय में इतनी रुचि पैदा करदी कि दूसरे दिन ए० आर० हाईस्कूल में एक और सार्वजनिक सभा का आयोजन करना पड़ा, जिसमें नगर के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। इस सभा में भाषण देने के पश्चात् कविराज जी से प्रार्थना की गई कि वे राष्ट्रीय सेवकसंघ के लड़कों को, जो स्कूल के मैदान में ड्रिल और व्यायाम कर रहे थे, कुछ उपदेश दें। कविराज जी को मार्चिङ्ग करते हुए सामूहिक अभिवादन (सैल्यूट) किया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया तथा स्वास्थ्य, धर्म, एवं सेवा के सम्बन्ध में आयुर्वेद का सन्देश उन्हें दिया। २ फरवरी को अमेरिकन कालेज के संस्कृतसंघ ने कालेज के प्रिंसिपल की अध्यक्षता में संस्कृतविद्या पर सभापति जी के भाषण का प्रबन्ध किया। कालेज के छात्रों और छात्राओं के अतिरिक्त कुछ वैद्य एवं अन्य महानुभाव भी उपस्थित थे। कविराज जी ने कहा कि संस्कृतभाषा सम्पूर्ण भारतवर्ष की साधारण बोलचाल की भाषा हो सकती है। परन्तु क्योंकि संस्कृत विद्वानों की भाषा की छाप लिये हुए है, अतः अन्तःप्रांतीय व्यवहार के लिए एक साधारण देशी भाषा भी (जो उर्दू के शब्दों से मुक्त हिन्दी ही हो सकती है) अपनानी होगी।

३ ता० को वैद्यों की सभा हुई जिसमें उनके कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व पर संस्कृत में भाषण दिया गया तथा आयुर्वेदकांग्रेस में सम्मिलित होंने के लिए अपील की गई जिसे उन्होंने स्वीकार किया। तत्पश्चात् संस्कृत-परिषत् ने सभापति जी के स्वागत में एक सभा की जिसमें उन्होंने संस्कृत में भाषण देते हुए इस बात पर बल दिया कि देश की हिताकांक्षा से प्रत्येक भारतीय को संस्कृत भाषा का ज्ञानोपार्जन नितान्त वाञ्छनीय है तथा अपने देश भर के गम्भीर एवं प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर तत्सम्बन्धी परिस्थिति का चित्रण किया। ५ ता० को अमेरिकन कालेज के हिन्दी संघ का वार्षिक उत्सव था, जिसके अध्यक्ष मधुरा डिस्ट्रिक्ट जज श्री पी० राजगोपालन्, आई० सी० एस०, चुने गये थे। सभापति मुखर्जी को इस अवसर पर हिन्दी में भाषण देने के लिए विशेष रूप से निमन्त्रित किया गया था। परन्तु जिस प्रकार त्रावणकोर का कार्यक्रम वाइसराय महोदय ने भंग कर दिया था उसी प्रकार यहां प्रान्त के गवर्नर आगए होंगे। तंजौर से एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना मिली कि प्रान्तीय गवर्नर शीघ्र ही तंजौर आने वाले हैं, अतः आयुर्वेदराष्ट्रपति को उनसे पहले वहां पहुँच जाना चाहिये। अतः तंजौर का कार्यक्रम, जो अन्तिम रूप से ४ ता० के लिए निश्चित हो चुका था, पूरा करना पड़ा और इतना भी समय न मिला कि हिन्दीसंघ को इस डेरा उखाड़ कर भागने की सूचना भी दे देते। ४ ता० से त्रिचनापल्ली सभापति जी के क्रियाकलाप का केन्द्र हो गया। द्रविड़ प्रांतीय आयुर्वेदमण्डल के उपसभापति श्रीयुत पं० वी० वी० नटराज शास्त्री ने सभापति जी के सुखसौविध्य का भार अपने ऊपर ले लिया। तंजौर का एक दिन का कार्यक्रम अत्यन्त व्यस्त था। तंजौर के प्रसिद्ध सरस्वती-पुस्तकालय का निरीक्षण किया गया। उसके अधिकारी ने उसके विभिन्न भागों का परिचय कराया। ज्ञात हुआ कि इसको सरकारी सहायता बहुत थोड़ी मिलती है, फिर भी किसी न किसी तरह संस्कृत प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों का संरक्षण किया जा रहा है। यह भी ज्ञात हुआ कि पुस्तकालय द्वारा जो पुस्तकसूची प्रकाशित हुई है उसमें संस्कृत और तामिल में मुद्रित और अमुद्रित आयुर्वेदीय पाण्डुलिपियों का भी वर्णन है। सायंकाल तंजौर भारतीय चिकित्सक संघ के, जो संपूर्ण चिकित्सा-पद्धतियों के चिकित्सकों का एक संघ है, तत्त्वावधान में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। डिस्ट्रिक्ट जज की अनिवार्य अनुपस्थिति के कारण डा० सैयद ताजुद्दीन अहमद ने सभा की अध्यक्षता की। डाक्टर साहब आयुर्वेदीय चिकित्सा के उदार प्रेमी हैं। आयुर्वेद राष्ट्रपति के प्रभावशाली भाषण के पश्चात् उन्होंने भी एक रोचक भाषण दिया। इसके पश्चात् आयुर्वेद के स्थानीय संरक्षकों से व्यक्तिगत संपर्क का आयोजन किया गया। एक संस्कृत-पंडित ने अपनी अनेक पुस्तकें सभापतिजी को समर्पित कीं। ७ ता० को संघ के प्रधान और मंत्री महामंडल के सदस्य बन गये। ७ ता० को कराईकुडी (जि० रामानद) में कार्यक्रम निश्चित हुआ। यह स्थान 'कुबेरनगर' कहा जा सकता है क्योंकि बर्मा, मलाया, सिंगापुर आदि में व्यापार-व्यवसाय करने वाले दक्षिण के चेट्टियों में जितने धनकुबेर हैं वे सब यहीं के निवासी हैं। आयुर्वेदराष्ट्रपति इन्हीं में से एक के अतिथि थे। सायंकाल स्थानीय धर्मार्थ आयुर्वेद औषधालय का निरीक्षण किया गया। इसी अवसर पर एक चाय-सप्रीति और चित्रादान का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् सार्वजनिक सभा हुई, जिसके अध्यक्ष स्थानीय कांग्रेस-कमेटी के सभापति थे। आयुर्वेदराष्ट्रपतिजी को तामिल भाषा में अभिनन्दनपत्र भेंट किया गया। एक प्रतिष्ठित एडवोकेट ने आ० राष्ट्रपतिजी के अंग्रेजी भाषण का अनुवाद सभा को सुनाया। दूसरे दिन मध्यान्ह तक आयुर्वेद के विद्वानों से भेंट की। आयुर्वेदराष्ट्रपति ने पर्दानशीन महिलाओं को दर्शन दिये तथा उनकी सभा में उपदेश किया कि वे अच्छी मातायें बनें तथा आयुर्वेद की शिक्षा के अनुसार अपने शिशुओं का पालन करें। सभापतिजी के वहां से चलने से पूर्व महामंडल के कुछ सदस्य भी बनाये गये। जैसा शानदार उनका स्वागत हुआ था वैसी ही शानदार उनको विदाई दी गई। एक चेट्टियार महोदय ने ५०) आयुर्वेदराष्ट्रपति-कोष को प्रदान किये। ६ फरवरी से सलेम का कार्यक्रम निश्चित हुआ था। अनेक वैद्यों ने सभापति जी का सलेम-जंकशन पर स्वागत किया। सायंकाल टाउनहाल में एक भू० पू० म्युनिसिपल चेयरमैन एम. एल. ए. की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें प्रतिष्ठित नागरिक सम्मिलित हुये। अध्यक्ष महोदय ने श्रीयुत मुकर्जी के आयुर्वेदविज्ञान विषयक भाषण की भूरि भूरि प्रशंसा की और स्वयं भी आयुर्वेद की अतुलनीय उत्कृष्टता पर प्रशंसनीय व्याख्यान दिया। दिन के पूर्वार्द्ध में वैद्यों की सभा हुई थी, जिसमें द्रविड़ प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल की जिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखा की स्थापना हुई। सभापति मुखर्जी ने संगठन पर बल दिया और बतलाया कि इससे आयुर्वेद की सम्पूर्ण समस्याओं का हल हो सकता है। ११ ता० को प्रातःकाल सभापतिजी ने स्थानीय संवाददाताओं से वार्तालाप किया तथा आयुर्वेदीय पुनर्निर्माण की युद्धोत्तर-योजनाओं पर प्रकाश डाला, जिसे उन्होंने बहुत पसन्द किया तथा बाद में समाचारपत्रों द्वारा सर्वत्र पहुँचा दिया। केरल आयुर्वेद समाजम् द्वारा संचालित औषधालय के अध्यक्ष महोदय ने सभापतिजी को चाय-पान कराया। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने स्थानीय वैश्य साहित्य सभा में भाषण दिया। स्थानीय हाई-स्कूल के हिन्दी-अध्यापक ने उनका हिन्दी भाषण तामिल में अनूदित करके सभा को सुनाया। महामण्डल के कुछ सदस्य बनाने के बाद सभापतिजी को हार्दिक विदाई दी गई। (क्रमशः)

सच्चे मोती।

वैद्यो ! हकीमो !! तथा फार्मेसी वालो !!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन मोती वगैरा, जो दवा के काम के लिये सर्वोत्तम हैं तथा जो भारतवर्ष के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पताः—नगीनदास वीरचन्द जवेरी, ४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

उत्तम लोह भस्म

२०) प्रति सेर। यह हमारे कार्यालय में सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार तीक्ष्ण लोह से करीब ५ मन के प्रतिवर्ष तैयार होती है। बहुत सी प्रसिद्ध प्रसिद्ध फार्मेसियां तथा वैद्य हमसे थोक परिमाण में मंगाते हैं। आप भी एक बार मंगा कर परीक्षा करें।

हमारे यहां सब प्रकार की भस्में, रस, रसायन, पर्पटी, जौहर, आसवारिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल, चूर्ण आदि सर्व प्रकार की शास्त्रीय औषधियां उत्तम तथा रियायती मूल्य पर बनती और भेजी जाती हैं।

शुद्ध शिलाजीत

हमारे अपने कार्यालय में प्रति वर्ष करीब ३०० मन शास्त्रविधि अनुसार शोधित की जाती है। सूर्यतापी २०), अग्नितापी १२) प्रति सेर। वज्राभ्रक उत्तम १।।।) सेर, अष्टवर्ग ६) प्रति सेर।

सब प्रकार के विषोपविष, खनिज-द्रव्य, जड़ी बूटियां, प्राणिज पदार्थ हमसे सस्ते मूल्य पर मिल सकते हैं।

"सूचीपत्र मुफ्त"

किसी अन्य स्थान से मंगाने से पहिले हमारे भाव अवश्य देखें। धर्मार्थ संस्थाओं को विशेष रिआयत से माल भेजा जाता है।

काश्मीर आयुर्वेदिक वर्क्स, जी० टी० रोड, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूतन समाचार

बंगाल का दौरा।

सभापति कविराज मुखर्जी गत ७ मई से बंगाल का दौरा कर रहे थे। भारतवर्ष के अन्य भागों में सतत क्रियाकलाप में निरन्तर व्यस्त रहने के कारण गत दो वर्षों से वे बंगाल के संगठन पर ध्यान नहीं दे सके थे। बंगाल के इस अल्पकालिक भ्रमण में, जो २ जून को समाप्त हुआ है, माणिकगंज में एक नया महकुमा मण्डल स्थापित किया गया। स्थानीय वैद्यों ने सभापति जी के सार्वजनिक भाषण का भी आयोजन किया जिसने नगर के भद्रसमाज की रुचि आयुर्वेद में उत्पन्न कर दी। इस भ्रमण में सभापति जी ने प्रान्त के उन रोगाक्रान्त भागों की परिस्थितियों का भी अध्ययन किया जहां सहायता की आवश्यकता है।

प्राप्तिस्वीकार—आयुर्वेदराष्ट्रपति जी ने २१ अप्रैल को 'प्रिंसपिल्स आफ त्रिदोष' नामक पुस्तक तथा एक पत्र गांधी जी को भेजे थे। श्रीयुत आर० पी० परशुराज ने गांधी जी की ओर से स्वीकृति प्रदान करते हुये आयुर्वेदराष्ट्रपति जी को धन्यवाद दिया है

अर्जुन आयुर्वेदविद्यालय (बनारस)—का १९४५ का परीक्षाफल इस प्रकार है- आयुर्वेदाचार्य में नारायणप्रसाद (१), स्वामीनाथ और लोमशप्रसाद (२), रामउजागर, श्रीकृष्ण, रामप्रसाद और तुलाधर (३)। आयुर्वेदशास्त्री में गुरुप्रसाद, कोमल, उदितनारायण और जगदीशनारायण (१), दीनानाथ, मोहनलाल, बुद्धिप्रसाद, रामनिरञ्जन, गुलाब, मुन्नीलाल और शिवशंकर (२), बासुदेव, चन्द्रिकाप्रसाद और हृदयनारायण (३)। आचार्य प्रथमखण्ड में अभयनन्दन (२), काशीनाथ, विश्वनाथ और राजकुमार (३)।

लाहौर वैद्यसभा—के वार्षिक अधिवेशन में कविराज रामगोपाल जी वैद्यभूषण प्रधान और कविराज धर्मदत्तजी चौधरी आयुर्वेदाचार्य प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुये।

संयुक्त प्रान्तीय षोडश वैद्यसंमेलन—आश्विनमास में दशहरे के अवकाश दिनों में ता० ९, १०, ११ अक्टूबर को देहरादून में होगा। इसकी स्वागतसमिति का निर्वाचन ता० २२-४ ४५ को हो चुका है। महन्त श्री इन्दिरेशचरणदास जी एम० ए० स्वागताध्यक्ष और श्री पं० अमरनाथ जी वैद्यशास्त्री स्वागतमंत्री निर्वाचित हुये हैं। तैयारियां अभी से शुरू होगई हैं।

संयुक्तप्रान्तीय वैद्यसम्मेलन—से बदायूं, झांसी, मुरादाबाद, बुलन्दशहर, अमरोहा, और धामपुर की वैद्यसभायें सम्बद्ध हुई हैं। संयुक्त प्रान्त में एक प्रतिद्वन्द्वी वैद्यसंमेलन 'युक्तप्रान्तीय आयुर्वेदमहासंमेलन' के नाम से खड़ा होने जारहा है जिसके स्वगतमन्त्री श्रीकान्तजी के लघुभ्राता श्री लक्ष्मीकान्त जी निर्वाचित हुये हैं।

राष्ट्रपति-कोष।

चक्रधरपुर के सेठ शालिग्राम जी ने आयुर्वेदराष्ट्रपति के अपने भाई के शुभविवाह महोत्सव में संमिलित होने के उपलक्ष्य में ११) आयुर्वेदराष्ट्रपतिकोष के लिये इस्लामपुर (जयपुर) के वैद्यराज विरिंचीलाल जी द्वारा प्रदान किये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AYURVEDIC INJECTIONS

PREPARED AT INDIA'S PIONEER
AYURVEDIC LABORATORY.
(Established in A.D. 1914)

THE APOLLO PHARMACY
MANUFACTURING CHEMISTS
P.O. JHARIA, E. I. Rly.

Branches & Agencies:

Ahmedabad, Ajmer, Anjar-Cutch, Bagalkot, Bangalore City, Baroda, Bavla, Belgaum, Bhavnagar, Bombay, Botad, Broach, Cairo (Egypt), Cawnpore, Chhindwara, Chuda, Davangere, Devpur, Dhandhuka, Dhrol, Ilkal, Jammu, Jamnagar, Jodia, Kapadwanj, Karachi, Kosamba, Lahore, Lakhtar, Latur, Limbdi, Marwar-Mundwa, Mehsana, Morvi, Nadiad, Nairobi (East Africa) Nasik City, Palitana, Patan, Patna, Patiala, Rajkot, Raver, Srinagar-Kashmir, Secundrabad, Shiroda, Sihor, Surat, Visnagar, Wadhwan Camp and City.

Apollo injections are being used by many leading physicians and surgeons of India, who are interested in the Indian system of medicine. This is the only Indian laboratory well known for their high standard of accuracy and purity. Some leaders of Ayurvedic Congress have praised our products with open hearts.

Our products are available from your city agent at our fixed rates. They are highly beneficial and used with success by millions of people throughout India and abroad.

Medical practitioners get reasonable commission. For further details see our agent or write to the Pharmacy. We are writing to appoint more agents in non-represented areas.

आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स

दि अपोलो फार्मेसी, झरीया ई० आई० आर०

एपोलो आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स लाखों रोगियों पर परीक्षित किये गये हैं। अल्प मूल्य होने पर भी अधिक गुणकारी हैं। भारतवर्षके आयुर्वेदके महान् नेताओंने उनकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। आप अपने शहरके हमारे एजेण्टसे खरीद कर थोड़े व्ययमें ही आरोग्यता प्राप्त कीजिये। आपके यहां न मिलने पर फार्मसीसे मंगवालें। विशेष विवरण हमारे एजेण्ट द्वारा ज्ञात करें।

WAR—TIME BRANCH—OFFICE

The Apollo Pharmacy
Pratapganj, BARODA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिये एक अनुपम औषधि—

❋ महिला-जीवन-रस ❋

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, कानपुर इस अपूर्व औषधि को बहुत दिनों से बना कर काम में ला रहा है। सैकड़ों रुग्णायें इसे सेवन कर मनोवांछित लाभ उठा चुकी हैं। आयुर्वेद की महात्तम औषधि का अधिकाधिक प्रचार हो इसलिये इसकी निर्माण-विधि पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है:—

निर्माण-विधि—हीरा भस्म ५ रत्ती, पन्ना भस्म ६ रत्ती, माणिक्य भस्म ७ रत्ती, पुखराज भस्म ८ रत्ती, नीलम भस्म ६ रत्ती, वैडूर्य भस्म १० रत्ती, गोमेद भस्म ११ रत्ती, मोती भस्म १२ रत्ती, प्रवाल भस्म १३ रत्ती, वैक्रान्त भस्म ७॥ तोला, स्वर्ण माक्षिक भस्म ७॥ तोला, रौप्य माक्षिक भस्म ७॥ तोला सब को एक में पीसे और सबसे तिगुना सम भाग पारा गंधक से बना कज्जली रस डाल बकरी के दूध से घोट सुखा पर्पटी बनाले। फिर इसको बांझ ककोड़े के काढ़े से पीस सुखा सकोरे में बन्द कर २० विनवा कण्डों की आंच में फूंके। इस प्रकार १६ दफे इसी के काढ़े से पीस कर फूंके। बस औषधि तैयार हो गई।

यह औषधि आयुर्वेद की अनुपम देन है। स्त्रियों के लिये इससे अधिक अमृत स्वरूप औषधि अब तक ईजाद ही नहीं हुई है। प्रदर, प्रसूत, मासिक धर्म की खराबियां, गर्भाशय की खराबियां, स्त्रियों की किसी भी कारण से उत्पन्न कमजोरी को ठीक करने में इसकी सानी की कोई भी औषधि है ही नहीं। जिनके बच्चा नहीं होता उनके पेट (उत्पादक अङ्गों) की तमाम खराबियों को दूर कर गर्भ स्थापन योग्य कर देता है। जिससे अवश्यमेव सन्तान होती है। गर्भावस्था में इसको सेवन करते रहने से गर्भपात नहीं होता, बच्चा पैदा होते समय अधिक कष्ट नहीं होता, साथ ही बच्चा पुष्ट, दीर्घायु, देखने में सुन्दर और बुद्धिमान् पैदा होता है। अतः ऐसी स्त्रियों के लिये जिन्हें गर्भपात हो जाता है या बच्चे नहीं जीते अथवा बच्चा होने के समय अत्यन्त तकलीफ होती है उनके लिये तो यह एक ईश्वरीय देन है। इसके सेवन करने वाली स्त्री को बुढ़ापा के लक्षण देर में प्रगट होते हैं तथा जोरदार नहीं होते, क्योंकि यह एक उत्कृष्ट रसायन है। स्त्रियों को हर अवस्था और हर मौसम में पूर्ण लाभप्रद है। बनाकर लाभ उठाइये। यह आयुर्वेद का शास्त्रीय योग है, जिसे आश्रम ने नाम की सुविधा के लिये महिलाजीवन रस नाम से पेटेन्ट औषधि के रूप में प्रचारित किया है आश्रम इस औषधि की ४० मात्रा की १ शीशी ६) में और ३ शीशी २६) में देता है। वैद्य मात्र से अनुरोध है कि अमृत स्वरूप इस औषधि को बनाकर यश लाभार्थ अवश्य प्रयोग करें। कोई बात मालूम करनी हो तो नीचे पते से पत्रव्यवहार करें।

उच्च श्रेणी की आयुर्वेदीय तथा पेटेन्ट औषधियों के निर्माता—

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, २७ कानपुर।

वैद्यों को अत्यधिक रिआयत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठस्य १९९५ वर्षीयं परीक्षाफलम्

आयुर्वेदाचार्य-परीक्षाफलम्

(१) आयुर्वेदाचार्य-परीक्षोत्तीर्णाः।

क्रमाङ्काः	नामानि	श्रेणी
१	श्रीनिवास	३
२	कृष्णचन्द्र	३
३	रामेश्वर	३
४	द्वारिकानाथ	२
५	रामस्वरूप	३
७	लाभशङ्कर	३
११	मोहनलाल	३
१४	गोविन्द	३
१६	सीताराम	३
१७	भास्कर	२
१९	वासुदेव	३
२१	निशिकान्त	२
२४	शिवानन्द	३
२५	हरिलाल	३
२६	केशवलाल	२
२७	भगवतप्रसाद	२
२९	हरप्रसाद	२
३२	श्रुतिधर	३
३५	गोविन्दराम	३
३६	रामसहाय	२
३७	रामनिवास	२
४४	बनारसीदत्त	२
४५	शशिभूषण	३
४६	रविभूषण	३
४९	विष्णुदत्त	२
५०	रामदेव	२
५१	भोगीराम	३
५५	रामदयालु	२
५७	सोनूबाई	३
६०	चिन्तामणि	३
६१	पुरुषोत्तम	३
२	शिवनारायण	३
६३	वीरेन्द्रकुमार	२
६४	लक्ष्मीचन्द्र	२
६५	श्रीनिवास	३
६६	जयकृष्ण	३
७४	पुरुषोत्तम	३
७७	अनन्तराम	२
७९	कृष्णराव	३
८१	चन्द्रशेखर	२
८२	रामचन्द्र	३
८३	रामकृपालु	२
८५	नारायणप्रसाद	३
८८	सिद्धनाथ	३
१०२	सन्तोषलाल	३
१०३	भानुदत्त	२
१०४	जगन्नाथ (सर्वद्वितीयः)	२
११०	लक्ष्मीशङ्कर	३
११४	देवदत्त	२
११५	कालीशङ्कर (सर्वतृतीयः)	२
१२१	व्रजवल्लभ	२
१२२	ठाकुरप्रसाद	२
१२३	किशोरीशरण	२
१२८	रामस्नेही	२
१२९	विश्वम्भरदयालु	२
१३१	श्यामसुन्दर (सर्वोत्तमः)	१
१३२	शम्भुदयालु	३
१३३	श्रीनिवासाचार्युलु	३
१३८	केशवराव	३
१३९	दयाचन्द्र	३
१४१	ताराचन्द्र	३
१४२	शिवकुमार	३
१४५	रेवतीप्रसाद	२
१४६	नौबतराम	३
१४७	गंगादत्त	२
१५१	मोहनदत्त	२
१५६	देवकीनन्दन	३
१५९	काशीनाथ	३
१६१	ओम्प्रकाश	३
१६२	पुष्करदत्त	३
१६३	ईश्वरनाथ	३
१६६	बालानन्द	३
१७५	मदनलाल	३
१८०	कृष्णस्वरूप	२
१८२	भागीरथ	३
१८४	प्रह्लादराय	३
१८८	बद्रीनारायण	३
१९८	घेवरानन्द	३
२००	परमानन्द	३
२१०	देवकीनन्दन	२
२११	बनवारीलाल	२
२१३	मुरारीलाल	३
२१४	मुरलीधर	३
२२१	भगवानसहाय	२
२२२	मदनकुमार	२
२३५	तारादत्त	२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३७	गणानन्द	२
२४५	मंगलदत्त	२
२४६	हीरालाल	३
२४७	शंकरराव	३
२५५	श्रद्धानन्द	३
२५६	शिवानन्द	२
२५७	जगन्नाथ	३
२६५	राजपति	३
२६७	भगवानसिंह	३
२६९	हरिहरप्रसाद	३
२७४	जगदीशप्रसाद	३
२७८	चुन्नीलाल	३
२८०	दत्तात्रय	३
२८१	बालकृष्ण	३
२९१	पाण्डुरंग	२
२९३	सीताराम	३
२९६	राधाकृष्ण	२
२९८	रामतीर्थ	३
३१९	गोविन्दनारायण	२
३२५	मल्लिकार्जुनराव	२
३३९	गोविन्दवल्लभ	३
३४४	विश्वम्भरदयाल	२
३४६	श्रीनिवास	३
३५६	नेमचन्द्र	३
३६०	जगदीशनारायण	३
३६२	ब्रजमोहन	
३६४	हजारीलाल	
३६५	राधेश्याम	
३६८	श्रीगोपाल	
३७०	शुभकरण	
३७८	बैंकट गौरीपति	
३९३	रामभूषण	
३९४	जगन्नाथप्रसाद	
३९५	कैलाशचन्द्र	
४०६	देवीप्रसाद	
४१०	श्रीनिवास	
४१४	बृहस्पति	
४२२	रमेशचन्द्र	

पूरा लाभ उठाने के लिये चन्द्रप्रभावटी आदि

— औषधियों में —

असली शुद्ध सूर्य्यतापी

(शिलाजीत)

का ही प्रयोग करें।

मूल्य १ सेर २०) रु०, १ पाव ५॥), १ छटांक १॥), १ तोला ।≡)

पब्लिक आयुर्वेदिक फार्मेसी

पुरानी मण्डी, गुजरांवाला (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आयुर्वेदाचार्य-प्रथमखण्डपरीक्षोत्तीर्णाः ।

क्रमाङ्काः नामानि

२२ जीवराम
३१ मधुसूदन
३३ बहोरीदत्त
३६ कृष्णलाल
४७ प्रयागनारायण
५२ सुरेशचन्द्र
६७ रामस्वरूप
६९ राजेन्द्रकुमार
७० स्वरूपचन्द्र
७२ दुर्गाशंकर
९३ वंशीधर
९४ तुलसीराम
९६ शिवप्रसाद
९८ नवनीतलाल
१०० बसन्तीलाल
१०५ चम्पालाल
१०६ भवानीशंकर
११३ भगवतीप्रसाद
११६ उमाशंकर
१२४ हरिकिशोर
१२५ श्रीनारायण
१२६ गौरीशंकर
१२७ रामसेवक
१३७ नाथूराम
१४० मनोहरलाल
१४३ सत्यदेव
१५२ खुशहालचन्द
१५३ कुबेरदत्त
१६६ भुवनेश्वरीप्रसाद
१७२ कैलाशचन्द्र
१७३ सन्तकुमार
१८३ सूर्यनारायण
८७ लेखराज

क्रमाङ्काः नामानि

१८९ सोमदत्त
१९० जयनारायण
१९३ सत्यनारायण
१९६ शंकरदत्त
२०३ द्वारिकाप्रसाद
२०४ अखिलानन्द
२०६ वासुदेव
२०७ घनश्याम
२०८ भागीरथ
२०९ हरिराम
२१६ दामोदरप्रसाद
२१७ सूरजमल
२२३ शिवदयाल
२२५ गिरजाशंकर
२२६ भागीरथ
२३४ शिवदत्त
२३८ ठाकुरप्रसाद
२४० मानभद्र
२४१ प्रभुदयाल
२४४ रघुनाथप्रसाद
२४८ दत्तात्रेय
२४९ शिवकरण
२५० श्यामसुंदर
२५२ अच्युत
४२४ दिगम्बर
२६० विश्वनाथ
२७१ कमलापति
२७७ रणजितराय
४२० प्रभाकर
२९९ भूदत्त
३०० रामरत्न
३०२ सत्यपाल
३०३ नन्दलाल

क्रमाङ्काः नामानि

३०८ मदनलाल
३०९ भालचन्द्र
३१० इन्द्रदेव
३११ देवकीनन्दन
३१२ शंकरलाल
३१३ गोपालदत्त
३१४ रामेश्वर
३२१ वसराज
३२६ चेतनप्रकाश
३२९ चन्द्रदत्त
३३१ विश्वम्भरदत्त
३३२ ओंकारदत्त
३३३ परशुराम
३३४ नानकचन्द्र
३३५ परमानन्द
३३८ राधेश्याम
३४१ राधाकृष्ण
३४९ विष्णुदत्त
३५२ जगमोहन
३६७ गोपीराम
३६९ महावीरप्रसाद
३७१ कल्याणप्रसाद
३७३ नारायणदत्त
३८५ लक्ष्मीशरण
३८८ कालिकाप्रसाद
३९० रामप्रताप
४०० जगदीशप्रसाद
४०१ आनन्दवल्लभ
४०३ दर्शनलाल
४०६ विश्वेश्वरदयाल
४१३ सुखवीरप्रसाद
४१५ जगदीश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदविशारद-परीक्षाफलम्

(१) आयुर्वेदविशारद-परीक्षोत्तीर्णाः ।

क्रमाङ्काः नामानि	श्रेणी	क्रमाङ्काः नामानि	श्रेणी	क्रमाङ्काः नामानि	श्रेणी
५ सिद्धिशंकर	३	११२ रामनारायण	३	२०७ बंशीधर	२
८ हरिप्रसाद	३	११३ रामचरणलाल	२	२१० नथमल	३
१० शंकरदत्त	३	११४ कन्हैयालाल	३	२१४ कृष्णगोपाल	३
१४ श्रीधर	३	११५ ईश्वरदत्त	३	२१५ रमेशचन्द्र	३
१८ रेवाशंकर	३	११६ राजकिशोर	३	२१७ नरेन्द्रनाथ	३
२१ नन्दकिशोर	२	११८ पूर्णशंकर	३	२१८ रामचन्द्र	२
२२ बुद्धिप्रकाश	३	१२० रामकुमार	३	२२० बाबूराम (सर्वोत्तमः)	१
२४ महादेव	३	१२१ श्यामसुन्दर	३	२२१ हरिनाथ	२
२६ प्रभाकर	३	१२३ मुकुन्दराम	३	२२२ सतीशचंद्र(सर्वतृतीयः)	२
२९ जगदीशप्रसाद	३	१२८ देवानन्द	३	२२३ रघुनन्दनप्रसाद	२
३० दिगम्बर	३	१३१ अमृतलाल	३	२२४ शिवनारायण	२
३१ प्रहलाद	३	१३४ जगन्नाथ	३	२३२ भगवतीप्रसाद	३
३४ ज्वालाप्रसाद	३	१३५ नर्मदानन्द	३	२३३ सीताराम	३
३६ श्रद्धानन्द	३	१४७ श्रीधर	२	२३४ बच्चूलाल	२
३७ विजयचन्द्र	३	१४८ ईश्वरदत्त	२	२३५ सिद्धिनाथ	२
४६ रामचन्द्र	२	१५० ब्रजलाल	३	२३६ जगदीशनारायण	३
५१ शारदाशरण	३	१५१ परमानन्द	३	२३७ प्रेमनारायण	२
५५ कन्हैयालाल	२	१५२ रामभाऊ	२	२३८ रविदत्त	२
५६ भवदत्त	३	१५५ दत्तात्रय	३	२३९ ब्रजकिशोर	३
५७ विष्णुनारायण	३	१५७ ब्रजमोहन	३	२४० गंगाप्रसाद	३
६५ रामचन्द्र	३	१५८ रामकृष्ण	३	२४२ वृन्दाप्रसाद	२
६६ श्यामबिहारीलाल	३	१५९ छोटेलाल	३	२४४ गिरिजानन्दन	३
७३ बनवारी	२	१६१ श्रीकृष्ण	३	२४५ सरयूनारायण	३
७५ श्रीराम	३	१८८ रतनलाल	२	२४६ शिवदयालु	३
८३ कृष्णवल्लभ	२	१९७ हरिशंकर	३	२४८ शिवप्रसाद	२
८४ शान्तिस्वरूप	३	१९८ भोलेश्वर	२	२५० यमुनाप्रसाद	३
९१ जनार्दन	३	१९९ टीकेश्वर	२	२५२ श्रीनारायण	३
९५ राधावल्लभ	२	२०१ जगदीशप्रसाद	२	२५३ जयगोविन्द	३
९६ क़जोड़मल	३	२०३ तेजोराम	३	२६१ रामदत्त	३
९९ शिवदत्त	३	२०४ शिवकुमार	३	[illegible]नारायण	३
०१ भगवानदास	३	२०६ राज्यमिश्र	३	२६५ रमेशदत्त	३
०३ बनारसीदत्त	३				
०५ लक्ष्मीनारायण	२				

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७०	गंगाराम	२	३९७	कन्हैयालाल	२	५३१	रामचन्द्र	३
२७१	रमेशचन्द्र	२	३९८	गोपालकृष्ण	२	५३२	मुरलीमनोहर	२
२७४	श्रीगोपाल	३	३९९	भंवरलाल	२	५३३	विद्याविलास	३
२७५	दुर्गादीन	३	४०५	भीमराज	३	५४१	रमाकान्त	२
२७७	व्रजनारायण	३	४१६	नित्यानन्द	३	५४४	कालीदास	३
२७८	सूर्यप्रसाद	३	४१७	चन्द्रशेखर	२	५५१	शंकरगोपाल	३
२८१	विष्णुकुमार	३	४१८	माधवप्रसाद	२	५५३	शिवकुमार	२
२८४	रामावतार	२	४१९	हनूमानप्रसाद	३	५५५	रामाश्रय	३
२८५	जयनारायण	३	४२०	नन्दकुमार	३	५५६	रामदत्त	२
२८८	कैलाशशंकर	३	४२१	दुलीचन्द	२	५५७	भैयालाल	३
२९३	भगवानदास	२	४२५	गजानन्द	३	५६१	रामसेवक	३
२९८	मनोहरलाल	२	४३६	देवीदत्त	३	५६२	ललताप्रसाद	३
३०३	देवीशंकर	३	४४८	रामगोपाल	३	५६५	जनार्दनप्रसाद	२
३१०	छोटेलाल	३	४५३	देवशंकर	३	५७०	अमरनाथ	३
३१२	गणेशप्रसाद	२	४६६	राधेश्याम	२	५७४	रामप्रताप	२
३१४	बालमुकुन्द	३	४६७	रामदयाल	३	५८३	रामसेवक	३
३१६	रामनिवास	३	४६८	ईश्वरदास	२	५९४	गौरीशंकर	३
३२५	राजाराम	२	४६९	हरिप्रसाद	३	६०४	रामदेव	३
३२६	गंगाशरण	२				६०५	भगवतीप्रसाद	३
३३३	शिवलाल	३	४७७	सीताराम	२	६०६	तीर्थराज	३
३३४	प्रकाशचन्द्र	३	४७८	राधाकृष्ण	३	६०८	राजेश्वर	३
३३५	ब्रह्मदत्त	३	४८८	कृष्णदत्त	२	६१९	जानकीवल्लभ	३
३३६	निरंजनलाल	३	४९०	शंकरलाल	३	६२७	हरिनारायण	३
३३७	मुरलीधर	२	४९५	हरिनारायण	३	६२८	चन्द्रभूषण	२
३४०	रामेश्वरदत्त	२	४९६	कृष्णदत्त	३	६३२	गोवर्धन	३
३४१	भोलाराम	२	५०५	केशवदेव	३	६३५	जयपालसिंह	३
३४४	राधाकृष्ण	३	५०७	मधुसूदन	३	३३६	रामप्रताप	३
३५७	श्यामबिहारीलाल	३	५०८	सत्यनारायण	२	६४८	रघुराज	२
३६१	दुर्गाप्रसाद	३	५१३	मोतीलाल	३	६४९	कृष्णाराम	३
३७७	रामस्वरूप	३	५१६	हरिप्रसाद	३	६५४	ग्यारसीलाल	३
३८८	प्यारेलाल	३	५२१	गोविन्दप्रसाद	३	६५७	तेजपाल	३
३९०	शिवकुमार	३	५२४	श्यामनारायण	३	६५९	व्रजमोहन	३
३९१	सीताराम	२	५२५	कृष्णा	२	६६०	युगलकिशोर	२
३९२	बैजनाथ	३	५२७	देवीदत्त	२	६६१	दयाराम	३
३९५	रमाशंकर (सर्वद्वि०)	१	५२९	महादेव	३	६६३	विष्णुभट्ट	३
३९६	सिद्धिनाथ	३	५३०	लक्ष्मीनारायण	२	६६५	तिरुवेंकटाचार्य	२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६६७	वीरभद्र	३	७५०	ताराचन्द्र	३	८५८	रमाशंकर	२
६६८	वसवराज	३	७५४	रमणगोपाल	२	८७४	जुड़ावनलाल	३
६६९	द्वारिकाबाई	३	७५५	परमानन्द	२	८७५	सूर्यप्रसाद	३
६७२	दत्तात्रेयराव	३	७६०	जगदीशचन्द्र	३	८७७	गुरुनारायण	२
६७६	राधेश्याम	२	७६६	हरिप्रसाद	२	८७९	हरिदत्तनारायण	२
६७७	ब्रजविहारी	३	७७०	कमलनयन	३	८८०	महेशदत्त	२
६८१	रामचरण	३	७७१	मुनिशंकर	२	८८१	वेदराम	३
६८२	मोतीराम	३	७७२	द्वारकाप्रसाद	३	८८३	बैजनाथप्रसाद	३
६८८	इन्द्रदेव	३	७७४	भूदेव	२	८८४	हरिनारायण	३
६९०	गिरिजेशकुमार	३	७८५	योगानन्द	३	८८६	दयाराम	३
६९१	प्रयागदत्त	३	७९१	नित्यानन्द	३	८८८	समयप्रसाद	३
६९२	पतरामसिंह	३	७९२	विश्वेश्वरानन्द	२	८८९	रुद्रप्रताप	३
६९९	जगदीशप्रसाद	२	७९५	सत्यनारायण	२	८९६	श्रीकान्त	३
७००	विश्वम्भरदयाल	२	७९९	सोमेश्वर	३	८९७	वंशीधर	२
७०१	श्रीदेव	३	८०३	ब्रजमोहन	२	८९८	रामयज्ञ	३
७०२	अम्बादत्त	३	८०४	धनाधीशचन्द्र	२	८९९	सरयूप्रसाद	३
७०३	पुरुषोत्तमदत्त	३	८०५	रमाकान्त	२	९०७	इन्द्रदत्त	३
७०४	दौलतराम	२	८०६	श्रीदेव	३	९१०	रामलाल	३
७०५	मदनमोहन	२	८०९	मुरलीधर	३	९२६	वाचस्पति	३
७०९	यज्ञदत्त	३	८१४	वासुदेव	२	९३३	प्रियतम	३
७१०	लक्ष्मीनिधि	२	८१५	नन्दकुमार	२	९३५	मथुरादत्त	३
७११	उमाशंकर	३	८२८	मदनगोपाल	३	९३६	कृष्णदत्त	३
७२०	क्षेत्रपाल	२	८३०	रामदेव	३	९३८	जगन्नाथ	३
७२१	रामस्वरूप	३	८३३	पीताम्बरदत्त	३	९४०	सुरेशानन्द	३
७२३	यादराम	३	८३४	रामपाल	२	९५७	जगन्नाथप्रसाद	३
७२४	केशवदेव	३	८३६	उमाशंकर	३	९६४	प्रकाशचन्द्र	२
७२५	हरिदेव	३	८३८	हरिराम	३	९६५	श्रीकृष्ण	३
७२६	विश्वनाथ	३	८४६	मदनगोपाल	२	९६९	दुर्गाप्रसाद	३
७४२	रघुवीरदत्त	३	८४७	रामजीवन	२	९७३	मोहनलाल	२
७४३	राजेश्वरदयाल	३	८४८	विश्वेश्वरदयाल	३	९७४	श्रीनिवास	३
७४४	धन्वन्तरि	३	८५४	जगदीशचन्द्र	३	९७७	आनन्दवल्लभ	२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आयुर्वेदविशारद-प्रथमखण्डपरीक्षोत्तीर्णाः ।

क्रमाङ्काः	नामानि	क्रमाङ्काः	नामानि	क्रमाङ्काः	नामानि	क्रमाङ्काः	नामानि
१	शिवदत्त	१९३	वाचस्पति	४३३	गोवर्धनप्रसाद	५६६	उपेन्द्रनाथ
३	काशीनाथ	१९४	रामनारायण	४३८	हरिप्रसाद	५८६	रमापतिमणि
२०	मुरलीधर	२०२	रामचन्द्र	४३९	मुरलीधर	५८७	रामशरण
२७	पुरुषोत्तम	२०५	तृषाराम	४४१	दामोदरप्रसाद	५९०	बलिराज
५६	व्रजभूषण लाल	२२६	बद्रीप्रसाद	४४३	सत्यव्रत	६००	राधाकान्त
६०	सिद्धगोपाल	२२७	रामनारायण	४४४	आत्माराम	६१५	ओंकारप्रसाद
६२	रामसहाय	२२८	शिवप्रसाद	४४६	नारायणदत्त	६१८	रमाकान्त
६४	उमादत्त	२२९	सुरेन्द्रनाथ	४४९	वासुदेव	६२२	मणिलाल
६७	बाबूलाल	२६८	लक्ष्मीनारायण	४५०	वंशीधर	६२४	चन्दूभाई
७०	क्षेत्रपाल	३०१	कुमारी शान्ति	४५१	मोहनलाल	६३४	देवीप्रसाद
७१	मुंशीराम	३०८	शरदाप्रसाद	४५६	सत्यनारायण	६३९	बाबूराम
८६	रामगोपाल	३२१	रमेशचन्द्र	४६१	रामेश्वर	६४१	टेकचन्द्र
८७	ब्रह्मानन्द	३२३	हरनारायण	४८०	जगदीशप्रसाद	६४२	भक्तराम
९०	नरोत्तमप्रसाद	३३२	बनवारीलाल	४८२	भालचन्द्र	६४४	विष्णुदत्त
९८	रामसेवक	३३८	मूलचन्द्र	४८३	किशोरीलाल	६६२	वेंकटरमय्या
१०८	शिवदत्त	३४३	हीरालाल	४८९	गिरधारीलाल	६६४	राममूर्त्ति
१३३	ताराचन्द्र	३५१	ईश्वरीदत्त	४९३	वृद्धिचन्द्र	६६६	पी. वी. नरसिंहराव
१३७	गणपतिप्रसाद	३५३	चिरंजीलाल	४९६	रामरक्षपाल	६७१	माधवशर्मा
१३८	भास्करराव	३५४	लक्ष्मीधर	५०१	लाभचन्द्र	६७३	नारायणदत्त
१४३	भालचन्द्र	३५६	महेन्द्रकुमार	५०२	हनुमत्प्रसाद	६८३	धाराशरण
१४६	हरनारायण	३७३	रामेश्वरदयाल	५०४	कृष्णचन्द्र	७१२	बालकराम
१६४	लक्ष्मीनारायण	३७५	परमानन्द	५११	हनुमानसहाय	७१५	सेवकराम
१६५	जगन्नाथ	३८४	दामोदर	५१५	राधेश्याम	७१६	दयाराम
१७४	चन्द्रशेखर	३८५	भैरवदत्त	५२०	शिवभगवान	७१७	हरस्वरूप
१७७	शिवदत्त	३८६	वासुदेव	५२३	रामकिशोर	७२२	शान्तिप्रकाश
१७९	जगदीशचन्द्र	३८७	हीरालाल	५३५	मधुकर	७३२	कालीचरण
१८१	भगवतीप्रसाद	४०२	द्वारिकाप्रसाद	५३६	गणेशप्रसाद	७३५	वासुदेव
१८३	राधागोविन्द	४०८	प्रभुदयाल	५४५	च० सुब्रह्मण्यम्	७३७	जगन्नाथ
१८४	तेजशंकर	४२६	ओंकारनाथ	५५०	श्यामराव	७४५	सोमदेव
१८६	रामप्रताप	४२८	शंकरदेव	५५२	वंशगोपाल	७५१	रामनारायण
१८९	रमाकान्त	४२९	मोहनलाल	५६०	प्रयागनारायण	७५६	भगवतचन्द्र
१९१	मदनमोहन	४३१	घासीराम	५६३	नारायणदत्त	७६७	त्रिलोकीनाथ
१९२	नरेन्द्रकुमार	४३२	दरियाप्रसाद	५६४	शम्भुदयाल	७७७	विश्वम्भरदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमाङ्काः	नामानि	क्रमाङ्काः	नामानि	क्रमाङ्काः	नामानि	क्रमाङ्काः	नामानि
७७९	ओम्प्रकाश	८३७	नथमल	८७१	अनन्तराम	९०८	अयोध्याप्रसाद
७८०	शिवचरण	८४०	विद्याधर	८७२	रामसेवक	९०९	कन्हैयालाल
७८१	घनश्याम	८४२	रामस्वरूप	८७६	रामसेवक	९१२	हरगोपाल
७८६	प्रकाशचन्द्र	८४६	वसन्तलाल	८७८	हरिहरदत्त	९१३	हरगोपालदास
८०२	प्रभुदत्त	८५०	मदनलाल	८८५	यदुनंदनप्रसाद	९१४	वासुदेव
८१०	चतुर्भुज	८५१	राधाकृष्ण	८८७	शंभुदयालु	९१७	जयन्तीप्रसाद
८१२	पुरुषोत्तमलाल	८५७	मदनलाल	८९०	ज्ञानानन्द	९१८	दिवाकर
८१७	पूर्णचन्द्र	८६०	वसन्तलाल	८९२	ऋषिराम	९१९	ईश्वरीदत्त
८१८	रामस्वरूप	८६१	रामप्रकाश	८९३	चतुर्भुज	९२१	शेरानन्द
८२०	महावीरप्रसाद	८६२	भजनलाल	८९४	प्रतापनारायण	९२२	जयनन्दप्रकाश
८२१	भरतगोपाल	८६६	गिरिजादयालु	८९५	गुरुप्रसादसिंह	९४७	सोहनदेव
८३१	रामेश्वर	८६८	उमाशंकर	९०३	दयाकुमारी	९४९	आत्मस्वरूप
८३२	गोपीराम	८६९	रामचन्द्र	९०५	रामदेव	९५०	भगवानदत्त
८३५	बिहारीलाल	८७०	नित्यानन्द	९०६	बारूराम	९५२	बारूलाल
						९५६	रामानन्द

रक्त-शुद्धि के लिये

रक्तोना

रक्त दोष
त्वग्रोग
आतशक

सूजाक
(पीव प्रमेह)
वगैरह पर
फायदे मन्द

रक्त दोष नाशक

श्री धूतपापेश्वर पनवेल लिमिटेड

लखनऊ शाखा—३८ लाटूशरोड। बनारस—हरिगणेश एण्ड ब्रदर्स, ब्रह्मघाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदभिषक्-परीक्षाफलम्

(१) आयुर्वेदभिषक्-परीक्षोत्तीर्णाः ।

क्रमाङ्काः	नामानि	श्रेणी
८	ताराचन्द्र	३
१०	सुव्वालाल	३
१३	घीसालाल	३
१६	माधवराम	३
२६	प्रभाकर	३
३५	जमुनादास	३
३६	ज्ञानवती	२
४१	कौशल्यादेवी	१
४७	मधुसूदन	३
४८	धनीराम	३
५२	ओंकारनाथ	३
५४	जमुनादत्त	२
५५	रामाधारी	३
७७	लाभशङ्कर	३
८०	तुलजाशङ्कर	३
८२	पुरुषोत्तमदास	३
८४	विठ्ठलदास	३
९३	गंगाप्रसाद	३
९४	दानजीलाल	३
९६	नटवरलाल	२
९७	देवेन्द्रकुमार	३
९८	रमणलाल	२
१०२	मूलशङ्कर	३
१०३	विपिनचन्द्र	३
१०७	हरिलाल	२
११३	भानुशंकर	२
११८	रमणलाल	३
१२०	पुरुषोत्तमदास	३
१२६	हजारीलाल	३
१३३	खिलनचन्द्र	२
१३७	दयानारायण	२
१४१	सामदत्त	३
१४७	ओंकारसिंह	३
१४९	मदनमोहन	३
१५३	हरिश्चन्द्र	३
१६३	रामेश्वर	२
१६६	भुवनेशदास	३
१६७	नारायणानन्द	३
१७५	बाबूलाल	२
१८४	विश्वनाथ	३
२०२	बालकृष्ण	३
२०४	नारायणलाल	२
२०८	लालमोहन	३
२१८	गोरखनाथसहाय	२
२१९	कन्हैयालाल	२
२२१	रामनाथ	३
२२३	चन्द्रकान्त	२
२२५	राधावल्लभ	२
२३२	मनोहरलाल	३
२३५	लक्ष्मण	३
२३९	नारायणप्रसाद	१
२४०	वंशीधर	२
२४१	रामगोपाल	२
२४३	नीलकण्ठ	३
२४४	दत्तात्रेय	३
२५७	हरदयाल	३
२६८	शीतला प्रसाद	३
२६९	नारायणराव	२
२७१	वृन्दावन	२
२७३	पुरुषोत्तमलाल (सर्वोत्तमः)	१
२८२	खानचंद	३
२८४	नामदेव	३
२८७	बच्चनलाल	३
२९०	देवनारायण	२
२९१	शिवपाल	३
२९३	सत्यनारायण	२
३०४	प्रेमनारायण	१
३०६	सोहनलाल	३
३१३	श्रीकृष्ण	२
३२१	चन्द्रभानु	२
३२७	रूपनारायण	२
३२८	सूर्यप्रसाद	२
३३०	हृदयनारायण	१
३७०	हरिपन्त	२
३७१	श्रीसेवक	२
३७७	मनोहरलाल	२
३८०	देवीप्रसाद	३
३८५	कमलकुमार	२
३९५	दिनमणि	२
४१७	काशीराम	२
४२५	टेकचन्द्र	३
४२८	रामशरण	३
४२९	ज्ञानदेवी	३
४३२	जयरामदास	३
४५२	जगरमल	३
४५७	मुरलीधर	२
४५८	नाथूराम	२
४५९	बाबूराम	२
४६५	पन्नालाल	२
४७५	सोमदत्त	२
४७७	भगवानसहाय	३
४८५	महेन्द्रनाथ	३
४८६	टंटूराव	३
४९२	गुलाबराव	२
४९३	रामभाऊ	३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमाङ्काः	नामानि	श्रेणी
४६५	रामेश्वरप्रसाद	३
५०५	गणेशदत्त	३
५६१	कृष्णशंकर	३
५६२	महेन्द्रकुमार	३
५६३	महेन्द्रकुमार	३
५६४	नटवरलाल	२
५६५	शंकर	३
५८०	रणछोड़लाल	२
५८१	नटवरलाल	३
५८२	भालचन्द्र	३
५८३	मंगलदास	३
५८४	प्रह्लाद	३
५८५	माणिकलाल	३
५८६	कान्तिलाल	३
५८७	रामचन्द्र	२
५८८	भोगीलाल	३
६०३	बुलाकीदास	२
६०४	छोटाभाई	२
६०५	शान्तिलाल	२
६०६	मणिलाल	३
६०७	अम्बालाल	३
६०८	रमणलाल	३
६०९	जयसिंह	२
६२९	कान्तिस्वरूप	३
६३०	बालकृष्ण	३
६३२	शान्तिलाल	३
६३७	सनाभाई	३
६४६	जीवाभाई	३
६४७	भानुप्रसाद	३
६४९	छोटाभाई	३
६५६	शिवनाथ	३
६६१	शोभानाथ	२
६६२	लालबिहारी	३
६७०	रमाशंकर	२
६७१	कपिलदेव	२
६७४	जगन्नाथ	२
६८३	पुरुषोत्तम	३
६८५	इन्दुमती	३
७००	भगवानदास	१
७७०	महेन्द्रकुमार	२
७७४	बलराम	२
७७५	लक्ष्मीनारायण	३
७७७	बलरामदास	३
७८२	आत्माराम	३
७८४	मित्रानन्द	३
७८५	सत्यदेव	२
८०४	महेशदत्त	३
८०७	आत्माराम	१
८०८	महावीरप्रसाद	३
८०९	मंगलानन्द	२
८१४	धर्मपाल	२
८१५	ओम्प्रकाश	२
८१८	दामोदर	३
८२०	ओम्प्रकाश	२
८२५	फतेहचन्द	२
८२८	दीनदयालु	२
८३६	जयसिंह	२
१०८८	सोमदत्त	३
८४७	प्रभातसिंह	२
८८५	राजाराम	२
८८६	बाबूराम	२
८८७	कृष्णकुमार	२
८९०	उदयनारायण	३
८९१	स्वरूपसिंह	२
८९२	रामशरण	३
८९४	कमलेशकुमारी	१
९००	रघुनन्दनप्रसाद	३
९०२	जंगलीप्रसाद	३
९०३	शान्तिप्रकाश	३
९०४	उदयराजसिंह	२
९०५	श्रीगोपाल	३
९०७	विद्यावती	३
९०९	सुमित्रादेवी (सर्वद्वि०)	१
९१५	अमरनाथ	१
९१९	भगवन्तकिशोर	२
९२०	कृष्णशर्मा	२
९२१	कृष्णाकुमारी (सर्वतृ०)	१
९२८	शंभुनाथ	२
९५६	बुद्धिराम	३
९६०	रामकुमार	३
९६१	सत्यप्रकाश	२
९६६	पीताम्बरदत्त	३
९६८	त्रिगुणानन्द	२
९७६	काशीराम	३
९८२	विद्यासागर	२
९८३	धर्मचन्द्र	२
९८४	विद्यादत्त	३
९८५	किशोरीलाल	३
१०००	हरिराजशरण	३
१००९	महावीरसिंह	३
१०१०	के. एस. सी. शर्मा	२
१०१२	रा० चोटी स्वामी	२
१०१३	सालगर यवक्री	२
१०१४	जी. एस. वीरय्य	२
१०१५	एल. वेंकटरमय्या	१
१०१६	बिन्दुराव	२
१०९४	रामदयालु	३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आयुर्वेदभिषक्-प्रथमखण्डपरीक्षोत्तीर्णाः ।

क्रमाङ्काः नामानि

२ ब्रह्मानन्द
१७ मदनलाल
३४ ओम्प्रकाश
३८ सोमनाथ
४२ राजेश्वरप्रसाद
४३ जमुनाप्रसाद
४५ हरलाल
४६ शशिभूषण
६० वलदेवसिंह
६३ भूलाभाई
६७ इन्द्रभानु
६८ हरखशंकर
७० भाईशंकर
७१ मनुभाई
७४ रमेशचन्द्र
८१ जीवाराम
८५ शंकरलाल
८८ कमलाबेन
९० धीरजलाल
९२ नारायणदत्त
९५ लखपतप्रसाद
१०० अम्बालाल
१०१ कमलाकान्त
१०४ नटवरलाल
१०६ नटवरलाल
११० भोगीलाल
१११ गुणवन्तलाल
११४ केशवलाल
११५ हरिलाल
१२४ सरोजदेवी
१२६ रविदत्त
१२८ हरिबल्लभ
१३२ दामोदरलाल
१३४ शिवदत्त
१३८ शंभुदयालु
१६२ श्रीराम
१६९ चन्द्रशेखर

क्रमाङ्काः नामानि

१७२ रेवाशंकर
१७३ बाबूसिंह
१७६ रत्नलाल
१७९ सत्यनारायण
१८१ मोहनीकान्त
१८६ मोरेश्वर
१८७ माधव
१९२ पुरुषोत्तम
२०७ रामचन्द्र
२०९ रामदत्त
२१७ माधवप्रसाद
२३० केशव
२३६ वंशीलाल
२३७ यशवन्त
२३८ चिरंजीलाल
२४५ भंवरलाल
२४७ कृष्णगोपाल
२४८ जमुनालाल
२५२ भंवरलाल
२५४ हरिबल्लभ
२५८ गिरधरशर्मा
२६१ वसुदेव
२६४ गिरधारीलाल
२६५ रत्नगिरि
२७० देवराज
२७२ जगरलाल
२७४ नारायणीदेवी
२७५ रुक्मिणीदेवी
२७७ लीलावती
२७९ दीनदयालु
२८३ लेखराज
२८५ होतचन्द्र
२८६ होलाराम
२८९ रामकुमार
२९२ ब्रजकिशोर
२९५ शिवकिशोर

क्रमाङ्काः नामानि

२९६ जगदीशप्रसाद
२९७ वेणीमाधव
२९८ दयाशंकर
३०० चन्द्रकुमार
३११ कन्हैयालाल
३२६ शिवराजसिंह
३३१ रमाशंकर
३३३ शिवसागर
३४१ राजनारायण
३६५ अनन्तराव
३६७ कस्तूरीलाल
३८६ ज्ञानवन
३९१ रामचरण
४०७ माधवराम
४१० जयनारायण
४१४ कैलाशचन्द्र
४२६ रामकृष्ण
४६८ वासुदेव
५०८ कमलादेवी
५०९ राजाराम
५१० रामदत्त
५१४ प्रभाशंकर
५१५ चन्दूलाल
५१६ श्यामलाल
५१८ शान्तिलाल
५२० भीरूभाई
५२४ डाह्याभाई
५२६ छुलीसहाय
५२७ चन्द्रशेखर
५२८ नारायणदास
५२९ शंकरभाई
५३० शंकरलाल
५३३ हरगोविन्द
५३४ कान्तिभाई
५३५ बालकृष्ण
५३६ ठाकुरलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५३७ जवेरभाई
५३८ अम्बेलाल
५३९ कान्तिलाल
५४२ शंकरलाल
५४३ कमलाकान्त
५५० लाधाराम
५५१ जीवनलाल
५५२ जयराम
५५३ रणछोड़भाई
५५४ नर्मदाशंकर
५५५ नटवरलाल
५५६ धनपाल
५५७ सोमाभाई
५५८ पुरुषोत्तम
५५९ मूलशंकर
५६० कान्तिलाल
५६६ जगदीशचन्द्र
५६८ रणछोड़लाल
५७५ आनन्दलाल
५७६ नरसिंहदास
५७७ गोविन्दभाई
५७८ लहेरीलाल
५९४ भीकाजीराव
५९५ दिनुभाई
५९७ कान्तिलाल
६१३ अम्बालाल
६१४ हरिभाई
६१५ नटवरलाल
६१६ चन्दूलाल
६१८ रतिलाल
६१९ नारायणदास
६२० विट्ठलदास
६२१ शिवाभाई
६२२ बलभद्रदास
६२३ लल्लूभाई
६२४ व्रजलाल
६२५ रतिलाल
६२७ पेरचशा

६३८ चैतन्यदेव
६४१ बाबूराम
६४३ बालप्रसाद
६५० कन्हैयालाल
६५१ जीवनलाल
६५३ अम्बालाल
६५४ बाबूभाई
६५५ अम्बिकादेवी
६५७ खुशीहाल
६६९ ननकूराम
६७२ शिवमूर्त्ति
६७३ सूर्यप्रसादसिंह
६७६ लल्लनप्रसाद
७०१ मोहनराम
७६४ गंगाराम
७७२ कृष्णस्वरूप
७८१ केशवदत्त
७८९ गङ्गाशरण
७९१ शङ्करलाल
७९२ देवदत्त
७९३ रामपालसिंह
७९४ सोमदत्त
७९९ वेदप्रकाश
८०३ रघुनन्दनप्रसाद
८०५ इलमचन्द्र
८०६ श्यामसुन्दर
८११ कान्तिप्रकाश
८२३ शिवचरणलाल
८३० धनप्रकाश
८३७ लाभशङ्कर
८३८ जेठाराम
८३९ भवानजी
८४० प्रतापराय
८४३ करुणाशङ्कर
८४४ रमणचन्द्र
१०९७ मगनलाल
८७४ ओम्प्रकाश
८८० तपस्वीराम
८९५ सरस्वतीदेवी
९०१ स्वामीनारायण

९१४ तीर्थराम
९१६ अविनाशचन्द्र
९१७ नौबतराय
९१८ ओम्प्रकाश
९२२ जनककुमारी
९२३ विचारानन्द
९२४ सन्तोषकुमारी
९२५ धर्मपाल
९२६ मुकुन्दलाल
९२७ पाराशरप्रसाद
९५० ऋषिराम
९५४ मंगूसिंह
९५७ दुर्गाप्रकाश
९५८ चेतराम
९५९ कान्तिचन्द
९८७ स्वामीदयाल
१००३ हरिराम
१००४ कमलाकान्त
१०११ शङ्करराव
१०२० टी० गोपाल
१०२१ के. आर. श्रीनिवासराव
१०२२ स्वामी राचोटी
१०२३ एम.जी. अप्पर्ण०
११२४ बी. सी. रमन
१-२५ गङ्गाधर
१०२७ बी. एन. जोशी
१०२८ मुरधैया
१०२९ क्रिष्टाचार्य
१०३२ मरियय्य
१०३४ त्रिट्ठल
१०३५ यु. तनियय्य
१०३६ प्रहलाद
१०३७ गणपति
१०३८ दत्तात्रय
१०४२ निम्बाजी
१०५७ प्यारेलाल
१०५८ सीताराम
१०६० रामराव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कतिपयविषयपरीक्षाफलम्

(१) आयुर्वेदाचार्य–परीक्षा।

(१) चरकसंहिता (२) सुश्रुतसंहिता (३) द्रव्यगुणरसशास्त्रे (४) रोगविज्ञानम् (५) कायचिकित्सा (६) शल्यशालाक्यतन्त्रे (७) प्रसूतितन्त्रकौमारभृत्ये (८) व्यवहारायुर्वेदमानसरोगविज्ञाने (९) मौखिकपरीक्षा।

क्रमाङ्काः	नामानि	अद्यावध्युत्तीर्णविषयाः
६	सीताराम	२,३,४,५,६,८,९
८	अम्बिकादत्त	१,२,४,६,८,९
१२	श्रीनारायण	२,३,४,५,६,७,८
१८	रामकुमार	२,४,५,६,८,९
२०	श्रीधर	२,३,४,५,६,७,८,९
३४	ब्रह्मदत्त	१,२,४,५,६,७,८,९
४०	लक्ष्मण	४,५,६,७,८,९
४१	चन्द्रभानु	२,३,४ ५,७,८,९
४३	कृष्णदेव	१,२,३,४,७,८,९
४८	उदयप्रकाश	१,२,४,५,६,७,८
५६	गंगाधर	२,३,४,८,९
५९	बलवंत	२,३,४,५,६,८,९
६८	मदनमोहन	१,२,३,४,५,६,८,९
७१	बालकृष्ण	१,२,३,४,६,८,९
७८	दामोदर	२,३,५,६,७,८,९
८०	भागीरथ	१,२,६,८,९
८६	कन्हैयालाल	२,३,४,५,६,७,८,९
९७	गुलझारीलाल	१,३,६,७,८,९
९९	रामदास	१,३,४,५,७,८,९
१०७	रमेशचन्द्र	१,२,३,४,६,७,८,९
१०८	सूर्यप्रसाद	२,३,४,६,८,९
११८	देवीशंकर	१,२,३,४,६,८,९
१३४	रघुवीरप्रसाद	१,२,३,४,६,७,८,९
१५४	गायत्रीदेवी	१,२,४,६,७,८,९
१५७	मोहनचन्द्र	१,३,४,५,६,७,८,९
१६०	खेमचन्द्र	२,४,५,६,८,९
१९२	नन्दावल्लभ	२,३,४,५,८,९

क्रमाङ्काः	नामानि	अद्यावध्युत्तीर्णविषयाः
१९९	हरिवंश	१,२,४,५,८,९
२१२	नारायणप्रसाद	१,२,३,४,५,९
२२०	रामप्रताप	१,३,४,५,६,७,८,९
२३३	रामेश्वर	२,३,४,५,७,८,९
२३९	प्रयागदत्त	१,२,३,४,५.९
२४२	रामचन्द्र	१,२,३,४,५,८,९
२५१	हीरामणि	१,२,३,४,५,७,८,९
२५४	नारायण	२,३,४,५,८
२६१	गोमतीप्रसाद	१,२,४,५,६,७,८,९
२६२	रामसुमेर	१,३,४,५,६,७,८,९
२६३	आत्मानन्द	१,३,५,६,८,९
२६६	श्यामलाल	१,२,४,५,८,९
२७३	रामनिहोर	२,३,४,५,६,८,९
२७६	नन्दकिशोर	१,२,३,४,५,६,८,९
२७९	रामकृष्ण	२,३,५,७,८,९
२८२	शिवपूजन	२,३,४,६,७,९
२८५	श्रीनाथ	१,२,३,४,५,८,९
२८६	पुरुषोत्तम	१,२,३,४,५,८,९
२९०	हनुमानप्रसाद	१,२,३,४,५,६,७,८
२९४	रामकृष्ण	१,२,३,४,५,७,८,९
३१७	देवीसहाय	१,२,३,४,५,८,९
३२०	पुष्पानन्द	१,२,४,७,८,९
३३६	रामरक्षपाल	१,२,३,६,७,८,९
३४५	चन्द्रदत्त	१,२,४,५,६,७,९
३५१	श्रीधरशर्मा	१,३,४,५,६,७,८,९
३५४	रामस्वरूप	१,२,३,४,५,८,९
३६१	शान्तिलाल	१,२,३,४,८,९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६३	चिरंजीलाल	१,२,३,४,५,८,६
३६६	राजकुमार	१,२,३,६,७,८,६
३३७	बीरभद्र	१,२,४,५,७,८,६
३८०	ताराचन्द्र	१,२,४,५,६
३८१	गोपालशर्मा	१,२,३,४,५,७,८,६
३८२	भोलानाथ	१,२,३,४,५,७,८,६
३८३	ज्योतिस्वरूप	१,२,४,६,७,८,६
३८४	रामदेव	४,६,७,८,६
३६१	रुद्रदेव	१,२,३,४,५,७,८,६
३६२	रामलक्ष्मण	१,३,४,६,८,६
४२१	विश्वनाथ	१,३,४,५,६,८,६
४०२	इन्द्रवर्मा	१,३,४,५,६,८,६
४०८	शंकरदत्त	१.२,३,४,५,६,७,८
४१७	मदनलाल	२,३,४,५,६,७,८,६

---

(२) आयुर्वेदविशारद—परीक्षा ।

(१) शारीरशास्त्रम् (२) स्वस्थवृत्तम् (३) द्रव्यगुणरसशास्त्रे (४) रोगविज्ञानम् (५) कायचिकित्सा (६) शल्यतन्त्रम् (७) प्रसूतितन्त्रम् (८) अगदसांख्यतर्काः (६) मौखिकपरीक्षा ।

क्रमाङ्काः	नामानि	अद्यावध्युत्तीर्णविषयाः
७	मदनमोहन	१,२,३,४,५,७,८,६
६	रामेश्वरप्रसाद	१,२,३,४ ५,६,८,६
१२	श्रीगोपाल	१,२,४,५,७,८,६
१३	शिवदत्त	१,२,५,६,७,८,६
१६	श्रीहर्ष	१,२,४,५,६,७,८,६
२३	मधुकर	१,२,५,६,७,८,६
४१	विद्याशर्मा	३,४,५,६,७,८,६
६८१	यशवन्त	१,२,३,४,५,६,६
४४	देवेन्द्रप्रसाद	२,४,५,६,७,६
४७	गोवर्धनप्रसाद	२,४,५,८,६
४६	प्रभुदयाल	१,२,३,४,६,७,८,६
५०	रामशरण	१,२,३,४,६,७,८,६
५२	विश्वम्भरनाथ	१,२,३,५,७,८,६
५३	आनन्दप्रकाश	२,५,६,८,६
६६	लक्ष्मणदत्त	२,३,४,५,७,८,६
७८	रामस्नेही	१,२,४,५,६,७,८,६
८०	उमाकान्त	१,२,५,६,७.८,६
८६	भगवतीप्रसाद	१,४,५,६,७,८,६
६७	सुरजनदास	१,२,३,६,७,६
१०२	बनवारीलाल	१,२,३,४,५,६,७,६
१०६	केशवदत्त	१,२,४,५,६,७,८,६
१०७	मांगीराम	१,२,४,६,७,८,६
११७	गेंदालाल	२,४,६,७,६
११६	शिवदत्त	१,२,३,५,६,७,६
१२२	नारायणदास	१,२,४,५,६,७,८,६
१३०	श्रीनिवास	१,२,३,५,६,७,८,६
१३२	मनकामेश्वर	१,२,३,४,६,७,८,६
१३६	सूर्यनारायण	१,२,५,६,७,६
१४१	रघुराजसिंह	१,२,४,५,६,७,६
१४२	गोविन्दराम	१,२,४,५,७,८,६
१५३	शिवप्रसाद	१,२,४,६,७,६
१५४	युगलकिशोर	१,२,६,७,८,६
१५६	जयकृष्ण	१,२,५,६,७,८,६
१६०	श्रीराम	१,२,४,५,६,७,६
१६६	दयाज्ञानशंकर	१,२,३,५,६,७,८,६
२०६	रामशिव	२,३,५,७,८,६
२१६	श्यामदेव	१,२,४,५,६,७,८,६
२४१	रामसूरत	२,४,५,७,८,६
२४३	सीताराम	१,२,५,६,७,८,६
२४७	अयोध्याप्रसाद	१,२,५,६,७,८,६
२४६	हरिवल्लभ	२,४,७,८,६
२५१	विद्याधर	१,२,४,५,६,७,८,६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५४	छोटेलाल	२,६,७,८,९
२६२	रामखिलावन	१,२,३,५,६,७,८,९
२६३	छंगालाल	१,२,३,५,६,७,८,९
२७२	दयाराम	१,२,३,६,८,९
२७९	श्रीकान्त	२,४,५,६,७,८,९
२८०	श्रीलाल	१,२,३,५,६,७,८,९
२८२	बिश्वनाथ	१,२,५,६,७,८,९
२८६	जयनारायण	२,६,७,८,९
२९१	ब्रजभूषण	१,२,३,४,५,७,८,९
२९२	रामकृष्णय्या	१,२,३,५,६,७,८,९
२९४	भालचन्द्र	१,२,३,४,५,६,७,९
२९५	गोपीनाथ	१,२,३,५.६,७,८,९
३००	मुकुन्दराव	१,२,३,४,५,६,७,९
३०६	किशोरीलाल	१,२,४,५,६,७,८,९
३२०	दुर्गादत्त	१,२,३,४,८,९
३२४	वेदराम	१,२,५,६,७,८,९
३३९	तेजप्रकाश	१,२,४,५,६,७,९
३४५	मुंशीलाल	१,२,४,६,७,८,९
३४६	मायादत्त	२,३,५,७,८,९
३४७	मनीराम	२,३,४,५,६,७,८,९
३६२	रोशनलाल	१,२,३,५,६,७,८,९
३६४	सोमदत्त	१,२,३,५,६,७,८,९
३७६	गोर्धनलाल	१,२,३,४,५,६,७,९
३९४	प्रह्लाद शर्मा	१,२,३,४,६,७,८,९
४०१	चन्द्रकुमार	१,३,४,५,७,९
४०६	दुर्गादत्त	१,२,३,५,६,७,८,९
४०७	रघुनाथप्रसाद	१,३,४,५,६,७,८,९
४१३	सीताराम	१,२,३,५,६,७,९
४५४	मुरलीधर	१,२,३,५,६,७,८,९
४५५	रामलाल	१,२.३,४,५,६,७,९
४६३	पूर्णानन्द	१,२,३,४,५,६,७,९
४७०	बद्रीनारायण	१,२,३,५,६,७,९
४७१	रामसहाय	१,२,३,५,६,७,८,९
४७२	वाल्मीकिशर्मा	१,२,३,४,५,६,७,९
४९४	हरिदत्त	१,२,३,५,६,७,९
५१९	पुरुषोत्तम	१,२,३,५,६,७,८,९
५२६	दत्तात्रेय	१,२,४,५,६,७,८,९
५३४	शंकरराव	१,२,३,४,५:६,७
५३६	हेरंब विनायक	१,२,४,५,६,७,९
५३७	हनुमानप्रसाद	१,२,३,५,६,७,८,९
५४३	प्रभुदत्त	१,२,३,५,६,७,८,९
५४६	वेंकटरमण	१,२,३,४,५,६,७,९
५४८	ऋद्धिकरण	१,२,३,५,६,७,९
५४९	मध्वाचार्य	१,२,४,५,६,७,९
५६७	मोहनलाल	१,२,३,४,६,७,९
५६८	कृष्णकुमार	२,३,४,५,६,७,८,९
५६९	रामशंकर	१,२,३,४,६,७,९
५७३	गंगाशरण	१,२,५,६,७,८,९
५७५	बद्रीप्रसाद	२,३,४,५,६,७,८,९
५७६	चिन्तामणि	१,२,३,६,७,८,९
५७८	चन्द्रशेखर	१,२,३,६,७,८,९
५८१	चन्द्रभानुसिंह	१,२,३,५,६,७,८,९
५८२	विष्णुदत्त	२,३,४,५,६,७,९
५८४	जीवनलाल	१,२,६,७,९
५९२	नरसिंह	१,२,३,४,६,७,८,९
५९६	राजमंगल	२,६,७,८,९
५९७	भारद्वाज	१,२,३,५,६,७,८,९
५९८	सीताशरण	१,२,४,७,८,९
५९९	बांकेबिहारी	१,२,३,४,५,७,८,९
६०७	सहदेव	२,३,४,५,७,८,९
६११	राजबलि	१,२,३,४,५,६,७,९
६१३	गुलाबराय	१,२,३,५,६,७,८,९
६१४	शम्भुमित्र	२,३,५,७,८,९
६१६	भोगीलाल	१,२,५,७,८,९
६१७	अम्बालाल	१,२,५,७,९
६२६	शिवकुमार	१,२,३,४,६,७,९
६३०	भास्कर	१,२,३,६,७,९
६३१	गणेश	१,२,५,६,७
६३७	नरोत्तमलाल	१,४,६,७,९
६३८	दामोदरलाल	१,२,५,६,७,८,९
६४७	शिवशंकर	१,२,३,४,५,७,८,९
६५०	सोहनराम	१,२,३,५,७;९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६५५	झाबरमल	१,२,३,५,६,७, ,९
६७९	राधारमण	१,२,४,५,७,८,९
७०६	नरेन्द्रकुमार	१,२,३,५,७,८,९
७०७	वीरेन्द्रकुमार	१,२,५,७,८,९
७०८	भारतेन्दु	१,२,३,५,७,८,९
७२७	सीताराम	१,२,३,४,५,७,९
७२८	नेत्रपाल	१,२,३,४,५,७,८,९
७२९	अमीचन्द	१,२,३,६,७,८,९
७३८	सोमदत्त	१,२,३,४,८,९
७३९	बालकृष्ण	१,२,५,७,९
७४१	विष्णुदत्त	१,२,७,८,९
७४६	हरिराम	२,३,४,५,६,७,८,९
७८२	महावीर	१,२,४,५,९
७८३	राजाराम	१,२,३,४,६,७,८,९
७८४	उमादत्त	२,३,४,६,७,८,९
७८७	गंगादत्त	१,२,५,६,७,८,९
७९०	हुक्मचन्द	१,२,४,६,७,८,९
९८०	रामस्वरूप	१,३,४,६,७,८,९
७९३	अर्जुनदेव	१,२,३,५,६,८,९
९७६	टीकमसिंह	१,२,३,४,६,७,८,९
७९४	वेंकटेश्वर	२,३,४,६,७,९
७९६	चेल्लावेंकटराव	१,२,३,४,५,७,९
७९७	सूर्यनारायण	१,२,३,४,५,६,७,९
७९८	सुब्रह्मण्य	१,२,३,४,७,८,९
८००	मुरलीधर	२,३,५,६,९
८०१	राधाकृष्ण	१,२,३,४,५,७,८,९
८५५	नन्दलाल	१,२,४,५,७,८,९
८७३	परमेश्वरदीन	२,३,४,५,६,७,८,९
८८२	कालीचरण	१,२,३,५,७,८,९
९०१	अमरनाथ	१,२,३,४,५,७,८,९
९०२	रामशास्त्री	२,३,५,७,८,९
९२०	श्रीकृष्ण	१,३,५,८,९
९३०	रुद्रप्रसाद	१,२,५,६,७,८,९
९३४	तारादत्त	१,२,५,६,७,९
९४२	ओंप्रकाश	१,२,३,४,५,७,८,९
९४३	रामसिंह	१,२,४,५,६,९
९४४	सुरेन्द्र	१,२,३,६,७,८,९
९५८	रामस्वरूप	१,४,६,७,८
९६७	परमानन्द	३,५,७,८,९
९७९	मंछाराम	१,२,४,५,६,७,९

(३) आयुर्वेदाभिषक्-परीक्षा

(१) स्वस्थवृत्तम् (२) रोगविज्ञानम् (३) शारीरशास्त्रम् (४) द्रव्यगुणशास्त्रम् (५) कायचिकित्सा (३) रसशास्त्रम् (७) शल्यतन्त्रम् (८) अगदतन्त्रम् (९) मौखिकपरीक्षा ।

क्रमाङ्काः	नामानि	अद्यावध्युत्तीर्णविषयाः
७	रतनलाल	१,३,४,५,६,७,८,९
११	रामेश्वरप्रसाद	१,२,३,४,५,६,७,८
१५	राधाकृष्ण	२,३,४,५,६,७,८,९
१८	विनायक	१,२,३,४,५,६,८
२२	वामनदेशमुख	२,३,४,५,७,८,९
३०	शिवराम	१,२,३,५,६,७,८,९
५०	सुन्दरमणि	१,३,४,५,६,८,९
६१	छत्रनलाल	१,२,३,४,६,७,८,९
१२३	शंकरलाल	२,३,५,६,७,८,९
१४२	हरिप्रसाद	२,४,५,६,८,९
१५४	शिवचरणलाल	[illegible]४,५,६,८,९
१५५	भारतेन्दु	१,३,४,५,६,७,८,९
१६४	रामेश्वरप्रसाद	१,३,४,५,६,८,९
१६५	विष्णुदत्त	१,३,४,५.६,७,८,९
१८३	गिरधारीलाल	३,४,५,७,८,९
२०१	नारायणराव	१,२,५,६,७,८,९
२०३	जगन्नाथ	३,४,५,७,८,९
२०५	बद्रीप्रसाद	१,४,५,६,७,८,९
२२६	मूलशंकर	१,३,५,६,७,८,९
२२७	जयन्तीप्रसाद	१,३,४,५,६,७,८,९
२३३	मदनमोहन	१,३,४,५,६,७,८,९
२२८	अनन्तनारायण	१,२,५,६,७,८,९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४२	सदाशिव	२,५,६,७,८,९
२८८	रामकृष्ण	१,३,४,५,६,७,८,९
३०२	राजकिशोर	१,४,५,६,८,९
३०३	हरनारायण	१,३,४,५,६,७,८,९
३०५	शिवसागर	१,३,५,७,८,९
३१०	दयाशंकर	१,३,५,६,७,८,९
३२०	गणेशप्रसाद	१,२,३,५,७,८,९
३३४	रामेश्वरलाल	१,३,४,५,६,७,८,९
३३५	भीष्मसिंह	१,३,४,५,६,७,८,९
३७३	रामचन्द्र	१,३,५,६,७,८,९
३७६	रामसेवक	१,३,४,५,६,७,८,९
३८१	छोटेलाल	१,३,४,५,६,७,८,९
३८३	चन्द्रभूषण	१,३,५,६,७,८,९
३९०	ओंप्रकाश	१,२,३,५,६,७,८,९
३९७	सुवेदपांडेय	१,३,४,५,६,७,८,९
३९८	देवदत्त	१,३,४,५,६,७,८,९
३९९	शिवचरण	१,३,४,५,६,७,९
४०२	रविदत्त	१,३,५,६,७,८,९
४०५	हरिप्रकाश	३,४,५,६,७,८,९
४१३	जयदेव	१,३,४,५,६,७,८,९
४२२	लक्ष्मीचन्द्र	१,३,४,५,६,७,८,९
४२७	हेमचन्द्र	१,३,४,५,६,७,८,९
४४५	ज्वालाप्रसाद	१,३,६,७,८,९
४४६	राधेश्याम	१,३,५,६,७,८,९
४४७	केशवदेव	१,३,५,६,७,८,९
४५१	माखनलाल	१,३,५,६,७,८,९
४५३	रामदास	१,३,४,५,६,७,८,९
४६६	हनुमानसहाय	१,२,३,४,६,७,८,९
४६७	वंशीधर	१ ३,५,६,७,८,९
४७०	जगदीशचन्द्र	१,४,५,६,७,८,९
४७१	देवीदत्त	१,३,४,५,६,७,८,९
४७३	कृष्णप्रसाद	१,३,५,६,७,८,९
४७४	चिरंजीलाल	१,३,५,६,७,८,९
४७६	सत्यनारायण	१,४,५,६,७,८,९
४८०	गिरधारीलाल	१,२,३,५,६,७,८,९
१०६५	राधेश्याम	३,५,६,७,८,९
४९१	गंगाधर	१,२,३,४,५,६,८
४९७	सूर्यनारायण	१,३,४,५,६,७,८,९
४९९	मारोती	१,२,३,४,५,७,८,९
५०७	वेणीमाधव	१,२,४,६,७,८,९
६०२	मोरेश्वर	२,४,५,६,७,८,९
६१०	भीखाभाई	१,२,४,६,७,८,९
६११	कमलाबाई	१,२,४,५,६,८,९
६३१	सरस्वती	२,३,४,५,६,७,८,९
६४४	सुमनदेवी	२,४,६,७,८,९,
६४५	नगीनलाल	२,४,६,७,८,९
६४८	शुभकरण	१,३,५,६,७,८
६६०	हरसूप्रसाद	१,३,४,५,६,७,८,९
६८४	सदाशिव	१,२,३,४,६,७,८,९
६८६	सीताराम	४,५,६,८,९
१०६६	केशवदेव	१,२,३,५,६,८,९
७०२	भंवरलाल	१,५,७,८,९
७०३	कृष्णशंकर	१,२,५,६,७,८,९
७७१	युधिष्ठिर	१,३,५ ६,८,९
७७३	चेतराम	३,४,६,७,८,९
७७८	श्रीधर	१,३,४,५,६,७,८,९
७९०	चेतराम	१,३,५,६,८,९
८१६	मदनमोहन	१,३,४,६,७,८,९
८१७	मुसद्दीलाल	१,२,३,४,५,६,७,८
८२४	शिवदत्त	१,४,५,८,९
८२७	ब्रह्मदत्त	१,२,४,५,६,७,८,९
८२९	लिखीराम	१,२,४,५,६,७,८,९
८३१	धर्मवीरसिंह	१,३,४,५,७,८,९
८३५	बालमुकुन्द	२,३,४,५,६,८,९
८९३	मुकुटबिहारी	१,३,४,५,६,७,८,९
८९६	शान्तिदेवी	१,३,४,५,६,७,८,९
८९७	रामहर्ष	१,४,५,६,७,८,९
८९८	गिरिजेशदत्त	१,३,४,५,६,७,८,९
८९९	शोभाराम	३,४,५,६,७,८,९
९४२	रामप्रसाद	१,३,४,५,६,७,८,९
९९७	गोपालदत्त	१,३,४,५,६,७,८,९
९९१	कुंजबिहारी	१,३,४,५,६,७, ८,९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९७०	भगवतीप्रसाद	१,३,४,५,६,७,८,९
९७१	घनानन्द	१,३,५,६;७,८,९,
९७२	भूपसिंह	२,३,४,५,६,७,८,९
९७३	दीनदयाल	१,३,५,६,७,८,९
९७४	उमाकान्त	१,३,४,५,७,८,९
९७५	पद्मादत्त	१,२,५,७,९
९८९	आनन्दस्वरूप	१,३,४,५,६,८,९
९९०	विद्यादत्त	१,३,५,६,७,८,९
९९१	राधाकृष्ण	२,४,५,६,७,८,९
९९३	मनीषाराम	१,३,४,५,६,७,८,९
९९४	ओम्प्रकाश	१,२,३,४,६,७,८,९
९९५	रतिराम	१,३,६,८,९
१००१	रामकुमार	१,३,४,५,६,७,८,९
१००२	बाबूराम	१,३,५,६,७,८,९
१००६	हरिचन्द्र	१,२,३,४,६,८,९
१००७	नरेन्द्रसिंह	१,३,५,६,७,८,९
१०५९	नथमल	१,२,५,६,७,८,९

सूचना

१—आयुर्वेदविशारदक्रमाङ्कः ६८ हरिगोपालः (३), आयुर्वेदभिषक्क्रमाङ्कः ६८२ रामचन्द्रः (३), ४८३ मंगलसिंहः (२), ४८९ वंशीधरः (३), ४९६ मोहनलालः (३) अप्युत्तीर्णतां गताः।

२—येषां छात्राणामितः परं केवलं चत्वारस्तन्न्यूना वा विषया अवशिष्टास्त एव पूर्वपद्धत्या केवलं १९४६ तमखीष्टाब्दे तेष्वेवावशिष्टविषयेषु परीक्षां दातुं प्रभवन्ति। अन्ये तु खण्डपरीक्षायामेव प्रवेशयिष्यन्ते।

३—अस्य परीक्षाफलस्य शुद्धिपत्रं जुलाईमासिक्यां पत्रिकायां प्रकाशमेष्यति, तदप्यवश्यं पठनीयं परीक्षार्थिभिः।

४—निम्नाङ्कितानां परीक्षार्थिनां परीक्षाफलं पुनः प्रकाशितं भविष्यतिः—

आयुर्वेदाचार्यक्रमाङ्काः २५८, २८८, ४०७, ४२५।

आयुर्वेदविशारदक्रमाङ्काः ७७, २२५, ५१८, ९२७, ९४५।

आयुर्वेदभिषक्क्रमाङ्काः २०, २१, २३, २८, ११७, २००, २९९, ३१४, ४०४, ५०२, ५०३; ६८८, ७८०, ९९७, ९९८, १०१७, १०१८, १०५०, १०५१, १०५२, १०५३, १०५४, १०५५, १०५६, १०६१, १०८९, १०९०, तथा गंटूर-बेजवाड़ा-बंगलोर-बेलगांव-राजमहेन्द्री-शिमोगा-केन्द्राणां समस्तोपकेन्द्राणां च।

५—परीक्षाफल-पुनःसंशोधनशुल्कं प्रतिविषयं द्विरूप्यकमितं ३१ अगस्तपर्यन्तमेव स्वीकरिष्यते, नातः परम्। ३१ अगस्ततः पूर्वं पुनःसंशोधनविषयकः पत्रव्यवहारः न कार्यः।

क० उपेन्द्रनाथदासः,

विद्यापीठ—मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी चिकित्सा-प्रणाली को उन्नतिशील बनाइये।

विदेशी चिकित्सकों के उत्थान का रहस्य ही यह है कि वे औषधि-निर्माण में न लगकर अपना सम्पूर्ण समय, शक्ति तथा बुद्धि चिकित्सा-कार्यमें लगा देते हैं तथा

औषधि बनाने का कार्य

उन विशाल कारखानों पर छोड़ देते हैं, जिनका काम केवल औषधि निर्माण करना ही होता है। आयुर्वेदीय औषधियों तथा उनके द्वारा चिकित्सा विज्ञानकी उन्नति एवं भारतीय वैद्यराजों की कमी को पूरा करने के लिये

माननीय पुरुषोत्तमदास जी टण्डन, स्पीकर लेजिस्लेटिव एसेम्बली, यू० पी० द्वारा उद्‌घाटित

भारतीय-रसशाला

कई विशेषतायें रखती है।

१—प्रत्येक योग विशुद्ध शास्त्रीय नियम से उत्तम प्रकारके मूल द्रव्यों से बनाये जाते हैं।
२—अधिक परिमाण में औषधियां निर्माण कर स्वल्प मूल्य पर बेची जाती हैं।
३—रसशाला के संरक्षक और अध्यक्षजनता तथा आयुर्वेदजगत में ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं। केवल व्यापारी ही नहीं।
४—औषधि-निर्माण का कार्य कुशल तथा अनुभवी कार्यकर्त्ताओं द्वारा कराया जाता है। रसशाला प्रत्येक आयुर्वेदीय औषधियां—रस, भस्म, आसव, अरिष्ट, घृत, तैल, पाक, अवलेह, गुग्गुल, वटी, क्षार, सार, पर्पटी, लौह, मण्डूर, चूर्ण, अर्क तथा कूपीपक्व रसायन आदि निर्माणकर आयुर्वेदजगत की चिरकाल से सेवा कर रही है।

अतः

आप से तथा प्रत्येक आदरणीय वैद्यराजों, औषधि-विक्रेताओं, धर्मार्थ औषधालयों के माननीय संचालकों, गुणग्राही आयुर्वेदप्रेमी जनता, एवं म्युनिसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चिकित्सालयों के कर्णधारों से हमारा नम्र निवेदन है कि एक बार रसशाला की निर्मित औषधियां अवश्य व्यवहार कर उनकी उत्तमता की जांच करें। आशा है आपको सब प्रकार से संतोष होगा। पूर्ण विवरण के लिये सूचीपत्र मंगाकर लाभ उठावें।

संरक्षक—

माननीय आयुर्वेदाचार्य पं० शिवराम जी द्विवेदी, राजवैद्य, एम. एल. ए. (यू० पी०), सभापति—यू० पी० आयुर्वेद सम्मेलन, सदस्य—इण्डियन मेडिसिन बोर्ड, अध्यक्ष, रसायनशाला, अमीनाबाद, लखनऊ।

अध्यक्षा—

श्रीमती शान्तादेवी, वैद्या, सम्पादिका—आयुर्वेद-केसरी, संचालिका—स्त्री-चिकित्सालय, हजरतगंज, लखनऊ।

भारतीय रसशाला, हसनगंज, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-: आयुर्वेदीय औषधियों के लिये :-

५० वर्ष से सुप्रसिद्ध

ऊँझा फार्मेसी लिमिटेड

पो० ऊंझा (उत्तर गुजरात)

को याद कीजिये।

इस फार्मेसी में रस, भस्म, कूपीपक्व, गुटिका, गुग्गुल, चूर्ण, आसव, अवलेह, तैल, घृत आदि हरएक किस्म की आयुर्वेदिक औषधियां शास्त्रोक्त विधि से तैयार की जाती हैं, जिनकी उत्तमता के प्रमाण में अनेक सार्टिफिकेट और मैडिल मिले हैं। आज ही सूचीपत्र मंगाइये।

सब जगह एजेन्सियां हैं। न हों तो लिखिये !

महेशानन्द एण्ड सन्स,
शिलाजीत-विशेषज्ञ

नन्दप्रयाग—गढ़वाल
(यू० पी०)

प्रिय महोदय, हमारा कार्यालय अपने उत्कृष्ट शिलाजीत के लिए समस्त भारतवर्ष में पिछले ५० वर्षों से सुविख्यात है। यह वही कार्यालय है जिसमें सन् १८६४ ई० से निरन्तर शुद्ध शिलाजीत आयुर्वेदिक पद्धति से तैयार किया जाता है। यही कारण है कि अनेक विक्रेताओं के होते हुए भी हमारे शिलाजीत की शुद्धता व श्रेष्ठता का लोहा सारा देश मानता है और प्रमाणस्वरूप हज़ारों वैद्यों, डाक्टरों, संस्थाओं व मान्य सज्जनों के प्रशंसापत्र हमारे यहां सुरक्षित रक्खे हुए हैं।

अपने कार्यालय के स्वर्णजयन्ती के सुअवसर पर हमने उत्तम शिलाजीत का मूल्य घटाकर २०) सेर कर दिया है। इस सुविधा से अनेक वैद्य व औषधालय अनुपम लाभ उठा रहे हैं। आप भीं एक बार परीक्षार्थ मंगाकर इस दिव्य महौषधि के प्रचार करने की कृपा करें। विशेष विवरण जानने के लिये सूचीपत्र मंगाइये। कृपाकांक्षी—गोविन्दप्रसाद नौटियाल

ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर। (स्थापित १६२३ ई०)

(१) दमानाशक (रजि०) — खांसी, श्वास, और राजयक्ष्मा की अचूक औषधि। कीमत ३२ मात्रा १), १२५ मात्रा ३)

(२) अमृतविलासवटी (रजि०) — बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष के सम्पूर्ण रोगों की एक ही औषधि। कीमत २५ मात्रा १); १०० मात्रा ३)

(३) गुप्त रोग का दारू (रजि०) — स्त्रियों के मासिक धर्म की खराबी को दूर करके सन्तान पैदा करती है। कीमत १४ मात्रा २), ५०) मात्रा ६)

(४) डाइवटी (रजि०) — मधुमेह की अचूक औषधि। कीमत २५ मात्रा ३), १०० मात्रा १०)। डाक-व्यय सबका पृथक्।

पता:- डा० जी० डी० शर्मा, बी० एल०, एस० एस०, बी० आर० एम० पी०, पी० ए० सी०, अध्यक्ष, ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदोद्धारक श्रीयादवजी त्रिकमजी आचार्य (बम्बई) द्वारा लिखित

सिद्धयोग संग्रह

पहला संस्करण समाप्त ।

द्वितीय के आर्डर रिजर्व हो रहे हैं ।

इस ग्रन्थ के विषय में हमारे पास भारत के बड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों व डाक्टरों के जो प्रशंसा-पत्र व सर्टिफिकेट आये हैं, यदि उन्हें एकत्र छापा जाय तो मूलग्रन्थ के समान ही इसका अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार हो सकता है। उपयोगिता की दृष्टि से इस ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा हुई है, उतनी आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की आज तक नहीं हुई — यदि यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। प्रथम संस्करण के छपते-छपते ही हमारे पास इतने आर्डर जमा हो गये कि १००० प्रतियां और बढ़ा कर कुल २००० प्रतियां छापनी पड़ीं और वे सब ही हाथोंहाथ छः महीने के अन्दर ही बिक गईं। जिस शीघ्रता से इस ग्रन्थ की बिक्री हुई उस अनुपात से आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की नहीं हुई होगी। ६२५ आर्डर एडवांस जमा हैं श्रीयादवजी महाराज द्वारा ही परिवर्द्धित व संशोधित द्वितीय संस्करण ३-४ महीनों में छप जायेगा। यह प्रथम संस्करण से भी उपयोगी होगा। इसकी ३००० प्रतियां छपेंगी जो कि बहुत जल्दी ही समाप्त हो जायेंगी। इसका मूल्य वही २।) डाक व्यय सहित। १) या समग्र मूल्य पेशगी भेज कर आर्डर बुक करा लेने वाले बुद्धिमानों को ही यह समय पर मिल सकेगा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन,

कलकत्ता, पटना, झांसी और नागपुर।

नोट—पुस्तक युद्धकालीन हेडआफिस पटना में ही छपी है। अतः पुस्तक मंगाने वाले सज्जनों को पटना ही पत्र लिखना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखेबाजों से बचिये ! संस्थापित १९११ ई०

—शुभ सन्देश—

भारत की एक मात्र विराट आयुर्वैदिक-यूनानी संस्था,

बुन्देलखंड आयुर्वेदिक-यूनानी फार्मेस्यूटिकल वर्क्स, झांसी,

द्वारा निर्मित,

चिकित्सा—क्षेत्र में हलचल मचा देने वाले, तथा

रोगों को नष्ट करने में शतप्रतिशत सत्य प्रमाणित होने वाले

आयुर्वेदिक-यूनानी इन्जैक्शन

को प्रयोग कर धन तथा यश उपार्जन कीजिये ।

समस्त वैद्यों तथा हकीमों से निवेदन है कि वे हमारी रसायनशाला द्वारा देशी जड़ी-बूटियों से निर्मित शुद्ध आयुर्वेदिक-यूनानी इन्जैक्शनों का प्रयोग कर लाखों रोगियों को कठिन से कठिन रोगों से मामूली खर्च में मुक्त करा कर उनके प्रशंसापात्र बनें ।

साथ ही, हमारे यहां आयुर्वेदिक-यूनानी इन्जैक्शनों की शिक्षा तथा चक्षु और दन्त शिक्षा वैद्यों और हकीकों को भी दी जाती है । स्टाकिस्टों और एजेन्टों की आवश्यकता है । कमीशन पर्याप्त दिया जाता है ।

हमारे यहां का सूचीपत्र और ऐजेन्सी के नियम मुफ्त मंगाइये ।

पताः—मैनेजर,

बुन्देलखंड आयुर्वेदिक-यूनानी फार्मेस्यूटिकल वर्क्स,

एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर,

प्रधान कार्यालय, मानिक चौक, झांसी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार का पता— 'साधना' ढाका । टेलीफोन—१२२ ढाका ।

महान् वैज्ञानिक का

आयुर्वेद को दान ।

आयुर्वेद का पुनरुद्धार और देशविदेशों में प्रचार ।

अब वैद्यों को स्वयं औषधियां तैयार करने की आवश्यकता नहीं है । साधना औषधालय हर समय उनकी सेवा के लिए तैयार है । यहां पर शुद्ध शास्त्रीय विधि से औषधियां तैयार की जाती हैं और उचित मूल्य पर बेची जाती हैं । महायुद्ध के कारण भी औषधियों के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई । वैद्यों को चाहिये कि वे दवाइयां बनाने के झंझट में न पड़ कर अपना समय और दिमाग रोगियों की चिकित्सा में लगावें ।

साधना की सभी शाखाओं में रोगियों को चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श मुफ्त दिया जाता है ।

अध्यक्ष—डा० योगेशचन्द्र घोष एम.ए.
आयुर्वेदशास्त्री, एफ०सी०एस०(लन्दन),
एम० सी० एस० (अमेरिका),
भागलपुर कालेज के केमिस्ट्री के
भूतपूर्व अध्यापक ।

साधना औषधालय ढाका (बंगाल)

(शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों की प्रसिद्ध निर्माणशाला)

सारे संसार में इसकी शाखायें और एजेन्सियां हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी शुभाशीर्वादयुक्त शुभ कामना

के लिये

आपका प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

कलकत्ता

सन् १८८४ ई० में संस्थापित होकर सन् १९४४ ई० की समाप्ति पर ६० वर्षों की सेवाओं के बाद "हीरक जयन्ती" के स्मरणीय अवसर पर आदरणीय आयुर्वेद के कर्णधार, प्रत्येक भारतीय वैद्य, आयुर्वेद हितैषी, आयुर्वेद पत्रकार, आयुर्वेदिक औषधालय, आयुर्वेदिक पुस्तकालय, आयुर्वेदिक विद्यालय, आयुर्वेद शिक्षक, आयुर्वेद विद्यार्थी तथा विभिन्न आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से आयुर्वेद की निरन्तर सेवा के हेतु

प्रोत्साहन प्राप्ति के लिये

प्रार्थना करता है।

कृपया शुभाशीर्वाद प्रेषित कर अनुग्रहीत करें।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि० कलकत्ता

युद्धकालीन प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ—देवघर (S. P.)

शाखाएं—

(१) हाथरस (U. P.) (२) नागपुर (C P.)

सेलडिपो—

पटना (Bihar)

प्रकाशक— क० आशुतोष मजुमदार, नई देहली। मुद्रक—अर्जुन प्रेस, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

❀ श्री धन्वन्तरये नमः ❀ रजिस्टर्ड नं० एल०—५०८८

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका

(भारतीयायुर्वेदमहासम्मेलनाज्ञया प्रतिमासं प्रकाश्यते)

प्रधान सम्पादक :— कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि
एम० आर० ए० एस०, नई देहली।

सम्पादक :— रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य।

वर्ष ३२ अङ्क ११ | देहली, नवम्बर १९४५ ई० | वार्षिक मूल्य ५) यह अङ्क ॥)

❀ लेख-सूची ❀

१—संपादकीय १
२—परमावश्यक निवेदन ३
३—चुनाव आ रहा है ५
४—प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय ७
५—पञ्चकर्मविनिश्चय ९
६—त्रैदोषिक प्रश्नोत्तराणि १३
७—A Comparative Study of Anaemia १५
८—ऐलोपैथी आयुर्वेद के चरणों में १६
९—रसरत्नसमुच्चय १८
१०—चाक्रिक २१
११—आयुर्वेदराष्ट्रपतियात्रा २२
१२—नूतनसमाचार २४
१३—सूचनायें ३१
१४—महासम्मेलन का निमन्त्रणपत्र, कार्यक्रम आदि ३४
१५—महामण्डल के अधिवेशन ३७
१६—महामण्डल और विद्यापीठ की सूचनायें ३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागार्जुन

—ने—

अनेक शताब्दी पूर्व अपनी अलौकिक और असाधारण प्रतिभा के बल से गतगौरव आयुर्वेद को पुनः प्रतिष्ठापित किया था।

—आज—

आयुर्वेद फिर स्खलित-गौरव, हतमान और विपर्यस्त हो गया है।

अतः नागार्जुन के पवित्र नाम की ध्वजा लेकर,

कर्मकुशल और लब्धप्रतिष्ठ वैद्य

पाश्चात्यशिक्षानिपुण चिकित्सक

—एवं—

रसायनशास्त्र-निष्णात वैज्ञानिक

की देख-रेख में परिचालित

नागार्जुन आयुर्वेद रिसर्च इनस्टिट्यूट

—ने—

आयुर्वेद की सेवा में आत्मनियोग किया है!

विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधियाँ प्रस्तुत करने के कारण इस संस्था को बत्तीसवें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से प्रथम श्रेणी का प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ है।

औषधि-परिचय बिना मूल्य भेजा जाता है!

कार्यालय का पता -

बेलियाघाटा मेनरोड, कलकत्ता।

रसशाला का पता—

दमदम कैंट, (बंगाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

कविराज आशुतोष मजुमदार ।

सभापति निर्वाचित ।

कर्णाटक में होने वाले ३४ वें अ० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन के लिए भी श्रीयुत कविराज एम० के० मुखर्जी (कलकत्ता) ही सभापति निर्वाचित हुये हैं । अबकी आप तीसरी बार सभापति चुने गये हैं । तीनों बार आपका निर्वाचन निर्विरोध हुआ है । कोई भी व्यक्ति आज तक महासंमेलन का सभापति लगातार ३ बार नहीं चुना गया । वास्तव में आप की कार्यक्षमता और त्याग के कारण ही आयुर्वेदसंसार आप को इतना प्रेम करता है । आशा है, इस बार हमारे कर्मठ सभापति जी अवश्य ही कोई न कोई ठोस काम करके अपनी कर्मठता का प्रत्यक्ष परिचय देंगे। विद्यापीठ की महाविद्यालय—योजना मुद्दत से उनका मुंह ताक रही है । इसके लिये धन एकत्र करना और योजना को कार्यान्वित करना उन ही के ऊपर निर्भर है ।

ऐलोपैथी की प्रधानता ।

पाठकों को यह तो सुविदित ही है कि हमारी विदेशी (बृटिश) सरकार ऐलोपैथी को सर्वत्र प्रधानता देती है और आयुर्वेद के साथ सौतेले पुत्र का सा व्यवहार करती है । ऐलोपैथी पर वह जितने रुपये व्यय करती है उतने पैसे भी आयुर्वेद पर खर्च नहीं करती । इसके विपरीत वह देशी चिकित्सा को जड़ से उखाड़ने की सदा कोशिश करती रहती है और ऐसे उपाय करती है जिससे ऐलोपैथी का जनता में प्रचार बढ़े और आयुर्वेद के प्रति घृणा ।

बृटिश सरकार के पदचिन्हों पर चलने वाले हमारे देशी राज्य भी अपनी देशी चिकित्सा के प्रति कोई प्रेम प्रदर्शित नहीं करते । प्रेम तो दूर रहा उल्टा तिरस्कार करते हैं तथा विदेशी चिकित्सा को अपनाते हैं । देशी राजाओं ने चिकित्साविभाग का अधिकार पाश्चात्यचिकित्सा-दीक्षित डाक्टरों और सिविल सर्जनों को दे रखा है, जो स्वभावतः ही आयुर्वेद के विरोधी होते हैं । वे राजाओं को उल्टा सीधा समझा कर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं । इसके लिये हम उन डाक्टरों और सर्जनों को दोषी नहीं ठहराते जो देशी राजाओं के यहां नौकरी करते हैं, अपितु उन देशी राजाओं को दोषी ठहराते हैं जो ऐसे राष्ट्रीयभावनाविरोधी व्यक्तियों को अपने यहां नौकर रखते हैं और उनके सभी सदसत्परामर्श को आंख मूंदकर मानते हुए देश का अहितसाधन करने में सहायक होते हैं । राजा की आंखें राजा के अधिकारी होते हैं । जब आंखें ही खराब हैं तो राजा देख ही क्या सकता है ।

बड़वानी राज्य का उदाहरण हमारे सामने है । बड़वानी राज्य के एक प्रतिष्ठित वैद्य ने वहां के महाराणा के पास इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र भेजा था कि बड़वानी राज्य (मध्यभारत) में आयुर्वेद के भी कुछ औषधालय राज्य की ओर से खुलने चाहिये । महाराणा साहब ने वह प्रार्थनापत्र स्टेट सर्जन श्री अब्बास अली नकवी एम० बी० बी० एस० के पास सम्मत्यर्थ भेज दिया । स्टेट सर्जन महोदय ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि ऐलोपैथी के कारण [illegible] जिस योग्यता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीणों की चिकित्सा कर सकते हैं, उस योग्यता से वैद्य नहीं कर सकते, क्योंकि वैद्य शल्यचिकित्सा नहीं जानते। साथ ही आयुर्वेदिक औषधियों और वैद्यों के वेतन पर हमें रुपया भीं अधिक खर्च करना पड़ेगा। राज्य में ऐलोपैथी के औषधालय पहले से ही पर्याप्त हैं, अतः आयुर्वेदीय औषधालय खोलने की कोई आवश्यकता नहीं है।

स्टेट सर्जन की रिपोर्ट में ३ बातें विचारणीय हैं—(१) वैद्य की योग्यता ऐलोपैथी के कम्पाउंडर से भी कम है, (२) आयुर्वेदीय औषधियों और वैद्यों के वेतन पर ऐलोपैथी की अपेक्षा अधिक खर्चा होता है, तथा (३) क्योंकि स्टेट में ऐलोपैथी के औषधालय पहले से हीं काफी हैं, इसलिये आयुर्वेदीय औषधालय खोलने की आवश्यकता नहीं। ये तीनों बातें एक भोले भाले राजा को बहकाने के लिये काफी हैं। परन्तु वैद्य यह भली भांति जानते हैं कि इनमें कितना सार है। (१) जब बड़े से बड़ा डाक्टर कठिन रोगों में वैद्य की सलाह लेता है तो बेचारे कम्पाउंडर की क्या हिम्मत है जो वैद्य के मुकाबिले में खड़ा हो सके। वह तो केवल राज्य और उनके अधिकारियों के बल पर ही गांवों में पहुँचता है। (२)जबकि कोई ऐलोपैथिक औषधि बिना पैसे के नहीं मिलती और पैसे से भी कठिनता से मिलती हैं, आधी से अधिक आयुर्वेदीय औषधियां बिना पैसे के प्राप्त हो सकती हैं, और जंगलों में, बनों में, घरों में सर्वत्र सुलभ हैं। पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि ऐलोपैथी की औषधियां सस्ती हैं या आयुर्वेद की। देशी राजाओं की कृपा से वैद्यों को तो वेतन भी डाक्टरों से कम ही मिलता है चाहे वह डाक्टरों से अधिक योग्य ही क्यों न हों। (३) क्योंकि स्टेट में ऐलोपैथी के औषधालय काफी हैं इसलिए आयुर्वेदीय औषधालय खोलने की आवश्यकता नहीं, यह कोई युक्ति नहीं है। यदि आयुर्वेदीय चिकित्सा अधिक लाभदायक और अल्पव्ययसाध्य है तो ऐलोपैथी के औषधालय बन्द करके आयुर्वेद के औषधालय खोले जा सकते हैं। परन्तु राजाओं को ये बातें कौन सुझावे। उनके तो सलाहकार भी पाश्चात्य शिक्षा और चिकित्सा के ही राग अलापने वाले होते हैं।

देशी राज्यों के नरेशों से हमारा निवेदन है कि वे अब अपनी गम्भीर निद्रा त्याग कर सजग हो जायें और देखें कि उनके भली प्रकार न देखने से देश का कितना अनिष्ट हो चुका है तथा हो रहा है। उन्हें अपने राज्य में ऐसा कोई अधिकारी नियुक्त न करना चाहिये जो राष्ट्रीय भावनाओं तथा राष्ट्रीय संस्कृति आदि का विरोधी हो।

यदि देशी राजा यह आवश्यक समझते हों कि उनके पथप्रदर्शन के लिये किसी आयुर्वेदविशेषज्ञ की आवश्यकता है तो महासम्मेलन उनको इस प्रकार की सहायता देने के लिए सदैव तैयार है। वे यदि हमारी संस्था से इस प्रकार की सहायता चाहेंगे तो महासम्मेलन अपने विशेषज्ञों की एक समिति बना कर उनके राज्य में आवश्यक परामर्श प्रदान करने के लिये भेज देगा। जब तक अधिकारियों के दोषों की समीक्षा न होगी तब तक राजा लोग अपनी प्रजा का अहितसाधन करके अयश के भागी होते ही रहेंगे।

सिनेमा में आयुर्वेद।

सरकार के सर्वत्र आयुर्वेदविरोधी कार्यों और प्रचार को देखते हुए यह आवश्यक है कि सरकार जिन जिन साधनों का उपयोग ऐलोपैथी के प्रचार के लिए कर रही है उन्हीं का उपयोग वैद्य आयुर्वेद के प्रचार के लिये करें। आयुर्वेद प्रचार का एक साधन सिनेमा भी है। यदि महासम्मेलन सिनेमा द्वारा आयुर्वेद का प्रचार करना चाहता हो तो वह इसकी व्यवस्था करे। हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रयदाता सदस्य श्रीयुत पं० कान्तिनारायण मिश्र, मिश्र आयुर्वेदिक फार्मेसी, पटियाला, से इस सम्बन्ध में सहायता ली जा सकती हैं। मिश्र जी के भाई साहब यूनिटी प्राडक्शन्स नामक सिनेमा कम्पनी में, जिसने भक्त कबीर और कुरुक्षेत्र आदि चित्र निर्मित किये हैं, काम करते हैं। वे आयुर्वेद के बड़े भक्त हैं। उनसे पूरी सहायता मिलने की आशा है। महासंमेलन को चाहिये कि वह प्रस्ताव पास करके इस दिशा में आगे बढ़ने के लिये उद्युक्त हो।

अ० भा० वैद्य-डाइरेक्टरीं।

अ० भा० वैद्य-डाइरेक्टरी के प्रकाशन के लिये यद्यपि हमारे मित्रों और पाठकों ने अभिरुचि दिखाई है, परन्तु अभी तक सक्रिय सहयोग किसी ने प्रदान नहीं किया। हम अपनी संबद्ध संस्थाओं, प्रान्तीय मण्डलों तथा वैद्यों से व्यक्तिशः एवं सामूहिक रूप से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे कार्य की गुरुता को देखते हुये, हमारे निवेदन पर गंभीता से ध्यान देने की कृपा करें, और अत्यन्त शीघ्रता के साथ वैद्य-डाइरेक्टरी के लिये मसाला तैयार करके भेज दें।

परमावश्यक निवेदन

मान्यवर महोदय,

आपको मालूम है कि जब से नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन और विद्यापीठ की ओर से आयुर्वेदोन्नति के लिए सरकार से आवेदन-निवेदन किया गया तब से किसी किसी प्रान्त में सरकार की ओर से आयुर्वेद कालेज और इण्डियन मैडिसिन बोर्ड की स्थापना हुई अवश्य है, परन्तु देखना यह है कि उनसे आयुर्वेद की वास्तविक उन्नति हुई या नहीं। आयुर्वेद के आठों अंगों की सैद्धान्तिक और क्रियात्मक शिक्षा का जब कहीं प्रबन्ध ही नहीं तो हम यह कैसे आशा कर सकते हैं कि स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, शिरोविरेचन, सिराव्यध, अग्निकर्म, क्षारकर्म, जलौकाविधि के हम विशेषज्ञ बन सकेंगे; लुप्तानुसंधान कुटीप्रावेशिक रसायन आदि का तो कहना ही क्या!

सरकार की आयुर्वेद के प्रति बढ़ती हुई उपेक्षा को देखते हुए नि० भा० अयुर्वेदमहासम्मेलन और विद्यापीठ ने निश्चय किया है कि आयुर्वेद की वास्तविक उन्नति का काम वैद्यों को स्वयं अपने हाथों में लेना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक समझा गया है कि विद्यापीठ को परीक्षा लेने वाली संस्था न रखकर आयुर्वेद की आदर्श शिक्षा देने वाली संस्था भी बनाया जाय। निकट भविष्य में एक ऐसा आयुर्वेदिक शिक्षणालय बनाया जाय जिसमें—

१—साधारण शिक्षाकाल ५ वर्ष रखा जावे। इन पांच वर्षों में आयुर्वेद के ८ अंगों की सैद्धान्तिक और प्रायोगिक शिक्षा के साथ साथ संस्कृत और अंग्रेजी की भी आवश्यक शिक्षा दी जावे।

२—पंचवर्षीय परीक्षा में उत्तीर्ण स्नातकों को एक एक वर्ष में एक एक अंग की विशेष शिक्षा देकर विशेषज्ञ बनाया जाय और ऐसे विशेषज्ञों को ही आयुर्वेदाध्यापक नियुक्त किया जाय।

३—कायचिकित्सालय में कम से कम १००, शल्यचिकित्सालय में कम से कम १०० और शेष ६ अंगों के चिकित्सालयों में कम से कम २०० रोगी रख कर उनकी निःशुल्क चिकित्सा की जावे, जिससे शिक्षार्थियों को भली प्रकार चिकित्सानुभव प्राप्त हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—आठों अंगों के कम से कम १०० सम्पन्न रोगियों को रखने का स्थान हो।

५—एक अनुसंधान विभाग हो, जिसके द्वारा नवीन नवीन आविष्कार हो सकें।

६—स्नेहन, स्वेदन, पंचकर्म, सिराव्यध, कुटीप्रावेशिक रसायन आदि की सम्यक् व्यवस्था हो।

७—एक विशाल औषधनिर्माणशाला हो, जिसमें प्रत्येक प्रकार की शास्त्रीय और पेटेन्ट औषधियां निर्माण करके रोगियों पर प्रयुक्त की जांय, तथा अत्यल्प लाभ लेकर वेचीं जावें।

८—एक विशाल औषधोद्यान हो, जिसमें प्रत्येक प्रकार की वनौषधियां उत्पन्न की जावें। साथ में एक पशुशाला भी हो, जिसमें गौ, बकरी आदि का पालन किया जाय।

९—एक विराट् संग्रहालय हो, जिसमें रस, उपरस, धातु, उपधातु, जान्तव और वानस्पतिक चीजों का संग्रह रहे।

१०—एक आदर्श पुस्तकालय हो, जिसमें मुद्रित और हस्तलिखित चिकित्सा सम्बन्धी सभी पुस्तकों का संग्रह हो।

११—एक प्रकाशन–विभाग हो, जिसके द्वारा मासिक पत्रिका तथा प्राचीन और नवीन आयुर्वेद पुस्तकों का प्रकाशन हो।

सरकार से सहायता लेकर सभी भारतीय आयुर्वेदीय शिक्षासंस्थाओं में एक ही पाठ्यक्रम और शिक्षाप्रणाली प्रचलित करके विद्यापीठ द्वारा एक ही परीक्षा ली जावेगी। इस परीक्षा में उत्तीर्ण स्नातक अपनी योग्यता में सर्वोत्तम वैद्य बनेंगे जिन पर प्रान्तीय सरकारें कोई नियन्त्रण नहीं लगा सकेंगी। इस संस्था में अच्छा वेतन देकर उत्तम से उत्तम अध्यापक रखे जावेंगे।

इस प्रकार के महान् कार्य के लिये कम से कम दो कोटि रुपये के मूलधन की आवश्यकता है। वैद्य सम्प्रदाय गरीब नहीं है। राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, दूकानदार, नेता, राजकर्मचारी सभी के ऊपर उसका प्रभाव है। इसलिए यदि वह सामूहिक रूप से प्रयत्न करे तो उपर्युक्त विपुल प्रतीत होने वाली धनराशि अल्प समय में ही संग्रहीत की जा सकती है तथा सरकार पर दबाव डालकर विशाल भूमि एवं भवननिर्माण के उपकरण अल्प मूल्य में ही प्राप्त किये जा सकते हैं!

आयुर्वेदमहासंम्मेलन पत्रिका के प्रत्येक दर्शक से प्रार्थना है कि कृपया सूचित करें कि इस महायज्ञ को सफल करने के लिए वे क्या क्या सहायता दे सकते हैं? स्वयं कितना धन दे सकते हैं तथा दूसरों से कितना दिला सकते हैं? इसके अतिरिक्त यदि और किसी प्रकार की सहायता देना चाहें तो उसका भी निर्देश करदें।

आशा है आप मेरी विनीत प्रार्थना पर ध्यान देकर सत्वर ही पत्रद्वारा सूचना देने की कृपा करेंगे।

विनम्र—

विद्यापीठ—मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनाव आरहा है

(ले० आ० प० पं० जगनाथ प्रसाद शुक्ल, योजना-समित्यध्यक्ष)

धारासभाओंके चुनाव के लिए वोटरों की सूची बन चुकी हैं। कांग्रेसके आग्रहसे सरकार ने उनका संशोधन भी स्वीकार कर लिया है। सूची में जिनका नाम न हो उन्हें प्रयत्न करके नाम दर्ज करा लेना चाहिये। यह चुनाव जनवरी तक होने वाला है। इधर संयुक्त प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन इसी मासमें और अखिल भारतीय सम्मेलन भी दो महीनेमें हो रहा है। सम्भवतः वैद्य समुदाय इस बात को पसन्द करेगा कि असेम्बलियों के चुनाव में वैद्य लोग सक्रिय भाग लें। प्रत्येक रजिस्टर्ड वैद्यको कायदेके अनुसार मतदार या वोटर होना चाहिये। जिसका नाम न हो उसे दर्ज कराने के लिये स्थानीय कार्यकर्ताओं के द्वारा—कांग्रेस कार्यकर्ताओंके द्वारा—शीघ्र प्रयत्न करना चाहिये।

पिछली असेम्बलियोंमें वैद्य सभासद बहुत थोड़े थे। इतने बड़े संयुक्तप्रान्त में कुल ४ एम० एल० ए० थे। प्रत्येक प्रान्त में रजिस्टर्ड वैद्यों की संख्या इतनी नहीं है कि चुनाव में उनका जबरदस्त प्रभाव या दबाव पड़ सके। एक प्रान्त में सात आठ हजारसे १० बारह हजार तक के रजिस्टर्ड वैद्यों का प्रभाव ही क्या हो सकता है? किन्तु आयुर्वेद के समर्थकोंकी संख्या सभी प्रान्तों में लाखों है। उनके सहयोग से वैद्य अपना प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। प्रयत्न यह होना चाहिये कि इस चुनाव में असेम्बलियों में वैद्य अधिक से अधिक संख्यामें पहुँचे, ताकि उनका प्रभाव असेम्बली और शासन करने वाली सरकार के सूत्र संचालकों पर पड़ सके। पिछली असेम्बलियों में वैद्यों की कमी और डाक्टरों के प्रभाव के कारण जो वैद्यक सम्बन्धी कायदे बने उनसे वैद्यों के गलेमें फांसीका फन्दा ही लग सका है। यदि फिर वैसी ही गलती दुहराई गयी तो हमारे आयुर्वेदिक स्वराज्यका आंन्दोलन पनप नहीं सकेगा। प्रत्येक जिले और कमिश्नरी में जो प्रभावशाली और प्रतिष्ठित वैद्य हों उन्हें असेम्बलियों के लिये खड़े करने का प्रयत्न होना चाहिये। जहां यह नहीं हो सकता वहां कम से कम इतना तो होवे ही कि जो मेम्बर हों, वे आयुर्वेद के समर्थक हों, आयुर्वेदकी उन्नतिके काम में सदा सहायक हों, आयुर्वेदको राजनैतिक अधिकार दिलाने में सदा प्रयत्न शील हों। ऐसा करना कठिन नहीं है।

प्रत्येक प्रान्तीय सम्मेलनको एक प्रतिज्ञापत्र तैयार करना चाहिये और उसपर उम्मेदवार के हस्ताक्षर कराने चाहिये। यदि कोई प्रतिज्ञाबद्ध न हो तो कम से कम ऐसा आश्वासन तो उसे देना ही चाहिये कि वह वैद्यों को अधिकार दिलाने और आयुर्वेद की उन्नति तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा का अधिक प्रचार करने में सहायक और प्रयत्नशील रहेगा। जो ऐसा न कर सकें उनका खुल्लम खुल्ला विरोध होना चाहिये, जनता से उन्हें वोट नहीं मिलने चाहिये। अभी हाल में ही दिल्ली में म्युनिसिपलिटी में चुनाव हुवा था। उम्मेदवारों से आश्वासन मांगा गया कि वे बोर्डमें जाकर हिन्दी का समर्थन करेंगे। जो उम्मेदवार ऐसा आश्वासन नहीं दे सके वे चुनाव में सफल नहीं हुए, अण्टाचित्त हो कर गिरे। वैद्योंको अपनी शक्ति समझनी और संभालनी चाहिये। हमें मालूम है कि बम्बईकी असेम्बलीके कुछ उम्मेदवारों ने पिछली बार कहा था कि "हम तुम्हें किसी प्रकार का वचन नहीं दे सकते, हमारी निष्ठा में विश्वास हो तो हमें वोट दो।" इसी तरह संयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय असेम्बली के एक वैद्य सभासद ने ऐक्ट संशोधन के आंदोलन के समय कानपुरमें कहा था कि "हमें वैद्यों ने चुन कर नहीं भेजा। हम तो कांग्रेसके चुने हुए हैं, हमें कांग्रेस से जैसा हुक्म मिलेगा वैसा करेंगे।" इस तरह का दम्भ इस बार नहीं चलने देना चाहिये। प्रत्येक सभासदको ऐसा आत्मविश्वास होना चाहिए कि जनता की इच्छा, देशके कल्याण और गरीबों की सहायताके विरुद्ध हम कांग्रेस को जाने न देंगे। उसे अपने मतमें लाने का प्रयत्न करेंगे। इसी तरह किसी को अपनी निष्ठा की दोहाई देकर निकल भागने का भी अवसर नहीं मिलना चाहिये। यदि आप सदिच्छा और अच्छी।निष्ठा वाले हैं तो खुलकर कह क्यों नहीं देते कि जनता के कल्याणके प्रत्येक कार्य में हमारी सहानुभूति है। आयुर्वेद देशका है, देश के भले के लिए है, अतएव उसके हम समर्थक होंगे। जो ऐसा न करे उसके विरुद्ध तीव्र आन्दोलन खड़ा किया जाय। हम आठ दश हजार हैं सही, किन्तु एक एक वैद्य के कहने पर हजारों मनुष्य हैं। अतएक लाखों वोटरों को हम बना बिगाड़ सकते हैं। देश के हित के काम में उन्हें आकर्षित कर सकते हैं।

सार्वजनिक हितके कामों से वैद्य अपने को अलग नहीं रख सकते। राजनैतिक चालोंमें ही आयुर्वेदका भविष्य निर्भर कर रहा है। इस लिए प्रान्तिक सम्मेलन का कर्तव्य हैं कि व्यर्थके विवादों में समय न खोकर आगामी चुनाव के सम्बन्ध में तुरन्त एक योजना तैयार करे। गांव गांव और शहर शहरमें संगठनात्मक सभाएं बन जावें। प्रत्येक वैद्य आपस की बातचीत और सलाह मशविरा में इसको प्रधानता दें। चुनिन्दा वैद्यों को कांग्रेस तथा अन्य चुनाव वाली संस्थाओं के उम्मेदवार बनाने का प्रयत्न करें। कोई उमेदवार ऐसा न हो जो आयुर्वेद का समर्थक न हो। जहां तक सम्भव हो उनसे प्रतिज्ञापत्र भराये जावें। कम से कम चुनाव की सभाओं में वे व्याख्यान द्वारा अथवा पत्रों द्वारा प्रकट करें कि देहाती जनता की चिकित्सा सम्बन्धी सुविधा बढ़ाने के लिए और देशी चिकित्सा पद्धति की उन्नति के लिए हम प्रयत्नशील रहेंगे। अपने प्रभाव से सरकार को आयुर्वेद के हित के काम करने में लगावेंगे। हमारे सामने यह ध्येय रहना चाहिये कि हम आयुर्वैदिक स्वराज्य का मार्ग साफ करते हुए मेडिकल डिपार्टमेण्ट और पबलिक हेल्थ डिपार्टमेण्ट में अपनी उपयोगिता के बल पर अधिकार प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहेंगे। अखिलभारतीय सम्मेलन मार्ग प्रदर्शन करे और प्रान्तीय सम्मेलन प्राणपण से इस उद्योग में जुट जावें। (सुधानिधि से)

———

सच्चे मोती।

वैद्यो ! हकीमो !! तथा फार्मेसीवालो !!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन मोती वगैरा, जो दवा के काम के लिये सर्वोत्तम हैं तथा जो भारतवर्ष के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पताः—नगीनदास वीरचन्द जवेरी, ४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद का इतिहास

प्राचीन भारतवर्ष के विश्वविद्यालय

[ले०—श्रीयुत डा० राधाकुमुद मुखर्जी, एम. ए., पी. एच. डी., लखनऊ विश्वविद्यालय।]

(गताङ्क से आगे)

[२]

हां! उच्चशिक्षा और अन्वेषण कार्य के लिए संस्थाओं द्वारा सामूहिक अथवा श्रेणी व वर्ग शिक्षाप्रणाली का प्रयोग अवश्य किया जाता था। उदाहरणार्थ ऋग्वेद में ऐसे प्रसंग आये हैं, जिनसे संघ प्रणाली की पुष्टि होती है। विद्वान् लोग एक संघ में बद्ध होकर भाषा और तत्व-विद्या पर चर्चा किया करते थे जिससे वेदों की भाषा और दर्शन परिष्कृति एवं परिपूर्णता को प्राप्त हुए। ब्राह्मणों और उपनिषदों के अध्ययन से विदित होता है कि उस समय के महाराजा स्वयं विद्वान और विद्या के संरक्षक होने के कारण बड़े बड़े विद्वानों की सभायें अपने राजदरबारों में बुलाया करते थे। इनमें से सबसे प्रसिद्ध सभाओं की कार्यवाही का वर्णन छान्दोग्य उपनिषद् और बृहदारण्यक उपनिषद् नामक वेदान्त की अमूल्य पुस्तकों में सुरक्षित है। इसमें बताया गया है कि राजर्षि जनक ने विदेह में अपने राजप्रासाद में विद्वानों की एक सभा बुलाई थी, जिसमें कुरु पाञ्चाल जैसे दूरवर्ती देश से, जो उस समय दर्शनशास्त्र तथा धर्मशास्त्र का प्रधान केन्द्र था, सभी विद्वान् उपस्थित हुए थे। इस विद्वत्परिषद के, जो कि संसार की सर्वप्रथम परिषद थी, कार्य-संपादन के लिए जिस प्रणाली का अनुसरण किया गया उसी का प्रयोग आधुनिक काल की सभा समितियों के लिए भी बहुत अच्छी तरह किया जा सकता है। इन सभा समितियों का उद्देश्य यह होता था कि विद्वान् लोग विचारविमर्श और वादविवाद के द्वारा नई नई वेदान्तिक गुत्थियों पर प्रकाश डाल कर और उनको सुलझा कर विद्या के प्रचार में सहायक हों। वेदान्त में यदि कोई नई गुत्थी उत्पन्न हो जाती थी तो उसके सम्बन्ध में एक विद्वान् अपना दृष्टिकोण विद्याक्षेत्र के अपने साथी दूसरे विद्वानों के समक्ष उपस्थित करता था और तब फिर सब मिलकर उस पर विचार करते थे। इन सहयोगी विद्यागवेषकों को ऋग्वेद में सखा के नाम से पुकारा गया है। किसी विशेष सिद्धान्त को स्थापित करने के पश्चात् उसका प्रचार केवल तभी किया जा सकता था जब विद्वानो की परिषद् उसे स्वीकार कर लेती थी। न्याय दर्शन में इस प्रकार की स्वीकृति को सुहृत्प्राप्ति कहा गया है, जिसका अर्थ है 'विद्यागवेषणासहयोगियों की स्वीकृति'।

राजर्षि जनक की उस सभा की कार्यवाही में एक मनोरंजक बात ध्यान देने योग्य है कि गार्गी नामकी एक महाविदुषी स्त्री ने भी उस सभा में भाषण दिया था, और उसने वेदान्ती पुरुषों से, जिनके नेता प्रसिद्ध ऋषि याज्ञवल्क्य थे, डट कर वादविवाद किया था। वैदिक भारत की स्त्रियां ज्ञान और सत्य की खोज में पुरुषों के समान अधिकार रखती थीं, और ब्रह्मवादिनी कहलाती थीं। ऋग्वेद में बहुत सी स्त्रियों के नाम आये हैं जिनको ऋषि आदि के नामों से पुकारा गया है, जैसे—विश्ववाराऋषि, अपालाऋषि, लोपामुद्राऋषि आदि। ऋग्वेद की कुछ ऋचायें भी इन स्त्री-ऋषियों ने बनाई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेह के महाराजा जनक, काशी के अजातशत्रु, पाञ्चाल के महाराज प्रवाहन, कैकय के महाराजा जैवालि या अश्वपति आदि विद्वान राजाओं के राजदरबारों में बुलाई जाने वाली विद्वानों और ऋषियों की इन सामयिक सभाओं के अतिरिक्त उच्चशिक्षा की उन्नति में उन दिनों उन लोगों के संघों ने भी काफी योग दिया जिनको उपनिषदों में 'चरक' नाम दिया गया है। अपने ज्ञान को बढ़ाने की इच्छा रखने वाले विद्वान। विद्या के प्रधान केन्द्रों की खोज में रहते थे ताकि वे बड़े बड़े विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करके वैसा कर सकें। इस प्रकार विद्वानों की यह शास्त्रार्थ करने की रीति उस प्रान्त के लिए जिसमें वह होता था शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने का एक साधन बन गई।

देश में उच्चशिक्षा के प्रचार का यह एक तरीका बन गया। किन्तु इसके अतिरिक्त इस प्रकार की शिक्षा के लिए और अन्वेषण कार्य के लिए कुछ शिक्षा-संस्थायें भी स्थापित की गई थीं, जिन्होंने इस लक्ष्य की पूर्ति में सहयोग दिया। इन संस्थाओं में सब से प्रसिद्ध, जिसका नाम उपनिषदों में भी आया है, पाञ्चाल परिषत् थी। कहा जाता है कि पाञ्चाल-महाराज इस परिषत् के अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए तथा अपने देश के सबसे बड़े विद्वानों के सत्संग के लिये प्रतिदिन प्रातःकाल अपने राजमहल से जाया करते थे। उपनिषदों में केवल इन विद्वत्संघों या परिषदों की कार्यवाहियों का वर्णन है।

[३]

शिक्षा को संस्थाबद्ध करने और उसमें सामूहिक शिक्षा-प्रणाली को प्रचलित करने पर बौद्धधर्म ने विशेष परिस्थितियों में काम करने के कारण बहुत अधिक बल दिया। बौद्ध धर्म का निर्माण उस विहार—बन्धुत्व के आधार पर हुआ था जिसकी स्थापना उसके भिक्षुओं ने की। इस प्रकार उसको भिक्षुओं की एक बड़ी संख्या का प्रबन्ध करना पड़ता था जिसकी शिक्षा के लिये छोटे २ शिक्षाश्रमों में गुरु और शिष्य के व्यक्तिगत-व्यवहार और व्यक्तिगत सम्बन्धों की स्थापना की प्रथा का प्रयोग नहीं किया जासकता था। इस प्रकार संस्थागत शिक्षा बौद्धप्रणाली की एक आवश्यकता थी। ब्राह्मण-शिक्षापद्धति की छोटी स्वनिवासोचित पाठशाला, एकान्तवासी गुरु का आश्रम—जहां केवल थोड़े से विद्यार्थी एकत्र होते थे, और जिनकी शिक्षा का प्रबन्ध वह स्वयं कर सकता था, अब वृहत् स्वनिवासोचित शिक्षा संस्थाओं के रूप में परिणत होगई थी, जिनको 'विहार' कहा जाता था और जो संगठन, अध्ययन और अध्यापन में आधुनिक विश्वविद्यालयों की पूर्वरूप थीं।

किन्तु ये विहार केवल उच्चशिक्षा केन्द्रों के रूप में ही कार्य करते थे, न कि प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों के रूप में। प्राचीन भारत में इस प्रकार के बहुत से विश्वविद्यालय थे, जिनमें सबसे प्रसिद्ध नालन्दा, विक्रमशिला, जगद्दला, उदन्तपुरी, बल्लभी, मिथिला और नदिया थे। क्योंकि ये स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुयेट) विश्वविद्यालय थे, अतः इनमें प्रवेश पाना सरल न था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय के द्वार की रक्षा बड़ी सावधानी के साथ श्रेष्ठतम विद्वानों के द्वारा की जाती थी जो ऐसी प्रवेश परीक्षा लिया करते थे जिसमें उत्तीर्ण होना कठिन था। इस प्रवेश-समिति के सदस्यों को द्वार-पण्डित ठीक ही कहा जाता था, क्योंकि उनका कर्तव्य इस बात की देख रेख करना था कि मध्यमश्रेणी के विद्यार्थियों की भर्ती से विश्वविद्यालय की शिक्षा का स्तर न गिर जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद के मिथिला विश्वविद्यालय ने उपाधि प्रदान करने के लिए अथवा शिक्षा समाप्त करने के लिये एक कठिन परीक्षा रखी थी जिसको शलाका परीक्षा कहते थे और जिसके अनुसार स्नातक बनने वाले विद्यार्थी को हस्तलिखित पुस्तक के उस पृष्ठ का अर्थ करने के लिये कहा जाता था जो सुई से छेदे जाने पर सब से अन्त में छिदता था। इस का यह अर्थ था कि विद्यार्थी को अपने अधीत विषय के अङ्गों और उपाङ्गों पर पूर्ण अधिकार का प्रमाण देना पड़ता था ताकि वह बिना किसी तैयारी के, चाहे जहां से, अपने विषय से सम्बन्ध रखने वाली किसी भी पुस्तक के किसी भी पृष्ठ का अर्थ करने में समर्थ हो सके। नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रवेश-परीक्षा की कठोरता समस्त भारत में प्रसिद्ध होगई थी। ऐसा इस कारण किया जाता था क्योंकि नालन्दा "विवादों और शङ्काओं के समाधान तथा शास्त्रार्थ और वक्तृत्वकला की शिक्षा के लिये" उच्चतम उपाधि प्राप्त करने के लिये विशेषज्ञता का केन्द्र था।

(क्रमशः)

साहित्यिक लेखमाला

पञ्चकर्मविनिश्चय

[लेखक—श्रीयुत कु० ज्योतिषचन्द्र सरस्वती, देहली।]

(गताङ्क से आगे)

स्नेह प्रयोगविधि।

स्नेह प्रयोग की ९ विधियां हैं, यथा—(१) अच्छपान (२) विचारणा (३) अनुवासन (४) मास्तिष्क (५) शिरोवस्ति (६) उत्तरवस्ति (७) नस्य (८) कर्णपूरण और (९) अभ्यङ्ग।

(१) अच्छपान

सुश्रुत ने अच्छपान विधि इस प्रकार लिखी है:—

स्नेहसात्म्यः क्लेशसहः काले नात्युष्णशीतले। अच्छमेव पिबेत्स्नेहमच्छपानं हि पूजितम्॥

अर्थात्, चिकनाई जिसकी प्रकृति के अनुकूल हो, और जो परिश्रम को सहन कर सकता हो, ऐसा व्यक्ति, ऐसे समय में जबकि न अधिक जाड़ा हो और न अधिक गर्मी हो, अन्य किसी द्रव्य से अमिश्रित, केवल अच्छ, स्वच्छ, ही स्नेह का पान करे, क्योंकि स्वच्छ (केवल) स्नेह का पान ही श्रेष्ठ माना गया है।

अब कैसे पुरुष को कौन सा स्नेह पीना चाहिए, इस विषय में चरक का मत इस प्रकार है:—

घृत पीने योग्य पुरुष।

वातपित्तप्रकृतयो वातपित्तविकारिणः। आयुःप्रकर्षकामाश्च बलवर्णस्वरार्थिनः॥
पुष्टिकामाः प्रजाकामाः सौकुमार्यार्थिनश्च ये। दीप्त्योजःस्मृतिमेधाग्निबुद्धीन्द्रियबलार्थिनः॥
पिबेयुः सर्पिरार्ताश्च दाहशस्त्रविषाग्निभिः।

अर्थात्, वातपित्तप्रकृतिवाले और वातपित्तरोगी तथा दीर्घायु, बल, वर्ण, स्वर, पुष्टि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तान, सुकुमारता, कान्ति, ओज, स्मृति, मेधा, जठराग्नि, बुद्धि, और इन्द्रियशक्ति की वृद्धि चाहने वाले एवं दाह, शस्त्र, विष और अग्नि से पीड़ित पुरुषों को घृत पीना चाहिए।

तेल पीने योग्य पुरुष।

प्रवृद्धश्लेष्ममेदस्काश्चलस्थूलगलोदराः। वातव्याधिभिराविष्टा वातप्रकृतयश्च ये॥
बलं तनुत्वं लघुतां दृढ़तां स्थिरगात्रताम्। स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वक्तां ये च कांक्षन्ति देहिनः॥
कृमिकोष्ठाः क्रूरकोष्ठास्तथा नाडीभिरर्दिताः। पिबेयुः शीतले काले तैलं तैलोचिताश्च ये॥

अर्थात्, जिन का कफ और चर्बी बहुत बढ़ गये हैं, जिन की गर्दन हिलती है और पेट स्थूल (बड़ा) हो गया है, जो वातव्याधि से ग्रसित हैं और वातप्रकृति वाले हैं, जो बल, कृशता, हल्कापन, दृढ़ता, शरीराङ्गों की स्थिरता और चर्म की मृदुता चाहते हैं, जिनके कोष्ठ में कृमि हैं अथवा जो क्रूरकोष्ठ हैं, जो नाड़ीपीडित हैं, तथा जो तेल पीने योग्य हैं, वे ठंड के समय में तेल पीवें।

चर्बी पीने योग्य पुरुष।

वातातपसहा ये च रूक्षा भाराध्वकर्शिताः। संशुष्करेतोरुधिरा निष्पीतकफमेदसः॥
अस्थिसन्धिसिरास्नायुमर्मकोष्ठमहारुजः। बलवान् मारुतो येषां खानि चावृत्य तिष्ठति॥
महच्चाग्निबलं येषां वसासात्म्याश्च ये नराः। तेषां स्नेहयितव्यानां वसापानं विधीयते॥

अर्थात् जो वायु और धूप के वेग को सहन कर सकते हैं, जो रूक्ष हैं और बोझ से अथवा रास्ता चलने से कृश हो गये हैं, जिन के वीर्य और रुधिर सूख गये हैं, जिन के कफ और चर्बी सूख गये हैं, जिनके हड्डियों के जोड़ों, सिराओं, स्नायुओं, मर्मस्थानों तथा कोष्ठ में अधिक पीड़ा है, प्रबल वायु ने जिनके शरीरछिद्रों को रोक दिया है, जिनका अग्निबल (पाचनशक्ति) अधिक है तथा जो वसासात्म्य (चर्बी को हज़्म कर सकने योग्य) हैं, उनको यदि स्नेहपान की आवश्यकता हो तो चर्बी पीनी चाहिए।

मज्जा पीने योग्य पुरुष।

दीप्ताग्नयः क्लेशसहाः घस्मराः स्नेहसेविनः। वातार्ताः क्रूरकोष्ठाश्च स्नेह्या मज्जानमाप्नुयुः।

अर्थात् जिन की अग्नि दीप्त है, जो परिश्रम को सहन कर सकते हैं, जो बहुभक्षी और अधिक चिकनाई का सेवन करने वाले हैं तथा जो वातरोग से पीड़ित और क्रूरकोष्ठ हैं, वे स्नेहन के लिये मज्जा पीवें।

स्नेहपान की मात्रा।

संक्षेप में स्नेह की तीन प्रकार की मात्रा है—(१) उत्तम (२) मध्यम और (३) ह्रस्व। मात्रा का कोई परिमाण नहीं है। दोष और अग्निबल को देखकर जितने समय में स्नेह पच जाय उसके अनुसार मात्रा निश्चित कर लेनी चाहिये। चरक ने तीनों प्रकार की मात्राओं के समय इस प्रकार बताये हैं:—

अहोरात्रमहः कृत्स्नमर्धाहं वा प्रतीक्षते। प्रधाना मध्यमा ह्रस्वा स्नेहमात्रा जरां प्रति॥

जो एक दिन रात में पचती है वह उत्तम, जो एक दिन में पचती है वह मध्यम और जो आधे दिन में पचती है वह ह्रस्व मात्रा होती है। सुश्रुत ने पीने योग्य स्नेह के पाक के कालभेद से पांच प्रकार की मात्रा बताई है, जैसे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) या मात्रा परिजीर्येत चतुर्भागगतेऽहनि। सा मात्रा दीपयत्यग्निमल्पदोषे च पूजिता ॥
(२) या मात्रा परिजीर्येत तथार्धदिवसे गते। सा वृष्या बृंहणी चैव मध्यदोषे च पूजिता ॥
(३) या मात्रा परिजीर्येत चतुर्भागावशेषिते । स्नेहनीया च सा मात्रा बहुदोषे च पूजिता ॥
(४) या मात्रा परिजीर्येत तथा परिणतेऽहनि। ग्लानिमूर्च्छामदान् हित्वा सा मात्रा पूजिता भवेत् ॥
(५) अहोरात्रमसन्दुष्टा या मात्रा परिजीर्यते । सा तु कुष्ठाविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी ॥

अर्थात् (१) जो मात्रा एक पहर दिन चढ़े तक पच जाय वह अग्नि को दीप्त करती है और वह दोषों के अल्प होने पर देनी श्रेष्ठ मानी गई है। (२) जो मात्रा दो पहर दिन बीतने पर पचे, वह वीर्यबलवर्द्धक होती है और वह मध्यम दोषों में देनी श्रेष्ठ मानी गई है। (३) जो मात्रा एक पहर दिन शेष रहने पर पचती है, वह मात्रा स्नेहन करती है, और दोषों की अधिकता में देनी श्रेष्ठ मानी गई है। (४) जो मात्रा दिन छिपने पर पचती है, वह ग्लानि, मूर्च्छा और मद रोगों के अतिरिक्त सब रोगों में देनी श्रेष्ठ मानी गई है। तथा (५) जो मात्रा एक दिन रात में निर्दोष भाव से पच जाती है, वह मात्रा कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रह और अपस्मार रोगों को दूर करती है।

स्नेह पचने के क्या क्या लक्षण होते हैं, तथा स्नेह पचा है या नहीं, ऐसी शंका उत्पन्न होने पर क्या करना चाहिये, इस विषय में सुश्रुत का कहना है कि;

जीर्णाजीर्णविशङ्कायां स्नेहस्योष्णोदकं पिबेत् । तेनोद्गारो भवेच्छुद्धो भक्तं प्रति रुचिस्तथा। स्युः पच्यमाने तृड्दाहभ्रमासादारतिक्लमाः।

अर्थात्, स्नेह पचा है या नहीं ऐसी शङ्का उत्पन्न होने पर गर्म पानी पीवे। यदि पच गया होगा तो डकार शुद्ध आवेगी तथा भोजन में रुचि पैदा होगी, और यदि न पचा होगा तो प्यास, दाह, घुमाईं, थकावट, अरुचि और ग्लानि आदि लक्षण होंगे। इसका यह अर्थ हुआ कि उद्गारशुद्धि अर्थात् डकार में स्नेह की गन्ध का न आना और भोजन में रुचि ये स्नेह पचने के लक्षण हैं। और स्नेह न पचने पर प्यास लगना आदि लक्षण होते हैं।

किसको कैसी मात्रा पीनी चाहिये, इस सम्बन्ध में चरक का कहना है कि:—

उत्तममात्रा पीने योग्य।

प्रभूतस्नेहनित्या ये क्षुत्पिपासासहा नराः। पावकश्चोत्तमबलो येषां ये चोत्तमा बले ॥
गुल्मिनः सर्पदष्टाश्च विसर्पोपहताश्च ये। उन्मत्ताः कृच्छ्रमूत्राश्च गाढवर्चस एव च ॥
पिबेयुरुत्तमां मात्राम्।

अर्थात् जो अधिक चिकनाई खाने के अभ्यासी हैं, जो भूख और प्यास को सहन कर सकते हैं, जिनकी अग्नि तीव्र है, जो बलवान् हैं, जिनको गुल्म होगया है अथवा सांप ने काट खाया है, विसर्परोगी, उन्मादरोगी, मूत्रकृच्छ्ररोगी, और वे पुरुष जिनको गाढ़ा पखाना आता है, उत्तम मात्रा पीवें।

मध्यम मात्रा पीने योग्य।

अरुष्करस्फोटपिडकाकण्डूपामाभिरर्दिताः। कुष्ठिनश्च प्रमीढाश्च वातशोणितिकाश्च ये।
नातिबह्वाशिनश्चैव मृदुकोष्ठास्तथैव च। पिबेयुर्मध्यमां मात्रां मध्यमाश्चापि ये बले ॥

अर्थात्, फोड़ा, फुन्सी, खुजली और खाज से पीड़ित, कुष्ठ, प्रमेह और वात रक्त के रोगी तथा अत्यधिक न खाने वाले, मृदुकोष्ठ, मध्यमबल पुरुषों को मध्यम मात्रा पीनी चाहियें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रस्व मात्रा पीने योग्य ।

ये तु वृद्धाश्च बालाश्च सुकुमाराः सुखोचिताः । रिक्तकोष्ठत्वमहितं येषां मन्दाग्नयश्च ये ॥
ज्वरातिसारकासाश्च येषां चिरसमुत्थिताः । स्नेहमात्रां पिबेयुस्ते ह्रस्वा ये चावरा बले ॥

अर्थात्, वृद्ध, बालक, सुकुमार, सुखाभिलाषी और जिनकी अग्नि मन्द है, अथवा जिनके लिये खाली पेट रहना अहितकर है, जिनको पुराना ज्वर, दस्त, या खांसी है, तथा जो हीनबल हैं, उन्हें लघु मात्रा पीनी चाहिये ।

स्नेहपान पर अनुपान ।

चरक के अनुसारः—

जलमुष्णं घृते पेयं यूषस्तैले ऽनुशस्यते । वसामज्ज्ञोस्तु मण्डः स्यात् सर्वेषूष्णमथाम्बु वा ।

अर्थात्, घृतपान के पश्चात् गर्म जल पीना चाहिये, तैलपान के पश्चात् यूष पीना चाहिये और वसापान तथा मज्जपान के पश्चात् मण्ड पीना चाहिये, अथवा सब प्रकार के स्नेहपान पर गर्मजल अनुपान रूप से पीना चाहिये ।

आज कल पुराने वैद्यों के व्यवहारानुसार अनुपान की मात्रा पल (चार तोले) भर मानी गई है । (क्रमशः)

श्रीमान् माधवाचार्यकृत

आयुर्वेदाचार्य श्रीगुलराज शर्मा मिश्र कृत अर्थविद्योतिनी तथा भावार्थप्रकाशिनी संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेदप्रकाश यह एक ही अध्याय की टीका नहीं है, किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ (छहों अध्याय) की ऐसी सरल टीका है कि इसके पढ़ने वाले छात्र आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदविशारद और आयुर्वेदभिषक् परीक्षाओं को सहज में पास कर सकते हैं । यह टीका इसीलिए लिखी गई है कि आयुर्वेद महाविद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों को अच्छी सहायता दे सके । इस एक ही ग्रन्थ के पास रखने से रसकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसेन्द्रसारसंग्रहादि किसी भी रसग्रन्थ की आवश्यकता नहीं रहती । विद्वान् टीकाकार ने नाना तन्त्रों के उद्धरण दे देकर विषय को नितान्त स्पष्ट कर दिया है । इस ग्रन्थ की विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है । इतने पर भी कागज की महंगाई आदि की ओर न देखकर इसका लागतमात्र मूल्य ४) ही रक्खा गया है ।

बसवराजयिम्— नित्यनाथ, पूज्यपादादि सिद्धों के अचूक रसों का प्राचीन संग्रह अवश्य देखिये । मूल्य ५)

मिलने का पता—प्राणाचार्य श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी,
आचार्य—श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदमहाविद्यालय, सीताबर्डी, नागपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद विज्ञान

त्रैदोषिकप्रश्नोत्तराणि।

[ले०—श्रीयुत वैद्य गोपाल शास्त्री, गोडबोले, संशोधकप्रमुख, श्री धूतपापेश्वर, पनवेल।]

अ० भा० आयुर्वेदमहासंमेलनस्य त्रयस्त्रिंशत्तमे वेजवाड़ा-अधिवेशने त्रिदोषचर्चापरिषदिपठितम्

(१) गुणवत् क्रियावत् द्रव्यत्वम् इति द्रव्यनियमात् वातादयो द्रव्यपदार्थाः न तु गुणपदार्थाः।

(२) (क) के गुणपदर्थाः शीतोष्णस्निग्धादयः। एतेषाम् गुणपदार्थानाम् वातादिभिर्द्रव्यपदार्थैः सह अपृथग्भावो वर्तते, तस्मात् वातप्रभृतिद्रव्याणि शीतप्रभृतिगुणाश्च उभयोर्मध्ये यः संबंधः स समवायस्वरूपः संबंधोऽस्ति। अपरं च शीतोष्णस्निग्धा इव वातपितश्लेष्माण एते गुणपदार्थाः स्युः तर्हि "गुणवत् क्रियावत् द्रव्यत्वम्" इत्ययम् द्रव्यनियमः अपार्थको भवति। किंच। गुणा गुणाश्रया नोच्यन्ते। तस्मात् वातादयो द्रव्यपदार्थाः शीतादयो गुणपदार्थाः। अनयोर्द्रव्यगुणपदार्थयोर्मध्ये यः अपृथग्भावरूपः संबंधः स समवायसंबंधोऽस्ति इति चिंत्यम्। (ख) जन्मपूर्वावस्थायां गर्भपिंडस्य जन्मोत्तरावस्थायां प्रसूतार्भकशरीरस्य च परिपुष्टिः ओजसैव नाम जीवरक्तेनैव भवति। जीवरक्तं भौतिकशास्त्रदृष्ट्या पांचभौतिकमस्ति। आयुःशास्त्रदृष्ट्या तु तत् त्र्यात्मकम् त्रिदोषात्मकम् अस्ति।

(३) प्रतिदिनं क्षीयमाणानां शरीरावयवानां प्रकृत्यनुवर्तनार्थे स्वमानानुवर्तनार्थम् साम्यानुवर्तनार्थे च यः अनुदिनम् चतुर्विध आहारों निषेव्यते तस्य परिणामो नाम शरीरावयवत्वापादनम् शरीराभ्यन्तरे ऊर्ध्वकोष्ठेऽन्तःकोष्ठे च भवति। तद् यथा उर्ध्वान्तःकोष्ठयोः कफपित्तवाताशयसंज्ञकानि त्रीणि आहारपरिणामस्थानानि विद्यन्ते। प्रतिदिनम् भुज्यमानो य आहारः सः एतानि त्रीणि स्थानानि क्रमशः समुपेत्य तत्र तत्र तत्तत्स्थानसमुद्भूतैः क्लेदकश्लेष्मादिसंज्ञकैः आहारपरिणामकैर्द्रव्यैः परिणतो भवति। तदनु एतस्मात् परिणताहारात् रसरूपाः कफादयः ये हि आदिमाः खलु शरीरावयवाः ते समुद्भवन्ति। किं च यावन्ति शारीरद्रव्याणि तावन्तस्ते शारीरावयवाः। इत्युपपत्तेः इमे शारीरपदार्थाः के उपादानलक्षणाः प्रवर्तनालक्षणाश्च वातादयस्ते शारीरावयवा एव। उपादानलक्षणैर्वातादिभिः शारीरव्यूहसिद्धिः। प्रवर्तनालक्षणैर्वातादिभिश्च शारीरव्यापारसिद्धिः। अत एव वातादीनां शरीरेण सह यः संबंधः सः अवयवावयविस्वरूपः समवायसंबंधोऽस्ति इत्येव सिद्धं भवति।

(४) (क) आयुःशास्त्रदृष्ट्या समस्तानामपि शरीरावयवानाम् पांचभौतिकत्वात् सांख्यशास्त्रदृष्ट्या च तेषाम् सत्वादिगुणमयत्वात् शरीरावयवविशेषा उपादानप्रवर्तनालक्षणा वातादयः तेऽपि पांचभौतिकाः सत्वादिगुणमयाश्च इत्येव प्रतिपत्तुं युज्यते।

(ख) वातादीनाम् शरीरावयवानाम् वृद्धिः समानैः सर्वेषां विपरीतैर्विपर्ययः इति शास्त्रनयानुसारेण समानद्रव्यगुणकर्मभिर्वृद्धिः। विपरीतद्रव्यगुणकर्मभिश्च क्षयः। एवं तेषां द्विविधम् वैषम्यम् भवति।

(५) शारीरद्रव्याणि वातादीनि त्रीण्यपि मूर्तानि भवन्ति। शास्त्रं यत्र वायुः 'अमूर्त' इत्याह तत्र 'अमूर्त' इति शब्देन सूक्ष्म इत्यर्थः स्वीकरणीयः। स्थूलं सूक्ष्मं गंभीरानुगतं च इति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातादीनां त्रिविधं स्वरूपम् अस्ति। तत्र तेषां स्थूलत्वं ऊर्ध्वान्तःकोष्ठयोः स्थितेषु श्लेष्मादिस्थानेषु लक्ष्यमाणात् व्याप्यत्वात् निर्धार्यते। तदनु तेषां सूक्ष्मत्वं रसरक्तमांसधातुषु तेषाम् सूक्ष्मतरतया अनुभाव्यमानात् व्याप्तिमत्वात् निर्धार्यते। तदनु तेषां गम्भीरानुगतत्वं च अस्थिमज्जशुक्रधातुषु तेषाम् सूक्ष्मतमतया अनुभाव्यमानात् व्याप्तिमत्वात् निर्धार्यते।

(६) (क) गुणानाम् मध्ये लघुगुणस्य साधर्म्यम् वातपित्तयोर्मध्ये लक्ष्यते। शीतगुणस्य साधर्म्यम् वातकफयोर्मध्ये लक्ष्यते। स्निग्धद्रवगुणयोश्च साधर्म्यम् पित्तकफयोर्मध्ये लक्ष्यते। इतरेषां गुणानाम् च वैधर्म्यं परस्परं त्रिष्वपि अस्ति इति लक्ष्यते।

(ख) वातानां स्वरूपज्ञाने भौतिकरसायनशास्त्रस्य सांसिद्धिका नियमा ऐन्द्रियरसायनशास्त्रं न निरपवादं प्रसजन्ति। यतः भौतिकरसायनशास्त्रप्रोक्ता पार्थक्यपद्धतिः सा ऐन्द्रियरसायनशास्त्रे न यथावत् साफल्यम् अनुभावयति।

(७) (क) वातादीनां प्रात्यक्षिकसिद्धिः तेषां प्राकृतविकृतभावौ संचयापचयौ च विचिंत्य यथासंभवम् शस्त्रोपचारेण औषधोपचारेण मानोन्मानाभ्यां च कर्तुम् शक्यते युज्यतेऽपि च। यतः भिन्नभिन्नप्रसंगेषु पूर्वाचार्यैरपि ईदृशा एव अभ्युपायाः शरीरावयवानां स्थानतः स्वरूपतश्च परिज्ञानार्थं अंगीकृता लक्ष्यन्ते। ततः वातादीनामपि शरीरावयवत्वात् तेषां स्थानस्वरूपपरिज्ञानार्थं उपयुक्ता उपाया यदि स्वीकृताः स्युः तर्हि आयुर्वेदीयानामपि ते नासमताः स्युः इत्यवधार्यम्।
(ख) वातादीनाम् प्रात्यक्षिकत्वे तेषां विशुद्धं संमिश्रं वा यत्स्वरूपं तत् शास्त्रोक्तैः स्वप्रतीतैश्च अव्यभिचारि-व्यभिचारिलक्षणैः अनुभाव्यते निर्धार्यते वा। तात्पर्यम् एवं रीत्या वातादीनाम् वर्णाः गुणाः गतयः इत्यादयो भावाः परिज्ञेयाः।

(८) शारीरप्रक्रियायां कारणं चतुर्धा विविच्यते। तद् यथा (१) अभिवृद्धिकारणम् (२) उपादानकारणम् (३) सहकारिकारणम् (४) निमित्तकारणं च इति। तत्र (१) अभिवृद्धिकारणम् चतुर्विधः सात्म्याहारः। (२) उपादानकारणम् मार्गगयोः रसरक्तधात्वोः प्रविभक्ता वातावयवाः। (३) सहकारिकारणम् स्थानगेभ्यो धातुभ्यः समं यथाप्रमाणं प्रविभक्ता वातावयवाः। (४) निमित्तकारणम् आत्मना सह प्राणैश्च सह त्रिविधम् अंतःकरणम्।

(९) वातादयः सप्तधातूपादानकारणानि सन्ति। तत्र तेषां प्रथमम् उपादानत्वम् रसरक्तोत्पत्तिहेतुभूतम्। अनन्तरम् परंपरया तत् इतरधातूत्पत्तिहेतुभूतं भवति किं च वातादीनाम् सर्वशरीरचरत्वात् तेषाम् सप्तधातुचरत्वमपि स्वीकरणीयं भवति। अपरं च इह इदं अवश्यं कथनीयं अस्ति यद् वातादीनाम् सप्तधातुचरत्वम् तत् धातुसप्तके सर्वत्र न समानमानपरिमाणपरिमितत्वेन विद्यते। यतः कयोश्चित् धात्वोः वातस्य भूयस्त्वम् कयोश्चित् पित्तस्य भूयस्त्वम् कयोश्चित् कफस्य च भूयस्त्वम् इति पूर्वाचार्यैः प्राकृतविकृतशारीराभ्यासेन प्रतीतम् उपदिष्टमस्ति।

(१०) आहारपरिणामजन्यरसमया वातादयः प्रथमम् स्वस्वोत्पत्तिस्थाने व्याप्यत्वेनैव स्वस्वरूपेणैव वर्तन्ते। अनन्तरं ते रसासृक्धातुमार्गानुगताः रसासृग्भावम् आपद्यन्ते। तदनु ते रसरक्तस्वरूपाः सर्वशरीरम् व्याप्नुवन्ति। अतः एव शास्त्रे वातादयः व्याप्यस्वरूपेण व्यापिस्वरूपेण च इति द्विविधस्वरूपेण अभिज्ञापिताः सन्ति।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative study of Anaemia

according to Allopathic and Ayurvedic Medical sciences.

(By Ramarao Desai A. V., M. A. M. S.. Gadag.)

If one refers to the Ayurvedic work like Charaka and Sushruta, it is quite clear that they judged the presence of Anaemia and named it by the conditions specially of the skin and mucous membrane being pallor.

सर्वेषु चैतेष्विह पाण्डुभावो यतोऽधिकोऽतः खलु पांडुरोगः। (सु० उ० अ० ४४)
पाण्डुत्वेन दर्शितो रोगः.पाण्डुरोगः (मा०)

But in the modern medicine, the disease is named by the pahtological condition in the blood which is the Proximal cause producing anaemia. By the term, Anaemia, it is meant bloodlessness, i. e. deficiency in blood, either in its quantity or in its constituents.

Anaemia is classified into 5 groups according to Charake as Vataja, Pittaja, Kaphaja, Sannipataja, and Mrittika-bhakshanaja, (च० चि० अ० ६) But according to Sushruta, the classification is done into 4 groups only, viz., Vataja, Pittaja, Kaphaja, and Sannipataja. Perhaps he imcluded the fifth group—viz. Mrittika-bhakshanaja into the fourth group viz the Sannipataja.

There is another school, which holds that there are 8 varieties of Panduroga. This school includes two Kamalas and one Halimaka into the above-mentioned 5 varieties of Charaka, and thus makes the total 8.

"द्वे कामले चैकहलीमकश्च स चाष्टधैव त्विह पाण्डुरोगः।"

According to Western Medicine, the Classification is done into two big groups viz. (1) Secondary or Symptomatic and (2) Primary, Essential or Cytogenic. The primary group is again subdivided into (1) Chlorosis and (2) Indiopathic or progressive pernicious Anaemia.

Etilogy

The etiological factors in producing anaemia seem more or less to be the same in Susruta and Charaka excepting a few mental etiological factors like Kama, Chinta, Bhaya, Krodha.

'कामचिन्ताभयक्रोधशोकोपहतचेतसाम्' (च० चि० अ० १६)

The Etiology is more elaborate in Charaka than in Sushruta. The causes which are mentioned by Charaka in producing primary anaemia are supported by the researches of Quincke and his student Peters. They showed that pernicious anaemia is produced by haemolysis. The extensive observation of Hunter strongly supports this view. He says—"To explain haemolysis it

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

has been thought that in the condition of faulty gastro-intestlnal function, which is so commonly associated in these cases, the poisonous materials are developed which when absorbed cause the destruction of the blood corpuscles. Certainly the evidence for haemolysis is very strong but we are still far from a full knowledge of the conditions under which it is produced.

(to be continued)

तुलनात्मक चिकित्सा

❀ ऐलोपैथी आयुर्वेद के चरणों में ❀

[लेखक—श्रीयुत कविराज ओ३म्प्रकाश वैद्यवाचस्पति, फाजिलका (पंजाब)]

कुछ दिन हुये मेरे पास एक रोगी बालक लाया गया जिसकी अवस्था ६ वर्ष की थी। उसकी ग्रीवा दाईं ओर को तिर्छी सीं होकर अकड़ गई थी। उसके पिता ने पहले डाक्टरों की राय ली। एक डाक्टर ने कहा कि यह वच्चा कहीं गिर पड़ा है। गर्दन के बल गिरने से सुषुम्ना नाड़ी (Spinal Cord) पर चोट पहुँची है, जिससे सूजन आगई है। यदि यह सूजन बढ़कर व्रण (Abscess of spinalcord) के रूप में परिवर्तित हो गई तो बालक का जीवन संकट में पड़ जायगा। अतः इसका एक्स–रे होना चाहिये और उसके बाद तुरन्त आपरेशन हो जाना चाहिए। तीन दिन का विलम्ब हो गया तो फिर आपरेशन असंभव हो जायगा। सुषुम्ना नाड़ी के आपरेशन की बात सुनकर बच्चे के घरवालों के होश उड़ गये और उन्होंने तुरन्त ही सिविल हास्पिटल के असिस्टेंट सर्जन को बुलवाया। असिस्टेंट सर्जन साहब ने बच्चे की हालत देखकर कहा कि या तो यह मांसपेशियों की जकड़न (Retention of muscles) है या सुषुम्ना नाड़ी शोथ (Inflammation of spinal cord) है। इसका निर्णय एक्स–रे के बिना नहीं हो सकता। और जब तक निर्णय न होगा तब तक चिकित्सा कैसे की जा सकती है? अतः आप पहले इसका एक्स–रे करवा लीजिये।

इसी प्रकार कई डाक्टरों की राय ली गई जिन्होंने परस्परविरोधी और अनिश्चित सम्मतियां दीं। मुझे भी बुलाया गया। मैंने रोगी की नाड़ी की परीक्षा की तो ज्ञात हुआ कि कफानुबन्ध से वात का प्रकोप है। गर्दन अकड़ी हुई थी, स्पर्शमात्र से वेदना होती थी, विबन्ध था और गात्र रूक्ष था। मैंने त्रिकस्थान से गर्दन की ओर मेरुदण्ड पर मुष्टिप्रहार करना शुरू किया पहले धीरे धीरे फिर कुछ जोर से, परन्तु रोगी ने किसी प्रकार की वेदना का अनुभव न किया। केवल ग्रीवा के समीप ही शोथ स्थान पर उसे स्थानीय वेदना थी। इस से निश्चय हो गया कि सुषुम्ना नाड़ी में किसी प्रकार की विकृति नहीं है। यदि विकृति होती तो वह मुष्टिप्रहार सहन न कर सकता और चिल्ला उठता। मैंने लड़के के पिता से कहा कि आप घबराइये नहीं। मैं इसे १५ दिन में ठीक कर दूंगा। परन्तु डाक्टरों ने उसे इतना भय दिखा दिया था कि उसे मेरे कथन पर विश्वास न हुआ और लाहौर के बड़े अस्पताल में ले जाकर बच्चे का एक्स–रे करा दिया। आगे, पीछे, दायें, बायें से चार एक्स–रे लिये गये। अस्पताल के बड़े बड़े शल्यचिकित्सक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कायचिकित्सकों ने दो दिन तो रोग के निदान में ही लगा दिये। अन्त में इस निर्णय पर पहुँचे कि यह सुषुम्नानाड़ीशोथ नहीं है, केवल ठण्ड लगने से मांसपेशियां जकड़ गई हैं। लड़के के पिता से कहा कि निश्चित रूप से नहीं बतलाया जा सकता कि बच्चा ठीक हो ही जायगा। आप इसे भर्ती करा दीजिये, हम कोशिश करेंगे।

सन्देह की बात सुन कर लड़के का पिता बहुत हताश हुआ और लड़के को वापस ले आया। उसने डाक्टर का निर्णय मेरे सामने रखा और चिकित्सा करने की प्रार्थना की। उसके मुख से डाक्टरी प्रपञ्च की गाथा सुन कर मुझे हंसी भी आई और ऐलोपैथी के खोखलेपन पर तरस भी आया। जो ऐलोपैथी आयुर्वेद को अवैज्ञानिक और वैद्यों को साधनहीन एवं अज्ञ समझती है वह स्वयं वैज्ञानिक होते हुये भी अवैज्ञानिक (भ्रमात्मक) और साधनसम्पन्न होते हुये भी चिकित्साविषय में अकिञ्चित्कर है। इस रोग का आयुर्वेदीय निदान इस प्रकार है—

"दिवास्वप्नासमस्थानविवृतोर्ध्वनिरीक्षणैः। मन्यास्तम्भं प्रकुरुते स एवं श्लेष्मणा युतः॥"

इस निदान को प्रत्येक वैद्य जानता है। परन्तु डाक्टर लोग एक्स-रे की सहायता के बिना अन्धेरे में ही घूमते रहे। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है—(१) बृहद्वातचिन्तामणि, मात्रा आधी रत्ती, प्रातः साय मधु के साथ। (२) माषतैल १ औंस, और महानारायण तैल १ औंस, दोनों को मिला कर प्रातः तथा रात्रि को सोते समय स्थानीय अभ्यङ्ग और बाद में पुरानी रुई (रूअड़) से २० मिनट तक सेक, तत्पश्चात् गर्म गर्म रूअड़ से बांधना और ठण्ड से बचाना। पथ्य-प्रातः दशमूलसिद्ध दुग्ध, गेहूँ की रोटी, मुद्गयूष, दलिया।

उपर्युक्त विधि से लगातार ५ दिन तक औषधि-सेवन करने से शोथ कम हो गया, वेदना भी कम हो गई और ग्रीवा कुछ कुछ हिलने लगी। तत्पश्चात् शोभाञ्जनपञ्चाङ्ग साधित तिलतैल अभ्यङ्गार्थ प्रयुक्त किया गया, जिससे आशातीत लाभ हुआ। १२ दिन के निरन्तर प्रयोग से रोगी बिल्कुल स्वस्थ हो गया। फिर भी १५ दिन तक यही औषधि जारी रखी गई। तदनन्तर लाक्षादितैल की मालिश शुरू की गई और दशमूलारिष्ट चौथाई औंस, द्राक्षासव चौथाई औंस, जल आध औंस, भोजन के बाद दोनों समय दिया जाने लगा।

अब पाठक स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि रोग के निदान एवं चिकित्सा में आयुर्वेद निर्भ्रान्त है अथवा ऐलोपैथी? आयुर्वेद की शरण में जाने से रोगी का अधिक लाभ हो सकता है या ऐलोपैथी की शरण में जाने से?

नक्कलों से सदैव सावधान रहें

(जुलाई के अंक से आगे)

संसार में सर्वप्रथम आयुर्वेदिक-इन्जैक्शनों का आविष्कार करने वाली

५२ वर्ष पुरानी भारत की एकमात्र रसायनशाला

जी. ए. मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी (रजि०) झांसी (यू. पी.)

(स्थापित सन् १८६३ ई०)

द्वारा निर्मित विशुद्ध और प्रामाणिक—मिश्रा—आयुर्वेदिक—इन्जैक्शन

ही प्रयोग कर लाभ उठावें। सूचीपत्र, नियमादि मुफ्त मंगावें।

मैनेजर—जी. ए. मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी, झांसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसशास्त्र

रसरत्नसमुच्चय।

[लेखक—साहित्याचार्य वैद्य श्री पं० घनानन्द पन्त विद्यार्णव, देहली]

आज कल पठन-पाठन में प्रचलित रसग्रन्थों में रसरत्नसमुच्चय और रसेन्द्रचिन्तामणि ये दो ग्रन्थ नातिसंक्षेपविस्तृततया अपने समय के सर्व विषयों से पूर्ण हैं। रसेन्द्रचिन्तामणि के दूसरे और तीसरे अध्यायों में पारदविषयक जो विवेचना है वह उस से पूर्व के रसग्रन्थों का सार है और व्यवहारोपयोगी प्रामाणिक विषयों से परिपूर्ण है। रसरत्नसमुच्चय के ८, ९, १०, और ११ वें अध्याय सब परिभाषाओं से (कुछ को छोड़ कर) पूर्ण हैं। अब हम यहां पर रसरत्नसमुच्चय में उद्धृत पूर्वाचार्यों के नाम देते हैं—

आदिमश्चन्द्रसेनश्च लङ्केशश्च विशारदः। कपाली मत्तमाण्डव्यौ भास्करः शूरसेनकः॥
रत्नकोषश्च शम्भुश्च सात्त्विको नरवाहनः। इन्द्रदो गोमुखश्चैव कम्बलिर्व्याडिरेव च॥
नागार्जुनः सुरानन्दो नागबोधो यशोधनः। खण्डः कापालिको ब्रह्मा गोविन्दो लम्पको हरिः॥
सप्तविंशतिसंख्याका रससिद्धिप्रदायकाः। १ अ०-१-४३

छटे अध्याय में २७ और रससिद्धों के नाम दिये हैं, यथा—

व्यालाचार्यश्चन्द्रसेनः सुबुद्धिर्नरवाहनः। नागार्जुनो रत्नघोषः सुरानन्दो यशोधनः॥
इन्द्रधूमश्च माण्डव्यश्चर्पटी सूरसेनकः। आगमो नागबुद्धिश्च खण्डः कापालिको मतः॥
कामारिस्तांत्रिकः शंभुर्लङ्को लम्पकशारदौ। बाणासुरो मुनिश्रेष्ठो गोविन्दः कपिलो बलिः॥

ये २७ नाम रसेन्द्रचूड़ामणि से उद्धृत किये गये हैं। प्रथम और षष्ठ अध्याय के निम्नलिखित १३ नाम परस्पर मिलते जुलते हैं अर्थात् एक ही हैं—चन्द्रसेन, कपाली, माण्डव्य, सूरसेनक, शंभु, नरवाहन, नागार्जुन, सुरानन्द, यशोधन, खण्ड, कापालिक, गोविन्द और लम्पक। आदिम, लंकेश, विशारद, मत्त, भास्कर, रत्नकोष, सात्त्विक, इन्द्रद, गोमुख, कलम्बि, व्याडि, नागबोधी, ब्रह्मा और हरि ये १४ नाम प्रथमाध्याय में अधिक हैं तथा कपिलाचार्य, सुबुद्धि, रत्नघोष, इन्द्रधूम, चर्पटी, आगम, नागबुद्धि, कामारि, तान्त्रिक, लङ्क, शारद, मुनिश्रेष्ठ, कपिल, और बलि ये १४ नाम षष्ठाध्याय में अधिक हैं। रत्नकोष और रत्नघोष एक नाम हो सकते हैं, एवं इन्द्रद, इन्द्रधूम और नागबोधी, नागबुद्धि ये भी एक दूसरे से कुछ कुछ मिलते जुलते हैं।

आनन्दकन्द में, जो बारहवीं शताब्दी का बना बताया जाता है, निम्नलिखित नाम आये हैं—

आदिनाथं मूलनाथं गोरक्षं कोंकणेश्वरम्। चोलान्ध्रेशं कंथनीशं मौद्गीयं चिञ्चिणीश्वरम्॥
चौरङ्गिमेतान्नागाख्यान्नव सन्तर्पयेत्ततः। चौरिंगीं कर्पटीं घोटीं चुल्लीं कामद्वयं ततः॥
बालगोविन्दसिद्धं च व्यालिं नागार्जुनं ततः। मोरण्डशूर्पधण्टां च दुत्तायीं रेवणं ततः॥
सिद्धं कुक्कुरुपादञ्च सूर्यपादं कणेरितम्। सिद्धं टिण्टिणिकाख्यां च सिद्धान् षोडश तर्पयेत्॥
३—४६—४९

इस में केवल नागार्जुन का नाम प्रथमोक्त में से आया है। नागार्जुन अनेक हुये हैं। 'अस्तु ये नाम गुरुपरम्पराभेद से हैं ऐसा विदित होता है। आदिम और आदिनाथ एक हो सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। व्याडि का नाम रसोपनिषत् में आया है, यथा—'सर्वशास्त्रविदा दृष्ट्वा माण्डव्येन महर्षिणा।' महर्षि विशेषण होने से अनुमान होता है कि ऋषियों के समय में रसशास्त्र प्रचलित था।

प्राभृते वातुले ब्राह्मे वैष्णवैन्द्रे च शाङ्करे। बृहस्पतिमते शौक्रे यत्सारं तदिहोच्यते॥
रसोपनिषत् १—१४

रसोपनिषत् के उपर्युक्त श्लोकों में प्राभृत, वातुल, ब्राह्म, वैष्णव, ऐन्द्र, शाङ्कर, बृहस्पतिमत और शौक्र शब्द यह बतलाते हैं कि इन संहिताओं के सारभाग से रसोपनिषत् की रचना हुई है। परन्तु इन संहिताओं का आज कहीं नाम निशान भी देखने को नहीं मिलता। इससे रसशास्त्र की प्राचीनता सिद्ध होती है।

रसाङ्कुशो भैरवश्च नन्दी स्वच्छन्दभैरवः। मन्थानभैरवश्चैव काकचण्डीश्वरस्तथा॥
वासुदेव ऋषिः शृंगः क्रियातन्त्रसमुच्चयी। रसेन्द्रतिलको योगी भालुकी मैथिलाह्वयः॥
महादेवो नरेन्द्रश्च वासुदेवो हरीश्वरः। एतेषां क्रियतेऽन्येषां तन्त्राण्यालोक्य सङ्ग्रहः॥
र० र० स० अ० १।

इस उद्धरण से विदित होता है कि उपर्युक्त रसाङ्कुशादिकों के निबन्ध रसरत्नसमुच्चय बनाने के समय अर्थात् १३ वीं शताब्दी में प्राप्य थे, तथा 'अन्येषां' पद से विदित होता है कि इनके अतिरिक्त और भी बहुत से ग्रन्थकारों के ग्रन्थ उस समय प्राप्य थे। संभव है इतने बड़े देश भारतवर्ष में या अन्यत्र विदेशों में कहीं न कहीं अब भी खोज करने से रसरत्नसमुच्चयादि में उद्धृत ग्रन्थ पूर्ण या अपूर्ण रूप में मिल सकेंगे। रसेन्द्रचूडामणि से तो रसरत्नसमुच्चयादि में गन्धक प्रकरण तथा ८-९-१०-११ अध्याय परिभाषा प्रकरणादि उद्धृत हैं।

रसरत्नसमुच्चय में मिलने वाले कुछ अन्य ग्रन्थकारों के नाम इस प्रकार हैं—विष्णु, भालुकि, नागार्जुन, बलि, सोमदेव नन्दी, भैरव, सोमसेनानी, ब्रह्मज्योतिर्मुनीन्द्र, सोमनाथ, श्रीगिरीश, भृंगी, खर्वण, मृगचारी, रसार्णव, शंकर, शंभु, वैद्यनाथ, मृड, प्राणनाथ, भैरवनाथ, भद्रक, नन्दीश्वर, नागबोधी, वासुदेव, भैरवानन्द योगी, तारा, मन्थानभैरव, शिव, सिद्धनाथ, हरि, गिरिजा, त्रिपुरा, नासत्य, भानु, बुद्धमुनि, लोकनाथ, योगिनी, चन्द्र, पूर्णामृत, स्कन्द, शंभुदेव, कृष्णात्रेय, सौश्रुत, गुरु, दक्ष, नारद और नित्यनाथ।

ये भालुकि वे ही विदित होते हैं जिनके श्लोक माधवनिदान की टीका में सन्निपात प्रकरण में मिलते हैं। बलि का नाम २७ सिद्धों में भी आया है। नन्दी का नाम भी २७ सिद्धों में आया है, परन्तु खेद है कि नन्दी के नाम का कोई रसग्रन्थ इस समय प्राप्य नहीं है। र० इ० चू० आदि ग्रन्थों में नन्दी का नाम बड़ी प्रतिष्ठा के साथ लिया गया है। नन्दिकेश्वरकृत काशिका व्याकरणग्रन्थ और एक हजार अध्याय का कामसूत्र प्रसिद्ध है। "महादेवानुचरश्च नन्दी सहस्रेणाध्यायानां पृथक् कामसूत्रं प्रोवाच (कामसूत्र १-८)।' उक्त नन्दी शिवजी का अनुचर था यह कामसूत्र देखने से स्पष्ट हो जाता है। नागबोधी का नाम २७ सिद्धों में भी आया है। तारा के नाम से तारामण्डूर प्रसिद्ध है। मन्थानभैरव वही हैं जिनका वर्णन 'मन्थानभैरवाद्यैस्तु शतकोटिप्रविस्तरैः' रूप से र० इ० चू० में मिलता है। हरि का नाम २७ सिद्धों में आया है। नासत्य अश्विनीकुमार हो सकते हैं। दक्ष और नारद पदों से भी रसशास्त्र की प्राचीनता सिद्ध होती है। दक्ष अश्विनी कुमार हैं। चतुर्मुख रस नारदकृत है। नारदीय लक्ष्मीविलास तो प्रसिद्ध है ही। नित्यनाथ रसरत्नाकरकार हैं। इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसरत्नसमुच्चय का विषकल्प बहुत उत्तम है। पर यह किस ग्रन्थ से उद्धृत है इसका पता नहीं है। रसरत्नसमुच्चय के बन्ध्याचिकित्सा, गर्भिणीरोग, और बालरोग प्रकरण बड़े महत्वपूर्ण हैं।

संस्कृत साहित्य के प्राचीन ग्रन्थ आज कल जगह जगह घुनों के आहार बन रहे हैं। उनके उद्धार के लिये प्रत्येक संस्कृत प्रेमी तथा देशप्रेमी को उद्योग करना चाहिये। व्याकरण महाभाष्यकार एक स्थान पर लिखते हैं कि 'प्रातः प्राङ् मुखः कुशासने उपविश्य आचार्यः सूत्राणि प्रणयतिस्म, तत्र वर्णेनाप्यनर्थकेन न भवितव्यं किमियता सूत्रेण'। अर्थात् पाणिनि जी प्रातः पूर्व को मुख करके कुशासन में बैठकर सूत्रों की रचना करते थे, इसलिये उनके सूत्र का एक वर्ण भी अनर्थक नहीं हो सकता। केवल व्याकरण ही नहीं संस्कृत साहित्य के सभी सूत्रों और श्लोकों के प्रति यह कथन सत्य है। इसलिये जिस किसी को जहां कहीं भी संस्कृत का अमुद्रित ग्रन्थ, ग्रन्थांश, एक पत्रा या आधा पत्रा मिले, चाहे वह घुन भक्षित ही क्यों न हो, उसे संग्रह करना चाहिये और उसे अपने पूर्वजों की अविचल अमूल्य सम्पत्ति समझ कर किसी साफ पारदर्शक पत्र में चिपका कर सुरक्षित रखना चाहिये। अन्यत्र भी जहां कहीं प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ मिलें उनकी प्रतिलिपि कर लेनी चाहिये और यदि प्रतिलिपि करने का अवसर न मिले तो उस ग्रन्थ के अध्याय, श्लोक, पृष्ठसंख्या, प्रतिपाद्य विषय और आद्यन्त श्लोकों की सूची तथा जिसके पास वह ग्रन्थ हो उसका पता लिखकर अपने पास रख लेना चाहिये एवं प्रचारित करना चाहिए। रसग्रन्थों का विषय कठिन होने से सर्वत्र सुलभ नहीं हैं। उत्तम रसग्रन्थ किसी के यहां मिलते हैं। वे हमारे पूर्वजों के विज्ञान के साक्षी हैं। आज कल के वैज्ञानिक उनका रहस्य समझने में नितान्त असमर्थ हैं।

मलेरिया बुखार के लिये कुनीन की जगह क्या इस्तेमाल करेंगे?

-- ऊंझा फार्मेसी की --

एल्स्टो पिल्स (सप्तपर्णावटी)

सप्तपर्ण (Alstonia Scholaris) कालमेघ, कुटकी आदि के घनसत्त्वों से बनाई गई है। डीमक वो० २ पृ० ३८७-८८ पर लिखा है कि सप्तपर्ण की छाल में डीटेन नाम का सत्त्व है। मलेरिया, जीर्णज्वर, शीतज्वर और विषमज्वर में यह कुनीन-सल्फ से हजारगुनी अच्छी है। ६ या १२ गोली में ज्वर दूर हो जाता है। कीमत में भी दूसरी दवाइयों से सस्ती पड़ती है। सैकड़ों वैद्यों, डाक्टरों और धर्मार्थ औषधालयों ने आजमाइश करके इसे मलेरिया बुखार के लिए अक्सीर साबित किया है।

कीमत ४२ गोली ।|-), ५०० गोली (१० तो०) ३।|)

विवरण के लिए पैम्फिलिट मुफ्त मंगाइये।

ऊँझा फार्मेसी लिमिटेड, ऊँझा (उ० गुजरात)

हर जगह हमारे एजेन्ट या व्यापारी के यहां मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रव्यगुणविज्ञान

चाक्तिक विषमज्वरनाशक

(ले० —क० हरिदेव शर्मा वैद्यवाचस्पति, अनुसंधान विभाग,
श्री मूलचन्द्र खैरातीराम ट्रस्ट-हास्पिटल, लाहौर ।)

परिचय—यह एक लघु क्षुप है। ऊंचाई लगभग चार इंच, मूल लघु तन्त्वाकार, वर्ण श्वेत पीताभ, पृथ्वी में एक इंच तक गहरी होती है। मूल के ऊर्ध्व भाग से ही १५-२० तक पत्रविहीन २ से २॥ इंच की लम्बी पतली शाखायें स्फुटित होती हैं। इन्हीं शाखाओं के अग्रभाग पर नीलवर्ण के पुष्प विकसित होते हैं। शाखाओं के मूल में ही लघुपत्र होते हैं, जो पुष्पों के विकसित होने पर प्रायः गिर जाते हैं।

उत्पत्ति, देशकाल—कुल्लू से लगभग एक सौ मील पूर्वोत्तर दिशा में लाहौल प्रदेश में हिमालय के उत्तुंग शिखरों (१३००–१५०० फीट) पर यह बूटी प्राप्त होती है। शीत काल से हिमाच्छादित हिमगिरि की गगनचुम्बी चोटियां जब ग्रीष्म में नग्न होती हैं तो नाना प्रकार की जड़ी बूटियों के साथ यह भी दृष्टिगोचर होती है। यह बूटी बीलंग नाला, की लंग, दरिया, मोरघनाग तथा चिस्पा के उपरि प्रदेशों में प्रभूत परिमाण में प्राप्त होती है। रोट्रांक पहाड़ पर जिसकी ऊंचाई १३५०० फीट है, कहीं यह बूटी दृष्टिगोचर हो जाती है। ज्येष्ठ मास में यह प्रादुर्भूत होती है। आश्विन के अन्त में इसका भी अन्त हो जाता है। हिमपात के कारण सब बूटियां लुप्त हो जाती हैं।

लाहौल में इसे चाक्तिक कहते हैं। दो भेद इसके और हैं। एक उपतिक और दूसरा सुपतिक। लाहौल में जड़ी बूटियों की खोज करते हुए उक्त दोनों बूटियां भी प्राप्त हुई हैं। आधुनिक निघन्टुओं में इनका उल्लेख नहीं मिलता।

गुण—चाक्तिक अतीव तिक्त है। शीतल तथा रक्त-शोधक है। पित्तशामक है। चाक्तिक विषम ज्वर नाशक है। यही इसका प्रधान गुण है। जीर्ण विषम ज्वरों में तो यह रामबाण सिद्ध हुई है।

प्रयोग—एक मासा की मात्रा में कोष्ण जल से तीन मात्रायें दिन में लेने से यह विषम ज्वर को दूर भगाती है। ज्वर से पूर्व यदि इसका सेवन किया जाय, तो ज्वर के वेग को भी रोकती है। ज्वर चाहे कितना ही तीव्र क्यों न हो इसका प्रयोग निस्संकोच किया जा सकता है। इससे किसी उपद्रव की आशंका नहीं होती। जीर्ण विषम ज्वरों में तो यह अव्यर्थ औषधि सिद्ध हुई है। विशेषतः जब प्लीहा बढ़ जाती है।

श्री मूलचन्द खैरायतीराम ट्रस्ट आतुरालय के Outdoor और Indoor दोनों विभागों में ऐसे एक दो रोगियों पर ही नहीं अपितु, शतशः रोगियों पर इसका प्रयोग कराके इसके चमत्कार पूर्णप्रभाव को देखा है। ऐसे बहुत से जीर्ण विषम ज्वर के रोगी जो दो दो और तीन तीन मास से इस ज्वर से पीड़ित थे इस विलक्षण बूटी की तीन चार मात्राओं से ही नीरोग हो गये।

ऐसे सब रोगियों का वृत्त यदि लिखा जाय तो एक बृहत् पुस्तक तैयार हो सकती है। केवल मात्र एक रोगी का ही वृत्तान्त देकर इसके अद्भुत गुणों को व्यक्त किया जाता है।

रोगी नाम—सुखदेव, आयु बीस वर्ष, निवास मोची की मण्डी, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगी को लगभग दो मास से शीतपूर्वक ज्वर आता था। प्रातः तापांश ९८·४ और सायं १०५°। दो मास तक यही क्रम चलता रहा। इसी बीच में रोगी ने बहुत सी दवाइयां प्रयोग कीं, पर सब निष्फल गईं। कुनैन के इंजेक्शन भी लगवाये पर वे भी अरण्य रोदन के समान व्यर्थ सिद्ध हुए।

अन्त में यही रोगी ३–१२–४३ को प्रातःकाल अनारकली डिस्पैन्सरी में आया। सारा वृत्त सुनकर तथा रोगी का निरीक्षण कर उसे चाक्रिक की तीन मात्रायें दी गईं। आदेश किया गया कि एक मात्रा अभी ठण्डे जल से ले लो, दूसरी मध्यान्ह को और तीसरी सायंकाल।

चार तारीख को प्रातः रोगी पुनः आया। बताया कि उसे गतसायं ज्वर पहिले की अपेक्षा कम हुआ। पहले ज्वर १०५° था तो अब इस औषधि सेवन से ज्वर १०४° तक हुआ। आज चाक्रिक की तीन मात्रायें पुनः दी गईं।

उससे अगले दिन रोगी फिर आया और कहा कि कल उसे ज्वर बिलकुल नहीं हुआ। तीन मात्रायें आज फिर दी गईं। रोगी को पुनः उस व्यतीत हुए दिन की तरह ज्वर लौट कर नहीं आया।

विज्ञ वैद्य वृन्द ! इस अपूर्व औषधि को अपने व्यवहार में लाकर इसके विलक्षण गुणों को प्रतयक्ष कीजिए। इसी प्रकार अन्य बहुत सी जड़ी बूटियां जो लाहौल में अनुसन्धान करते हुए मुझे मिली हैं और जिनका वर्णन आधुनेक निघन्टुओं में नहीं मिलता, विज्ञ वैद्यों के समक्ष वह सब बूटियां यथावसर प्रकट करू गा।

आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा ।

(केरल—द्राविड़—कर्णाटक में)

(गताङ्क से आगे)

मधुरा के कार्यकर्त्ताओं से आवश्यक वार्तालाप करने के लिए थोड़ी देर रुक कर सभापति जी त्रिचनापल्ली के लिये रवाना हो गये, जहां २ मार्च से कार्यक्रम आरम्भ होना था। २ ता० को सभापति जी ने नगर के वैद्यों से भेंट की तथा उनके साथ संगठन पर विचारविनिमय किया। कुछ सदस्य भी बनाये गये। दूसरे दिन स्थानीय वैद्यसभा का अधिवेशन हुआ। यह सांस्कृतिक विचारविमर्श के लिये किया गया था। सभापति जी की प्रेरणा से वैद्यों ने अपने चिकित्सासम्बन्धो प्रत्यक्ष अनुभवों का भी वर्णन किया, जिससे वार्तालाप और भी अधिक रोचक हो गया। ३ ता० को इंडियन मेडिकल एसोसियेशन की त्रिचनापल्ली शाखा ने सभापति जी के स्वागत में एक चायसपीति की आयोजना की, जिसमें सभापति जी से प्रार्थना की गई कि वे 'आयुर्वेदविज्ञान' पर भाषण दें। सभापति जी के रोचक भाषण से श्रोतागण अति प्रसन्न हुआ, तथा सभाध्यक्ष भी सहमत हुये। ५ ता० को शाखा–मन्त्री ने आयुर्वेदसिद्धान्त पर अधिक प्रकाश डालने के लिये सभापति जी को निमन्त्रित किया और भोजन से पूर्व कुछ घण्टों तक उनसे वार्तालाप किया। उन्होंने सभापति जी से अपने पत्र के लिये एक लेख लिखने की भी प्रार्थना की *। ४ ता० को नेशनल कालेज में एक प्रमुख वकील की अध्यक्षता में सभापति जी का

* पश्चात् सभापति जी द्वारा "आयुर्वेद के भूत और भविष्य" पर रेडियो से विस्तारत सन्देश पत्र में छपने दे दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वजनिक भाषण हुआ। संस्कृत में एक अभिनन्दनपत्र दिया गया। इस उत्सव में वैद्य सभा के साथ संस्कृत साहित्य परिषत् भी सम्मिलित हो गई थी। प्रतिष्ठित आदमी उपस्थित हुये थे। सभापति जी का भाषण इतना प्रभावोत्पादक था कि नगर की विद्वत्परिषत् ने भी अपनी सभा में श्रीयुत मुखर्जी का भाषण कराने का प्रस्ताव किया। ७ ता० को सभापति जी को मद्रास जाना था, उसी दिन इस काय के लिये भी १ घण्टा निकालना पड़ा। सभापति जी अपने दल के साथ द्रविड़ प्रान्तीय मण्डल के प्रधान स्थान कारूर को रवाना हुये। ६ ता० को इस मण्डल का अधिवेशन था। स्टेशन पर जिला मुंसिफ, म्यु० हैल्थ आफिसर, तथा अन्य आयुर्वेदभक्तों ने सभापति जी का स्वागत किया। दोपहर बाद सभापति जी ने वैद्यसभा में भाषण दिया, जिसका तामिल अनुवाद द्रविड़ वैद्यमण्डल के भू० पू० प्रधानमन्त्री श्री सुब्रह्मण्यम् ने करके सुनाया। संगठन पर जोर दिया गया। वैद्य तथा अन्य सार्वजनिक कार्यकर्त्ता दूर दूर से एकत्र हुये थे। प्रधानमन्त्री श्री पी० एस० रामशर्मा ने उत्सव को पूर्ण सफल बनाने में कोई बात उठा न रखी। सायंकाल सभापति जी का सार्वजनिक भाषण हुआ और उन्हें अभिनन्दनपत्र दिया गया। सभापति जी का सारगर्भित भाषण सुनने के लिये सारा शहर इकट्ठा हो गया था। मधुरा के पं० नारायण आयंगर अध्यक्ष थे। रात्रि में बहुत देर तक एक के बाद एक कई महानुभाव सभापति के पास वार्तालाप के लिये आये। विद्वत्परिषत् का अधिवेशन त्रिचनापल्ली के टाउनहाल में था। एक यूरोपियन श्री डब्ल्यू० डब्ल्यू० जार्जसन, आई० सी० एस०, डिस्ट्रिक्ट जज अध्यक्ष थे। भाषण का विषय 'आयुर्विज्ञान' था। श्रीयुत मुखर्जी ने आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं की ऐसी सुन्दर व्याख्या की कि सभी विद्वान् श्रोता मन्त्रमुग्ध हो कर सुनते रहे। प्रधान मन्त्री ने श्रीयुत मुखर्जी को धन्यवाद देते हुये कहा—'अपने भाषण में श्रीयुत मुखर्जी एक क्षणभर के लिए भी आयुर्वेद के उच्च शिखर से इधर उधर नहीं डिगे। जिस समय वे आयुर्वेद के विभिन्न विषयों पर बोल रहे थे, तो हम को ऐसा मालूम पड़ रहा था कि एक अमूल्य रत्नकोष के भीतर हमारा प्रवेश कराया जायगा। परन्तु दरवाजा अन-खुला ही छोड़ दिया गया और वे हमको बलात् एक वैसे ही दूसरे अमूल्य भवन के द्वार की ओर खींच ले गये। हर बार हर किसी की आशायें उमड़ती थीं और अन्त में निराश होना पड़ता था। इस प्रकार उनके भाषण ने एक अतृप्त अभीप्सा उत्पन्न करदी है। तथा मस्तिष्कों पर एक अनिर्वचनीय प्रभाव डाल दिया है।'

मद्रास में एगमोर स्टेशन पर श्री द्वारकानाथ एल० आई० एम० (मद्रास), जैड० टी० (हैम्बर्ग विश्वविद्यालय), तथा पं० दुरैराम स्वामी आयंगर ने सभापति जी का स्वागत किया। वैद्य माधव मेनन रुग्ण होने के कारण नहीं आ सके थे। ८ ता० को सभापति जी मद्रास से जाने वाले थे, अतः श्री माधव मेनन की मोटरकार दिन भर उनकी सेवा में रही। केप्टेन श्रीनिवासमूर्त्ति जी श्रीयुत मुखर्जी के शुद्धायुर्वेदवाद और प्रचार-आन्दोलन के सम्बन्ध में उन से स्पष्टीकरणार्थ बातचीत करना चाहते थे। अतः सभापति जी उनके अष्टांग पोलिक्लिनिक में गये और दो घंटे तक खुल कर बातचीत की, जिसके परिमाणस्वरूप कैप्टेन महोदय ने अपने आप को कट्टर शुद्धायुर्वेद-वादी घोषित किया। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि गवर्नमेंट स्कूल आफ इंडियन मेडिसिन में श्री द्वारकानाथजी द्वारा संयोजित छात्रों और अध्यापकों की सभा के, जिसमें श्रीयुत मुखर्जी ने 'शुद्धायुर्वेदवाद' पर भाषण दिया था, अध्यक्षपद से दिये गए उनके भाषण में श्रीयुत मुखर्जी के विचारों से कोई मतभेद न था। श्रीयुत श्रीनिवासमूर्त्ति जी ने श्रीयुत मुखर्जी को आश्वासन दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे उनकी आयुर्वेदसम्बन्धी सेवाओं में सब प्रकार का सहयोग देते रहेंगे। इससे पहले श्री द्वारकानाथ जी ने सभापति जी को उपर्युक्त पोलिक्लिनिक के, जहां एक सहयोग--योजनानुसार शुद्ध आयुर्वेदविधि से निर्मित शास्त्रीय औषधियों के वितरणार्थ एक निर्माणविभाग खोला गया था; निरीक्षण के लिए निमन्त्रित किया था। अस्वस्थावस्था में भी सभापति जी की सेवा में तत्पर रहने के लिए पं० द्वारकानाथ जी प्रशंसा के पात्र हैं। मंसूर के लिए खाना होने से पूर्व सभापति जी ने उनके आग्रह से एक प्रेस वक्तव्य भी दिया। (क्रमशः)

नूतन समाचार।

सभापति की यात्रा (दक्षिण—महाराष्ट्र—महाविदर्भ)

(गताङ्क से आगे)

६ ता० को आयुर्वेदपरिषद् ने एक भोज और सार्वजनिक सभा का आयोजन किया। यह एक नवनिर्मित संस्था थी, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को आयुर्वेद का पूर्ण ज्ञान कराना था। इस अवसर पर भी पूज्य महन्त बाबा जी ने उपस्थित होने की तथा कार्यवाही का संचालन करने की कृपा की। चायपान के पश्चात् सुसज्जित हरिभवन में सभा आरम्भ हुई। वैद्य, हकीम और विद्यार्थी एक बड़ी संख्या में एकत्र हुए। माननीय हिन्दू चीफ जस्टिस सभापति जी से मिलने के लिए आए। निजाम साहब के इमाम भी उनसे मिलने आये। आयुर्वेद पर वैद्यों, हकीमों और विद्यार्थियों के व्याख्यानों के पश्चात् सभापति मुखर्जी ने आयुर्वेद और वैद्य संगठन पर अपना सुन्दर और सुललित भाषण दिया। एक मानपत्र दिया गया जिसमें सभापति जी से आदेश प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की गई। उत्तर में श्रीयुत मुखर्जी ने संगठन द्वारा शक्ति प्राप्त कर समाज में आयुर्वेद के लिये एक सुदृढ़स्थान प्राप्त करने पर बल दिया। यह संदेश सभापति जी ने उन सब लोगों को दिया जो आयुर्वेद कांग्रेस में श्रद्धा रखते हैं तथा उनकी आज्ञाओं का पालन करने की प्रसंशनीय भावना रखते हैं।

७ तारीख का कार्यक्रम मनोरंजक था। हैदराबाद आयुर्वेद—वैद्य—संघ के तत्वावधान में, उस संगठन समिति के सभापति पं० गयाप्रसाद जी के सभापतित्व में, जिसकी स्थापना २ ता० को की गई थी, 'दीर्घायुष्य' जैसे मनुष्यमात्र से सम्बन्धित विषय को लेकर एक सार्वजनिक सभा हुई। अनेक वक्ताओं ने मनोरंजक भाषण दिये और अन्तमें राष्ट्रपति का भाषण हुआ। सभापति जी ने देश में वर्तमान अल्पायुष्य के कारणों पर विशेष बल देते हुए विषय पर प्रभावशाली प्रकाश डाल कर इस समय को और भी स्मरणीय बनाया। राष्ट्रपति जी को एक मानपत्र दिया गया और उन्होंने उत्तर देते हुए वैद्यों के अन्दर एकता पैदा करने और एक संगठित राष्ट्र के आधार पर संगठनपूर्ण अस्तित्व स्थापित करने पर बल दिया। संघ के मन्त्री वैद्य हरिकृष्ण शर्मा ने दस (हैदराबादी) रुपये का दान दिया। श्रीयुत मुखर्जी ने इस धन को 'महाविद्यालय कोष' में सम्मिलित कर दिया। भारतीय आतिथ्य–सत्कार का कोई अन्त नहीं। दस बजे रात्रि को सभा समाप्त होने के पश्चात् भी चाय और जलपान कराया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्रिय सत्कर्त्ता श्री महन्त बाबाजी की अनुमति से सभापति जी अपनी सुविधा की दृष्टि से शहर के मध्य में स्थित आयुर्वेद-सेवाश्रम-फार्मेसी में चले गये थे। अब श्री दिवेकर जी ने सभापति जी के प्रबन्ध का सम्पूर्ण भार अपने ऊपर ले लिया। ७ तारीख को वहां के सुप्रसिद्ध वैद्य नारायणदास जी, जो सभापति जी के प्रति अपने कर्तव्य पालन में किसी से पीछे नहीं रहना चाहते थे, सभापति जी से मिलने के लिए आये। दूसरे दिन बंगाली ऐसोशियेशन के तत्वावधान में वाई० एम० सी० ए० हाल में सार्वजनिक सभा के लिए कठिनता से समय उपलब्ध हो सका। श्री नारायणदास जी ने अपने भवन में बहुत से वैद्यों के सहित कुछ उच्च राजकर्मचारियों और प्रसिद्ध व्यक्तियों को एकत्र करने का प्रबन्ध किया और केवल तीस घराटों के अन्दर जहां तक सम्भव था एक राजोचित स्वागत का प्रबन्ध किया जो अतिथियों के लिये एक चित्ताकर्षक वस्तु थी। प्रधान अतिथि का नारायणदास जी ने आदरणीय शब्दों से स्वागत किया। सभापति जी ने आयुर्वेदिक क्षेत्र में प्रत्येक वस्तु को संगठित करने पर बल दिया और सत्कर्त्ता ने २००) की जो रकम सभापति जी की भोजन-दक्षिणा के रूप में दी उसकी उनके आयुर्वेद कांग्रेस की संरक्षक सदस्यता के शुल्क के रूप में सुरक्षित रख लिया। इस निर्णय ने सत्कर्त्ता के स्मरणीय आतिथ्य की मधुरता को और भी मधुरतर बना दिया। वाई० एम० सी० ए० हाल की सभा का सभापतित्व श्रीमती सरोजिनी नाइडू के सुपुत्र डा० जयसूर्य नायडू ने किया जो एक उच्चशिक्षा प्राप्त विदेशों में पठित और विदेशी उपाधिधारी डाक्टर हैं और जिन्होंने ऐलोपैथी का परित्याग कर होमियोपैथी को अपनाया है तथा जो आयुर्वेद में श्रद्धा रखते हैं। एक उच्च शिक्षित समाज, जिसमें अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त स्त्री और पुरुष-विद्वानों की विशेषता थी, एकत्रित हुआ और उन्होंने श्रीयुत मुखर्जी के उस स्पष्ट और सुन्दर अंग्रेजी भाषण को बड़े ध्यान से सुना, जिसमें उन्होंने बड़े ही प्रभावोत्पादक ढंग से आयुर्वेद प्रणाली की वैज्ञानिक सुन्दरता, गम्भीर विचारधारा और सर्वोत्तमता पर प्रकाश डाला था। डा० जयसूर्य नायडू के अन्तिम भाषण ने भी आयुर्वेद का दृढ़ समर्थन किया। अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि एक महाद्वीप के समान विस्तृत भारत देश के देशनिवासियों में आयुर्वेद का प्रचार करने के लिए भारत के श्रेष्ठ चिकित्सा-विज्ञान के ऐसे समर्थकों की संख्या जो श्रीयुत मुखर्जी के समान ही योग्य और प्रचार कार्य में निपुण हों कम से कम पच्चीस होनी चाहिए। यह एक स्मरणीय समय था जिसको स्मरण कर हैदराबाद चिरकाल तक प्रसन्न होगा और उससे लाभ उठायेगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल श्री जे० ऐंड जे० डीशेन, जो देशी जड़ी बूटियों से औषधियां बनाया करते हैं, के द्वारा सभापति जी को दी जाने वाली चायसपीति में उनसे मिलने की आशा करते हुए डा० जयसूर्य वहां से चले गये। यह एक निकट सम्बन्धी लोगों का प्रीति भोज था, जिसमें श्री मुखर्जी, डा० नायडू और साथ के अन्य महानुभावों को आयुर्वेद और आयुर्वेदिक सहायता सम्बन्धी आवश्यक बातों पर बातचीत करने का सुअवसर मिला। वहां से सभापति जी वैद्य श्री रामकृष्ण जी के भवन को गये जो आयुर्वेद कांग्रेस के एक पुराने सदस्य हैं और आधुनिक समय की प्रायः सभी सभाओं में उपस्थित रहे हैं। स्वागत का प्रबन्ध उनके विशाल भवन के उस सुन्दर हाल में किया गया जिसमें वे अपने वार्षिक धन्वन्तरि उत्सव को मनाया करते हैं। मन्त्री आयंगर जी भी आये और उनके साथ थोड़ी देर के सम्बन्ध ने सभापति जी को थोड़ा सा समय आयुर्वेद सम्बन्धी वार्तालाप करने को दिया। कुछ गणयमान्य नागरिकों के साथ सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य लोग उस विशाल कमरे में भर गये। सत्कर्त्ता ने अतिथियों के सत्कार का पूर्ण ध्यान रखा और उनको फल और मिष्टान्न भोजन कराया। आयुर्वेद पर व्याख्यान हुए। सभापति महन्त श्री पूर्णदास जी ने आयुर्वेदराष्ट्रपति श्री मुखर्जी की सत्कर्त्ता द्वारा दो सौ रुपये का दान देने की घोषणा की। सभापति जी ने अपनी इस भोजन दक्षिणा के रुपये के विषय में घोषणा करते हुए कहा कि यदि श्री रामकृष्ण जी चाहेंगे तो यह धनराशि उनकी अखिल भारतीय आयुर्वेद कांग्रेस की संरक्षक-सदस्यता के शुल्क के रूप में जमा करली जायेगी। हैदराबाद के कार्यक्रम का यह अन्तिम दिवस था। सभापति जी ने अपने एकता और संगठन के संदेश को प्रभावोत्पादक और जोरदार ढंग से सुनाया। उन्होंने कहा कि मैं हैदराबाद को इस दृढ़ विश्वास के साथ छोड़ रहा हूँ कि यह राज्य आयुर्वेद कांग्रेस का एक सुदृढ़ गढ़ बनने के लिए अपने आप को पूर्ण संगठित करेगा ताकि सन् १६४७ में यहां पर आयुर्वेद कांग्रेस का एक स्मरणीय अधिवेशन किया जासके।

श्री सभापति जी हैदराबाद को शीघ्र ही न छोड़ सके। केवल यही नहीं कि उन बातों के निपटारे के लिए जो इन दिनों उत्पन्न हो गईं थी सभापति जी के ध्यान देने की आवश्यकता थी अपितु एक सप्ताह तक निरन्तर परिश्रम करने के पश्चात् उनका स्वस्थ शरीर भी बहुत थक गया था और ६ तारीख के कार्यक्रम में वे एक बहुत अस्वस्थ अवस्था में उपस्थित हुए। इससे हालत और बुरी हो गई और सभापति जी को प्रायः शय्यास्थ रहना पड़ा। श्री दिवेकर जी को जो दया और करुणा की मूर्ति है आराम देने के अभिप्राय से सभापति जी ने "यूनाइटेड एजेन्सी" के श्रीयुत पी० एल० मुखर्जी के हार्दिक निमन्त्रण को स्वीकार किया जिनके आतिथ्य और सेवा सुश्रूषा का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके समस्त परिवार की सुश्रूषा के बिना यह सम्भव न था कि सभापति जी ता० १६ से आरम्भ होने वाले निखिल आयुर्वेद कांग्रेस की आयुर्वेद योजना समिति के अधिवेशन में ठीक समय पर सम्मिलित होने के लिए कम से कम इतने स्वस्थ हो जांय कि ता० १४ को दिल्ली के लिए प्रस्थान कर सकें। सभापति जी के प्रस्थान से पहले श्री सूर्यप्रसाद जी ने उनको १०१) की भोजन दक्षिणा दी, जिससे सभापति जी ने उनके पुत्र का नाम आश्रयदाता सदस्यों की सूची में लिख लिया। वैद्य दिवेकर जी भी पीछे नहीं रहे और यद्यपि उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि मैं आश्रयदाता सदस्य कुछ दिन के पश्चात् बनूंगा तथापि अपनी तत्परता के प्रमाण स्वरूप वे मान्य सदस्य बने। नव निर्मित संगठन समिति के मन्त्री वैद्य गोवर्धन शर्मा भी कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर अपने मान्य सदस्यता शुल्क को देने के लिए आये। प्रस्थान करते समय सभापति जी को हार्दिक विदाई दी गई। श्री गयाप्रसाद जी और निजाम-राज्य-आयुर्वेद कालिज के प्रधानाध्यापक श्री राधाकृष्ण जी के साथ वैद्यों और नागरिकों का एक बृहत् समुदाय विदाई के समय उचित सत्कार करने और गाड़ी में सभापति जी के लिये स्थान की सुव्यवस्था करने के निमित्त स्टेशन पर उपस्थित था। सभापति जी ने श्री राधाकृष्ण जी से उनकी प्रतिज्ञानुसार आश्रयदाता सदस्य बनने के लिए कहा। यह दृढ़ विश्वास किया जाता है कि हैदराबाद आयुर्वेद-राष्ट्रपति की इस स्मरणीय यात्रा के उद्देश्य को पूरा करने में पश्चात्पद न होगा। स्टेशन पर हाईकोर्ट के एक अवसरप्राप्त चीफ जस्टिस के साथ आयुर्वेद पर बड़ी मनोरंजक बातें हुईं। हैदराबाद से बिदा होते समय सभापति जी के संदेश को लिखने के लिये एक पत्र सम्वाददाता भी उपस्थित था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री छांगाणी जी की हीरक जयन्ती।

पूर्व सूचनानुसार मंगलवार को विजय दशमी के शुभ अवसर पर नागपुर कन्वोकेशन हाल में नागपुर के सुप्रसिद्ध वैद्यराज, पत्रकार और आचार्य पं० श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी भिषक्केसरी, भू० पू० अध्यक्ष, नि० भा० आयुर्वेद महामण्डल का हीरक-जयन्ती-महोत्सव न्यायमूर्ति सर भवानीशंकर जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर नागपुर की समस्त हिन्दी संस्थाओं, समाचार पत्रों, चिकित्सा संस्थाओं और म्युनिसिपालिटियों आदि लोकल संस्थाओं की ओर से सब संस्थाओं के अधिकारियों द्वारा श्री छांगाणी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उक्त अवसर पर जनता ने श्री छांगाणी जी के प्रति इतना प्रेम प्रदर्शित किया कि दशहरे का त्यौहार होने पर भी अनेक उच्च पदाधिकारी, सेठ, साहूकार एवं विद्वत्मण्डली से सभास्थल खचाखच भरा हुआ था। सभा में अनेक वक्ताओं के भाषण हुए, जिसमें विशेष उल्लेखनीय सर्वश्री पी० के० सालवे एडवोकेट, डा० हीरालाल जी जैन, पं० श्रीकन्तजी मिश्र, पं० विश्वंभरप्रसाद शर्मा संपादक 'आलोक', पं० हृषीकेश शर्मा, सेठ तुलसीदास जी सांवल, पं० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति आदि ने श्री छांगाणी जी के आदर्श जीवन का परिचय बताते हुए जनता के सामने यह कहा कि "श्रद्धेय श्री छांगाणी जी प्रान्त के लिए तो गौरव स्वरूप हैं ही, किन्तु आपके द्वारा की गई आयुर्वेद सेवाओं से सम्पूर्ण भारत भी गौरवान्वित है। आपने अनेक हिन्दी और संस्कृत पुस्तकों एवं पत्रों का सम्पादन किया है। आपकी चिकित्सा विषयक ख्याति तो जगत-प्रसिद्ध है ही साथ ही आप हिन्दी के भी प्रौढ़ कवि हैं। यह आपकी लिखी पुस्तकों से प्रकट है।" इसके बाद पं० शिवकुमार शास्त्री, कामठी, पं० महादेव शास्त्री मुर्तिजापुर ने संस्कृत पद्यों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। नागपुर की समस्त जनता की ओर से श्री छांगाणी जी को एक अभिनन्दन पत्र चांदी के कास्केट में रखकर अर्पित किया गया। अध्यक्ष माननीय श्री वियोगी साहब ने श्री छांगाणी जी की महत्ताओं पर प्रकाश डालते हुए यह कहा कि हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि महात्मा गांधी जी के आदर्श के समान श्री छांगाणी जी भी १२५ वर्ष जीवित रहकर जनता की सेवा करें।

इसके बाद अभिनन्दन समिति के मन्त्री श्री गुलराज शर्मा मिश्र आयुर्वेदाचार्य के अनिवार्य कारण वश अनुपस्थित रहने पर पं० विश्वम्भरप्रसाद शर्मा तथा केदारनाथ शर्मा ने आगत सज्जनों का आभार मानते हुए सभा का कार्य विसर्जित हुआ यह घोषित किया। आपने यह भी प्रकट कर दिया कि यद्यपि आज श्री छांगाणी जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी समर्पित किया जाने वाला था, किन्तु ग्रन्थ प्रेस में अर्ध मुद्रित होने के कारण उस कार्य को आगे के लिए रख छोड़ा है।

सिन्धप्रान्तीय आयुर्वेदमंडल का आयुर्वेद-प्रचार सप्ताह।

ता० २२-८-४५ से ता० ३०-८-४५ तक का कार्यक्रम इस प्रकार है:—

ता० २२-८-४५ को खिलनानी हाल में श्री लोकामल जी के सभापतित्व में 'आयुर्वेद की औषधियां प्रत्येक दृष्टि से शुद्ध हैं' इस विषय पर लाहौर निवासी श्रीयुत शिवशर्मा जी का बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० २३-८-४५ को श्रीयुत शिवशर्मा जी ने उन रोगियों का निरीक्षण किया तथा उनके लिए चिकित्साव्यवस्था की जिनको डाक्टरों ने असाध्य कह कर छोड़ दिया था।

ता० २४-८-४५ को खालिक दीना हाल में 'मलेरिया-कान्फ्रेंस' तथा श्रीयुत पं० शिवशर्मा जी का 'आयुर्वेद के महत्व' पर व्याख्यान होने वाला था, परन्तु श्री सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु के कारण स्थगित करना पड़ा। केवल शोक . प्रस्ताव पास किया गया।

ता० २५-८-४५ को श्रीयुत शिवशर्मा जी ने सिन्धप्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल कार्यालय वासिष्ठ आयुर्वेद कालेज, म्युनि० आयु० औषधालय, सर्वहितैषी आयुर्वेद एसोसियेशन औषधालय, जीताबाई मोहता रसायनशाला, उद्यान और औषधालय, सुशीलाभवन आर्य आयु० औषधालय, अमृतमय आयु० फार्मेसी, आदि संस्थाओं का निरीक्षण किया। सायंकाल श्री ब्रह्ममित्र-मंडल के तत्वावधान में श्री हीरालाल जी पाठक इंजीनियर के सभापतित्व में 'आयुर्वेद के महत्व' पर श्री पं० शिवशर्मा जी का बड़ा ही सारगर्भित भाषण हुआ।

ता० २६-८-४५ को प्रातःकाल सुशीला भवन आर्यसमाज में श्री बहल जी के सभापतित्व में 'आयुर्वेदस्वास्थ्यविज्ञान' विषय पर श्री पं० शिवशर्मा जी का ओजस्वी व्याख्यान हुआ, जिसमें आपने बताया कि अन्य चिकित्सापद्धतियां हमारे धर्म और स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखतीं। केवल आयुर्वेद ही सब बातों को ध्यान में रख कर चला है, अतः यह सब से उत्तम है।

ता० २७-८-४५ को आयुर्वेदीय चिकित्सापद्धति अन्य सब पद्धतियों की अपेक्षा अधिक निर्दोष और उत्तम है, इस विषय पर श्री पं० शिवशर्मा जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। लगभग १००० स्त्री, पुरुष और बच्चे उपस्थित थे।

ता० २८-८-४५ को सायंकाल थियोसोफिकल सोसायटी के विशाल व्याख्यान भवन में श्री जमशेदमेहता एम० एल० ए० के सभापतित्व में 'आयुर्वेद साइन्स' विषय पर श्री पं० शिवशर्मा जी का अंग्रेजी में भाषण हुआ, जिसमें पण्डितजी ने आयुर्वेद के त्रिदोष सिद्धान्त की महत्ता पाश्चात्य विज्ञान से सिद्ध की। इस व्याख्यान का प्रभाव करांची की पढ़ी-लिखी जनता पर बहुत अच्छा पड़ा, यहां तक कि बहुत से विरोधी भी आयुर्वेद के भक्त बन गये।

ता० २९-८-४५ को १० बजे से १ बजे तक पुनः असाध्य रोगियों का परीक्षण किया गया।

ता० ३०-८-४५ को श्री पं० शिवशर्मा जी के स्वागत में भोज दिया गया और सामूहिक चित्र लिया गया।

अकबरपुर (कानपुर) तहसील वैद्यसम्मेलन—ता० ८-१०-४५ को जसवापुर में कुं० ठा० हरनारायणसिंह जी की अध्यक्षता में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। वैद्यों और जनता की उपस्थिति अच्छी थी। कई विद्वानों के आयुर्वेद और संगठन विषय पर ओजस्वी भाषण हुए। कानपुर में स्थाप्यमान आयुर्वेदविश्वविद्यालय एवं भावी अ० भा० आयु० महासम्मेलन की सफलता के लिए धनसंग्रहादि के लिए समितियां बनाई गईं। जनता में काफी जोश था। आगामी तहसील संमेलन के लिए घाटमपुर तहसील का निमन्त्रण स्वीकार हुआ।— मन्त्री।

वैद्यसभा, हींगनघाट—का आम चुनाव ता० २४-६-४५ को हुआ, जिसमें श्री बनवारीलाल जी वैद्य सभापति तथा श्री रामेश्वरप्रसादजी वैद्य प्रधान मन्त्री चुने गये।—प्रधान मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज प्रकाशित अत्युत्तम वैद्यक ग्रन्थ

१—**सचित्र रसरत्नसमुच्चय**—अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित ५)

२—**मेघविनोद**—सरल हिन्दी। आयुर्वेद का अपूर्व ग्रन्थ है, पहली बार छपा है ४)

३—**चरकसंहिता**—श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया तथा श्रीवाग्भट-शिष्याचार्यवर-जेज्जटविरचितया निरन्तरपदव्याख्यया च संवलिता। आयुर्वेदाचार्येण श्री० पं० हरिदत्तशास्त्रिणा संशोधिता। दो जिल्दों में सम्पूर्ण। मूल्य ११)

४—**भैषज्यरत्नावलिः**—श्रीगोविन्ददासप्रणीता। कविराजश्रीज्ञानेन्द्रनाथमित्रैः संस्कृता परिवर्द्धिता च। आयुर्वेदाचार्य-कविराज-श्रीनरेन्द्रनाथशास्त्रिणा विरचितया रत्नोज्ज्वलाख्यया संस्कृतटीकया समलंकृता। मूल्य ८)

५—**चक्रदत्तः**—श्रीशिवदासेन कृतया तत्त्वचन्द्रिकासमाख्यया टीकया समलंकृतः। ३॥)

६—**त्रिदोषविमर्शः**—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गतत्रिदोष-वाक्यसंग्रहश्च। ले० पण्डितो धर्मदत्तः। मूल्य १॥)

७—**रसेन्द्रचूडामणिः**—श्रीसोमदेवविरचितः। मूल्य २)

८—**सुश्रुतसंहिता** (सचित्रा)—मूलमात्रम्। मूल्य ३)

९—**माधवनिदानम्**—मधुकोशव्याख्यया समुल्लसितम्, परिशिष्टनिदानेन च संयोजितम्। २॥

१०—**अष्टाङ्गहृदयम्**—विद्वद्वरश्रीमदरुणदत्तकृता सर्वाङ्गसुन्दराख्या टीका तथा मौद्गल्यटिप्पणी च। ६)

११—**रसहृदयतंत्रम्**—भगवद्गोविन्दपादविरचितं तथा मुग्धावबोधनीव्याख्यासहितम् २।)

१२—**रसेन्द्रसारसंग्रहः**—मूलमात्र, गुटका। १)

१३—**भावप्रकाशनिघंटु**—श्री पं० विश्वनाथजी कृत सरल हिन्दी अनुवाद। अनुवाद में कोई बात छूटने नहीं पाई। अत्यन्त विस्तृत तथा उपयोगी। ४॥)

१४—**चरकसंहिता**—श्री जयदेवविद्यालङ्कारकृत सरलहिन्दी अनुवादसहित। द्वितीयसंस्करण। सम्पूर्ण मूल्य २५)

१५—**योगरत्नाकार**—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। १५

१६—**भैषज्यरत्नावली**—श्री जयदेव विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीयावृत्ति। संपूर्ण पुस्तक १८०० पृष्ठों में समाप्त है। मू० १०), दो बढ़िया जिल्दों में।

१७—**गुणों का खजाना**—स्वा० परमानन्दकृत। इसमें अनेक आजमाये हुए फकीरी नुसखे हैं। २)

१८—**शल्यतन्त्र** (सचित्र)—श्री अत्रिदेवकृत, सरलहिन्दी में। शल्य (चीरफाड़ जर्राही) विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ। ४)

१९—**ज्वरतिमिरभास्कर**—कायस्थचण्डविरचित तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४)

२०—**सचित्र रसेन्द्रसारसंग्रह**—कविराज श्री विद्याधरकृत हिन्दी अनुवाद। जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण ६०० पृष्ठ। ४)

२१—**नवनावनीतक**—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सरलहिन्दी अनुवाद सहित। ३)

२२—**भावप्रकाश**—केवल ज्वराधिकार। श्री पं० हरिदत्त जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित १)। इनके अतिरिक्त हमारे यहां सब प्रकार के चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत रियायत से मिलते हैं। प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता—

मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार का पता—'साधना' ढाका।	टेलीफोन—१२२ ढाका।

महान् वैज्ञानिक का

आयुर्वेद को दान।

आयुर्वेद का पुनरुद्धार और देशविदेशों में प्रचार।

अब वैद्यों को स्वयं औषधियां तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। साधना औषधालय हर समय उनकी सेवा के लिए तैयार है। यहां पर शुद्ध शास्त्रीय विधि से औषधियां तैयार की जाती हैं और उचित मूल्य पर बेची जाती हैं। महायुद्ध के कारण भी औषधियों के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई। वैद्यों को चाहिये कि वे दवाइयां बनाने के झंझट में न पड़ कर अपना समय और दिमाग रोगियों की चिकित्सा में लगावें।

साधना की सभी शाखाओं में रोगियों को चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श मुफ्त दिया जाता है।

अध्यक्ष—डा० योगेशचन्द्र घोष एम.ए.
आयुर्वेदशास्त्री, एफ०सी०एस०(लन्दन),
एम० सी० एस० (अमेरिका),
भागलपुर कालेज के केमिस्ट्री के
भूतपूर्व अध्यापक।

साधना औषधालय ढाका (बंगाल)

(शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों की प्रसिद्ध निर्माणशाला)

सारे संसार में इसकी शाखायें और एजेन्सियां हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचनायें।

३४ वें० आयुर्वेदमहासम्मेलन की प्रदर्शनी।

दिसम्बर १९४५ में मणिपाल (द० कनाड़ा) में होने वाले ३४ वें अ० भा० आयुर्वेद-महासंमेलन के साथ अ० भा० आयुर्वेदप्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है। प्रदर्शनीय वस्तुओं के रेलवे स्टेशन से ले जाने, लाने, सुरक्षित रखने आदि की पूर्ण व्यवस्था है। प्रदर्शन स्थान पर एक पोस्ट आफिस और बैंक की शाखा भी खोली जायगी।

प्रदर्शनी के ८ विभाग होंगे—(१) कच्चे औषधद्रव्य (२) जड़ी बूटियां (३) सिद्ध औषधियां (४) औषधिनिर्माण तथा पञ्चकर्म-प्रदर्शन (५) औषधिनिर्माणशालाओं के लिये उपयोगी मशीनें तथा अन्य यन्त्र (६) मुद्रित और अमुद्रित पुस्तकें (७) अन्वेषण-प्रदर्शनीय पदार्थ (८) मिश्रित।

प्रदर्शनी का उद्घाटन २७ दिसम्बर को होगा और ३१ दिसम्बर को प्रदर्शनी समाप्त हो जायगी। प्रदर्शनी प्रातः ६ बजे से १ बजे तक और सायं ४ बजे तक खुली रहेगी। प्रदर्शनी में प्रवेश निःशुल्क होगा। प्रदर्शनी में एक निःशुल्क वाचनालय भी रहेगा।

प्रदर्शनीय पदार्थों के प्रेषकों को प्रदर्शनी सम्बन्धी नियमों की विशेष जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करना चाहिये।

—प्रदर्शन-मन्त्री, ३४ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन,
पो० मणिपाल, जि० द० कनाड़ा।

घोषणा।

मुझे यह घोषित करते हुये परम प्रसन्नता होती है कि हमारे महामना सभापति कविराज मणीन्द्रकुमार मुखर्जी ने अ० भा० आयुर्वेद कांग्रेस के आगामी मणिपाल अधिवेशन का सभापति होना स्वीकार कर लिया है। (निर्वाचनयोग्य अन्य चार महानुभावों ने अपने अपने नाम वापस ले लिये हैं।) —यादवेश्वर भट्टाचार्य, स्थानापन्न प्रधान मन्त्री, अ० भा० आयुर्वेदमहामण्डल।

महासम्मेलन और विद्यापीठ के सदस्यों के प्रति।

पर्याप्त संकोच के पश्चात् मैंने सन् १९४६ के लिये उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया है यह बात आयुर्वेदमहासंमेलन पत्रिका के पाठकों को विदित ही होगी। संसारमें युद्धकी विभीषिका समाप्त हो गई है। प्रत्येक क्षेत्र में युद्धोत्तर समस्याओं में लोगों के दिमाग लगे हुये हैं। आयुर्वेद के लिए भी अमित संभावनाओं से पूर्ण कार्यविधियों का निर्माण करना है। संपूर्ण योजनाओं की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि योग्य और कुशल प्रबन्ध-सूत्रसंचालकों के साथ संपूर्ण सहयोगियों, मित्रों, बन्धुओं और महासंमेलन के हितचिन्तकों का निकटतम और निर्निद्र सहयोग एवं सहायता हो, क्योंकि महासंमेलन का हित ही सर्वोपरि है। तभी सुफलप्राप्ति की आशा की जा सकती है। इसी शीघ्र, कुशल एवं आज्ञाकारितापूर्ण व्यवहार की आशा और विश्वास पर, जो कि उन कार्यों के पूर्ण करने के लिये, जिनके योग्य मुझे समझा जा रहा है, मेरे हाथ मजबूत करने के लिए मेरे प्रति होगा, मैंने प्रगति के इस स्थान पर आने को अलक्ष्य रखना अच्छा नहीं समझा। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात को अनुभव करता हूँ कि जैसे मैं अब तक बिना किसी आपत्ति के काम करता रहा हूँ उसी तरह करता रह सकता हूँ, और मेरा परिश्रम भी पहले से अधिक सफलतापूर्ण हो सकता है यदि मुझे सब प्रकार की आवश्यक सहायता मिलती रहे तो। यदि मेरे उस पद पर, जो कि मेरे लिए फूलों की सेज नहीं है, एक वर्ष और रहने का कुछ अर्थ हैं तो प्रत्येक सम्बन्धित व्यक्ति मेरे उपर्युक्त कथन की सराहना करेगा।

महासम्मेलन जगत् से जो समर्थन मुझे प्राप्त हुआ है उसके लिए अपने भावों का प्रदर्शन मैं शब्दों द्वारा नहीं कर सकता। अक्टूबर के आरम्भ से ही पत्रों और तारों की बाढ़ सी आ गई है। मेरे मित्रों ने मेरे प्रति जो प्रेम प्रदर्शित किया है उसके आभार के भार से मैं अवनत हूँ। यह सब कुछ तभी सार्थक होगा जब सबके स्वेच्छाप्रसूत, आज्ञाकारितापूर्ण एवं अतिमात्रा में प्राप्य सहयोग और सहायता से मैं आयुर्वेद तथा अपनी प्रिय संस्था के लिए अभीष्ट फलप्राप्ति में सफल हो सकूंगा।

कुछ मित्रों ने मेरा ध्यान उस कुटिल प्रचार की ओर खींचा है जो कुछ आयुर्वेदीय समाचारपत्रों तथा पुस्तिकाओं द्वारा किया गया है। मैं अपने मित्रों से कहूंगा कि वे ऐसी तुच्छ वस्तुओं के लेखकों पर दया करें और उदारता से काम लें। विरोधियों को भी मित्र ही समझना चाहिये। मैं घोर विरोध का सदा स्वागत करता हूँ। किसी भी जनतन्त्रात्मक संस्था में सुसंस्कृत, उच्चभावनाप्रसूत एवं सभ्यतापूर्ण विरोध उसके गौरव की वस्तु है। हमें अपने समाज में उच्च संस्कृतिजन्य सत्यप्रिय एवं स्वतंत्र विरोधी दल की अभी कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी है। हमें सन्तोष रखना चाहिये। क्षमा के सुन्दर शस्त्र से हम सब पर विजय पा सकते हैं।

अन्त में, मैं सबसे निवेदन करता हूँ कि प्रिय संस्कृति एवं संस्था के लिए इतिहास निर्माण के दृढ़ विचार से मणिपाल-सम्मेलन में सब लोग पधारने की कृपा करें। अपनी संस्था की उन्नति के विचार को हमें अपने मस्तिष्क में प्रमुख स्थान देना चाहिये।

विनीत—
महासेवक।

पत्रकार मित्रों के प्रति—

प्रिय महानुभाव,

आयुर्वेदीय आन्दोलन तेजी से प्रगतिशील हैं, आयुर्वेदीय पत्रकारकला भी अग्रसर हो रही है। इस जागृतिकाल में एक दूसरे का पूरक है। प्रत्येक पत्र अपने ढंग से उपयोगी कार्यों में रत है। परन्तु समय यह बताता है कि उद्योगों के समीकरण के बिना किसी प्रकार की उन्नति नहीं की जा सकती। आयुर्वेद के सम्बन्ध में तो यह बात और भी अधिक सत्य है, क्यों कि आयुर्वेद को अपनी संपूर्ण विरोधी शक्तियों का सामना करने के लिए एक सुदृढ़ और सुसंगठित मोर्चे की आवश्यकता है। यही कारण है कि भारतवर्ष के आयुर्वेदीय चिकित्सकों की एकमात्र केन्द्रीय और प्रतिनिधि संस्था, अ० भा० आयुर्वेद कांग्रेस, के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर हमारे पत्रकारों का एक वार्षिक सम्मेलन करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। यह तो स्वाभाविक है कि बिलकुल आरम्भ में प्रत्येक वांछनीय वस्तु की व्यवस्था नहीं की जा सकती। परन्तु एक बार अ० भा० सम्मेलन में मिलने के पश्चात् कार्य करने की जनतन्त्रात्मक प्रणाली सरल ... जा ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सर्वप्रथम 'जर्नल आफ आयुर्वेद' के सम्पादक के रूप में जनता के सामने आया था। यद्यपि परिस्थितियों ने मेरे जीवन की धारा एक भिन्न ही दिशा में बहा दी है, फिर भी मैं अपसे पहले प्रेम के लिए लालायित हूँ। मैं अपने सभी पत्रकार मित्रों से निवेदन करता हूँ कि वे उपयुक्त आन्दोलन को सफल बनाने में सहायक हों तथा आयुर्वेद कांग्रेस के सभी महत्त्वपूर्ण विषयों को अपने प्रतिष्ठित पत्रों में प्रकाशित करके उसकी प्रगति में सहायता प्रदान करें। भारतवर्ष विस्तार में महाद्वीप के समान है तथा उसकी प्रादेशिक इकाइयां भाषा में एक दूसरी से बहुत कुछ भिन्न हैं। ऐसे विशाल भारत के सम्पूर्ण वैद्यवर्गों में आयुर्वेद कांग्रेस का संदेश पहुँचाने के लिए केवल उसकी मुखपत्रिका ('आयुर्वेदमहासम्मेलन पत्रिका') कदापि पर्याप्त नहीं है।

मैं आशा करता हूँ कि आपके विनम्र सेवक का निवेदन व्यर्थ नहीं जायगा।

आपका सजातीय बन्धु,
—एम० के० मुखर्जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३४ वां नि० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन, मणिपाल (कर्णाटक)

स्वागत-समिति का निमन्त्रणपत्र ।

नि० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन तथा विद्यापीठ के सदस्यमहानुभाव !

श्रद्धेय महानुभाव !

हम स्वागतसमिति की ओर से आप को २८ दिसंबर और उसके बाद के दिनों में मणिपाल में होने वाले अ० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन के ३४ वें अधिवेशन में उपस्थित होने तथा भाग लेने के लिये सादर निमन्त्रित करते हैं। आपके अवलोकनार्थ विस्तृत कार्यक्रम नीचे दिया जा रहा है। अब आयुर्वेद अपने नवजीवन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान पर पहुँच गया है। आयुर्वेदोद्धार संबन्धी महत्त्वपूर्ण समस्याओं के समुचित हल के लिए इस समय आप सबकी उपस्थिति की अनिवार्य आवश्यकता है।

कविराज-कुलमणि, विश्रुतकीर्ति, राजवैद्य मणीन्द्रकुमार मुखोपाध्याय तीसरी बार महासंमेलन के सभापतिपद के लिये निर्वाचित हुये हैं।

आयुर्वेदशास्त्रनिष्णात, वैद्यावतंस, श्रीयुत पं० पुरुषोत्तम सखाराम शास्त्री हिर्लेकर (अमरावती-बरार) अ० भा० आयुर्वेदशिक्षासम्मेलन का सभापतित्व करेंगे।

पुनः पुनः आपकी उपस्थिति एवं सहयोग की प्रार्थना करते हुये,

हम हैं आप के विनीत,

ए० लक्ष्मीनारायणराव,
अध्यक्ष, स्वागतसमिति।

एम० बी० शास्त्री,
अध्यक्ष, शिक्षासंमेलन--स्वागतसमिति।

एम० आर० भट्ट, प्रधानमन्त्री, स्वागतसमिति।

कार्यक्रम।

२८ दिसम्बर—(१) प्रदर्शनी का उद्घाटन (३ बजे सायं)।

(२) योग-व्यायाम-संभाषा-परिषत्-भिषग्रत्न ए० लक्ष्मीपति बी० ए०, एम० बी० सी० एम०, की अध्यक्षता में (५ बजे सायं)

(३) विद्यापीठ--कार्यसमिति का अधिवेशन (६ बजे रात)

(४) महामण्डल की बैठक (१० बजे रात)

२९ दिसम्बर—(१) सभापति का जुलूस (८ बजे प्रातः)

(२) धन्वन्तरि-पताका-उत्तोलन—पं० शिवशर्मा जी आयुर्वेदाचार्य द्वारा (९ बजे प्रातः)

(३) महासम्मेलन का अधिवेशन—(क) स्वागताध्यक्ष का भाषण—श्री० ए० लक्ष्मीनारायण राव बी० ए०, बी० एल० द्वारा। (ख) सम्मेलन का उद्घाटन—मंगलौर के पूज्यपाद लार्ड बिशप द्वारा। (ग) सभापति का भाषण। (३ बजे सायं)

(४) शिक्षासम्मेलन का अधिवेशन—(क) स्वागतभाषण-वै० भू० एम० बी० शास्त्री द्वारा। (ख) उद्घाटन—पूज्यपाद श्री शीरूरमठाधीश द्वारा। (ग) सभापति का भाषण। (५ बजे सायं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) शिक्षासम्मेलन–विषयनिर्वाचनी का अधिवेशन (६ बजे सायं)।
(६) महासम्मेलन–विषयनिर्वाचनी का अधिवेशन (१० बजे सायं)।

३० दिसम्बर—(१) अ० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ–स्नातकसम्मेलन श्रीयुत पं० एम० वेंकट शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, पो० तेलाप्रोलू, जि० कृष्णा की अध्यक्षता में (६ बजे प्रातः)।
(२) कौमारभृत्यसंभाषापरिषत्—वैद्यगुरु श्रीमती सुमति बाई तारानाथ बी० ए०, एल टी०, प्रिंसिपल, प्रेम आयुर्वेदविद्यालय, तुंगभद्रा की अध्यक्षता में (१० बजे प्रातः)
(३) कायचिकित्सासंभाषापरिषत्—वैद्यगुरु श्री आर० के० वालवेकर, बी० एस० सी०, हुबली की अध्यक्षता में (११ बजे प्रातः)
(४) दर्शनसंभाषापरिषत्—आयुर्वेदविद्वान् श्री नंजुण्डा स्वामी, बी० एस० सी०, नंजनगुड की अध्यक्षता में (३ बजे सायं)
(५) शल्यशालाक्यचिकित्सासंभाषापरिषत्—श्री एन० एस० सुब्रह्मण्य शास्त्री, अभय आयुर्वेद रिसर्च हास्पिटल, मैसूर की अध्यक्षता में (सायं ५ बजे)
(६) अ० भा० आयुर्वेदपत्रकार संमेलन—श्रीयुत कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य–धनवन्तरि, प्रधान संपादक, आयुर्वेद महासंमेलनपत्रिका, प्रोफेसर, आयुर्वेद एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज, देहली, की अध्यक्षता में (सायं ६॥ बजे)
(७) अ० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ–स्नानकसम्मेलन (अन्तिम अधिवेशन)–(सायं ८ बजे)

३१ दिसम्बर—(१) त्रिदोषसंभाषापरिषत्—वैद्यराज पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य, प्रिंसिपल, ललितहरि आयुर्वेद कालेज, पीलीभीत की अध्यक्षता में (प्रातः ६ बजे)
(२) अ०भा० आयुर्वेद औषधव्यवसायी सम्मेलन आदि–वैद्य श्री गंगाधर विष्णु पुराणिक संचालक, श्री० धूतपापेश्वर लि०, पनवेल, की अध्यक्षता में (प्रातः ११ बजे)
(३) अ० भा० आयुर्वेद शिक्षासंमेलन (अन्तिम अधिवेशन)—(सायं ५ बजे)
(४) अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन (खुला अधिवेशन)—(सायं ६॥ बजे)

मार्ग।

(१) मद्रास से आने वालों के लिए — (क) मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन से मंगलौर के लिए मालाबार एक्सप्रेस सन्ध्या के समय चलती है। मंगलौर से उदीपी मोटरबस द्वारा पहुँचने में २, ३ घण्टे लगते हैं।

(ख) मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन से मैसूर को प्रतिदिन ३, ४ गाड़ियां जाती हैं। मैसूर से मोटरबस द्वारा मंगलौर पहुँचने में १० घण्टे लगते हैं।

(२) बम्बई, पूना, बेलगांव, हुबली आदि स्थानों से आने वालों के लिये—(क) एम० एण्ड एस० एम० रेलवे हरिहर जंकशन तक जाती है। हरिहर से मोटरबस द्वारा ६ घण्टे में उदीपी पहुँचा जा सकता है।

(ख) बम्बई से स्टीमर द्वारा भी उदीपी पहुँचा जा सकता है। मालूम हुआ है 'बम्बई स्टीम नेविगेशन कम्पनी' दिसम्बर से अपनी साप्ताहिक स्टीमर सर्विस बम्बई से माल्पी तक पुनः चालू करने वाली है। माल्पी मणिपाल से ६ मील दूर है। जो महानुभाव बम्बई से स्टीमर द्वारा आना चाहें उनको चाहिए कि वे सिन्धिया स्टीम नेविगेशन कम्पनी से पत्रव्यवहार करें। बम्बई से स्टीमर द्वारा माल्पी पहुँचने में दो दिन लगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) बेजवाड़ा से—हुबली तक एम० एण्ड एस० एम० रेल सीधी जाती है। हुबली से (रेलद्वारा) हरिहर स्टेशन केवल ४ मील दूर है।

हरिहर और मंगलौर स्टेशनों पर तथा उदीपी में सम्मेलन के लिए आने वाले सज्जनों की सुविधा के लिए २६ दिसम्बर से प्रत्येक रेलगाड़ी तथा प्रत्येक मोटरबस के पहुँचने के समय स्वागतसमिति के आदमी मिलेंगे।

(४) बंगलौर-मैसूर के मार्ग से आने की इच्छा रखने वालों को चाहिये कि वे अ० भा० आयुर्वेदमहामण्डल के सहायक मन्त्री, वैद्यभानु श्री डी० के० भारद्वाज, रामकृष्ण चिकित्सालय, बसवानगुडी, बंगलौर से तथा वैद्य श्री के० पी० पुराणिक, प्रधान मन्त्री, अखिल कर्णाटक आयुर्वेदमण्डल, लसडाउन बिल्डिंग, मैसूर से पत्रव्यवहार करें और अपने पहुँचने की तारीख तथा समय लिखकर उनके पास भेज दें, जिससे वे आगन्तुकों की सहायता कर सकें।

महासम्मेलन का स्थान, मणिपाल, उदीपी नगर से मिला हुआ ही है। इसकी जलवायु समशीतोष्ण है। यह एक पर्वतवत् उत्तुंग स्थान पर स्थित है। यहां से एक ओर अरबसागर और दूसरी ओर पश्चिमीघाट की पर्वतश्रेणियों का दृश्य बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। यहां डाक और तारघर मौजूद हैं तथा पानी के नल और बिजली की रोशनी का समुचित प्रबन्ध है।

—एम० आर० भट्ट, प्रधानमन्त्री, स्वागतसमिति, ३४ वां अ० भा० आयु० महासम्मेलन।

अ० भा० आयुर्वेदशिक्षासंमेलन के लिए निबन्धों के विषय—

(१) विषमज्वर—निदान और चिकित्सा।
(२) श्लीपदरोग—निदान और चिकित्सा।
(३) कुष्ठरोग—निदान और चिकित्सा।

आयुर्वेदविद्वानों से विनम्र निवेदन है कि वे उपर्युक्त विषयों पर निबन्ध लिखकर सम्मेलन से पूर्व निम्नलिखित पते पर भेज दें:—

प्रधान मन्त्री, स्वागतसमिति ३४ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन,
पो० मणिपाल, जि० द० कनारा।

स्वागतसमिति की ओर से—

इस वर्ष हमारा ३४ वां सम्मेलन ऐसे समय पर हो रहा है, जबकि हमारे भारतवर्ष के राष्ट्रीय नेता मुक्त हो गये हैं और स्वराज्य-सूर्य का उदय होने वाला है। अब वह समय आ गया है जब कि हमको भारतवर्ष के प्रमुख आयुर्वेदविद्वानों के, जो विश्वयुद्ध की समाप्ति पर शान्त वातावरण में इस सम्मेलन में भाग लेंगे, नेतृत्व में आयुर्वेद की उन्नति के सम्बन्ध में अपनी भावी नीति का निर्धारण करना चाहिए। इस सम्मेलन के अवसर पर एक विशाल आयुर्वेदीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है, जिसमें निम्नलिखित ४ विभाग होंगे—(१) विज्ञान विभाग (२) स्वास्थ्य विभाग (३) व्यापार विभाग (४) संस्कृति विभाग (साहित्य)।

विशेष जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें—प्रधान मन्त्री, स्वागतसमिति, ३४ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन, पो० मणिपाल, जि० दक्षिण कनारा। (मणिपाल में तारघर भी है)

मणिपाल में सम्मेलन की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। एक विशेष सभामण्डप का निर्माण हो रहा है। प्रतिनिधियों के लिए निवास स्थान, भोजन, बिजली की रोशनी आदि का प्रबन्ध किया जा रहा है।

—प्रधानमन्त्री, स्वागतसमिति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन

महामंडल--कार्यकारिणी समित (संयुक्त अधिवेशन)

स्थान—महामण्डल-कार्यालय, कलकत्ता ।

तिथि—-३-१२-४५, समय ४ बजे (मध्यान्होत्तर)

विचारणीय विषय—

(१) गताधिवेशन की कार्यवाही ।

(२) नवीन सदस्यताओं की स्वीकृति ।

(३) गतवर्ष का आडिटेड आय-व्यय-विवरण व स्थितिपत्र तथा नवीन वर्ष के लिए आनुमानिक आय-व्यय ।

(४) ३४ वें महासम्मेलन के लिए प्राप्त प्रस्तावावली ।

(५) विविध ।

———

महामण्डल अधिवेशन ।

स्थान – महासम्मेलन-मंडप, मणिपाल ।

तिथि – २८-१२-४५, समय ६ बजे सायं।

विचारणीय विषय—

(१) गताधिवेशन का कार्यविवरण ।

(२) वार्षिक कार्यविवरण, आडिटर की रपोर्ट, आय-व्यय-विवरण आदि ।

(३) प्रस्तावावली ।

(४) मिश्रित ।

वशंवद—श्री यादवेश्वर भट्टाचार्य,

स्थानापन्न प्रधान मंत्री, नि० भा० आयु० महामण्डल ।

नि० नि०—सभी सदस्य महानुभाव उपर्युक्त दोनों अधिवेशनों में उपस्थित होने की कृपा करें । यदि कारणवश सम्मिलित न हो सकें तो अपनी अमूल्य सम्मति भेज कर कृतार्थ करें ।

निवेदन ।

पत्रिका के गताङ्क में श्रीयुत कविराज गणेशदत्त जी सारस्वत बी० ए०,वैद्यतिलक ने ज महत्वपूर्ण विचार प्रदर्शित किये हैं, मैं उनकी ओर महासम्मेलन सदस्यों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । पत्रिका के गताङ्क और इस अंक में प्रकाशित महामण्डल—कार्यालय की सूचनाओं की ओर भी मैं सदस्यों का ध्यान विशेष रूप से खींचना चाहता हूं । प्रान्तीय महामण्डलों को अपना वार्षिक शुल्क दिसम्बर के अन्त तक अवश्य भेज देना चाहिये, जिससे कि प्रधानसंस्था के काम में रुकावट न पड़े । सम्बद्ध संस्थाओं तथा प्रान्तीय मण्डलों से निवेदन है कि वे आगामी वर्ष की रचनात्मक योजनाओं तथा कार्यप्रणाली के निर्धारण के लिये अ० भा आयुर्वेद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अपने मन्त्री या अधिकारी सदस्यों को भेजकर अपना प्रतिनिधित्व अवश्य किया करें ।

—जे० भट्टाचार्य,

स्थानापन्न प्रधानमन्त्री, अ० भा० आ० महामण्डल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचनायें।

१—अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का वर्ष दिसम्बर में समाप्त हो रहा है। अतः सदस्यों, सम्बद्ध संस्थाओं और ग्राहकों को अपना १९४६ का शुल्क ३१ दिसम्बर १९४५ तक अवश्य भेज देना चाहिए।

२—सब प्रकार के महासम्मेलन-सदस्यों, महासम्मेलन के प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डलों और महासम्मेलन-सम्बद्ध-संस्थाओं को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिये:—

प्रधानमंत्री, नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन-कार्यालय,
३९, ग्रेस्ट्रीट, हाटखोला—पो० आ०, कलकत्ता।

३—विद्यापीठसम्बद्धसंस्थाओं, विद्यापीठस्वीकृत अध्यापकों तथा विद्यापीठ परीक्षार्थियों को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहियेः—

मन्त्री, नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-कार्यालय, चिमनी मिल, देहली।

४—आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका—ग्राहकों और पत्रिका के विज्ञापनदाताओं को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहियेः—

प्रधान सम्पादक, आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका—कार्यालय,
चिमनी मिल, देहली।

५—शुल्क यथास्थान भेजना चाहिये। यथास्थान शुल्क न भेजने से सम्बन्धित व्यक्तियों और संस्थाओं को विलम्ब के कारण जो हानि उठानी पड़ेगी उसके लिये उत्तरदायी उपर्युक्त कार्यालय नहीं होंगे।

६—प्रत्येक पत्र में और मनीआर्डर के कूपन में पत्रव्यवहारकर्त्ता को अपना पूरा नाम और पूरा पता सुवाच्य और स्पष्ट अक्षरों में अवश्य लिख देना चाहिये। कूपन में यह भी लिख देना चाहिये कि रुपया किस उद्देश्य से भेजा है। ऐसा न करने वाले पत्रव्यवहारकर्त्ता के काम में विलम्ब होना सम्भव है। इस विलम्ब के लिये कार्यालय उत्तरदायी न होंगे।

७—महासम्मेलन और विद्यापीठ के सदस्यों को चाहिये कि वे उन बिजिनिस रिप्लाई लिफाफों को, जो मतपत्र भेजने के लिये भेजे गए थे, किसी अन्य प्रकार के पत्रव्यवहार में काम न लायें। कोई भी पत्र ऐसे लिफाफों में या मतपत्र के साथ नहीं आना चाहिये। —यादवेश्वर भट्टाचार्य, स्थानापन्न प्रधानमन्त्री, अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन, कलकत्ता।

विद्यापीठीयाः सूचनाः।

१—१९४५ तमे वर्षे उत्तीर्णानां प्रमाणपत्राणि दिसम्बरमासपर्यन्तं प्रस्तुतानि भविष्यन्ति। उपप्रमाणपत्राणि (Provisional certificates) मुद्राद्वयात्मकं नष्टप्रमाणपत्रप्रतिलिपयश्च (Duplicate certificates) सार्द्धद्विमुद्रात्मकं शुल्कं गृहीत्वैव प्रदीयन्ते नान्यथा।

२—यैरध्यापकमहाभागैः स्वकीयः १९४५ तमवर्षीयः पत्रिका-शुल्कः सदस्यशुल्को वा न प्रेषितस्तेषां छात्राणां प्रमाणपत्राणि कार्यालयात् प्रेषयिष्यन्ते।

३—परीक्षाफल-प्रमाणपत्र-प्रमाणपत्रप्रतिलिपिप्रभृतिविषयकपत्रव्यवहारे स्वकीय-पितृ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-केन्द्र-वत्सर-क्रमांक-गुरुनामानि कार्यालयशुल्कप्राप्तिपत्रसंख्या-तिथिश्चावश्यं लेखनीयानि। पत्रव्यवहारसङ्केतश्च सम्पूर्णः सुस्पष्टश्च लेख्यः। सर्वैरेव धनप्रेषकैर्धनादेशकूपने (Money order coupon) धनप्रेषणाभिप्रायोऽपि सुवाच्याक्षरैर्लेख्यः।

४—विद्यापीठीयव्यवस्थानुकूलं स्वीकृताध्यापकानामन्तेवासिन एव परीक्षाप्रवेशाधिकारं लभन्ते नेतरेषाम्।

५—ये स्वीकृताध्यापकाः स्वकीयां पत्रिकाग्राहकसंख्यां छात्राणां परीक्षावेदनपत्रेषु यथास्थानं न सन्निवेशयिष्यन्ते न तेषामन्तेवासिनः परीक्षाप्रवेशाधिकारं लप्स्यन्ते।

६—आवेदनपत्राणि नवम्बरमासारम्भादारभ्य दिसम्बरमासस्य पंचदशदिवसपर्यन्तमेव अशुल्कं समागतानि स्वीक्रियन्ते। तदनन्तरम् एकमुद्रात्मकेन विलम्बशुल्केन सह जनवरीमासस्य पंचदशतमतिथिपर्यन्तमप्यागता न स्वीकृतानि स्युः।

७—परीक्षाशुल्कग्रहणात्पूर्वमपि परीक्षावेदनपत्राणि कृतप्रार्थनेभ्यः प्रेषयितुं शक्यन्ते कार्यालयात्। न तु गतवर्षवत् परीक्षाशुल्कादानानन्तरमेव।

८—या विद्यापीठसम्बद्धसंस्थाः १९४६ तमेवर्षेऽपि विद्यापीठसम्बद्धा भवितुमिच्छन्ति ताः पञ्चरूप्यकमितं सम्बद्धसंस्थाशुल्कं नवम्बरमास एव प्रेषयेयुः। याश्च संस्थाः विद्यापीठेन नूत्नं सम्बन्धं स्थापयितुमिच्छन्ति ताः सम्बद्धताशुल्केन सार्धं स्वपूर्णपरिचयमपि प्रेषयेयुः।

९—परीक्षावेदनपत्राणि रजिस्ट्रीद्वारा कार्यालये प्रेषणीयानि। अरजिस्ट्रीकृतानि आवेदनपत्राणि यदि कार्यालये न प्राप्स्यन्ति तदा तज्जन्यहानेरुत्तरदायी परीक्षार्थी एव स्यान्न तु कार्यालयः।

१०—अस्मिन्वर्षे परीक्षावेदनपत्राणि कार्यालयात् अदत्तपूर्णडाकव्ययं प्रेषयिष्यन्ते, न तु रजिस्ट्रीद्वारा। असत्सु तेषु प्राप्तेषु त्वरितं कार्यालयः संसूचनीयः।

११—कार्यालय-सम्बन्धी पत्रव्यवहारो व्यक्तिगतनाम्ना न कार्यः।

१२—संस्कृत-हिन्दी--आङ्गलभाषा इत्येता एव भाषा पत्रव्यवहारे व्यवहार्याः, नेतराः।

१३—स्वगुणाङ्कजिज्ञासुभिः रूप्यकमेकं कार्यालये प्रेषणीयम्।

विद्यापीठ-मन्त्री

भूलसुधार।

अक्टूबर के अङ्क में पृष्ठ ३२ पर प्रधानमन्त्री के वक्तव्य में 'स्वीकृति प्रदान करनी होगी' से आगे इतना अंश छूट गया था:—

'नवीन विधान-पुस्तक (नियमावली) का मुद्रण समाप्तप्राय * है। देहली में योजना समिति का अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। उसकी रिपोर्ट प्रकाशित होने वाली है। इस के निर्देशों की पूर्ति के लिये सभी के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है। फार्माकोपिया कमेटी की मीटिंग अभी नहीं हुई। हम आशा करते हैं कि श्रीयुत पं० शिवशर्मा जी इसके संयोजन की व्यवस्था करने के लिये समय निकालेंगे। विद्यापीठ भी अपनी महाविद्यालय योजना के कार्य में दत्तचित्त है। ३४ वें अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन के लिये स्वागतसमिति की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। हम स्वागतसमिति के निकट संपर्क में है और उसके पथप्रदर्शन के लिये सब प्रकार की सहायता दे रहे हैं। सम्मेलन का कार्यक्रम शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।' —सम्पादक

* यह नियमावली अब अंग्रेजी में छपकर तैयार हो गई है। मू० ।!) है। —सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए निम्नलिखित पुस्तकें पढ़िये—

(१) आयुर्वेदप्रकाश (दो संस्कृत तथा हिन्दी टीकाओं सहित)—नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से स्वर्णपदकविभूषित, रसशास्त्र के प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण होने के लिए अवश्य पढ़िये, क्यों कि रसशास्त्र की यह सर्वोत्तम पाठ्यपुस्तक है। इसके अन्त में रसशास्त्र के प्रश्नोत्तर भी हमने छाप दिए हैं। नि० भा० आयु० विद्यापीठ के भू० पू० सभापति, मन्त्री, सब कालेजों के प्रिंसिपलों और विद्यार्थियों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। आप भी मंगाकर लाभ उठावें। मू० ४)

(२) आयुर्वेदिक प्रश्नोत्तरावली—भिषक्, विशारद तथा आयुर्वेदाचार्य परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए यह परम सहायक पुस्तक है। इससे सैकड़ों विद्यर्थी लाभ उठा रहे हैं। मू० ४)

पता—पं० सोमदेव शास्त्री, साहित्यायुर्वेदाचार्य, ए० एम० एस०, वाइस प्रिंसिपल, ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज, पीलीभीत (यू० पी०)।

ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर। (स्थापित १९२३ ई०)

(१) दमानाशक (रजि०)—खांसी, श्वास, और राजयक्ष्मा की अचूक औषधि। कीमत ३२ मात्रा १), १२५ मात्रा ३)

(२) अमृतविलासवटी (रजि०)—बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष के सम्पूर्ण रोगों की एक ही औषधि। कीमत २५ मात्रा १), १००मात्रा ३)

(३) गुप्त रोग का दारू (रजि०)—स्त्रियों के मासिक धर्म की खराबी को दूर करके संतान पैदा करती है। कीमत १४ मात्रा २), ५०) मात्रा ६)

(४) डाइवटी (रजि०)—मधुमेह की अचूक औषधि। कीमत २५ मात्रा ३), १०० मात्रा १०)। डाक-व्यय सबका पृथक्।

पता:—डा० जी० डी० शर्मा, बी० एल०, बी आर० एम० पी०, पी० ए० सी०, अध्यक्ष, ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर।

लौह भस्म

१८) सेर

अभ्रक भस्म

३०) सेर

सुविपुल ईंधन से तैयार होने वाली इन दोनों दिव्य भस्मों के निर्माण का प्रबन्ध हमने ईंधन बहुत देहात में किया है। हमारी योजना है कि इन भस्मों को अच्छी और सबसे सस्ती कीमत में देकर इनके प्रयोग और प्रचार में वृद्धि की जाये। अनेक वैद्यों ने हमारी इन भस्मों को प्रयोग कर पूर्ण सन्तोष प्रकट किया है। आप भी एक आने का टिकट भेज, नमूना मुफ्त मंगा, प्रयोग कर देख सकते हैं। ½ सेर से कम कोई भी भस्म पार्सल से नहीं भेजी जाती।

आसाम (कामरूप देश) की असली कस्तूरी

"कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा" अर्थात् आसाम की कस्तूरी सर्वश्रेष्ठ है। इसी सर्वश्रेष्ठ कस्तूरी के संग्रह का हमने आसाम में विशेष प्रबन्ध किया है। एक बार नमूना के लिये मंगाकर देखिये। वर्तमान मूल्य ४२) तोला है।

पता—आयुर्वेद सेवा आश्रम, २७ कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़े अभाव की पूर्ति

आयुर्वेद संसार को अभूत पूर्व दान

सचित्र शरीरक्रियाविज्ञान प्रकाशित हो गया।

आयुर्वेद की उन्नति की उत्कट अभिलाषा के कारण ही इस दुर्लभ ग्रन्थ का प्रकाशन युद्ध की इस संकट-घड़ी में किया गया है जब कि एक-एक शीट कागज के लिए कितनी कठिनाई उठानी पड़ रही है, यह सर्व विदित है।

आयुर्वेद में यह सर्वप्रथम स्तुत्य प्रयास हुआ है। इससे आयुर्वेद के एक प्रधान अंग की पूर्ति हुई है। वैद्यों पर डाक्टरों का यह आक्षेप रहा है कि वे शारीरिक ज्ञान से हीन चिकित्सक होते हैं। इस ग्रन्थ ने उन्हें मुँह तोड़ उत्तर दिया है

अभी तक शरीरक्रिया के बारे में आयुर्वेद में जो कुछ लिखा गया था वह अंग्रेजी ग्रन्थों का अनुवाद मात्र था, जिसका असर आयुर्वेद के छात्रों पर यह होता था कि वे आयुर्वेद को हीन मानने लगते थे।

इस ग्रन्थ के उदीयमान लेखक आयुर्वेदालङ्कार श्री रञ्जीतराय ने आयुर्वेदसिद्धान्त के आधार पर इसे मौलिक रूप में लिखा है जो आयुर्वेद की श्रेष्ठता का द्योतक है। जिन्हें अंग्रेजी के फिजियालाजी का ज्ञान है वे यदि इस ग्रन्थ को पढ़ेंगे तो देखेंगे कि विदेशी विज्ञान आयुर्वेद से बड़ा नहीं है।

इस गन्थ में इस विषय का व्यौरावद्ध वर्णन है कि शरीर का कौनसा अङ्ग क्या काम करता है। चिकित्सक के लिए यह जानना अत्यावश्यक है।

अंग्रेजी में तो इस प्रकार के ग्रन्थों का मूल्य पन्द्रह–बीस रुपये से कम होता ही नहीं है। हिन्दी और संस्कृत में भी अनुवाद ग्रन्थ का ही काफी मूल्य है। लेकिन हमने आयुर्वेद की सेवा के खयाल से इसका मूल्य बहुत कम रक्खा है। ५२ अध्याय, डिमाई ⅛ साइज के ६०० पृष्ठ जिनमें ५३ चित्र हैं, का मूल्य सिर्फ ६) रखा गया है। डाकव्यय ॥।≡) हैं।

पेशगी के साथ आर्डर भेज कर शीघ्र ग्रन्थ मंगवालें, नहीं तो दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

नोट:—आयुर्वेद के छात्र ५) रु० में ही यह ग्रन्थ पा सकते हैं। यदि वे अपने अध्यापक के पत्र के साथ पूरा मूल्य अग्रिम भेज देंगे तो उन्हें डाकव्यय नहीं लगेगा।

अस्थायी हैड आफिस—
कदम कुआँ, पटना।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन
कलकत्ता, पटना, झांसी, नागपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी शुभाशीर्वादयुक्त शुभ कामना

के लिये

आपका प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

कलकत्ता

सन् १८८४ ई० में संस्थापित होकर सन् १६४४ ई० की समाप्ति पर ६० वर्षों की सेवाओं के बाद "हीरक जयन्ती" के स्मरणीय अवसर पर आदरणीय आयुर्वेद के कर्णधार, प्रत्येक भारतीय वैद्य, आयुर्वेद हितैषी, आयुर्वेद पत्रकार, आयुर्वेदिक औषधालय, आयुर्वेदिक पुस्तकालय, आयुर्वेदिक विद्यालय, आयुर्वेद शिक्षक, आयुर्वेद विद्यार्थी तथा विभिन्न आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से आयुर्वेद की निरन्तर सेवा के हेतु

प्रोत्साहन प्राप्ति के लिये

प्रार्थना करता है।

कृपया शुभाशीर्वाद प्रेषित कर अनुग्रहीत करें।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि० कलकत्ता

युद्धकालीन प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ—देवधर (S. P.)

शाखाएं—

(१) हाथरस (U. P.) (२) नागपुर (C P.)

सेलडिपो—

पटना (Bihar)

प्रकाशक— क० आशुतोष मजुमदार, नई देहली। मुद्रक—अर्जन प्रेस, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका

(भारतीयायुर्वेदमहासम्मेलनाज्ञया प्रतिमासं प्रकाश्यते)

प्रधान सम्पादक :— कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि
एम० आर० ए० एस०, नई देहली।

सम्पादक :— रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य।

वर्ष ३२
अङ्क १२

देहली, दिसम्बर १९४५ ई०

वार्षिक मूल्य ५)
यह अङ्क ॥)

❀ लेख-सूची ❀

१—संपादकीय ५
२—महामण्डल-कार्यकारिणी समिति (संयुक्त अधिवेशन) ७
३—विद्यापीठ कार्यसमितेः पञ्चमाधिवेशनम् ८
४—प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय ९
५—त्रैदोषिकप्रश्नोत्तराणि १२
६—Treatment by Massage १४
७—पञ्चकर्मविनिश्चय २१
८—कम्पिल्ल गुणविधान २४
९—आयुर्वेदराष्ट्रपतियात्रा २७
१०—विद्यापीठकार्यसमितेश्चतुर्थाधिवेशनस्यकार्यविवरणम् ३२
११—३४ वें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का कार्यक्रम ३५
१२—नूतनसमाचार और सूचनायें। ३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागार्जुन

—ने—

अनेक शताब्दी पूर्व अपनी अलौकिक और असाधारण प्रतिभा के बल से गतगौरव आयुर्वेद को पुनः प्रतिष्ठापित किया था।

—आज—

आयुर्वेद फिर स्खलित-गौरव, हतमान और विपर्यस्त हो गया है।

अतः नागार्जुन के पवित्र नाम की ध्वजा लेकर,

कर्मकुशल और लब्धप्रतिष्ठ वैद्य

पाश्चात्यशिक्षानिपुण चिकित्सक

—एवं—

रसायनशास्त्र-निष्णात वैज्ञानिक

की देख-रेख में परिचालित

नागार्जुन आयुर्वेद रिसर्च इनस्टिट्युट

—ने—

आयुर्वेद की सेवा में आत्मनियोग किया है!

विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधियां प्रस्तुत करने के कारण इस संस्था को बत्तीसवें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से प्रथम श्रेणी का प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ है।

औषधि-परिचय बिना मूल्य भेजा जाता है!

कार्यालय का पता—

बेलियाघाटा मेनरोड, कलकत्ता।

रसशाला का पता—

दमदम कैंट, (बंगाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज प्रकाशित अत्युत्तम वैद्यक ग्रन्थ

१—सचित्र रसरत्नसमुच्चय—अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित ५)

२—मेघविनोद—सरल हिन्दी। आयुर्वेद का अपूर्व ग्रन्थ है, पहली बार छपा है ४)

३—चरकसंहिता—श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया तथा श्रीवाग्भट-शिष्याचार्यवर-जेज्जटविरचितया निरन्तरपदव्याख्यया च संवलिता। आयुर्वेदाचार्येण श्री० पं० हरिदत्तशास्त्रिणा संशोधिता। दो जिल्दों में सम्पूर्ण। मूल्य ११)

४—भैषज्यरत्नावलिः— श्रीगोविन्ददासप्रणीता। कविराजश्रीज्ञानेन्द्रनाथमित्रैः संस्कृता परिवर्द्धिता च। आयुर्वेदाचार्य-कविराज-श्रीनरेन्द्रनाथशास्त्रिणा विरचितया रत्नोज्ज्वलाख्यया संस्कृतटीकया समलंकृता। मूल्य ८)

५—चक्रदत्तः—श्रीशिवदासेन कृतया तत्त्वचन्द्रिकासमाख्यया टीकया समलंकृतः। ३॥)

६—त्रिदोषविमर्शः—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गतत्रिदोषवाक्यसंग्रहश्च। ले० पण्डितो धर्मदत्तः। मूल्य १॥)

७—रसेन्द्रचूडामणिः—श्रीसोमदेवविरचितः। मूल्य २)

८—सुश्रुतसंहिता (सचित्रा)—मूलमात्रम्। मूल्य ३)

९—माधवनिदानम्—मधुकोशव्याख्यया समुल्लसितम्, परिशिष्टनिदानेन च संयोजितम्। २॥

१०—अष्टाङ्गहृदयम् — विद्वद्वरश्रीमदरुणदत्तकृता सर्वाङ्गसुन्दराख्या टीका तथा मौद्गल्यटिप्पणी च। ६)

११—रसहृदयतंत्रम्—भगवद्गोविन्दपादविरचितं तथा मुग्धावबोधनीव्याख्यासहितम् २।)

१२—रसेन्द्रसारसंग्रहः—मूलमात्र, गुटका। १)

१३—भावप्रकाशनिघंटु—श्री पं० विश्वनाथजी कृत सरल हिन्दी अनुवाद। अनुवाद में कोई बात छूटने नहीं पाई। अत्यन्त विस्तृत तथा उपयोगी। ४॥)

१४—चरकसंहिता—श्री जयदेवविद्यालङ्कारकृत सरलहिन्दी अनुवादसहित। द्वितीयसंस्करण। सम्पूर्ण मूल्य २५)

१५—योगरत्नाकार—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। १५)

१६—भैषज्यरत्नावली— श्री जयदेव विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीयावृत्ति। संपूर्ण पुस्तक १८०० पृष्ठों में समाप्त है। मू० १०), दो बढ़िया जिल्दों में।

१७—गुणों का खजाना — स्वा० परमानन्दकृत। इसमें अनेक आजमाये हुए फकीरी नुसखे हैं। २)

१८—शल्यतन्त्र (सचित्र)—श्री अत्रिदेवकृत, सरलहिन्दी में। शल्य (चीरफाड़ जर्राही) विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ। ४)

१९—ज्वरतिमिरभास्कर—कायस्थचण्डविरचित तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४)

२०—सचित्र रसेन्द्रसारसंग्रह—कविराज श्री विद्याधरकृत हिन्दी अनुवाद। जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण ६०० पृष्ठ। ४)

२१—नवनावनीतक—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सरलहिन्दी अनुवाद सहित। ३)

२२—भावप्रकाश—केवल ज्वराधिकार। श्री पं० हरिदत्त जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित १।)। इनके अतिरिक्त हमारे यहां सब प्रकार के चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत रियायत से मिलते हैं। प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता—

मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए निम्नलिखित पुस्तकें पढ़िये—

(१) आयुर्वेदप्रकाश (दो संस्कृत तथा हिन्दी टीकाओं सहित)—नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से स्वर्णपदकविभूषित, रसशास्त्र के प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण होने के लिए अवश्य पढ़िये, क्योंकि रसशास्त्र की यह सर्वोत्तम पाठ्यपुस्तक है। इसके अन्त में रसशास्त्र के प्रश्नोत्तर भी हमने छाप दिए हैं। नि० भा० आयु० विद्यापीठ के भू० पू० सभापति, मन्त्री, सब कालेजों के प्रिंसिपलों और विद्यार्थियों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। आप भी मंगाकर लाभ उठावें। मू० ४)

(२) आयुर्वेदिक प्रश्नोत्तरावली—भिषक्, विशारद तथा आयुर्वेदाचार्य परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए यह परम सहायक पुस्तक है। इससे सैकड़ों विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। मू० ४)

पता—पं० सोमदेव शास्त्री, साहित्यायुर्वेदाचार्य, ए० एम० एस०, वाइस प्रिंसिपल, ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज, पीलीभीत (यू० पी०)।

ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर। (स्थापित १९२३ ई०)

(१) दमानाशक (रजि०)—खांसी, श्वास, और राजयक्ष्मा की अचूक औषधि। कीमत ३२ मात्रा १), १२५ मात्रा ३)

(२) अमृतविलासवटी (रजि०)—बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष के सम्पूर्ण रोगों की एक ही औषधि। कीमत २५ मात्रा १), १००मात्रा ३)

(३) गुप्त रोग का दारू (रजि०)—स्त्रियों के मासिक धर्म की खराबी को दूर करके संतान पैदा करती है। कीमत १४ मात्रा २), ५०) मात्रा ६)

(४) डाइवटी (रजि०)—मधुमेह की अचूक औषधि। कीमत २५ मात्रा ३), १०० मात्रा १०)। डाक-व्यय सबका पृथक्।

पताः—डा० जी० डी० शर्मा, बी० एल०, बी आर० एम० पी०, पी० ए० सी०, अध्यक्ष, ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर।

लौह भस्म	अभ्रक भस्म
१८) सेर	३०) सेर

सुविपुल ईंधन से तैयार होने वाली इन दोनों दिव्य भस्मों के निर्माण का प्रबन्ध हमने ईंधन बहुत देहात में किया है। हमारी योजना है कि इन भस्मों को अच्छी और सबसे सस्ती कीमत में देकर इनके प्रयोग और प्रचार में वृद्धि की जाये। अनेक वैद्यों ने हमारी इन भस्मों को प्रयोग कर पूर्ण सन्तोष प्रकट किया है। आप भी एक आने का टिकट भेज, नमूना मुफ्त मंगा, प्रयोग कर देख सकते हैं। ¼ सेर से कम कोई भी भस्म पार्सल से नहीं भेजी जाती।

आसाम (कामरूप देश) की असली कस्तूरी

"कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा" अर्थात् आसाम की कस्तूरी सर्वश्रेष्ठ है। इसी सर्वश्रेष्ठ कस्तूरी के संग्रह का हमने आसाम में विशेष प्रबन्ध किया है। एक बार नमूना के लिये मंगाकर देखिये। वर्तमान मूल्य ४२) तोला है।

पता—आयुर्वेद सेवा आश्रम, २७ कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलेरिया बुखार के लिये कुनीन की जगह क्या इस्तेमाल करेंगे?

— ऊंझा फार्मेसी की —

एल्स्टो पिल्स (सप्तपर्णावटी)

सप्तपर्ण (Alstonia Scholaris) कालमेघ, कुटकी आदि के घनसत्वों से बनाई गई है। डीमक वो० २ पृ० ३८७-८८ पर लिखा है कि सप्तपर्ण की छाल में डीटेन नाम का सत्त्व है। मलेरिया, जीर्णज्वर, शीतज्वर और विषमज्वर में यह कुनीन-सल्फ से हजारगुनी अच्छी है। ६ या १२ गोली में ज्वर दूर हो जाता है। कीमत में भी दूसरी दवाइयों से सस्ती पड़ती है। सैकड़ों वैद्यों, डाक्टरों और धर्मार्थ औषधालयों ने आजमाइश करके इसे मलेरिया बुखार के लिए अक्सीर साबित किया है।

कीमत ४२ गोली ।।=), ५०० गोली (१० तो०) ३।।)

विवरण के लिए पैम्फिलिट मुफ्त मंगाइये।

ऊँझा फार्मेसी लिमिटेड, ऊँझा (उ० गुजरात)

हर जगह हमारे एजेन्ट या व्यापारी के यहां मिलती है।

श्रीमान् माधवाचार्यकृत

आयुर्वेदाचार्य श्रीगुलराज शर्मा मिश्र कृत अर्थविद्योतिनी तथा भावार्थप्रकाशिनी संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेदप्रकाश

यह एक ही अध्याय की टीका नहीं है, किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ (छहों अध्याय) की ऐसी सरल टीका है कि इसके पढ़ने वाले छात्र आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदविशारद और आयुर्वेदभिषक् परीक्षाओं को सहज में पास कर सकते हैं। यह टीका इसीलिए लिखी गई है कि आयुर्वेद महाविद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों को अच्छी सहायता दे सके। इस एक ही ग्रन्थ के पास रखने से रसकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसेन्द्रसारसंग्रहादि किसी भी रसग्रन्थ की आवश्यकता नहीं रहती। विद्वान् टीकाकार ने नाना तन्त्रों के उद्धरण दे देकर विषय को नितान्त स्पष्ट कर दिया है। इस ग्रन्थ की विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इतने पर भी कागज की महंगाई आदि की ओर न देखकर इसका लागतमात्र मूल्य ४) ही रक्खा गया है।

बसवराजयिम्— नित्यनाथ, पूज्यपादादि सिद्धों के अचूक रसों का प्राचीन संग्रह अवश्य देखिये। मूल्य ५)

मिलने का पता—प्राणाचार्य श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी,

आचार्य—श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदमहाविद्यालय, सीताबर्डी, नागपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक भस्में आश्चर्यजनक

सस्ते मूल्यों पर

स्टाक समाप्त होने पर इन भावों पर फिर माल न मिल सकेगा।
अतः शीघ्रता कीजिये, अन्यथा पछताना पड़ेगा।

हमारे कार्यालय में निम्नलिखित भस्में निम्न अंकित परिमाणों में इस समय तैयार पड़ी हैं। इनको शीघ्र विक्रय करने के विचार से हमने इसे लागत मात्र पर देने का निश्चय किया है।

गारण्टी; हम इस बात की पूरी गारण्टी देते हैं कि हमारी भस्में सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार केवल उपलों से तैयार की गई हैं और पूर्ण गुणकारी हैं। अन्य कई फार्मेसियों की भांति लकड़ी से अथवा पत्थर के कोयलों से तैयार नहीं की जातीं।

नाम भस्म	वर्तमान स्टाक	रियायती भाव	नाम भस्म	वर्तमान स्टाक	रियायती भाव
अभ्रक वज्रभस्म (१० पुटी)	२मन	२७) सेर	प्रवाल भस्म	६।। मन	३८) सेर
,, ,, (३० पुटी)	२। ,,	४५) ,,	मण्डूर भस्म	३।। ,,	२०) ,,
अभ्रक श्वेत भस्म	३ ,,	१०) ,,	स्वर्ण माक्षिक	१।।। ,,	२३) ,,
कान्त लोह भस्म	२ ,,	२५) ,,	लोह भस्म	३ ,,	१८) ,,
कपर्दिका भस्म (पीली कौडी)	३ ,,	८) ,,	शंख भस्म	३ ,,	७) ,,
गोदन्ती भस्म	५ ,,	३।।) ,,	शृंग राज भस्म	१।। ,,	१२) ,,
त्रिवंग भस्म	३५ सेर	४२) ,,	मुक्ता शुक्ती भस्म	२ ,,	६) ,,

नोटः—(क) कोई भी भस्म उपरोक्त भावों पर आधा सेर से कम न भेजी जावेगी। कम वज़न के आर्डर साधारण सूचीपत्र के भाव पर सप्लाई होंगे।

(ख) वर्तमान स्टाक के समाप्त होने पर हम उपरोक्त भावों पर बाद के आर्डरों की सप्लाई के जिम्मेवार न होंगे।

(ग) हमारे कारखाने में हर प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियां, भस्में रस, कूपीपक्व रसायनें, आसवारिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तेल, पर्पटी, सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार बड़े भारी परिमाण में मशीनों द्वारा तैयार होती हैं। इसके अतिरिक्त वनस्पति तथा खनिज द्रव्य भी बहुत सस्ते मूल्य में भेजे जाते हैं।

किसी भी अन्य स्थान से कोई औषधि मंगाने से पहिले हमारे भाव अवश्य देखें।

काश्मीर आयुर्वेदिक वर्क्स, नं० २, जी. टी. रोड, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

कविराज आशुतोष मजुमदार ।

३४ वां नि० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन ।

मणिपाल (दक्षिण कनारा) में संमेलन की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं । प्रतिनिधियों तथा अतिथियों के लिये आवासगृहों भोजनालयों और सभामण्डप का निर्माण भी हो गया है। संमेलन में विशिष्ट विद्वानों और महापुरुषों को निमन्त्रित किया गया है। संमेलन २८ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक होगा । संमेलन का संशोधित कार्यक्रम इस अंक में प्रकाशित कर दिया गया है। भारतवर्ष के संपूर्ण वैद्यों तथा आयुर्वेदप्रेमियों को चाहिये कि वे समेलन की संपूर्ण कार्यवाहियों में भाग लेकर उसे सफल बनावें तथा देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुये आयुर्वेद के भविष्य के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय करें ।

सम्मेलन में केवल वे ही प्रस्ताव स्वीकृत किये जावें, जिनको पूरा करना अग्रिम वर्ष में अभीष्ट हो । प्रस्ताव पास करके रद्दी की टोकरी में डाल देने से प्रस्ताव पास न करना अच्छा । प्रतिनिधियों से हमारा निवेदन है कि वे केवल महत्वपूर्ण प्रस्ताव ही पास करें और जो भी प्रस्ताव पास हों उन सब को १९४६ में पूरा करना अधिकारियों का प्रधान लक्ष्य होना चाहिये ।

परमावश्यक निवेदन ।

पत्रिका के गताङ्क में विद्यापीठ-मन्त्री श्रीयुत कविराज उपेन्द्रनाथदास का 'परमावश्यक निवेदन' प्रकाशित हुआ है । पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें और मन्त्री जी ने विद्यालय की जो योजना बनाई है उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिये तन, मन, धन से उद्योग करें । विद्यापीठ एक अखिल भारतीय संस्था है । उसका विद्यालय भी तदनुरूप ही विशाल होना चाहिये । ऐसे विशाल विद्यालय की स्थापना के लिये आरम्भ में न्यूनातिन्यून दो करोड़ रुपये की आवश्यकता है । देखने में यह धन राशि बहुत प्रतीत होती है, परन्तु भारतवर्ष जैसे विशाल देश के लिए यह नगण्य है । यदि वैद्य लोग उद्योग करें तो ६ मास में ही इतना धन एकत्र हो सकता है । महासम्मेलन तथा विद्यापीठ के अध्यक्षों को अग्रिम वर्ष में ही रुपया एकत्र कर विद्यालय की स्थापना का श्री गणेश कर देना चाहिये ।

अ० भा० वैद्य-डाइरेक्टरी ।

जिन वैद्य महानुभावों ने वैद्य-डाइरेक्टरी के लिए मसाला तैयार किया हो वे उसे अपने प्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल के कार्यालय में भेज दें । प्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल ऐसी प्राप्त सामग्री को १५ जनवरी १९४६ तक पत्रिका-कार्यालय में भेजने की कृपा करें । जिन प्रान्तों में संगठित प्रान्तीय मण्डल नहीं है, उन प्रान्तों के वैद्य पत्रिका-कार्यालय से सीधा पत्र-व्यवहार कर सकते हैं । वैद्य-डाइरेक्टरी में केवल वैद्यों और संस्थाओं के पूरे पते छपेंगे, ब्लाक, परिचय, जीवन चरित्र आदि नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों के प्रति।

अब पत्रिका के लिये अधिक कागज मिलने लगा है, और उसमें गवेषणात्मक लेखों के छापने का पूरा प्रबन्ध कर दिया है। अतः उच्च कोटि के विद्वानों को समय समय पर अपने विद्वत्तापूर्ण लेख भेजते रहना चाहिये। लेख मौलिक और गवेषणापूर्ण होने चाहिये। क्लिनिकल रिपोर्ट भी भेजनी चाहिये।

अखिलभारतवर्षीय आयुर्वेदपत्रकार संमेलन।

अखिलभारतवर्षीय आयुर्वेदपत्रकारसंमेलन प्रतिवर्ष करने की कोशिश कई बार की गई, परन्तु अभी तक उसमें सफलता नहीं मिली। इस बार यह सम्मेलन अ० भा० आयुर्वेद-महासम्मेलन के साथ ही मणिपाल में फिर हो रहा है, और ऐसा विचार है कि अब भविष्य में इसे प्रतिवर्ष इसी भांति किया जावे। इस समय आयुर्वेदीय पत्रकारों के संगठन की महान् आवश्यकता है। हिन्दी, अंग्रेजी, तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं के दैनिक पत्रों के पत्रकारों के संगठन पूर्ण हो चुके हैं और उन्होंने अपनी उन्नति की बहुत सी समस्यायें हल भी कर ली हैं, परन्तु आयुर्वेदीय पत्रकारों का अभी तक कोई संगठन नहीं है। इसी लिये आयुर्वेदीय पत्रकारों की राजनीति तथा वैद्यसमाज और जनता में कोई आवाज नहीं है। बिना संगठन के पत्रकारों के हित सुरक्षित नहीं रह सकते। अतः भारतवर्ष के संपूर्ण आयुर्वेदीय पत्रकारों से निवेदन है कि वे इस शुभ अवसर पर अवश्य उपस्थित हों तथा भविष्य की समस्याओं पर विचार करते हुए एक दृढ़ संगठन का आरम्भ इसी वर्ष से कर दें।

सौभाग्य से इस पत्रकारसम्मेलन के सभापति अ० भा० आयुर्वेदमहासमेलन की मुख-पत्रिका (आयुर्वेदमहासंमेलनपत्रिका) के प्रधान संपादक श्रीयुत कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि (नई देहली) निर्वाचित हुये हैं। आप एक अत्यन्त उत्साही, पत्रकार-कलाकुशल, योग्य, नवयुवक हैं। हमें आशा है आप की अध्यक्षता में यह संमेलन अवश्य ही कोई महत्वपूर्ण निर्णय करेगा और संगठन की आधारशिला स्थापित कर उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

—रामचन्द्र शर्मा।

सच्चे मोती।

वैद्यो! हकीमो!! तथा फार्मेसीवालो!!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन मोती वगैरा, जो दवा के काम के लिये सर्वोत्तम हैं तथा जो भारतवर्ष के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पताः—नगीनदास वीरचन्द जवेरी, ४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन

महामण्डल-कार्यकारिणी समिति (संयुक्त अधिवेशन)

स्थान—महामण्डल-कार्यालय, कलकत्ता।
तिथि—३-१२-४५, समय ४ बजे (मध्यान्होत्तर)

सभापति कविराज एम० के० मुखर्जी के अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—कविराज सुन्दरकुमारदास, रवीन्द्रदेव भट्टाचार्य, रमणीरंजन भट्टाचार्य, शैलेन्द्रचन्द्र चौधरी, मोहिनीमोहन सेन, सत्यकिंकर सेन, यादवेश्वर भट्टाचार्य, किशोरीमोहनदास, कुमुदनाथ सेन, मणीन्द्रलालदास गुप्त, विजयकाली भट्टाचार्य, तथा वैद्य रामप्रसन्न मिश्र।

निम्नलिखित अनुपस्थित सदस्यों की पत्रद्वारा प्राप्त सम्मतियां पढ़ कर सुनाई गईः—श्रीयुत वैद्य ब्रह्मदत्त शर्मा (भुसावल), देवराज मिश्र (अमृतसर), पी० एच० देशपाण्डे (पूना), एल० आर० मलेकर (बम्बई), डी० के० भारद्वाज (बंगलौर), चुन्नीलाल रेवाशंकर (बड़ौदा), हीराम शर्मा (कराची), दलपतराम दवे (अहमदाबाद), वंशीधर शर्मा (अजमेर), बी० बी० कृष्ण शास्त्री (बंगलौर), पार्थनारायण पंडित (मैसूर), शिव शर्मा द्विवेदी (अजमेर), तथा विरिंचीलाल (इस्लामपुर)।

गताधिवेशन–कार्यविवरण की स्वीकृति के अनन्तर निम्नलिखित सदस्यताओं की स्वीकृति हुई :—संरक्षक सदस्य श्रीयुत प्रताप सेठ (अमलनेर)। आश्रयदाता सदस्य—श्रीयुत अम्बालाल जोशी (जोधपुर), श्रीयुत नरेशचन्द्र घोष (कलकत्ता)। आर्जवन सदस्य–इलमसिंह नाहल (अमृतसर), क० मोहिनीमोहन सेन (वशीरहाट), क० धीरेन्द्र नाथ भाट्टाचार्य (कलकत्ता), क० धर्मदत्त चौधरी (लाहौर), श्री वाचस्पति शर्मा (मेरठ)। संवद्धसंस्य—हैदराबाद स्टेट महाराष्ट्रीय आयुर्वेदमण्डल (नन्देड़)। तथा कुछ मान्यसदस्य।

तत्पश्चात् आ० महासंमेलन और विद्यापीठ के आडिट किये हुये हिसाब, सन्तुलनपत्र तथा आनुमानिक आयव्ययपत्रों पर विचार हुआ और वे स्पष्टीकरणों के पश्चात् स्वीकृत हुए। विद्यापीठ के १९४५—४६ के बजट तथा दैनिक लैन-दैन आदि की व्यवस्था के विषय में आडिटर के सुझावों के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि विद्यापीठ-अधिकारियों से परामर्श करके मामला तय किया जाय। इस सम्बन्ध में विद्यापीठ-कार्यकारिणी के गताधिवेशन के निर्णय को यह मीटिंग सामान्य रूप से स्वींकार करती है।

३४ वें महासंमेलन के लिए आए हुए प्रस्तावों पर विचार हुआ। मन्त्रियों को अधिकार दिया कि वे उन्हें आगामी मणिपाल—संमेलन में उपस्थित किये जाने के लिए तैयार करलें।

कुछ ऐसे भी प्रस्ताव आए थे जिनमें पदाधिकारियों पर यह लांछन लगाया गया था, कि उन्योंने कविराज प्रतापसिंह जी तथा वैद्य रामशंकर जी से महासंमेलन वे उस धन को प्राप्त करने के लिए जो उनके व्यक्तिगत नामों में पोस्टल कैश सर्टिफिकेटों के रूप में यों ही पड़ा हुआ है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत बेजवाड़ा महासंमेलन के प्रस्ताव के अनुसार अभी तक भी कोई कार्यवाही नहीं की है। इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री ने बताया कि महासंमेलन--निधिसमिति के प्रधान मन्त्री ने सूचित किया है कि मामला तय होने की शक्ल में आगया है और ऐसी आशा की जाती है कि महासंमेलनाधिवेशन से पूर्व ही सब बात ठीक हो जायगी।

३५ वें महासंमेलन के लिए कानपुर के निमन्त्रण पर विचार हुआ। युक्तप्रान्तीय आ० महामण्डल ने इसे स्वीकृति दे दी है। गताधिवेशन से ही यह प्रस्ताव स्वीकृति की प्रतीक्षा में था। इस अधिवेशन में इसे स्वीकार कर लिया गया।

कार्यालय-सहायक, श्री अरुणांशु विमल मुखर्जी ने बिना वेतन और भत्ते के अपना अवकाश बढ़ाने की प्रार्थना की थी। उनकी प्रार्थना स्वीकार कर एक मास का अवकाश और दिया गया।

संपूर्ण कार्यवाही सर्वसंमति से हुई।

जे० भट्टाचार्य,
प्रधानमन्त्री (के वास्ते)

नि०भा० आयुर्वेदविद्यापीठ--कार्यसमितेः पंचमाधिवेशनम्।

स्थानम्—महासंमेलन-सभामण्डपः, मणिपाल (द० कनाडा)।
समयः—ता० २८--१२--४५, रात्रौ नववादनतः।

विचारणीयविषयाः—

१—गताधिवेशनस्य कार्यविवरणम्।
२—अग्रिमवर्षार्थं सम्बद्धसंस्थानां स्वीकरणम्।
३—शिक्षासंमेलने उपस्थापनीयेषु प्रस्तावेषु विचारः।
४—मिश्रितविषयाः।

सर्वेषां सदस्यमहाभागानामुपस्थितिः प्रार्थ्यते।

निवेदकः—
श्रीउपेन्द्रनाथदासः
विद्यापीठ—मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद का इतिहास

प्राचीन भारतवर्ष के विश्वविद्यालय

[ले०—श्रीयुत डा० राधाकुमुद मुखर्जी, प्रोफे०, लखनऊ विश्वविद्यालय]

(गताङ्क से आगे)

[४]

भारतीय विश्वविद्यालयों का सर्वोत्तम वर्णन दो चीनी यात्रियों ने किया है। ह्वानच्वांग ने ६२६ ई० से ६४५ ई० तक १६ वर्ष बौद्धधर्म के अध्येता के रूप में भारत का भ्रमण किया। इन १६ वर्षों में से ५ वर्ष उसने नालन्दा विश्वविद्यालय में छात्र के रूप में रहते हुये विताये। इत्सिग इस विश्वविद्यालय में ६७५ ई० से ६८५ ई० तक १० वर्ष छात्र रहा। ह्वानच्वांग लिखता है कि—"विदेशी छात्र अपनी शङ्काओं का समाधान कराने के लिये नालन्दा आया करते थे और उसके पश्चात् विश्रुत हो जाते थे"। आगे चलकर वह लिखता है—"इन विदेशों से आये हुए छात्रों में से, जो शास्त्रार्थ के विद्यालयों में प्रविष्ट होना चाहते थे, अधिकांश प्रश्नों की कठिनता से क्लान्त होकर लौट जाते थे और केवल वे ही भर्ती किये जाते थे जो प्राचीन और नवीन विद्या के गंभीर विद्वान् होते थे। दस में से केवल दो या तीन ही प्रवेश पाने में सफल हो पाते थे।" इसका यह अर्थ है कि विश्वविद्यालय की प्रवेश-परीक्षा में केवल २० प्रतिशत के लगभग छात्र उत्तीर्ण हो पाते थे और शेष ८० प्रतिशत अनुत्तीर्ण हो जाते थे। इस प्रकार विश्वविद्यालय में केवल ऐसे चुने हुए विद्वान् ही प्रविष्ट हो सकते थे जो उसके "शास्त्रार्थ विद्यालयों" में, जिन से ही प्रधानतया विश्वविद्यालय बना होता था, प्रतिनिहित उसके उच्चतम श्रेणी के विद्यालयीय जीवन में भाग ले सकें। इस प्रकार, नालन्दा विश्वविद्यालय का विद्यार्थी होना उस समय सर्वोच्च विद्यालयीय योग्यता मानी जाती थी। ह्वानच्वांग लिखता है, "जो कोई येन केन प्रकारेण नालन्दी भाई का नाम पा जाता था, वह जहां जाता था, वहीं उसका आदर होता था।" इस कथन की पुष्टि इत्सिग ने इस प्रकार की है—"वहां पर प्रतिष्ठित और सर्वशास्त्रनिष्णात विद्वान् बहुत भारी संख्या में एकत्र होते हैं; संभव और असंभव सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ करते हैं और जब विशिष्ट विद्वान् उनके विचारों की श्रेष्ठता मान लेते हैं तो अपनी विद्वत्ता के लिए दूर दूर तक विख्यात हो जाते हैं।" ह्वानच्वांग ने यह कह कर इस विषय को और भी स्पष्ट कर दिया है कि नालन्दा के विद्यार्थियों को "संपूर्ण भारतवर्ष आदर्श समझता था।" उसने नालन्दा के ऊंचे दर्जे के विद्यालयीय जीवन का चित्र भी खींचा है। इतने ऊंचे दर्जे का जीवन आजकल किसी भी विश्वविद्यालय में शायद ही दृष्टिगोचर हो। वह लिखता है—"इस संस्था में कुछ हजार भाई पढ़ते थे, जो सभी योग्य और विद्वान् थे। इनमें से कुछ हजार बड़े प्रतिष्ठित और विख्यात थे। विद्याध्ययन करते २ और शास्त्रार्थ करते २ यह भी मालूम न पड़ता था कि दिन किधर बीत गया। वे रात दिन एक दूसरे को अनुशासित करते रहते थे और छोटे बड़े सभी पूर्णज्ञता के लिये एक दूसरे की सहायता करते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु इस समय नालन्दा केवल भारतवर्ष का ही सर्वोच्च विद्याकेन्द्र न था, अपितु, वह विश्वभारती के समान एक अन्तर्राष्ट्रीय विद्याकेन्द्र था। नालन्दा सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप का सर्वाधिक विख्यात विद्याकेन्द्र था, जहां एशिया के विभिन्न एवं दूरवर्ती देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते थे। ह्वानच्वांग और इत्सिंग दोनों ने ही कोरिया, मंगोलिया, बुखारा, जापान, चीन, और तिब्बत आदि दूरवर्ती देशों के विद्यार्थी नालन्दा में विद्याध्ययन करते देखे थे। इत्सिंग ने ५६ ऐसे विदेशी विद्यार्थी गिनाये हैं जो उसके समय में नालन्दा में रहकर विद्या पढ़ते थे, इनमें से एक तातारी था।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि उस समय इन विदेशी विद्यार्थियों के लिये भारत में आना सरल न था। इनमें से कुछ को समुद्री मार्ग से जहाज द्वारा आना पड़ता था, जो रास्ते में जावा, सीलोन आदि कई मध्यवर्ती स्टेशनों पर खड़े हो हो कर आते थे और भारतवर्ष में ताम्रलिप्त के बन्दरगाह पर उतरते थे। और जो स्थलमार्ग से आते थे, वे खुतन, तिब्बत और नेपाल होकर तथा सभी संभव खतरों और कठिनाइयों का सामना करते हुये आते थे। इतने अधिक चीनी विद्वानों का, इतनी अनुदाहरणीय कठिनाइयों का सामना करते हुए, तीर्थयात्रा एवं ज्ञान की खोज के लिये भारत आना इस बात को जाहिर करता है कि एशिया के देश अपनी धर्म और सर्वोच्च ज्ञान की भूमि--भारतवर्ष के प्रति कितना आदर रखते थे। ह्वानच्वांग स्थलमार्ग से अपनी यात्रा की कठिनाइयों का वर्णन इस प्रकार करता है—"वह वहां गया जहां अन्य कोई नहीं गया था, उसने ऐसी चीजें देखीं और सुनी जो अन्य किसी ने कभी देखी सुनी न थीं। उसने अकेले ही दुर्गम और निर्जन ऊसरों को पार किया। वह बड़ी वीरता से उन पहाड़ों पर चढ़ा, जिनका वर्णन केवल कहानियों में मिलता है, जिनकी ऊंचाई की कल्पना नहीं की जा सकती, जो बड़े ऊबड़-खाबड़ और हरियाली रहित हैं, जहां बर्फीली हवा चलती है और जहां हमेशा वर्फ पड़ी रहती है। एक बार तो ५ दिन और ४ रात तक उसे एक बूंद भी पानी पीने को नहीं मिला था। एक बार वह गिरफ्तार भी हो गया था और उसकी नैतिक उच्चता एवं सत्यवादिता के कारण वहां के शासक ने उसे अन्त में मुक्त कर दिया था। एक देश में वह वहां के बादशाह का अतिथि बना था। बादशाह उससे इतना प्रसन्न हुआ कि उसे छोड़ना नहीं चाहता था। अन्त में, उस से छुटकारा पाने के लिये उसे भूख-हड़ताल का सहारा लेना पड़ा था।

अब यहां संक्षेप में विश्वविद्यालय के संगठन और उसके प्रबन्ध के बाह्य साधनों एवं उपकरणों की विशेषताओं का दिग्दर्शन कराया जायगा, क्योंकि वे वर्तमान शिक्षा--व्यवस्था के लिये उपदेश से भरी हुई हैं तथा सोचने विचारने के लिए पर्याप्त सामग्री उपस्थित करती हैं।

भारतवर्ष में जितने सनिवास (रेजिडेंशल) विश्वविद्यालय आज तक बने हैं, उनमें नालन्दा विश्वविद्यालय सब से बड़ा था। प्रबन्धकर्ताओं तथा सेवकों के अतिरिक्त इसमें ६५०० विद्यार्थी और १५०० अध्यापक रहते थे, इस प्रकार विश्वविद्यालय--उपनिवेश की कुल आबादी लगभग १२००० थी। इस विशाल आबादी के सब प्रकार के उत्तरदायित्व का महान् भार विश्वविद्यालय को ही वहन करना पड़ता था। विश्वविद्यालय अध्यापकों और छात्रों को, जो संख्या में लगभग १००० थे, निःशुल्क निवास--स्थान, भोजन, वस्त्र और शिक्षा प्रदान करता था। उस समय व्यय का कुछ अंश पूरा करने के लिये छात्रों पर फीस लगाकर आमदनी करने का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार न था। राजकीय एवं व्यक्तिगत दानशीलता की प्रवृत्ति इतनी अधिक बढ़ी हुई थी कि शिक्षा निःशुल्क दी जा सकती थी। उस समय शिक्षा-सम्बन्धी दानों ने भूमिदान का रूप धारण कर लिया था। नालन्दा विश्वविद्यालय को शिक्षा व्यय के लिये बहुत सी भूमि दान में मिली हुई थी। ह्वानच्वांग के समय में, उसके अधिकार में १०० गांव थे। इत्सिंग के समय में विश्वविद्यालय के गांवों की संख्या २०० से भी अधिक हो गई थी। इस प्रकार विश्वविद्यालय उस स्थान का बहुत भारी धराधीश था। अपनी आबादी के दैनिक भरण-पोषण के लिये उसे अपने ग्रामों पर निर्भर रहना पड़ता था। दैनिक आवश्यकता की वस्तुयें इन गांवों से निरन्तर विश्वविद्यालयों को जाती रहती थीं। ३०० मन चावल और कई सौ मन मक्खन तथा दूध प्रतिदिन विश्वविद्यालय पहुँचता था। चावल विश्वविद्यालय के धान के खेतों से और मक्खन तथा दूध ग्रामीण पशुशालाओं से आते थे। इस दैनिक सामग्री प्रेषण का भार इन २०० ग्रामों के २०० सद्गृहस्थों ने ले रखा था, जिन में से प्रत्येक अपने ग्राम का ग्रामणी या प्रधान था।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि विश्वविद्यालय को जो भूमि दान में दी जाती थी उसका उत्तरदायित्व विश्वविद्यालय पर आ पड़ता था। विश्वविद्यालय को भूमि अधिक लाभदायक बनानी पड़ती थी, जिससे उसके लाभ से वह अपना निर्वाह कर सके। विश्वविद्यालय को अपने धान के खेतों की पैदावार बढ़ानी पड़ती थी। इस प्रकार उसे एक सुव्यवस्थित कृषिविभाग का संगठन करना पड़ता था, जो उसकी भूमि को कृषि से अधिक से अधिक लाभ उठा सके। इस प्रकार शिक्षा सम्बन्धी दानों की प्रणाली का यह अर्थ था कि कृषिशास्त्र कालेजों और यूनिवर्सिटियों का विषय था, न कि अल्पज्ञ, अशिक्षित और निर्धन किसानों की चिन्ता का।

हमने अभी ऊपर कहा था कि नालन्दा में १५०० अध्यापक ६५०० विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे। अध्यापकों और छात्रों की संख्या का यह अनुपात इस बात को प्रकट करता है कि इस विशाल सामूहिक संगठन में भी, शिक्षा के सम्बन्ध में, यथासंभव व्यक्तिगत संपर्क प्रणाली का अवलम्बन किया जाता था। यह भी कहा जाता है कि लगभग १०० अध्यापकों द्वारा व्याख्यान दिए जाने के लिए प्रतिदिन लगभग १०० ही गद्दियों या मंचों का प्रबन्ध किया जाता था और सभी विद्यार्थी एक मिनट के लिए भी अन्यमनस्क न होकर इन व्याख्यानों को सुनते थे। यह बात ह्वानच्वांग ने लिखी है। इसका यह अर्थ है कि प्रति दिन विद्यार्थियों की १०० विभिन्न कक्षाओं को १०० विभिन्न विषयों पर १०० विभिन्न व्याख्यान दिए जाते थे।

अन्त में यह बात भी ध्यान देने की है कि नालन्दा के विद्यार्थी केवल भारतवर्ष के ही बौद्धिक जीवन में, जो भारतीय विचारधारा के प्रभाव में आ जाते थे, प्रधान हिस्सा लेते थे। नेपाल तिब्बत, चीन आदि देशों में भारतीय विचारधारा के प्रसार का साधन भारतीय ज्ञान एवं वे पुस्तकें थीं, जिनमें वह ज्ञान भरा था। ये पुस्तकें दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र के कठिन ग्रन्थ थे, जो कठिन एवं पारिभाषिक संस्कृत और पाली भाषा में लिखे हुये थे। शताब्दियों तक भारतीय विद्वान् धार्मिक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर इन ग्रन्थों का अनुवाद विदेशियों की मातृभाषा में करते रहे। इस प्रकार नालन्दा के ये विद्यार्थी केवल दर्शनशास्त्र के ही गंभीर विद्वान् न होते थे, अपितु पूर्ण भाषा विज्ञानवेत्ता भी थे। नालन्दा विश्वविद्यालय ने संस्कृत और पाली के देशीय विद्यालयों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त तिब्बती, नेपाली और चीनी भाषा के सुव्यवस्थित विद्यालयों की भी व्यवस्था की थी, जिससे कि वह ऐसे विद्वान् तैयार कर सके जो उपर्युक्त चीनी और तिब्बती जैसी विदेशी भाषाओं में अपना कार्य करने के लिये भाषा की दृष्टि से निरपेक्ष और पूर्ण साधनयुक्त हो जायें। 'भारतीय साम्राज्य' जैसी कही जाने वाली चीज नालन्दा विश्वविद्यालय की अद्वितीय देनों में से एक दैन थी। (क्रमशः)

आयुर्वेदविज्ञान

त्रैदोषिकप्रश्नोत्तराणि

[ले०—श्रीयुत वैद्य गोपालशास्त्री गोडबोले, पनवेल।]

(पूर्वतोऽनुवृत्तः)

(११) वतादीनां शारीरद्रव्याणाम् रसरक्तादिधातुभिः सह मलाख्यधातुभिश्च सह यः परस्परसंबंधः स संबंधः उपादानोपादेयस्वरूपोऽस्ति। अत्र उपादानद्रव्याणि आहारपरिणामरसपरिणामजन्यकेवलरसरक्तावयवा वातादयः। उपादेयद्रव्याणि च साक्षात् परंपरयाच उक्तोपादानजन्यास्तदितरे शरीराषयवाः।

(१२) (क) प्रवर्तनालक्षणा उपादानलक्षणाश्च एवम् द्विविधा वातादयः। इत्येवम् इतः पूर्वम् अस्माभिः आवेदितं अस्ति। तत्र प्रवर्तनालक्षणा वातादयस्ते ईरणम् क्लेदनम् परनम् रंजनम् इत्यादीन् व्यापारान् कुर्वन्ति। किंच उपादानलक्षणा वातादयस्ते शरीराभ्यन्तरे स्वीयस्वीय गुणकर्मभिः तत्र तत्र सर्वत्र विविधाकारविवधरूपधातुव्यूहान् अभिनिर्वर्तयन्ति। अनेनैव तेषां यथोचितद्विविधकर्मणा सर्वप्राणिनां पक्तिः पुष्टिः वर्णः प्रसादः बलं अनवरोध इत्यादि शुभम् आपद्यते। ययम् तेषां प्रकृतिगता संप्राप्तिर्ज्ञायताम्। किंच या अस्याः प्रतिकूला विपरीता वा संप्राप्तिः सा विकृतिगता इति ज्ञायताम् अस्याः अशुभम् फलम् ज्वरादिव्याध्युत्पत्तिः।

(ख) तथा च वातादयः समं यथा स्यात् तथा तत्तत्स्थानगतेषु तत्तुषु प्रविभद्धाः तथैव च ते समं यथा स्यात् तथा तत्तत्स्थानगतेभ्यः तत्तद्धातुभ्यः प्रविभक्ताः प्रेरणम् प्रस्पन्दनम् उद्वहनं परिपाकः संधिसंश्लेषणम् स्नेहनम् इत्यादिर्भियथोचितैः कर्मभिः शरीरं धारयंति वर्धयन्ति यापयंति जीवयंति च। किंतु ते एव यदा निजागन्तुककारणैः उक्तस्वरूपात् अन्यधात्वम् उपयान्ति तदा ते स्वीयविशेषम् स्वेतरविशेषं च स्वस्थानविशेषं स्वस्थानान्तरविशेषम् च स्वमार्गविशेषम् स्वमार्गान्तरविशेषं च अनुसृत्य ज्वरः अतिसारः दाहः शूलः शोथः कुष्ठं इत्यादीन् तांस्तान् व्याधिविशेषान् जनयन्ति।

(१३) वातादीनाम् स्थानगुणवर्णकर्मभेदवशात् एव प्रत्येकशः पंच पंच प्रकाराः शास्त्रे अभिहिताः सन्ति तस्मात् वातादीनां इयम् पंच पंचप्रकारकल्पना शारीरतत्त्वानुसारिणी वर्तते न तु सा मनः प्रकल्पिताऽस्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) शारीरपदार्थेषु एव वातादयः अन्तर्भवन्ति शरीरावयवत्वात्। अतः शारीरपदार्थानाम् उपलब्ध्यर्थम् शल्यज्ञानम् शल्यापहरणम् शवविशसनम् इत्यादयो ये ये मार्गाः स्वीकरणीया भवन्ति त एव मार्गा वातादीनाम् उपलब्ध्यर्थम् अल भवन्ति। इत्यमेव मन्यावहे। किन्तु इह इदं अयश्यम् अवधार्यताम् यत् व्याप्यस्वरूपा एव वातादयः प्रत्यक्षो पलब्धिम् अर्हन्ति न हि ते वातादयः व्यापकस्वरूपाश्चेत्। अस्य प्रतिपादनस्य नायम् अर्थः व्यापकस्वरूपा वातादयः कामपि उपलब्धिं नार्हन्ति इति। किं तर्हि? उक्तप्रतिपादनस्य अयम् अर्थो वर्तते यथा व्याप्यस्वरूपाणाम् वातादीनाम् उपलब्धिः प्रात्यक्षिकी। व्यापकस्वरूपाणां च वातादीनाम् उपलब्धिः प्रत्यक्षपूर्वानुमानिकी इति।

(१४) वातादीनाम् उपादानलक्षणत्वात् प्रवर्तनालक्षणत्वाच्च शारीरकस्रोतसां उपादेयत्वात् प्रवर्त्यत्वाच्च वातादिषु प्रकृतिस्थितेषु सत्सु एव स्रोतांसि प्रकृतिस्थितानि भवन्ति। किंच तेष्वेव दुष्टेषु सत्सु शारीरस्रोतांसि अपि दुष्यन्ति। इयम् शारीरस्रोतोदुष्टीनां सामान्या संप्राप्तिर्ज्ञायताम्। अथ विशेषा संप्राप्तिः उच्यते। वाताद्युपादानदुष्टिविशेषैः वातादिप्रवर्तनादुष्टिविशेषैश्च शरीराभ्यान्तरे यावन्ति महत्स्थूलसूक्ष्मस्रोतांसि तावताम् सर्वेषां दुष्टिः समासतो द्विप्रकारा व्यासतश्च बहुप्रकारा भवति। यस्मिन् विकारे स्रोतांसि अवरुध्यन्ते अथवा अवरुन्धन्ति सः विविधस्रोतोदुष्टीनां एकः प्रकारः। अस्मिन्प्रकारे कदा उपादानदुष्टिः स्यात् कदा प्रवर्तनादुष्टिः स्यात् कदा च उभयदुष्टिरपि स्यात। एतावता एतस्मात् इदम् तात्पर्यम् अत्र स्वीकरणीयं भवति यत् श्वासः कासः मूर्च्छा संन्यासः इत्यादयो व्याधिविशेषानाम दोषदुष्टिविशेषा एव अथवा स्रोतोदुष्टिविशेषा एव इत्येव निःसंदिग्धं अस्माभिः उच्यते।

(२५) सत्वं नाम मनः तेन सह वातादिसंबंधात् वातादीनां सेंद्रियत्वम् आपद्यते। आत्मना सह वातादीनां संबंधात् वातादीनाम् सात्मकत्वम् आपद्यते। किंच शरीरेणसह वातादीनां संबधात् तेषां शरीरावयवत्वम् आपद्यते। वातादयः सेंद्रियत्वगुणेनैव यदा यदा वृद्धा वा क्षीणा वा भवन्ति तदा तदा ते तत्तद्विपरीताम् अभिरुचिम् अभिव्यंजयन्ति। सात्मकत्वेनैव ते ऐंद्रियप्राणिकव्यापारेषु तत्तद्व्यापारघटकद्रव्याणि भवन्ति। किंच शरीरावयवत्वेनैव ते अविकृताः शरीरं वर्तयन्ति विकृताश्च शरीरम् उपघ्नन्ति।

वैद्य गोपालशास्त्री गोडबोले,

संशोधक प्रमुख, श्रीधूतपापेश्वर पनवेल लिमिटेड, पनवेल।

आयुर्वेददर्शनोक्ता वातादयः प्रश्नोत्तरनिष्कर्षः

(१) मूर्ताः (२) द्रव्याणि (३) स्थूलाः (४) सूक्ष्माः (५) गंभीरानुगता (६) व्याप्याः (७) व्यापकाः (८) शरीरावयवाः (९) सेंद्रियनिरिंद्रियाः (१०) सात्मकनिरात्मकाः (११) शारीरव्यूहघटकद्रव्याणि (१२) शारीरव्यापारघटकद्रव्याणि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TREATMENT By MASSAGE*

(With special reference to Diabetes and Consumption)

By **Dr. A. Laksamipathi,** B. A., M. B., & C. M. Bhishagratna,
MADRAS

Massaage is a great art. Its methods are quite scientific. It was one of the 64 arts, the study of wich was encouraged in India. Its purpose is four-fold–Promotion of (1) Strength (2) Cleanliness and complexion (3) Comfort and (4) Long life. (बलवर्णसुखायुषः)

Madical massage is called Samvahanam. It may be gentle or hard, active or passive. Massage is useful in almost all diseases.

In a very weak person, the object may be just to soothe the nerves to give psychologically some encouragement and hope to the patient. We may just touch the patient's shoulder stroking smoothly downwards on his forehead, stroking the hair gently outwards and backwards denoting affection. On the other hand, hard massage may be required in some cases in order to resolve indurations and swellings. Massage may be combined with physical exercise, lubrication, sweating fomentation, enemata, baths and also internal medication. The objects of all treatment may be classified into 3 classes: (1) Removal of the cause (2) Removal of toxins and (3) Promotion of strength and power of resistance to disease.

I shall illustrate how these three objects may be attained by taking up the 2 diseases of Diabetes and Consumption, which are diametrically opposed to each other in their cause and also in treatment.

Diabetes

"Diabetes is caused by sitting comfortably all through the day, sleeping away the whole time, taking plenty of curds or milk, jaggery, soup made of flesh of fatty animals, living in water or marshy places or domesticated or handfed animals, new dhanyas, such as rice and wheat and new beverages such as alcoholic drinks, recently prepared."

The real treatment for diabetes lies in the direction indicated by Charaka and Susruta as follows:—

* Read before the aniversary meeting of the Krishna District Medical Association.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यायामयोगैर्विविधैः प्रगाढैरुद्वर्त्तनैः स्नानजलावसेकैः ।
सेव्य त्वगेलागरुचन्दनाद्यैर्विलेपनैश्चाशु न सन्ति मेहाः ॥ (च० प्र० चि०)

"By prescribing to the patient hard exercises of various types, suitable to the constitution of the patient, by rubbing the body with various substances prescribed in the texts, and massaging the limbs uniformly by plunge and shower baths, by sponging and spraying, by the application of lepas or pastes consisting of sandal or Agaru, etc. according as cooling or heating effect is required, and by otner treatment, which reduces the Kapha, which is common in these patients.

"Depriving himself of all his money and relations, he should walk 100 yojanas or 1000 miles or more in one year, without shoes and without an umbrella, living by begging his food, staying only one night in each village and developing self-control like a saint" The walking should be such as would not cause any excesseve fatigue and so, it has to be taken up in easy stages. One thousand miles a year comes to only about 3 miles a day. The shoes and umbrella have to be discarded in order to get rid of the delicacy which is the root cause of this disease.

"Even if he were a very rich man, he should live upon wild food-stuffs such as Syamaka and Nivara grains (coarse rice), Aamalaka and wild fruits like Kapittha and Tinduka" In practice, it has been found that Ragi congee suits diabetic patients very well. Kudhaanyaas (Inferior grains) appear to suit better as they are more ruksha (non-oily) and heating.

"If the patient happens to be a Brahmin (it may be, not by birth, but by imitation) he should accompany the cow rearing it carefully," wandering where it goes, and resting where it rests, so as to spend a major portion of the day time in the open air but not in the hot sun, because the cow itself knows when to get into the shade and it leads him also into the cool shades of trees nearby at the hot hours of the day.

"He, who belongs to other classes shall engage himself in manual labour such as digging a well. or a tank with his own hands."

"If, however, a patient happens to be getting thinner i. e. when yata or Pitta is predominent, he should always protect his strength carefully by rest and easily digestable food. (कृशं तु सततं रक्षेत्)

Susruta assures us that, if one is prepared to follow this treatment unhesitatingly at the biddings of his physician, cure is certain at the end of the year, if not earlier.

"Even in an advanced case of Diabetes, Vyaayaam (Regulated Physical exertion), Niyuddha (boxing), Kreeda (indoor and outdoor games),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

riding on elephants and horses or chariots, marching on foot, sword and stick play and similar bodily exercises are to be resorted to."

(सु० प्र० चि)

Consumption (Rajayakshma)

In the case of Consumption, the cause of the disease is to be found more in indiscriminate living of the people than to the presence of the microbe. Consumption is attributed to four causes, namely,—

1. "Saahasam"—Strain in attempting to do things which are beyond one's own capacity. For example, wrestling hard with one, who is stronger than himself or swimming across an unfordable river. These patients spit blood in the very early stages of the disease. I have noticed that many modern athletes die of this type of consumption called the galloping type.

2. "Vegadhaaranam"—Undue retention of the excretory products in the body, cuch as stools, urine and flatus etc.

3. "Dhatukshayam"—Sexual excesses. The ultimate essence of the whole metabolism of the body is the Sperm and its indiscriminate use naturally lowers the resistance of the tissues to disease.

4. "Vishamaasanam"—Irregular food. Irregularity in food as regards quality and time is also one of the causes of consumption. Bad assimilation will naturally affect nutrition, making the subject an easy prey to the disease.

अभ्यङ्गोत्सादनैः स्नानैरवगाहैर्विमार्जनैः । वस्तिभिः क्षीरसर्पिर्भिर्मांसैर्मांसरसौदनैः ॥ (च० रा० चि०)

Even here, the treatment consists mostly of "cleaning the skin and stimulating its action by Abhyanga (oil-baths), Utsaadana (Rubbing with scented powders and pastes), Snana (hot and cold baths according to the condition of the patient and the season), Avagaaha (plunge baths), Vimarjana (perfect cleaning of the body by gentle Massage and sponging)," Soft handling is required in these cases. Nutrient enemeta containing medicated milk, ghee and meat juices are specially recommended. As wasting of the body is a prominent symptom in this disease, the treatment is to aim at making the patient plumpy. "Delightful music, sight of friends and handsome women, fine garments, pleasant discourses and agreable wines, perfumes and everything that would make the patient happy and comfortable are to be provided for him."

In Rajayakshma, Consumption as well as Diabetes, all the three Doshas are deranged. The excess or deficiency of the Doshas is to be determined from time to time and the treatment should be regulated accordingly.

"Dischrges from the nose or throat, headache, cough, hard breathing loss of voice, and pain in the sides are relieved by 1. Sneha (Sweating) 2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Abhyanga (application of oils, massage and bath) 3. Dhuma (inhalations and fumigations) 4. Aalepas (Ointments and plasters) 5. Snana (Baths) and 6. Avagaaha (Plunge baths in plain or medicated waters). 7. Medicated extracts prepared from goat's flesh are also recommended for internal use."

"Among Sweda Karmas (Sweating processes), Sankara Sweda, hot fomentations with certain substances, are prescribed for making the chest, neck and head to sweat. Warm decoctions are recommended for spraying comfortably on the head. NadiSwedi (tube fumigation) with milk and decoctions is recommended for relief of pain in the head, neck and sides of chest. Upanaaha Sweda (Hot poultices) may also be applied for relief of pain in the head, sides of chest and shoulder heads."

It is easily seen that the treatment of consumption is more or less the opposite of the treatment for Diabetes. Whereas hard life is enjoined in the case of Diabetes, an easy going life is recommended in consumption.

Cleanliness of the skin, regular function of the excretory organs and easily assimilable food are however common in the treatment of both diseases. Abhyangam i. e. suitable massage with medicated oils and baths makes a stout man lean and at the same time a lean man stout.

Tridosha Theory

All the three Doshas—Vata, Pitta and Kapha are deranged in both Diabetes and Consumption, but the derangement of pitta is generally in excess in Consumption and the derangement of Kapha is in excess in Diabetes. it is necessary to study the Thridosha theory thoroughly if Ayurvedic treatment is te be attempted.

Vata may be compared to sparking system in the Automobile, Pitta to the combustion process and Kapha to the cooling system including the water jacket and the lubrication. Derangement of the vata mechanism effects the life process through disordered nervous mechanism, Deranged pitta leads to Katabolism and deranged Kapha to Anobolism. In performing Massage, one should therefore note very minutely the changes in their basic principles.

Vata Type

Vata type is recognised by the following symptoms:— 1. comparative dryness of the tissues 2. Lightness 3. Transparency (Visadata) 4. Coldness 5. Motion 6. Subtleness These are the properties of Vayu. The system of Massage or anything in the form of food, medicine, climate or habits, which have the above properties, increase Vayu. The treatment should then be the application of agents, which have the opposite properties. The following processes are recommended in diseases of the Vata Type— 1. Sneha (Lubrication)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

application of Vata-hara oils. 2. Sweda (sweating) - 10 methods of sweating do not require the aid of heat and 13 methods require the aid of heat. 3. Pradeha—application of ointments, poultices and dusting powders, for heating and also relieving pain. 4. Unmardana—Hard Massage. 5. Parisheka—Hot spraying and shower baths. 6. Upanaaha—Fomentations, comfortably hot. 7. Upavestana—Tight Bandaging. 8. Avagaha—Plunging in hot water or heat producing decoctions. 9. Samvahana—Light pressing, if pain is present. 10. Avapeedana—Light Kneading, if painful. 11. Vitrasana—Threatening12. Vismaapana—Surprising. 13. Vismaarana—Diverting the patient's mind. 14 VASTI (ENEMA)—MOST IMPORTANT OF ALL. I5. Nasya—Nasal purge. 16. Good Nutritive food, which is sweet, slightly acid, slightly salted and containing ghee, oil or fat and hot to touch, and such other processe's as are generally comfortable to the patient. The massage is to be light or hard according te the condition and comfort of the patient (च० वि० अ० ६, ५, १४)

Pitta Type

In diseases of pitta type, where neat acuteness of symptoms, slight viscidity, colours other than white and aruna' smell of raw meat, bitter or sour taste, bnrning sensation or giddiness are predominant symptoms the following methods are more commonly used:— 1. Sneha (Lubrication)—with pitta reducing cooling oil. (Note Sweda, Sweating, is not mentioned). The use of Ghee internally and externally, medicated or therwise. 2. Pradeha—poultices or ointments and dusting powders which should be cooling and relieving burning sensation. 3. Parisheka—Shower baths and cold compresses. 4. Abhyanga—Oil baths. 5, Avagaaha—Plunge baths in cool waters. 6. VIRECHANA (PURGATIVE)—THE MOST IMPORTANT IN REDUCING PITTA 7. Ahara—food, which is astringent, sweet and bitter and cooling. 8 Harmya-Vaasa—Living upstairs freely exposed to cool breezes and rays of the moon or spending moonlit nights on river sands. Enjoying cool and sweet scents. 9. Param—Vastra—Mukta—Mani—Dhaaranam—Wearing over the chest very cool garments, Pearls and gems. 10. Geeta—Vaaditra—Sravanam—Vocal and instrumental music. 11. Udyanavana—Seva—Excursions in pleasure gardens. 12. Suhrit—Samyogam—Meeting friends. and such other processes as are pleasing and cooling to the patient.

Kapha Type

In diseases of the Kapha types, where cold, heaviness, Stoutness, dullness and oilienss, whiteness, smoothness, itching, chronic nature and sweet taste are generally noticed, the following processes are recommended:—1. Swedana—Sweatinng. Note. Sneha [lubrication] is not mentioned. 2. Unmardana—Hard massage. 3. Udvartana—Rubbing scented paste and rolling it into wicks by fairly hard rubbing. 4. Udgharshana—rubbing roughly and briskly in short

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

strokes. 5. Utsadana—Rubbing upwards with deep pressure and in long strokes, opposite to the direction of the hair [Pratiloma]. 6. Dhaavana—Running. 7. Langhana—Skipping or jumping. 8. Plavana—Swimming. 9. Parisaarana—Rnnning round a circle. 10. Jaagarana—Keeping awake at nights. 11. Niyuddha—Wrestling. 12. Vyavaaya—Sexual life. 13. Vyaayaama—Systematic physical exercisses. 14. Snaana -- Baths.15. Pranipaatha - Making namaskaras by kneeling or falling prost-rate on the ground. 16. Yaatra Gamana — Excursions to places of pilgrimage. 17. Nasya Karma - Nasal purgative. 18. VAMANA (EMETIC) - MOST EFFECTIVE OF ALL IN KAPHA TYPES. 19. Upavaasa - Starvation. 20. Ahara (food) - which is bitter, astringent and pungent, without much ghee or oil and generally heating. And such other processes as are antagonistic to easy and comfortable living. It will thus be seen that great skill as well as intelligent study of the patient's condition are required in adopting a line of treatment for the same disease and for different stages of the disease in the same person. Different movements of the Massagist's hands are required in accordance with the result expected by the treatment.*

* * * *

Massage is of three kinds - 1. Deha-Mardanam or Atheletic massage, 2. Samvahanam or Medical massage and 3. Kesamardhanam or Hygienic message.

1. In Deha-Mardanam or atheletic massage, the object is to tone the muscular tissue to remove fatigue and to give comfort after physical exercise. In Deha-mardanam, the movements are done with considerable force The operator and the subject resist the movements of each other, so that the individual muscles contract at each stroke.

2. The object of medical massage (Samvaahanam) is to give comfort to the patient; to improve circulation and to promote absorption of inflammatory exudations or swellings. This massage induces sleep, removes obesity and pains in the body and relieves fatigue. It promotes development of muscle, blood and colour of the skin. This is a passive massage in which no resistance is offered.

3. Hygienic massage is intended to clean the skin and to tone up the nerves.

The processes involved in this art of massage are many and a definition of some of these processes is necessary to understand the art.

* तत्र प्रतिलोममालिम्पेन्नानुलोमम् । प्रतिलोमे हि सम्यगौषधमवतिष्ठते, अनुप्रविशति च रोमकूपान् ॥ (सु० अ० १८—४)

Apply the plaster oil or ointments upwards, that is against the direction of the hair but not in the direction of the hair. When it is applied against the roots of hair, the medicine settles down well. It also enters into the hair roots. The active principles of the medicine get into the tissues through the sweat channels and capillaries.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Anulepanam (Lubrication)—This is applying the oil gently to the parts. It is generally done with both hands.

Gharshanam (Friction)—Rubbing the body up and down or side to side in short strokes.

Udgharshauam (Reinforced friction)—Rubbing with pressure or more vigorously than in simple Gharshanam. Rough Udgharshanam is done when there is itching sensation. It is applied to areas, which are covered with eczemafous scars or clevations. A rough piece of brick specially prepared may also be used It is also used to keep awake a sleepy man as in cases of poisoning or collapse. In smooth (Mridu) Udgharshanam care is taken to slightly lubricate the skin before applying friction, otherwise the skin may be irritated.

Utsadanam (Rubbing)—It is to rub the body gently up and down with a little oil. The rubbing is to be performed with greater pressure upwards (Pratiloman) i. e. towards the heart, from the wrist to shoulder and from the foot to the hip. By the process of Utsadana, the skin of ladies gets a brilliancy. It is pleasant, improves complexion, purifies the skin and imparts a feeling of lightness to the body.

Udvartanam (Wick-rolling)—It is a process of applying soft or rough powders as a paste along with a lubricant to the skin and rubbing the paste into a sort of wicks, by gentle up and down strokes with the palm of the hand, applied on the surface of the skin, By the process of Udvartanam, fat is reduced, limbs get a tone, skin gets clean and acquires a lustre.

Lata-Veshtanam (spiral friction) Pidanam; (kneading), Avapidanam (light kneading), Prapidanam (deep kneading), Anguli-pidanam (kneading with cushion of fingers), Udveshtanam (wringing), Manthanam (Muscle rolling), Paripidanam (Petrissage), sandhi-chalanam (jointmovement), sandamsikam (fulling), Harshanam (vibration), Praharanam (Percussion), Chedyam (hacking), Taadanam (slapping), Samputakam (boxing), Vaadyam (Tapping), Aashpalanam (clapping), Marjanam (sweeping), Kesamardanam (shampooing the hair) are some of the fine and coarse movements of the hands of the operators which when dexterously used create a large variety of feeling, which have a great value, in the treatment of certain diseases.

Provided the cause of disease is removed, Massage helps both to eliminate the toxins and to give the necessary strength for improving the power of resistance.

We now say that most cases of Diabetes are due to defficiency in the supply of insulin. This defficiency is made up by encouraging the natural processes of the manufacture of Insulin inside the body by Massage, exercise and baths. As a sincere believer in Ayurveda and its methods of treatment, which help nature's process, I have tried this treatment with great satisfaction. It is no doubt easier to dispose of the patient with some internal medicine or injection, but it is necessary to insist on the patient's obeying the laws of nature in the interests of scientific advancement of the medical science.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक लेखमाला

पञ्चकर्मविनिश्चय

[लेखक—श्रीयुत क० ज्योतिषचन्द्र सरस्वती, देहली।]

(गताङ्क से आगे)

स्नेहन की अवधि।

चरक का कहना है कि—

"स्नेहनस्य प्रकर्षौ तु सप्तरात्रत्रिरात्रकौ।"

अर्थात्—स्नेहन की अवधि सात रात या तीन रात है।

मृदुकोष्ठ पुरुष का तीन रात में और क्रूरकोष्ठ का सात रात में स्नेहन होता है। सात दिन से अधिक स्नेहन नहीं कराना चाहिये। जैसा कि चरक में कहा भी है—

त्र्यहावरं सप्तदिनं परन्तु स्निग्धो नरः स्वेदयितव्य इष्टः।
नातः परं स्नेहनमादिशन्ति सात्म्यीभवेत् सप्तदिनात् परन्तु॥

अर्थात्—कम से कम तीन दिन और अधिक से अधिक सात दिन तक स्नेहन कराना चाहिये। सात दिन से अधिक स्नेहन नहीं कराना चाहिये, क्योंकि सात दिन के पश्चात् किया हुआ स्नेह सात्म्य हो जाता है और कोई गुण नहीं करता।

सुश्रुत का कहना है कि—

पिबेत् त्र्यहं चतुरहं पञ्चाहं षडहं तथा। सप्तरात्रात् परं स्नेहः सात्म्यीभवति सेवितः॥

अर्थात्—तीन दिन, चार दिन, पांच दिन या ६ दिन स्नेह पीना चाहिये। सात रातों के बाद पिया हुआ स्नेह सात्म्य हो जाता है।

मृदुकोष्ठ किसे कहते हैं?

चरक का कहना है—

उदीर्णपित्ताल्पकफा ग्रहणी मन्दमारुता। मृदुकोष्ठस्य तस्मात् स सुविरेच्यो नरः स्मृतः॥

अर्थात्—मृदुकोष्ठ पुरुष की ग्रहणी तीव्रपित्तवाली, क्षीणकफवाली और मन्द वायु वाली होती है, अतः उस पुरुष को बड़ी सरलता से विरेचन हो जाता है।

सरलता से विरेचन होने के कारण ही ऐसा पुरुष मृदुकोष्ठ कहलाता है, जैसा कि चरक में कहा है:—

गुडमिक्षुरसं मस्तु क्षीरमुल्लोडितं दधि। पायसं कृशरा सर्पिः काश्मर्यंत्रिफलारसम्॥
द्राक्षारसं पीलुरसं जलमुष्णमथापि वा। मद्यं वा तरुणं पीत्वा मृदुकोष्ठो विरिच्यते॥

अर्थात्—मृदुकोष्ठ पुरुष को गुड़, ईख का रस, दही का जल, दूध, मथा हुआ दही, खीर, खिचड़ी, घी, त्रिफलारस, द्राक्षारस, अखरोटरस, गर्म जल या नया मद्य पीकर विरेचन हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रूरकोष्ठ का स्वरूप ।

वहीं पर लिखा हैः——

विरेचयन्ति नैतानि क्रूरकोष्ठं कदाचन। भवति क्रूरकोष्ठस्य ग्रहण्यत्युल्बणानिला ॥

अर्थात्——जो औषधियां मृदुकोष्ठ को विरेचन कर देती हैं, वे क्रूरकोष्ठ को कभी विरेचन नहीं कर सकती, क्योंकि क्रूरकोष्ठ पुरुष की ग्रहणी अत्यन्त तीव्र वायुवाली होती है।

स्नेहपान से पूर्व पथ्य ।

चरक का कहना है—

द्रवोष्णमनभिष्यन्दि भोज्यमन्नं प्रमाणतः। नातिस्निग्धमसङ्कीर्णं श्वः स्नेहं पातुमिच्छता ॥

अर्थात्——दूसरे दिन स्नेह पीने की इच्छा रखने वाले पुरुष को चाहिये कि वह ऐसा भोजन करे जो पतला और गर्म हो तथा अभिष्यन्दी, आवश्यकता से अधिक, अधिक चिकनाई वाला और वीर्यविरुद्ध न हो।

अभिष्यन्दी का अर्थ है दोष, धातु और मल के स्रोतों को गीला करके अवरुद्ध करने वाला। अनभिष्यन्दी का लक्षण डल्हण ने इस प्रकार किया हैः—

वैशद्यात् कफहन्तृत्वात् तान्येव विवृणोति यत्। तदुक्तमनभिष्यन्दि द्रव्यं द्रव्यविशारदैः ॥

अर्थात्——जो द्रव्य विशद होने के कारण और कफनाशक होने के कारण उन्हीं (दोष, धातु और मल का वहन करने वाले स्रोतों) को विस्तृत करता है अर्थात् खोलता है, उस द्रव्य को द्रव्यविशेषज्ञ अनभिष्यन्दी कहते हैं।

स्नेह पचने पर पथ्य ।

सुश्रुत का कथन है—

परिषिच्याद्भिरुष्णाभिर्जीर्णस्नेहं, ततो नरम्। यवागूं पाययेच्चोष्णां कामं क्लिन्नाल्पतण्डुलाम् ॥
देयौ यूषरसौ वापि सुगन्धी स्नेहवर्जितौ। कृतौ वाल्पसर्पिष्कौ विलेपी वा विधीयते ॥

अर्थात्——स्नेह पचने के बाद उस स्निग्ध पुरुष को गर्म पानी से स्नान करा कर पर्याप्त पतली और थोड़े चावल वाली गर्म यवागू इच्छानुसार पिलावे, अथवा उसे सुगन्धित और चिकनाई से रहित यूष और मांसरस पीने को दे, अथवा विलेपी पीने को दे।

यह आहारविधि बताई, अब विहारविधि बताते हैं।

विहारविधि ।

चरक का कथन है——

उष्णोदकोपचारी स्याद् ब्रह्मचारी क्षपाशयः। शकृन्मूत्रानिलोद्गाराद्युदीर्णांश्च न धारयेत् ॥
व्याममुच्चैर्वचनं क्रोधशोकौ हिमातपौ। वर्जयेदप्रवातञ्च सेवेत शयनासनम् ॥

अर्थात्——स्नेह पिये पुरुष को चाहिये कि वह गर्म पानी पिये, ब्रह्मचर्य से रहे, रात को सोवे, पखाना, पेशाब, अपान वायु, और डकार के वेग को न रोके, व्यायाम न करे, जोर से न बोले, क्रोध और शोक न करे, ठन्ड और धूप से बचे, तथा ऐसे स्थान पर सोये, बैठे जहां हवा जोर से न चलती हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रात को सोवे' का यह अर्थ है कि 'दिन को न सोवे और रात को न जागे'। 'अप्रवात' का अर्थ है 'वायुरहित' या 'शान्त'। वृद्ध वाग्भट ने इस विषय में कुछ विशेष कहा है, यथा—

ततो गुरुप्रावरणो निवातशयनस्थितः। जरणान्तं प्रतीक्षेत तृष्यन्नुष्णाल्पवारिपः॥
शिरोरुग् भ्रमनिष्ठीवमूर्च्छासादारतिक्लमैः। जानीयाद् भेषजं जीर्यद् जीर्णं तच्छान्तिलाघवात्॥
अनुलोमानिलस्वास्थ्यक्षुत्तृष्णोद्गरशुद्धिभिः॥

अर्थात्—स्नेह पीने के बाद पुरुष को चाहिये कि जब तक स्नेह जीर्ण न हो जाय तब तक भारी वस्त्र ओढ़े-पहने रहे और ऐसे स्थान पर सोवे जहां वायु न चलती हो, एवं प्यास लगने पर थोड़ा थोड़ा गर्म पानी पीता रहे, जब तक सिर में पीड़ा, घुमाईं, मुंह में बार बार थूक का आना, बेहोशी, शरीर पीड़ा, किसी काम में मन न लगना और ग्लानि आदि लक्षण होते रहें तब तक यह समझना चाहिये कि अभी औषधि पची नहीं है, और जब ये लक्षण शान्त हो जायें, शरीर हल्का प्रतीत होने लगे, वायु अनुलोम हो जाय, शरीर स्वस्थ मालूम हो, भूख और प्यास लगने लगे, तथा डकार शुद्ध (स्नेहगन्धरहित) आने लगे तो समझना चाहिये कि अब औषधि (पिया हुआ स्नेह) पच गई।

आगे वे लिखते हैं—

उष्णोदकोपचारी स्याद् ब्रह्मचारी क्षपाशयः। व्यायामवेगसंरोधशोकवर्षहिमातपान्॥
प्रवातयानयानाध्वभाष्यात्यासनसंस्थितीः। नीचात्युच्चोपधानाहःस्वप्नधूमरजांसि च॥
यान्हानि पिबेत्तानि तावन्त्यन्यान्यपि त्यजेत्॥

अर्थात्—स्नेह पिये हुये पुरुष को चाहिये कि वह गर्म पानी पिये, ब्रह्मचर्य से रहे, और रात को सोवे, तथा जितने दिन स्नेह पीवे उतने दिन और उसके बाद उतने ही दिन और व्यायाम, वेगों को रोकना, शोक, वर्षा, ठन्ड, धूप, तेज वायु का सेवन, सवारी पर चढ़ना, रास्ता चलना, जोर से बोलना, अधिक बैठना या सोना, अधिक नीचा या अधिक ऊंचा तकिया लगाना, दिन में सोना, और धुंआं, धूल आदि का त्याग कर दे।

परिहारस्वरूप, जितने दिन तैलादि स्नेह पीवे उतने दिन व्यायामादि छोड़ कर गर्म जल आदि का सेवन करे।

तुवर या भल्लातक के स्नेहपान के विषय में वृद्धवाग्भट ने एक विशेष बात बतलाई है, यथा—

...............तौवरारुष्करे न तु। उष्णोपचारः स्नेहे स्यादुष्णोष्णैर्विरुध्यते॥

अर्थात्—तुवर का स्नेह पीने पर गर्म जल नहीं पीना चाहिये, क्योंकि तुवरस्नेह गर्म होने से गर्मजल का विरोधी है।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रव्यगुणशास्त्र

कम्पिल्लगुणविधान

[ले०—राजवैद्य श्री अमरदत्त मिश्र, एल० एम० ए०, अध्यक्ष—श्री कल्याण आयुर्वेद औषधालय, केकड़ी (अजमेर)]

कम्पिल्लः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रेचनोऽपि च। कम्पिल्लः कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ॥
हन्ति रेची कटूष्णं च मेहानाहविषाश्मनुत् ॥ भा० नि०

कम्पिल्लको विरेची स्यात् कटूष्णो व्रणनाशनः। गुल्मोदर विबन्धाध्मश्लेष्मकृमिविनाशनः ॥
पित्तव्रणाध्माननिघ्नः श्लेष्मोदरार्त्तिकृमिगुल्मवैरी। शूलामशोथव्रणगुल्महारी कम्पिल्लको रेच्यगदापहारी ॥ ध० नि०

नाम (संस्कृत) — कम्पिल्लः, कपिल्लकः, रक्ताङ्गः, रञ्जनः, चन्द्रः, रेचनकः, कर्कशः, लोहिताङ्गः, रक्तचूर्णकः, कम्पिल्लकः, रेची, रोचनः। (हिन्दी) — कमीला, कबीला, कमूद, कमेला, कंबिला। कमल (बंगाली) पुंनाग, कमला, गुंडी, तुंग, किशर। (अरबी) — कबील, किंबील। (फार्सी) कंबेला। (अंग्रेजी) — मैलोटस फिलिप्योनेन्सिस (Mallotus Phillipiensis) (लैटिन) — राट्लरा टिंक्टोरिया (Rottlera Tinctoria)। (मराठी) — कपीला, कमीला।

परिचयज्ञापिका संज्ञा—लघुपत्रक, लोहिताङ्ग, रक्तफल, बहुपुष्प, बहुफल।

उत्पत्ति—यह हमालय के किनारे काश्मीर से नेपाल तक बहुतायत से पाया जाता है। एशिया और आस्ट्रेलिया के उष्ण प्रदेशों में, बंगाल, ब्रह्मा, उड़ीसा, सिंगापुर, अण्डमान, मध्यप्रदेश, बम्बई, और लंका में तथा अबीसीनिया में भी पैदा होता है।

वर्णन—कमीला का वृक्ष छोटा और सदा फला फूला रहता है। इसके पत्ते गूलर के पत्तों के समान नोकदार, अण्डाकार और लाल रंग के होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो लाल रंग इन पत्तों पर चूर्ण रूप में छिड़क दिया गया हो, पूर्णतया लाल रंग नहीं होता। पत्ता ३ से ६ इंच तक लम्बा होता है। पत्रवृन्त के समीप दो अर्बुदाकार ग्रन्थियां होती हैं। वृक्ष की ऊंचाई २५ से ३० फीट तक होती है। छाल चौथाई इंच मोटी और खाकी रंग की होती है। छाल पर दरारें होती हैं, जिनमें से आभ्यन्तरिक भाग लाल सा प्रतीत होता है। इसका पुष्प और फल काल कार्तिक से पौष तक रहता है। ग्रीष्म काल में इसके फल पक जाते हैं। इस वृक्ष के पुष्प मकोय के पुष्पों से मिलते जुलते होते हैं और फल झरबेर के समान गुच्छों में लगते हैं। फल प्रारम्भ में हरे रंग के होते हैं, परन्तु पकने पर वे लाल रंग की चमकदार ग्रन्थियों में आवृत्त हो जाते हैं, जिन्हें देखने पर लाल लाल रज सी लगी हुई मालूम होती है। पक्व फल पर यह जो लाल रज दीखती है वही कमीला कहलाता है। इसमें किसी प्रकार की गन्ध नहीं होती, न किसी प्रकार का स्वाद ही होता है। यह लाल रज केवल फल पर ही नहीं होती, प्रत्युत वृक्ष की डालियों पर भी लगी रहती है। भारत के उत्तरी और पश्चिमी प्रदेशों के व्यापारी वस्त्र और तंडुलो के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिमय में पहाड़ी लोगों से कमीला ले लेते हैं। इसका प्रचुर परिमाण में संग्रह इंडोचीन में किया जाता है और वहां से सीधा यूरोप भेजा जाता है। फलों से प्राप्त कमीले और शाखाओं से प्राप्त कमीले में केवल इतना ही अन्तर है कि फलों से प्राप्त होने वाला कमीला लाल वर्ण का और उत्तम होता है तथा शाखाओं से प्राप्त होने वाला कमीला पीलापन लिये हुये ईषद्रक्तवर्ण और हीनगुणवाला होता है। आजकल बाजारों में जो कमीला मिलता है उसमें एक चतुर्थांश मिट्टी मिली होती है। इस कारण बाजारू कमीले का व्यवहार निरापद और फलप्रद नहीं होता। विशुद्ध कमीला मिलना भी कठिन है, क्योंकि एक तो वातस्पर्श से वृक्षस्थ कमीले की रज दूषित हो जाती है, दूसरे व्यापारी लोग लाभ के उद्देश्य से उसमें मिट्टी, धूल मिला देते हैं।

कमीले की परीक्षा—अंगुली को जल में भिगो कर कमीले से स्पर्श करें, जिससे आर्द्र अंगुली पर कमीला लग जाय। फिर अंगुली को सफेद कागज पर जोर से रगड़ कर लकीर बनावें अथवा योंही अंगुली रगड़ें। यदि ऐसा करने से कागज पर पीले रंग का निशान बन जावे और रगड़ते समय कमीले के चूर्ण की बत्ती सी बन जावे तो समझना चाहिये कि कमीला उत्तम है। और यदि इसके विपरीत चिन्ह हों या इनमें न्यूनता हो तो समझना चाहिये कि कमीला मिश्रित या नकली है। यूनानी गंजबादावर्द ग्रन्थ में लिखा है कि विशुद्ध कमीला हल्का स्वादरहित होता है तथा उसकी लालिमा में पीत आभा चमकती रहती है। परन्तु मिश्रित कमीला भारी, स्वादयुक्त और केवल लाल वर्ण का होता है।

कमीला के विषय में विविध विद्वानों के मत—भावप्रकाशनिघण्टु हरीतक्यादिवर्ग में लिखा है कि कमीला बायविडंग की रज है। विश्वकोषकार ने अपने 'विश्वकोष' में लिखा है कि कमीला को वायविडंग की रज कहना भ्रम है। वहां के वैद्य वायविडंग की जगह केवल कमीला के आन्तरिक मल को काम में लाते हैं, क्योंकि इसके गुण वायविडंग के समान ही होते हैं, परन्तु वास्तव में कमीला और वायविडंग दो चीजें हैं। ये दोनों भिन्न भिन्न जाति के पौधे हैं। भावमिश्र कृत भावप्रकाश लाला शालिग्राम वैश्य विरचित ग्रन्थ में भी लिखा है कि कमीला वायविडंग की रज है। वायविडंग के ऊपर जो लाल रजसी होती है वही कमीला है। उन्होंने यह भी लिखा है कि मैंने स्वयं देखा है कि बायविडंग को बांस की टोकरियों में डाल कर नीचे कपड़ा बिछाकर टोकरियों में भरी हुई वायविडंग को पैरों से मलते हैं, जिससे रज बांस की टोकरियों से छनकर कपड़े पर आजाती है, उसे ही कमीला कहते हैं।

कमीले का रासायनिक संगठन—कमीला इष्टिकाचूर्ण के समान लालवर्ण का स्निग्ध और स्वादरहित महीन चूर्ण है जिसे कमीला के फलों पर से झाड़ लिया जाता है। यह शीतल अविलेय है और उबलते जल में अंशतः विलेय है। परन्तु क्षार सुरासार में एवं ईथर में पूर्णतया विलेय होता है और इससे गहरे लाल रंग का विलयन बन जाता है। एक प्रकार का धूसर रक्तवर्ण का (Resin) जो राटलरिन (Rottlerin) $C_{33}H_{30}O_{9}$ नामक स्फटिकीय पदार्थ से संगठित होता है इसका प्रधान उपादान है और यह रक्ताभ पीतवर्ण के पत्राकार परत के रूप में पाया जाता है। इससे भिन्न इसमें एक आइसो राटलरिन (Iso Rottlerin) नामक पदार्थ भी होता है, जो शायद अशुद्ध राटलरिन ही है। इसमें एक प्रकार का पीत स्फटिकीय द्रव्य, एक पीत और रक्तवर्ण का राल एवं मोम (Wax) भी पाये जाते हैं। इसमें उड़नशील तैल, श्वेत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार, शर्करा, कषायिन (Tunnia) चुक्राम्ल (Oxalic acid) और निम्बुकाम्ल (Citric acid) आदि द्रव्य चिन्हमात्र पाये जाते हैं। (R. N. Chopra, I. D. I.).

मात्रा—१ तोला तक, ३० से ४० ग्रेन, चूर्ण रूप में।

आयुर्वेद में कमीले का व्यवहार—चरक चि० अ० ५ के अनुसार (१) गुल्म रोगी को विरेचनार्थ कमीला शहद में मिला कर देना चाहिये, (२) व्रणरोपणार्थ कमीले को तैल में पकाकर लगावे, यह उत्तम व्रणरोपक है, (३) गुड़ के साथ १ तोला कमीला खिलाने से उदरस्थ कृमि नष्ट हो जाते हैं।

चरक के कृमिघ्नवर्ग में कम्पिल्ल का पाठ नहीं आया है; केवल चक्रदत्त ने कृमिरोगों में व्यवहार किया है।

यूनानी मतानुसार गुणविवेचन—कमीला दूसरे तीसरे दर्जे का गर्म और रूक्ष है। राजी और मसीहा ने शीतल और रूक्ष लिखा है। आमाशयिक द्वार तथा आंखों को हानिकारक है। आमाशयिक द्वार सम्बन्धी हानि के निवारण के लिए मस्तंगी तथा आंतों के लिए कतीरा एवं शीह अर्मनी देना चाहिये। प्रतिनिधि— वायविडंग, तुमुर्स और सक बीनज। स्वाद— तिक्त एवं बदमजा। मात्रा— ३॥ माशे से ७ माशे तक। मतान्तर से ४ से ६ माशे तक।

गुणकर्मप्रयोग— ३॥ माशे से ७ माशे की मात्रा में कमीले को उपयुक्त औषधद्रव्य के साथ सेवन करने से आमाशय एवं आंतों के हर प्रकार के दोष दूर होते हैं, तथा पिच्छिल और विकृत दोष भी मल द्वारा बाहर निकल जाते हैं।

(१) कमीले के चूर्ण को क्षत पर बुरकने से क्षत की सड़न मिटकर क्षत ठीक होजाता है।

(२) शिरोगत गंज रोग में इसे शतधौत घृत के साथ मिलाकर उपयोग करने से पूर्ण लाभ होता है।

(३) कमीले के नित्योपयोग से एवं पथ्यपरायण रहने से कुष्ठ रोग का उन्मूलन होजाता है।

(४) चर्मरोगों में कमीले के लेप से आशातीत लाभ होता है।

(५) कमीले के सेवन से पाचनशक्ति की कमी, ज्वर तथा यकृत् और फुफ्फुसशूल आदि का निवारण होता है और बादी के रोगों में भी अच्छा लाभ होता है।

(६) ८ माशा से १ तोला तक कमीले को शहद के साथ सेवन करने से चुन्ने मर जाते हैं। इसकी ८ माशे की मात्रा से विरेचन आरम्भ हो जाता है और ३, ४ दस्त आकर सब कृमि बाहर निकल जाते हैं।

(७) गुल रोगन के साथ कमीला लगाने से दाद, खाज, कण्डू और फुंसी आदि नष्ट हो जाते हैं।

(८) कमीले को तिलों के तेल में पीस कर लगाने से अण्डकोषों के घाव मिट जाते हैं।

नव्यमतानुसार गुणधर्मविवेचन।

कमीला कृमिघ्न और विरेचक है। मात्रा २० से ३० ग्रेन (२ से ८ ग्राम) तक।

दाद और तर खाज पर कमीले का बाह्य प्रयोग करते हैं इसका विशेष व्यवहार चुन्नों पर होता है। यह पित्त को अन्तः प्रेषित करता है, शूलवत् वेदना का शमन करता है, तथा समस्त चर्मरोगों में मरहम के रूप में उपयोग करने पर अच्छा लाभ पहुँचाता है। (M. M. I., II Part, Page 550).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा ।

(केरल—द्राविड़—कर्णाटक में)

(गताङ्क से आगे)

ता० ६ को 'मैसूर राज्य आयुर्वेद कांग्रेस' के प्रमुख वैद्य बंगलौर स्टेशन पर राष्ट्रपति जी से मिलने और उनकी सुख सुविधा का प्रबन्ध करने के लिये आये। शाम को वे मैसूर पहुँचे जहां उनका स्वागत करने के लिये 'निखिल कर्नाटक आयुर्वेद मण्डल' के सभापति, प्रधान मन्त्री तथा अन्य सदस्य आये और उनको कर्नाटक मण्डल के सभापति श्रीयुत पार्थनारायण पण्डित के घर ले गए जिनके साथ रहना राष्ट्रपति जी ने सुविधाजनक समझा। ता० १० से एक बहुमुखी कार्यक्रम आरम्भ हुआ ! यह एक स्मरणीय दिवस था। इस दिन प्रायः एक दर्जन व्यक्तिगत स्वागत समारोहों के अतिरिक्त 'म्युनिसिपल इण्डिजिनस' डिस्पेंसरी 'निखिल कर्नाटक डिस्पेन्सरी' आदि संस्थाओं का निरीक्षण भी किया गया। प्रथम स्वागत साधना--औषधालय की शाखा में हुआ जहां अन्य सज्जन भी आमन्त्रित थे। शाम को सीता-राघव औषधालय में उस दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस अवसर पर औषधालय के मालिक पल्या वेंकाचला पण्डित कर्नाटक मण्डल और आयुर्वेदिक कांग्रेस के आजीवन सदस्य बने। ता० १२ को चामराज नगर में एक समारोह था जहां पर रेलगाड़ी से जाना पड़ता था। यह एक लाभकारी समारोह था जिस का ध्येय एक आयुर्वेदिक औषधालय की स्थापना के निमित्त धन संचय करना था। शाम को फिल्म अभिनेत्री बसन्त कोकिला ने एक सहस्र दर्शकों का निःशुल्क मनोविनोद किया। आयुर्वेदराष्ट्रपति श्री मुखर्जी महोदय ने, जो इस शुभ अवसर पर सभापति के उच्चासन पर आसीन थे फिल्म अभिनेत्री से आयुर्वेद के निमित्त कुछ निःशुल्क कलाप्रदर्शन करने की प्रार्थना की जिस को उसने सहर्ष स्वीकार किया। सभापति जी ने ध्वनिविस्तारक--यन्त्र के द्वारा उस भारी जनसमुदाय को आयुर्वेद का सन्देश सुनाया। दूसरे दिन प्रातः वे अपनी पार्टी के सहित नंजनगुड को चल दिये। स्टेशन पर पहुँचने पर उनका हार्दिक स्वागत किया गया। तब पार्टी डाक बंगले पर गई जहां जनता के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों ने आयुर्वेद विषय पर सभापति जी से परामर्श किया। शाम को मैसूर रिप्रिजेन्टेटिव ऐसेम्बली (प्रीतिनिधि धारासभा) के उपसभापति श्री सी० डी० नारायणराव ने सभापति जी के सम्मान में एक प्रतिभोज दिया। प्रायः ३०० व्यक्ति आमन्त्रित थे। सभापति जी ने अपनी प्रशंसा के उत्तर में सत्कर्त्ता से धारासभा के द्वारा आयुर्वेद की सेवा करने की प्रार्थना की। श्रीयुत बी० वी० पंडित ने सभापति जी से आयुर्वेद विषय पर वातचीत की। सभापति जी के इस अल्पकालिक निवास में बहुत से स्थानीय प्रसिद्ध व्यक्ति मिलने के लिये आये। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए श्रीयुत पंडित ने अपने लड़के को आयुर्वेद कांग्रेस का संरक्षक सदस्य बना दिया। शाम को पार्टी मैसूर के लिये रवाना हुई। वहां पर शाम को गवर्नमेंट संस्कृत कालिज की ओर से स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया था। सभापति जी ने उपस्थित लोगों के सामने पहिले संस्कृत में और फिर हिन्दी में भाषण दिया। तत्पश्चात् नगर के धन्वन्तरि--संघ की ओर से स्वागत हुआ। रात्रि में सभापति जी ने 'आयुर्वेद का भूत और भविष्य' विषय पर रेडियो पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषण दिया। विश्वविद्यालय में अवकाश था, इस लिए त्रावणकोर जैसा अनुभव यहां भी हुआ, किन्तु ता० १३ को टाउनहाल की सार्वजनिक सभा के सभापति विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर थे, जिन्होंने सभापति जी के उस भाषण की अति प्रशंसा की, जिसमें उन्होंने विशेष रूप से आयुर्वेद इतिहास के गौरवपूर्ण विश्वविद्यालय-काल पर प्रकाश डाला था। अपने भाषण के अन्त में उन्होंने आयुर्वेद के उत्थान के लिए सम्भावना प्रकट की। इससे पूर्व सायंकाल को शहर के वैद्यों ने चामुन्डेश्वरी भवन के ग्रान्ड होटल में, जहां पर संवाददाता भी उपस्थित थे, एक चाय पार्टी दी थी। आयुर्वेदराष्ट्रपति जी की सफल यात्रा पर उनकी प्रशंसा की गई। उत्तर में सभापति जी ने आयुर्वेद की वर्तमानकालिक समस्याओं पर एक महत्वपूर्ण सन्देश दिया। ता० १४ को वैद्य पुराणिक जी, प्रधान मन्त्री, निखिल कर्नाटक आयुर्वेद मंडल, ने सभापति जी के सम्मान में एक प्रीति भोज दिया। इस अवसर पर सभापति जी बहुत से वैद्यों से मिलकर प्रसन्न हुये। इसके अति रिक्त इस अवसर पर मैसूर राज्य आयुर्वेद कालिज के आयुर्वेद स्नातकों के एल० ए० एम० एस० संघ ने भी आपका अभिनन्दन किया और अपने पूर्ण संतोष के हेतु शुद्ध आयुर्वेद प्रणाली और उसके द्वारा आयुर्वेद के पुनरुद्धार की सम्भावनाओं को समझने के लिये शंकायें और प्रश्न उठाये। ता० १५ को प्रधानाध्यापक के निमन्त्रण पर सभापति जी ने मैसूर राज्य आयुर्वेद एन्ड यूनानी कालिज का निरीक्षण किया। कालिज भली भांति चल रहा है किन्तु इसमें भारतवर्ष के अन्य कालिजो के समान शिक्षाप्रणाली में अति आवश्यक परिवर्तन के साथ २ विस्तार की भी आवश्यकता है। इससे पूर्व छात्रसंघ का मन्त्री सभापति जी से मिला और स्नातकों की रजिस्ट्रेशन सम्बन्धी कठिनाइयों का जिक्र किया। वैद्या विष्लक्ष्मी जी ने सभापति जी का सत्कार करने के लिए आग्रह किया। इसलिये सायंकाल को कर्नाटक मंडल के प्रधान और मन्त्री के सहित सभापति जी उनके स्थान पर गये। कुछ रात गये सभापति जी को मेसूर की सबसे पुरानी आयुर्वेद-संस्था 'वैद्य-संघ' के सदस्यों से मिलना पड़ा। सभापति ने भिन्न-भिन्न संस्थाओं को एक ही में मिल जाने का आदेश दिया। दूसरे दिन सभापति जी राजवैद्य चन्द्रभानसिंह जी से मिलने गये जिन्होंने आयुर्वेद कांग्रेस का आजीवन सदस्य बन कर उनका सत्कार किया। अपराह्न में सभापति जी ने मैसूर राजकीय आयुर्वेद एण्ड यूनानी कालेज के विद्यार्थियों के सामने एक भाषण दिया। इसके पश्चात् हिन्दी प्रचार समिति ने एक स्वागत समारोह का आयोजन किया जिसमें सभापति जी ने अपने भाषण में शुद्ध हिन्दी के पक्ष में अपनी सम्मति प्रकट की और उसके प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया। १७ ता० को विश्राम–दिवस था। सभापति जी ने जिले के प्रधान नगर मंड्या के लिए सदल प्रस्थान किया। वहां गवर्नमेन्ट आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी कालेज के स्नातक सम्मेलन ने उनको निमन्त्रित किया। सभापति जी दूसरे दिन तक जबकि उक्त सम्मेलन होने वाला था ठहरने में असमर्थ थे क्योंकि कुर्ग प्रान्त का कार्यक्रम निश्चित हो चुका था। इसलिए शाम को टाउन हाल में सभापति जी के भाषण का प्रबन्ध किया गया। इस सुअवसर पर सभापति जी ने बहुत से वैद्यों से संपर्क स्थापित किया और उनकी आयुर्वेद कांग्रेस में रुचि पैदा की।

८० मील की बस-यात्रा करने के पश्चात १६ मार्च को सायंकाल कुर्ग प्रान्त के प्रथम स्टेशन पर पहुँचे। सभापति जी और उनके दल के लिए सुखपूर्वक निवास का प्रबन्ध डाक बंगले पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया था। आतिथ्य सत्कार में कुछ भी त्रुटि नहीं थी। प्रकृति चारों ओर अपनी निधि को फैला कर नेत्र और मस्तिष्क को तृप्त करती हुई और भी अधिक सत्कार सा कर रही थी। शाम को स्थानीय टाउन हाल की सार्वजनिक सभा खचाखच भरी हुई थी, यह एक ऐसा दृश्य था जो विराजपेट में साधारणतः देखने में नही आता था। नगर के हेल्थ आफिसर सभापति के आसन पर आसीन थे। प्रायः एक घण्टे से भी अधिक समय तक श्री मुखर्जी का भाषण पूर्ण शान्ति के साथ सुना गया। स्त्रियां भी एक अच्छी संख्या में उपस्थित थीं। भाषण के दौरान में सभा के प्रधान विशेष स्थलों को नोट कर रहे थे और अपने भाषण में उन्होंने उनसे ऐलोपैथी की दृष्टि से जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, असहमति प्रकट की।

वैद्यलोग आयुर्वेद कांग्रेस के सदस्य बने। दूसरे दिन प्रातः स्थानीय हाई स्कूल के सहृदय और आयुर्वेद प्रेमी हेडमास्टर मि० सेनोई द्वारा आतिथ्य सत्कार किए जाने के पश्चात सभापति जी ने अपने दल के साथ चीफ कमिश्नर द्वारा शासित प्रान्त के प्रधान नगर के लिए प्रस्थान किया। तत्पश्चात् सभापति जी सदल सुन्दर रमणीक पर्वतीय प्रान्त में पांच घण्टे की यात्रा के निमित्त बस में बैठे। मरकारा तो अति ही सुन्दर था। यह समुद्र तल से ३००० फीट ऊंचा है और इसकी जलवायु आनन्द दायक है। शाम को स्थानीय कांग्रेस नेता मि० वेलिअप्पा ने जो विराजपेट से सभापति जी के साथ थे, सभापति जी को उनके साथियों सहित अपने स्थान पर भेज दिया। शाम को एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। सिविल सर्जन महोदय सभापति थे। महिलाओं सहित एक बड़ी संख्या उपस्थित थी। यहां पर भी सभापति (सिविल सर्जन) महोदय श्रीयुत मुखर्जी द्वारा आयुर्वेद को वैज्ञानिक प्रणाली पर दिए गए भाषण से पूर्ण सहमत न हो सके। जो लोग आयुर्वेदेतर चिकित्सा प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करते हैं अथवा जो मिश्रित चिकित्सा प्रणाली की बातें सोचते हैं, उनको आयुर्वेद का मूल्य और उसके गम्भीर वैज्ञानिक सिद्धान्तों को समझने में अभी कुछ समय लगेगा, आयुर्वेद के सम्बन्ध में देश की विचारधारा को ठीक रास्ते पर लाने के लिए निरन्तर प्रचार, घनिष्ठ संपर्क, तथा विज्ञ समाज को आयुर्वेद की शिक्षा देने की महती आवश्यकता है। अनुभव इस बात का साक्षी है कि इस सम्बन्ध में प्रचार और शिक्षा का उत्साहवर्धक फल रहा है। दूसरे दिन प्रातःकाल विदा होने से पूर्व चीफ कमिश्नर साहब से मिलने का प्रबन्ध किया गया। उन्होंने आयुर्वेद के अपने वैज्ञानिक ढंग पर चलने के लाभ और औचित्य को स्वीकार किया तथा सरकारी सहायता प्राप्त आयुर्वेदीय औषधालयों के मेडीकल आफिसर की केवल ऐलोपैथिक औषधियों के लिए मांग करने की नीति पर दुःख प्रकट किया। प्रान्त में प्रत्येक दस मील की दूरी पर दातव्य आयुर्वेद औषधालय स्थापित हैं। उनसे अनुरोध किया गया कि रोगियों के लाभार्थ ऐसे औषधालयों की संख्या बढ़ाई जाय क्योंकि जनता से प्राप्त होने वाले कर को देखते हुए इतने औषधालय पर्याप्त नहीं हैं। बस-यात्रा फिर आरम्भ हुई। बस मनमोहक दृश्यों के बीच पर्वत मार्ग से होता हुई मैदान की ओर चल पड़ी। प्रायः १५० मील लम्बा मार्ग तय करने के बाद शाम को मंगलोर पहुँचे। वैद्य बी० आर० हरिदास ने, जो आयुर्वेद-कांग्रेस के आजीवन सदस्य हैं, बस के अड्डे पर मोटर सहित एक आदमी को स्वागत के लिए भेजा और अपना आतिथ्य प्रदर्शित करने के लिए सभापति जी को अपने घर पर आमन्त्रित किया। ता० २२ को निखिल कर्नाटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद मंडल की स्थायी समिति की बैठक का आयोजन हुआ। मुख्य विषय कर्नाटक मंडल द्वारा आमन्त्रित आयुर्वेद कांग्रेस के ३४ वें अधिवेशन के लिए स्वागत समिति के निर्माण का था। सभापति जी की उपस्थित का समस्या सुलझाने में काफी प्रभाव पड़ा। कर्नाटक मंडल के सभापति को स्वागत समिति निर्माण के लिए उचित कार्यवाही करने का अधिकार दिया गया, श्रीयुत मुखर्जी ने डा० एम आर० भट्ट को इस कार्य के लिए सुविधायें देने का परामर्श दिया जिसको उपयोगी समझा गया। दूसरे दिन वैद्यलोग और जनता सभापति जी से शाम को एक चायपार्टी में मिले, जिसके पश्चात् रा० व० डा० पाई के सभापतित्व में श्रीयुत मुखर्जी ने एक घण्टे तक सार्वजनिक भाषण दिया। डा० पाई भी जो अपनी पसन्द की चिकित्सा पद्धति के प्रेमी हैं, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति से पूर्ण सहमत नहीं हुए, जैसे कि उनके भाषण से विदित होता था।

निखिल कर्नाटक आयुर्वेद मंडल के सभापति और प्रधान मन्त्री जो अब तक कर्नाटक प्रान्त के कार्यक्रम में योग दे रहे थे मंगलौर में सभापति जी से विदा हो गये। द्राविड़ क्षेत्र में पुनः प्रवेश करने के प्रथम उन्होंने श्रीयुत वी० आर० हरिदास से उदारतापूर्वक ३४ वें अधिवेशन को सफल बनाने के लिए सहयोग देने की विशेष प्रार्थना की। श्रीयुत हरिदत्त अन्त तक ध्यानपूर्वक सभापति जी की वात सुनते रहे। मोटर गाड़ी वालों की आम हड़ताल के कारण २५ ता० से आरम्भ होने वाले सभापति जी के उस कार्यक्रम में, जो कोयम्बटूर में निश्चित किया गया था, गड़बड़ हो गई। परिणाम स्वरूप २६ मार्च को होने वाली सभा का सभापतित्व करने के लिए डिस्ट्रिक्ट जज महोदय उपस्थित न हो सके। इच्छुक जनता को आयुर्वेद और आयुर्वेदिक कांग्रेस का सन्देश सुन्दर ढग से सुनाया गया। ता० २७ को चाय-पान के साथ २ वैद्यों की सभा हुई। कोयम्बटूर में संगठन के लिए ज़िलामराडल की स्थापना की गई। द्रविड़ प्रान्तीय आयुर्वेद मंडल के प्रधान मन्त्री श्रीयुत पं० पी० एस० रामशर्मा सभापति जी के निमन्त्रण पर उपस्थित हुए थे। वैद्यों ने सभापति जी की मांग का उदारपूर्वक उत्तर दिया और उनमें से तीन आजीवन सदस्य तथा साधारण सदस्य प्रसन्नता के साथ बनें।

ता० २६ को सभापति जी को मद्रास के लिए हार्दिक विदाई दी गई, जहां ता० ३० को इन्डियन मेडिसन स्कूल में नागरिक एल० आई० एम० संघ की तरफ से सभापति जी के स्वागत में एक चायपार्टी का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् आयुर्वेद की वर्तमान और भावी समस्याओं पर सभापति जी ने खूब प्रकाश डाला। आयुर्वेद कांग्रेस की ओर से सभापति जी द्वारा शुद्ध आयुर्वेद प्रणाली पर दिए गए भाषण पर श्रोताओं ने अपनी शंका समाधान के निमित्त बहुत से प्रश्न पूंछे और कुछ असहमति होंने पर भी भाषण से प्रभावित हुए। सभापति जी के उत्तर संतोषजनक प्रतीत होते थे। ता० ३१ को म्यालापुर की एक प्राचीन शुद्ध आयुर्वेद प्रणाली पर स्थापित 'वेंकटरमण आयुर्वेद पाठशाला' ने सभापति जी को आमन्त्रित किया। अध्यापक और विद्यार्थी गण के अतिरिक्त अन्य आमन्त्रित सज्जन भी उपस्थित थे। सभापति जी ने एकसुन्दर भाषण दिया जिसे श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। दक्षिण भारत की व्यस्त और तूफानीं तीन मास की यात्रा की समाप्ति पर ता० २ अप्रैल को विदा होते समय सभापति जी ने अपनी यात्रा के उद्देश्य और अनुभवों पर एक वक्तव्य समाचारपत्रों को दिया। समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठकार्यसमितेः

चतुर्थाधिवेशनस्य कार्यविवरणम् ।

स्थानम्—विद्यापीठ कार्यालय, चिमनी मिल, देहली ।

समय—ता० २६-११-४५, सोमवासरे, मध्यान्होत्तरद्विवादनतः ।

उपस्थिति—सर्वश्री पं० चन्द्रशेखरानन्द शास्त्री (देहली), पं० शिवशर्मा जी (मेरठ), पं० हनुमत्प्रसाद शास्त्री (रामगढ़), पं० लक्ष्मीशंकर शर्मा (देहली), पं० मनोहरलाल जी (देहली), क० ज्योतिषचन्द्र जी (देहली), पं० जगदीशप्रसाद जी (देहली), पं० वाचस्पतिशर्मा (मेरठ), पं० गणेशदत्त जी (मेरठ), पं० शंकरदत्त जी (मेरठ), पं० बाबूराम मिश्र (हापुड़), क० उपेन्द्रनाथदास (देहली) ।

श्रीयुतकविराजज्योतिषचन्द्रसरस्वतीमहोदये यथासमयमनागते श्रीयुतपण्डितमनोहरलालवैद्यराजस्य सभापतित्वे सभाकार्यमारब्धम् । आगते च तस्मिन्नवशिष्टा कार्यवाही तस्यैव सभापतित्वे सम्पन्नाभूत् ।

निम्नाङ्कितसदस्यमहानुभावानां पत्रद्वारा प्राप्ताः सम्मतयः श्राविताः—सर्वश्री एम० के० मुखर्जी (कलकत्ता), जीवराम कालिदास शास्त्री (गोंडल), जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (प्रयाग), पुरुषोत्तमशास्त्री हिर्लेकर (अमरावती), पंढरीनाथ दामोदर मूले (अमरावती), ईश्वरदास स्वामी (जयपुर), जी० एन० ओखदे (ग्वालियर), बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर), लक्ष्मीकान्त पुराणिक (नागपुर), करुणाशंकर शास्त्री (पेटलाद), रामदयालु त्रिपाठी (हर्दा), रंगलाल ओझा (करांची), एन० माधव मेनन (मद्रास) ।

गताधिवेशनस्य कार्यविवरणं पठितं स्वीकृतं च ।

१—३४ तम-नि०भा० आयुर्वेदमहासंमेलनावसरे मणिपालनगरे सम्पत्स्यमाने नि० भा० आयुर्वेदशिक्षासम्मेलने उपस्थापयितुं योग्याः प्रस्तावाः निर्वाच्य संशोधिताः । ते च महामण्डल-कार्यालये प्रेषणीयाः इति मन्त्री समादिष्टः ।

२—श्रीशङ्करदाजीशास्त्रिपदेस्मारकस्वरूपस्वर्णपदकप्रदानस्य का व्यवस्था कार्या विद्यापीठेन भविष्यत्काले ? इत्यस्मिन् विषये श्रीपंडितजगन्नाथप्रसादशुक्लस्य दशसहस्रमुद्रासंग्रहप्रस्तावः स्वीकृतः, महामण्डल-कार्यालये प्रेषयितुं च मन्त्री नियोजितः ।

३—विद्यापीठस्य १९४६ तमवर्षीये आनुमानिकायव्ययपत्रे महाविद्यालयप्रचारव्यय-विषये ५००) इत्यस्य स्थाने २५००) इति संशोधनं स्वीकृतम् । शेषाश्च विषयाः यथोल्लिखिता एव स्वीकृताः । निम्नाङ्कितानां नवीनविषयाणाम् (items) उद्घाटनस्याधिकारः मन्त्रिणे प्रदत्तः । व्ययपक्षे-(१) स्टेशनरी (२) पुस्तकप्रकाशनम् (३) आडिट-व्ययः (४) महाविद्यालय-प्रचारव्ययः (५) बट्टा-खाता । आयपक्षे च (१) प्रागुत्तीर्णविषयस्वीकृति-शुल्कः (२) गुणाङ्कप्रेषणशुल्कः (३) कुसीदः (Interest).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार का पता— 'साधना' ढाका। टेलीफोन—१२२ ढाका।

महान् वैज्ञानिक का

आयुर्वेद को दान।

आयुर्वेद का पुनरुद्धार और देशविदेशों में प्रचार।

अब वैद्यों को स्वयं औषधियां तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। साधना औषधालय हर समय उनकी सेवा के लिए तैयार है। यहां पर शुद्ध शास्त्रीय विधि से औषधियां तैयार की जाती हैं और उचित मूल्य पर बेची जाती हैं। महायुद्ध के कारण भी औषधियों के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई। वैद्यों को चाहिये कि वे दवाइयां बनाने के झंझट में न पड़ कर अपना समय और दिमाग रोगियों की चिकित्सा में लगावें।

साधना की सभी शाखाओं में रोगियों को चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श मुफ्त दिया जाता है।

अध्यक्ष—डा० योगेशचन्द्र घोष एम.ए.
आयुर्वेदशास्त्री, एफ०सी०एस०(लन्दन),
एम० सी० एस० (अमेरिका),
भागलपुर कालेज के केमिस्ट्री के
भूतपूर्व अध्यापक।

साधना औषधालय ढाका (बंगाल)

(शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों की प्रसिद्ध निर्माणशाला)

सारे संसार में इसकी शाखायें और एजेन्सियां हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयव्ययनिरीक्षकस्य संमतौ * विचारं कृत्वा निम्नांकिताः निश्चयाः कृताः—

(१) द्रव्यपुस्तक प्रतिदिनं सन्तुलनीयम्, आयव्ययकर्मचारिणा, कार्यालयाध्यक्षेण, मंत्रिणा च हस्ताक्षरितव्यम् ।

---

* आयव्ययनिरीक्षकसंमतेः संस्कृतेऽनुवादः--

जे० सी० माथुर एण्ड कम्पनी,
रजिस्टर्ड अकांउण्टेण्ट,

एजर्टन रोड,
देहली, ता० २४-११-४५

श्रीमन्तः सभापतिमहोदयाः,
नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीटम्, देहली ।

प्रियमहानुभाव !

नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठस्य ३१-१०-४५ दिने समाप्तस्य वर्षस्य आयव्ययौ अस्माभिर्निरीक्षितौ । अस्माभिः सम्यक्प्रमाणितम् आयव्ययविवरणं सहैव प्रेष्यते । किन्तु अस्मिन्विषये अस्माकं आलोचनात्मिका सम्मतिरधो निर्दिश्यते । सा च आयव्ययविवरणविधौ अतीव लाभप्रदा भविष्यतीति विश्वसिमः ।

१—द्रव्यपुस्तकम् (Cash-Book) मासान्ते सन्तुल्यते । तच्च एतादृश्याः महत्याः संस्थायाः सम्बन्धे अनियमितमेव । द्रव्यपुस्तकं प्रतिदिनं सन्तुलनीयम्, आयव्ययकर्मचारिणा (accountant) कार्यालयाध्यक्षेण (Office Superintendent), मंत्रिणा (Secretary) च हस्ताक्षरितव्यम् । कार्यालयाध्यक्षः स्वयमेव द्रव्यं गणयित्वा द्रव्यपुस्तकं हस्ताक्षरेत् ।

२—द्रव्यसुरक्षाप्रबन्धाभावे निश्चतपरिमाणमेव द्रव्यं कार्यालयये स्थापनीयम्, तदुपरि सर्वं धनागारे (Bank) प्रेषणीयम् ।

३—दशमुद्राधिको व्ययः चैकद्वारा (Cheque) चेद् भवेत्तदा कार्यालये अधिकधनस्थापनाजायमानायाः भीतेरपि मुक्तिर्भवेत् । समुचितस्वीकृतिं विना न कोऽपि व्ययः कार्यः ।

४--महामण्डलात् क्रीतानां विविधवस्तूनां मूल्यनिर्धारणे कः आधारः अंगीकृतः इति वयं ज्ञातुं न शक्नुमः । एवं क्रीतानां वस्तूनां समूल्यसूची अस्माकं निरीक्षणार्थं न प्रस्तुता ।

५—विक्रेयपुस्तकानां मूल्यं यच्च विक्रयमूल्याधारेण परिगणितं क्रयविक्रयसमन्वयानन्तरं ३०१२।) इति कार्यालयपुस्तकेषु प्रदर्शितम् । यतः विक्रयात् पूर्वं लाभोऽनुमातुं न शक्यते, अतोऽस्माकं मते विक्रयमूल्येन मूल्यनिर्धारणं अनुचितमव्यवस्थाकरं च ।

कार्यालयवस्तुजातस्य (Stock) विवरणं सपरिमाणमूल्यं पृथक् पुस्तके रक्षणीयम् । कार्यालयपुस्तकानां प्रमापणार्थं प्रतिवर्षान्ते कार्यालयवस्तुजातं परिगणनीयम् ।

पुस्तकप्रकाशनम् पृथग् विषयः । पुस्तकप्रकाशनव्ययः मुद्रणादिव्यये न संयोजनीयः यास्मिन्वर्षे कृतः । १३८।) रूप्यकाणां धनराशिः वर्षे प्रकाशितपुस्तकानां आधुमानिकमूल्यरूपेण मुद्रणादिव्ययविषयात् वस्तुजातविषये परानीता । किन्तु सा केवलं आयव्ययकर्मचार्यनुमानाधारा, अतः

सत्स्वेवाविश्वासादित्सवः, तत्रभवतां विश्वासभाजनानि,

(ह०) जे० सी० माथुर एण्ड को०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) कार्यालये मुद्राशतं रक्षणीयम्, तदधिकं च सर्वं धनं धनागारे प्रेषणीयम्।

(३) सर्वविधोऽपि व्ययः यथासंभवं चैकद्वारा एव भवेत्, समुचितस्वीकृतिं विना च न कोऽपि व्ययः कार्यः।

(४) पूर्व कार्यालयवस्तुजातसूची अपूर्णैवासीत्। अाधुना तु सा पूर्णतां नीयते। अतः भविष्यति काले विविधालोचनाया अवसर एव न स्यात्।

(५) अतीते यज्जातं तज्जातं, परिवर्तनमसम्भवमेव। किन्तु अनागते काले पुस्तकादीनां मूल्यं विक्रयमूल्येनानिर्धार्य निर्माणमूल्येन निर्धारणीयं, येन लाभहान्योः सम्यक् परिज्ञानं भवेत्।

आयव्ययनिरीक्षकस्यान्यैर्विचारैरपि सहमता एषा समितिः।

४—विद्यापीठस्वीकृताध्यापकानां सदस्यताशुल्कं विद्यापीठ-कार्यालयद्वारा महामण्डल-कार्यालये प्रेषणीयम्—इति निश्चितम्।

५—कार्यालयकर्मचारिणां वार्षिकवेतनवृद्धिविषयक-प्रार्थनापत्रेषु विचारं कृत्वा निश्चितं यत् (क) श्रीविष्णुदत्तप्रभाकरस्य प्रार्थनापत्रे मासत्रयानन्तरं विचारः कार्यः, (ख) श्रीबालकृष्ण-मधुरस्य वेतने ५) वृद्धिः १-१-१९४६ तः कार्या तथा दशरूप्यकमिता विशेषसहायता अग्रेऽपि ३०-६-१९४६ पर्यन्तं देया।

६—यैः केन्द्राध्यक्षैः गतवर्षे अधिको व्ययः कृतस्ते व्ययन्यूनतायै पत्रद्वारा प्रार्थनीयाः।

७—वेतनवृद्ध्यादिनियमनिर्माणविषये निश्चितं यत् तावत् स्थायी नियमा न निर्मापणीया यावत् परिस्थितयोऽनिश्चिताः।

८—स्वीकृतां महाविद्यालययोजनां महामण्डलकार्यालये प्रेषयितुं मन्त्री नियोजितः।

९—नि० भा० आयुर्वेदमहासंमेलननियमावल्यन्तर्गत-विद्यापीठसम्बन्धिनियमैस्तथा वर्तमानविद्यापीठनियमावल्यामुपसमित्या कृतैः संशोधनैश्च सह पुनर्मुद्राप्य विद्यापीठनियमावली प्रकाशनीया।

१०—मिश्रितविषयाः।

(क) नूतनकेन्द्रस्थापनाविषयः स्थगितः।

(ख) महासंमेलनाध्यक्षस्य लक्ष्मीपतिमहोदयस्य च सहयोगेन उपकेन्द्राणां व्यवस्था कार्या।

(ग) मन्त्रिणो अधिकारेण पत्रिकायां प्रकाशिता प्रश्नपत्रपुस्तकमूल्ये २५ प्रतिशतन्यूनता (Commission) विषयिका विज्ञप्तिः स्वीकृता। सा च १९४६ वर्षेऽपि कार्यान्विता भवत्विति निश्चितम्।

(घ) सम्बद्धसंस्थाछात्राणां प्रमाणपत्रेषु सम्बद्धसंस्थाया एव नाम लेखनीयं न तु गुरोः।

(ङ) कार्यालयभृत्यस्य (Peon) वस्त्राणां कृते २०) रूप्यकाणां व्ययः स्वीकृतः।

(च) धनागारे करेन्ट-अकाउण्ट (Current account) उद्घाटनीयः। तदधिकारिणश्च पूर्ववत् भवन्त्विति निश्चितम्।

श्री उपेन्द्रनाथदासः
विद्यापीठ—मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का चौंतीसवां अधिवेशन

(मणिपाल, द० कनरा)

संशोधित कार्यक्रम

समय	परिषद् का नाम	अध्यक्षनाम
	२८–१२–४५	
३ बजे सायं	प्रदर्शनी का उद्घाटन	वैद्यरत्न के० जी० श्रीनिवासमूर्ति (मद्रास)
	स्वागताध्यक्ष का भाषण	डा० पी० एस० ईश्वर भाट, (विठ्ठल)
५ बजे सायं	योगव्यायाम–संभाषा-परिषद्	भिषग्रत्न ए० लक्ष्मीपति बी० ए०, एम० बी० एण्ड सी० एम०
६ बजे रात	विद्यापीठ–कार्यकारिणी का अधिवेशन	
१० बजे रात	महामण्डल–अधिवेशन	
	२९–१२–४५	
८ बजे प्रातः	सभापति का जलूस	
९ बजे प्रातः	धन्वन्तरि–पताका–उत्तोलन	पं० शिवशर्मा जी आयुर्वेदाचार्य
३ बजे सायं	स्वागताध्यक्ष का भाषण	ए० लक्ष्मीनारायण बी० ए०, बी० एल० (अध्यक्ष, स्वागतसमिति)
	संमेलन का उद्घाटन	पूज्य श्री लक्ष्मीन्द्र तीर्थ स्वामियर शीरूर-मठाधीश (उडीपी)
	सभापति का भाषण	कविराजकुलमणि, विश्रुतकीर्ति, राजवैद्य, मणीन्द्रकुमार मुखोपाध्याय (कलकत्ता)
५ बजे सायं	शिक्षासंमेलन-स्वागतभाषण	वैं० भू० एम० बी० शास्त्री (मंगलौर)
	उद्घाटन	पूज्य लार्ड विशप (मंगलौर)
६ बजे रात	शिक्षासंमेलन-विषयनिर्वाचनी का अधिवेशन	
१० बजे रात	महासम्मेलन-विषयानिर्वाचिनीका अधिवेशन	
	३०–१२–४५	
९ बजे प्रातः	नि०भा० आयुर्वेदविद्यापीठ स्नातक संमेलन	एम० वेंकट शास्त्री आयुर्वेदाचार्य पो० तेलाप्रोलु, जि० कृष्णा
१० बजे प्रातः	कौमारभृत्य संभाषा परिषद्	श्रीमती सुमति बाई तारानाथ बी० ए०, एल० टी०, प्रिंसिपल, प्रेमआयुर्वेदविद्यालय, तुंगभद्रा
११ बजे प्रातः	कायचिकित्सासंभाषापरिषत्	आर० के० वलवेकर, बी० एस० सी०(हुबली)
३ बजे सायं	दर्शनसंभाषापरिषत्	नंजुंडा स्वामी, बी० एस० सी० नंजनगुड।
५ बजे सायं	शल्यशालाक्यचिकित्सासंभाषापरिषत्	श्री एन० एस० सुब्रह्मण्य शास्त्री, अभय आयुर्वेद रिसर्च हास्पिटल, मैसूर।
८ बजे रात	नि० भा० आयु० विद्यापीठ-स्नातक-संमेलन (अन्तिम अधिवेशन)	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१-१२-४५

६ बजे प्रातः	नि० भा० आयुर्वेद पत्रकार सम्मेलन	कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि, प्रधान संपादक, आयुर्वेद महासमेलन पत्रिका, प्रो०, आ० यू० तिब्बी कालेज देहली
	त्रिदोषसंभाषापरिषत्	वैद्यराज पं० विश्वनाथ त्रिवेदी आयुर्वेदाचार्य प्रिंसिपल, ललितहरि आयुर्वेदकालेज, पीलीभीत
११ बजे प्रातः	नि० भा० आयुर्वेद औषधव्यवसायि संमेलन आदि	श्रीयुत गंगाधर विष्णु पुराणिक, प्रबन्ध संचालक, श्रीधूतपापेश्वर लि०, पो० पनवेल, जि० कुलाबा।
५ बजे सायं	नि० भा० आयु० शिक्षासंमेलन (अन्तिम अधिवेशन)	आयुर्वेदशास्त्रनिष्णात, वैद्यावतंस पं० पुरुषोत्तम सखाराम शास्त्री हिर्लेकर (अमरावती-बरार)
६॥ बजे सायं	नि० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन (खुला अधिवेशन)	

मार्ग।

(१) मद्रास से आने वालों के लिये—(क) मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन से मंगलौर के लिए मालाबार एक्सप्रेस सन्ध्या के समय चलती हैं। मंगलौर से उदीपी मोट बस द्वारा पहुँचने में २, ३ घण्टे लगते हैं।

(ख) मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन से मैसूर को प्रतिदिन ३, ४ गाड़ियां जाती हैं। मैसूर से मोटरबस द्वारा मंगलौर पहुँचने में १० घण्टे लगते हैं।

(२) बम्बई, पूना, बेलगांम, हुबली आदि स्थानों से आने वालों के लिए—(क) एम० एण्ड एस० एम० रेलवे हरिहर जंकशन तक जाती हैं। हरिहर से मोंटरबस द्वारा ६ घण्टे में उदीपी पहुँचा जा सकता है।

(ख) बम्बई से स्टीमर द्वारा भी उदीपी पहुँचा जा सकता है। मालूम हुआ है 'बम्बई स्टीम नेविगेशन कम्पनी' दिसम्बर से अपनी साप्ताहिक स्टीमर सर्विस बम्बई से माल्पी तक पुनः चालू करने वाली हैं। माल्पी मणिपाल से ६ मील दूर है। जो महानुभाव बम्बई से स्टीमर द्वार आना चाहें उनको चाहिए कि वे सिन्धिया स्टीम नेविगेशन कम्पनी से पत्रव्यवहार करें। बम्बई से स्टीमर द्वारा माल्पी पहुँचने में दो दिन लगते हैं।

(३) बेजवाड़ा से—हुबली तक एम० एण्ड एस० एम० रेल सीधी जाती है। हुबली से (रेलद्वारा) हरिहर स्टेशन केवल ४ मील दूर है।

हरिहर और मंगलौर स्टेशनों पर तथा उदीपी में सम्मेलन के लिए आने वाले सज्जनों की सुविधा के लिए २६ दिसम्बर से प्रत्येक रेलगाड़ी तथा प्रत्येक मोटरबस के पहुँचने के समय स्वागतसमिति के आदमी मिलेंगे।

(४) बंगलौर - मैसूर के मार्ग से आने की इच्छा रखने वालों को चाहिए कि वे अ० भा० आयुर्वेदमहामण्डल के सहायक मन्त्री, वैद्यभानु श्री डी० के० भारद्वाज, रामकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सालय, बसवानगुडी, बंगलौर से तथा वैद्य के० पी० पुराणिक, प्रधान मन्त्री, अखिल कर्णाटक आयुर्वेदमण्डल, लैंसडाउन बिल्डिग, मैसूर से पत्रव्यवहार करें और अपने पहुँचने की तारीख तथा समय लिखकर उनके पास भेज दें; जिससे वे आगन्तुकों की सहायता कर सकें।

महासम्मेलन का स्थान, मणिपाल, उदीपी नगर से मिला हुआ ही है। इसकी जलवायु समशीतोष्ण है। यह एक पर्वतवत् उत्तुंग स्थान पर स्थित है। यहां से एक ओर अरबसागर और दूसरी ओर पश्चिमी घाट की पर्वतश्रेणियों का दृश्य बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। यहां डाक और तारघर मौजूद हैं तथा पानी के नल और बिजली की रोशनी का समुचित प्रबन्ध है।

—एम० आर० भट्ट, प्रधानमन्त्री, स्वागतसमिति, ३४ वां अ० भा० आयु० महासंमेलन।

नूतन समाचार।

श्री धन्वन्तरिजयन्तीमहोत्सव।

इस वर्ष निम्नलिखित स्थानों पर धन्वन्तरिजयन्तीमहोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया— वी० एन० मेहता संस्कृत विद्यालय (प्रतापगढ़), श्री विद्वद्वैद्यसभा (इन्दौर), हैदराबाद स्टेट महाराष्ट्र आयुर्वेदमण्डल (नन्देड), सिन्ध प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल (कराची), बंगाल प्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल (कलकत्ता), श्री माहेश्वरी दातव्य औषधालय (इस्लामपुर - जयपुर), नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-स्नातकसंघ (कानपुर), श्री अवन्तिका आयुर्वेदविद्यालय (उज्जैन), आयुर्वेदसेवासदन (हरबटपुर — देहरादून), वैद्यसभा (जबलपुर), अर्जुन आयुर्वेदविद्यालय (बनारस), आयुर्वेदसेवामण्डल (भुसावल), आरोग्यप्रचारिणी वैद्यसमिति (धार), श्री श्याम औषधालय (खाटू – जयपुर), बिसाऊ चिकित्सक परिषद् (बिसाऊ – जयपुर), श्री अष्टांग आयुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय (सिवनी — सी० पी०), श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन के प्रधानकार्यालय, निर्माणकेन्द्रों, बिक्रीकेन्द्रों, शाखाओं और एजेंसियों — कलकत्ता, पटना, मोतीहारी, मुजफ्फरपुर, छपरा, लहरिया सराय, भागलपुर, गया, झरिया, टाटानगर, बनारस, बस्ती, नागपुर, झांसी, अमरावती, अकोला, इन्दौर और उज्जैन में। —सं०।

सिवनी जिला आयुर्वेदवैद्यमण्डल कार्यकारिणी—के चुनाव में श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद शर्मा सभापति और पं० उमाशंकर जी दुबे प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुये।

युक्तप्रान्तीय विद्यापीठ-स्नातकसम्मेलन—के अग्रिम वर्ष के लिये श्रीयुत पं० सत्यनारायण जी मिश्र सभापति और पं० बाबूराम जी त्रिपाठी प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुये।

नगरवैद्यसभा कानपुर—के अग्रिम वर्ष के लिये श्रीयुत पं० देवसेन जी शुक्ल सभापति और श्रीयुत पं० बालकृष्ण जी शास्त्री प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुये।

— दयानन्दायुर्वेदिक कालेज लाहौर के स्नातकमण्डल की पुनःस्थापना हो गई है।

—महाविदर्भप्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल के सभापति भिषगाचार्य हरी शास्त्र पराडकर वैद्य (अकोला) के अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में अकोला · वैद्यमण्डल की ओर से सत्कार किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—ता० १६-११-४५ को कराची के प्रसिद्ध वैद्य श्री पं० छोटालाल विश्वनाथ जी का स्वर्गवास हो जाने से श्री आयुर्वेदोद्धारक सभा ने ता० १८-११-४५ को अपने विशेष अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास करके शोक प्रकट किया।

—फतेहपुर (जयपुर स्टेट) के प्रसिद्ध वैद्यराज श्री पं० मटरूमल जी निर्मल को सीकर-नरेश श्री रावराजा बहादुर कल्याणसिंह जी ने फतेहपुर दरबार में सोनापोत्र (सोने का कड़ा) धारण करने की घोषणा की है।

—सिन्धप्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल के वार्षिक निर्वाचन में श्रीयुत पं० रंगलाल जी ओझा सभापति तथा श्री होराम शर्मा प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुये।

—महासम्मेलनसदस्य कवि० यतीन्द्रमोहन रक्षित, जो गत चार वर्षों से नजरबन्द थे, अब कारागार से मुक्त हो गये हैं और अब असेम्बली के चुनाव लड़ने का विचार कर रहे हैं।

आयुर्वेदवर्धकसंघ, अजमेर—ने भारतवर्ष के समस्त हिन्दी पत्रों में स्वास्थ्यसम्बन्धी (आयुर्वेदीय) लेखमाला प्रकाशित कराने का आयोजन किया है। लेखों की भाषा सरल, कलेवर छोटा और विषयविवेचन वैज्ञानिक होगा। दैनिक आवश्यकता के विषयों पर सुन्दर लेख लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजने चाहियें—वैद्य शान्तिप्रसाद भार्गव आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदवर्धकसंघ, हाथीभाटा, अजमेर।

श्री आयुर्वेदविद्यालय, कानपुर—आचार्य श्री पं० युगलकिशोर जी शास्त्री का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने का विचार किया जा रहा है। विद्यालय के स्नातकों को इसमें सब प्रकार का सहयोग देना चाहिये।—शम्भुनाथ पाण्डे।

आयुर्वेद औषधव्यवसायियों तथा आयुर्वेदप्रेमियों से निवेदन।

मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि पीलजंगा चिकित्सासहायक समिति गरीबों की निःशुल्क चिकित्सासहायता के लिए एक आयुर्वेदीय औषधालय चला रही है। अब तक स्थानीय उदार जनता की सहायता से तथा बंगाल प्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल द्वारा प्रदत्त औषधियों की सहायता से यह औषधालय चल रहा था।

अब हमारे सब सहायतासाधन लगभग समाप्त हो चुके हैं। बिना बाहरी सहायता के यह औषधालय जनता की सेवा में असमर्थ है। अतः हम आयुर्वेद जगत से प्रार्थना करते हैं कि वह इस बाल संस्था के लिए द्रव्याद्रव्य रूप में सहायता भेज कर आयुर्वेदीय चिकित्सापद्धति को सर्वप्रिय बनाने में सहायक हो।

सब प्रकार के दान अ० भा० आयुर्वेद कांग्रेस के मुखपत्र "आयुर्वेदसंमेलनपत्रिका" या कलकत्ता के 'युगान्तर' द्वारा भेजे जा सकते हैं।

विनीत—कवि० कालिदास चट्टोपाध्याय,
मंत्री, पीलजंगा मेडिकल एड सोसाइटी, तथा
सदस्य, अ० भा० आयु० महासम्मलन और बंगाल प्रान्तीय आयु० महामण्डल,
पो० पीलजंगा, जि० खुलना (बंगाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि० द्र०—बंगाल से बाहर से रेलवे पार्सल 'कार्नवालिस स्टेशन, कलकत्ता' तथा रेलवे रसादें (बिल्टियां) बंगाल प्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल, ३९ ग्रे स्ट्रीट, हाटखोला, कलकत्ता' के पते पर भेजने चाहिये।

(साधना औषधालय ढाका की ओर से १०) मूल्य की मलेरिया-औषधि प्राप्त हो चुकी है। डाबर कम्पनी कलकत्ता ने १०१) मूल्य की औषधियां प्रदान करने का वचन दिया है)

—कालिदास चट्टोपाध्याय

प्रधानमन्त्री जी का कार्यक्रम।

प्रधानमन्त्री श्रीयुत कविराज विजयकाली भट्टाचार्य एम० ए० कुछ समय के लिए कलकत्ता लौटने वाले हैं। उसके पश्चात् वे फिर अपने दक्षिणभारत प्रचार कार्य के लिए जावेंगे। ता० २५-११-४५ को श्रीयुत भट्टाचार्य जी १३ वें द्रविड़प्रान्तीय आयु० महासमेलन में उपस्थित हुए थे।

—संवाददाता

आवश्यक सूचनायें।

१—अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का वर्ष दिसम्बर में समाप्त हो रहा है। अतः सदस्यों, सम्बद्ध संस्थाओं और ग्राहकों को अपना १९४६ का शुल्क ३१ दिसम्बर १९४५ तक अवश्य भेज देना चाहिए।

२—सब प्रकार के महासम्मेलन-सदस्यों, महासम्मेलन के प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डलों और महासम्मेलन-सम्बद्ध-संस्थाओं को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिए:—

प्रधानमंत्री, नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन-कार्यालय,
३९ ग्रेस्ट्रीट, हाटखोला—पो० आ०, कलकत्ता।

३—विद्यापीठसम्बद्धसंस्थाओं, विद्यापीठस्वीकृत अध्यापकों तथा विद्यापीठ-परीक्षार्थियों को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिए:—

मन्त्री, नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-कार्यालय, चिमनी मिल, देहली।

४—आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका—ग्राहकों और पत्रिका के विज्ञापनदाताओं को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिए:—

प्रधान सम्पादक, आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका-कार्यालय,
चिमनी मिल, देहली।

५—शुल्क यथास्थान भेजना चाहिए। यथास्थान शुल्क न भेजने से सम्बन्धित व्यक्तियों और संस्थाओं को विलम्ब के कारण जो हानि उठानी पड़ेगी उसके लिए उत्तरदायी उपर्युक्त कार्यालय नहीं होंगे।

६—प्रत्येक पत्र में और मनीआर्डर के कूपन में पत्रव्यवहारकर्त्ता को अपना पूरा नाम और पूरा पता सुवाच्य और स्पष्ट अक्षरों में अवश्य लिख देना चाहिये। कूपन में यह भी लिख देना चाहिए कि रुपया किस उद्देश्य से भेजा है। ऐसा न करने वाले पत्रव्यवहारकर्त्ता के काम में विलम्ब होना सम्भव है। इस विलम्ब के लिए कार्यालय उत्तरदायी न होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—महासम्मेलन और विद्यापीठ के सदस्यों को चाहिये कि वे उन बिजिनिस रिप्लाई लिफाफों को, जो मतपत्र भेजने के लिए भेजे गये थे, किसी अन्य प्रकार के पत्रव्यवहार में काम न लायें। कोई भी पत्र ऐसे लिफाफों में या मतपत्र के साथ नहीं आना चाहिए। —यादवेश्वर भट्टाचार्य, स्थानापन्न प्रधानमन्त्री, अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन, कलकत्ता।

विद्यापीठीयाः सूचनाः।

१—१६४५ तमें वर्षे उत्तीर्णानां प्रमाणपत्राणि दिसम्बरमासपर्यन्तं प्रस्तुतानि भविष्यन्ति उपप्रमाणपत्राणि (Provisional certificates) मुद्राद्वयात्मकं नष्टप्रमाणपत्रप्रतिलिपयश्च (Duplicate certificates) सार्द्धद्विमुद्रात्मकं शुल्कं गृहीत्वैव प्रदीयन्ते नान्यथा।

२—यैरध्यपकमहाभागैः स्वकीयः १६४५ तमवर्षीयः पत्रिका-शुल्कः सदस्यशुल्को वा न प्रेषितस्तेषां छात्राणां प्रमाणपत्राणि कार्यालयात् न प्रेषयिष्यन्ते।

३—परीक्षाफल-प्रमाणपत्र-प्रमाणपत्रप्रतिलिपिप्रभृतिविषयकपत्रव्यवहारे स्वकीय-पितृ परीक्षा-केन्द्र-वत्सर-क्रमाङ्क गुरुनामानि कार्यालयशुल्कप्राप्तिपत्रसंख्या तिथिश्चावश्यं लेखनीयानि। पत्रव्यवहारसङ्केतश्च सम्पूर्णः सुस्पष्टश्च लेख्यः। सर्वैरेव धनप्रेषकैर्धनादेशकूपने (Meney order coupon) धनप्रेषणाभिप्रायोऽपि सुवाच्याक्षरैर्लेख्यः।

४—विद्यापीठीयव्यवस्थानुकूलं स्वीकृताध्यापकानामन्तेवासिन एव परीक्षाप्रवेशाधिकारं लभन्ते नेतरेषम्।

५—ये स्वीकृताध्यापकाः स्वकीयां पत्रिकाग्राहकसंख्यां छात्राणां परीक्षावेदनपत्रेषु यथास्थानं न सन्निवेशयिष्यन्ते न तेषामन्तेवासिनः परीक्षाप्रवेशाधिकारं लप्स्यन्ते।

६—आवेदनपत्राणि नवम्बरमासारम्भादारभ्य दिसम्बरमासस्य पंचदशदिवसपर्यन्तमेव सशुल्कं समागतानि स्वीक्रियन्ते। तदनन्तरम् एकमुद्रात्मकेन विलम्बशुल्केन सह जनवरीमासस्य पंचदशतमतिथिपर्यन्तमप्यागतानि स्वीकृतानि स्युः।

७—परीक्षाशुल्कग्रहणात्पूर्वमपि परीक्षावेदनपत्राणि कृतप्रार्थनेभ्यः प्रेषयितुं शक्यन्ते कार्यालयात्। न तु गतवर्षवत् परीक्षाशुल्कादानानन्तरमेव।

८—या विद्यापीठसम्बद्धसंस्थाः १६४६ तमे वर्षेऽपि विद्यापीठसम्बद्धा भवितुमिच्छन्ति ताः पंचरूप्यकमितं सम्बद्धसंस्थाशुल्कं नवम्बरमास एव प्रेषयेयुः। याश्च संस्थाः विद्यापीठेन नूतनं सम्बन्धं स्थापयितुमिच्छन्ति ताः सम्बद्धताशुल्केन सार्धं स्वपूर्णपरिचयमपि प्रेषयेयुः।

६—परीक्षावेदनपत्राणि रजिस्ट्रीद्वारा कार्यालये प्रेषणीयानि। अरजिस्ट्रीकृतानि आवेदनपत्राणि यदि कार्यालये न प्राप्स्यन्ति तदा तज्जन्यहानेरुत्तरदायी परीक्षार्थी एव स्यान्न तु कार्यालयः।

१०—अस्मिन्वर्षे परीक्षावेदनपत्राणि कार्यालयात् अदत्तपूर्णडाकव्ययं प्रेषयिष्यन्ते, न तु रजिस्ट्रीद्वारा। असत्सु तेषु प्राप्तेषु त्वरितं कार्यालयः संसूचनीयः।

११—कार्यालय-सम्बन्धी पत्रव्यवहारो व्यक्तिगतनाम्ना न कार्यः।

१२—संस्कृत-हिन्दी-आङ्गलभाषा इत्येता एव भाषा पत्रव्यवहारे व्यवहार्या नेतराः।

१३—स्वगुणाङ्कजिज्ञासुभिः रूप्यकमेकं कार्यालये प्रेषणीयम्।

१४—दक्षिणभारतीयैरपि छात्रैः स्वीयान्यावेदनपत्राणि परीक्षाशुल्कं च विद्यापीठ-कार्यालये एव प्रेषणीयम्।

विद्यापीठ-मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़े अभाव की पूर्ति

आयुर्वेद संसार को अभूत पूर्व दान

सचित्र शरीरक्रियाविज्ञान प्रकाशित हो गया।

आयुर्वेद की उन्नति की उत्कट अभिलाषा के कारण ही इस दुर्लभ ग्रन्थ का प्रकाशन युद्ध की इस संकट-घड़ी में किया गया है जब कि एक-एक शीट कागज के लिए कितनी कठिनाई उठानी पड़ रही है, यह सर्व विदित है।

आयुर्वेद में यह सर्वप्रथम स्तुत्य प्रयास हुआ है। इससे आयुर्वेद के एक प्रधान अंग की पूर्ति हुई है। वैद्यों पर डाक्टरों का यह आक्षेप रहा है कि वे शारीरिक ज्ञान से हीन चिकित्सक होते हैं। इस ग्रन्थ ने उन्हें मुँह तोड़ उत्तर दिया है

अभी तक शरीरक्रिया के बारे में आयुर्वेद में जो कुछ लिखा गया था वह अंग्रेजी ग्रन्थों का अनुवाद मात्र था, जिसका असर आयुर्वेद के छात्रों पर यह होता था कि वे आयुर्वेद को हीन मानने लगते थे।

इस ग्रन्थ के उदीयमान लेखक आयुर्वेदालङ्कार श्री रञ्जीतराय ने आयुर्वेदसिद्धान्त के आधार पर इसे मौलिक रूप में लिखा है जो आयुर्वेद की श्रेष्ठता का द्योतक है। जिन्हें अंग्रेजी के फिजियालाजी का ज्ञान है वे यदि इस ग्रन्थ को पढ़ेंगे तो देखेंगे कि विदेशी विज्ञान आयुर्वेद से बड़ा नहीं है।

इस ग्रन्थ में इस विषय का व्यौरावद्ध वर्णन है कि शरीर का कौनसा अङ्ग क्या काम करता है। चिकित्सक के लिए यह जानना अत्यावश्यक है।

अंग्रेजी में तो इस प्रकार के ग्रन्थों का मूल्य पन्द्रह—बीस रुपये से कम होता ही नहीं है। हिन्दी और संस्कृत में भी अनुवाद ग्रन्थ का ही काफी मूल्य है। लेकिन हमने आयुर्वेद की सेवा के खयाल से इसका मूल्य बहुत कम रक्खा है। ५२ अध्याय, डिमाई ½ साइज के ६०० पृष्ठ जिनमें ५३ चित्र हैं, का मूल्य सिर्फ ६) रखा गया है। डाकव्यय ॥≡) हैं।

पेशगी के साथ आर्डर भेज कर शीघ्र ग्रन्थ मंगवालें, नहीं तो दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

नोटः—आयुर्वेद के छात्र ५) रु० में ही यह ग्रन्थ पा सकते हैं। यदि वे अपने अध्यापक के पत्र के साथ पूरा मूल्य अग्रिम भेज देंगे तो उन्हें डाकव्यय नहीं लगेगा।

अस्थायी हैड आफिस—
कदम कुआँ, पटना।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन
कलकत्ता, पटना, झांसी, नागपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी शुभाशीर्वादयुक्त शुभ कामना

के लिये

आपका प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

कलकत्ता

सन् १८८४ ई० में संस्थापित होकर सन् १९४४ ई० की समाप्ति पर ६० वर्षों की सेवाओं के बाद "हीरक जयन्ती" के स्मरणीय अवसर पर आदरणीय आयुर्वेद के कर्णधार, प्रत्येक भारतीय वैद्य, आयुर्वेद हितैषी, आयुर्वेद पत्रकार, आयुर्वेदिक औषधालय, आयुर्वेदिक पुस्तकालय, आयुर्वेदिक विद्यालय, आयुर्वेद शिक्षक, आयुर्वेद विद्यार्थी तथा विभिन्न आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से आयुर्वेद की निरन्तर सेवा के हेतु

प्रोत्साहन प्राप्ति के लिये

प्रार्थना करता है।

कृपया शुभाशीर्वाद प्रेषित कर अनुग्रहीत करें।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि० कलकत्ता

युद्धकालीन प्रधान कार्यालय–वैद्यनाथ–देवघर (S. P.)

शाखाएं—

(१) हाथरस (U. P.) (२) नागपुर (C P.)

सेलडिपो—

पटना (Bihar)

प्रकाशक—क० आशुतोष मजुमदार, नई देहली। मुद्रक—अर्जन प्रेस, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री धन्वन्तरये नमः — रजिस्टर्ड नं० एल०—५०८२

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका

(भारतीयायुर्वेदमहासम्मेलनाज्ञया प्रतिमासं प्रकाश्यते)

प्रधान सम्पादक :— कविराज आशुतोष मजुमदार भिषगाचार्य-धन्वन्तरि
एम० आर० ए० एस०, नई देहली।

सम्पादक :— रामचन्द्र शर्मा शास्त्री, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य।

वर्ष ३२ अङ्क १०	देहली, अक्टूबर १९४५ ई०	वार्षिक मूल्य ५) यह अङ्क ।।)

लेख-सूची

—हम क्या करें ? (ले०—क० श्री गणेशदत्त सारस्वत) ६
—प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय। (ले०—श्री डा० राधाकुमुद मुखर्जी, लखनऊ) ९
—निदानपञ्चक। (ले०—श्री रामरक्ष पाठक, गुरुकुल कांगड़ी।) १७
—पञ्चकर्मविनिश्चय। (ले०—श्री क० ज्योतिषचन्द्र सरस्वती, देहली।) २१
—शीतला (चेचक)। (ले०—श्री क० एम० के० मुखर्जी, कलकत्ता।) २५
—स्थायी समिति का अधिवेशन। ३०
—विद्यापीठपरीक्षणामवशिष्टं फलम्। ३६
—नूतन समाचार व सूचनायें। ३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागार्जुन

—ने—

अनेक शताब्दी पूर्व अपनी अलौकिक और असाधारण प्रतिभा के बल से गतगौरव आयुर्वेद को पुनः प्रतिष्ठापित किया था।

—आज—

आयुर्वेद फिर स्खलित-गौरव, हतमान और विपर्यस्त हो गया है

अतः नागार्जुन के पवित्र नाम की ध्वजा लेकर,

कर्मकुशल और लब्धप्रतिष्ठ वैद्य

पाश्चात्यशिक्षानिपुण चिकित्सक

—एवं—

रसायनशास्त्र-निष्णात वैज्ञानिक

की देख-रेख में परिचालित

नागार्जुन आयुर्वेद रिसर्च इनस्टिट्युट

—ने—

आयुर्वेद की सेवा में आत्मनियोग किया है !

विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधियां प्रस्तुत करने के कारण इस संस्था को बत्तीसवें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन से प्रथम श्रेणी का प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ है।

औषधि-परिचय बिना मूल्य भेजा जाता है !

कार्यालय का पता —

बेलियाघाटा मेनरोड, कलकत्ता।

रसशाला का पता—

दमदम कैंट, (बंगाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

कविराज आशुतोष मजुमदार।

३४ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासंमेलन।

३४ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन, जो पहले मंगलौर में हो रहा था, अब कर्णाटक प्रान्त के उदीपी तालुके में स्थित मणिपाल नामक स्थान पर होगा। उदीपी मंगलौर रेलवे स्टेशन से ३६ मील उत्तर की ओर है। मंगलौर से मोटरबस द्वारा उदीपी पहुँचने में दो घण्टे लगते हैं। मद्रास से मंगलौर जाने में २२ घण्टे लगते हैं। हरिहर रेलवे स्टेशन से भी, जो एम० एस० एम० रेलवे पर है, मोटरबस द्वारा १४० मील की यात्रा करके, उदीपी पहुँचा जा सकता है। यह बम्बई, पूना, बेलगांव, हुबली, और मंगलौर के बीच जाने वाली मेन रेलवे लाइन पर है। हुबली से हरिहर का केवल ४ घण्टे का रास्ता है। बेजवाडा से हुबली तक एक गाड़ी सीधी जाती है। मणिपाल उदीपी से २॥ मील है। यह एक पर्वती स्थान है, जहां से एक ओर अरबसागर का और दूसरी ओर पश्चिमीघाट का दृश्य अक्षिगोचर होता है। यहां बिजली और पानी का सुन्दर प्रबन्ध है। डाकखाना और तारघर भी है। महासम्मेलन स्वागतसमिति के कार्यालय का पता इस प्रकार है—"श्रीयुत उपेन्द्र अनन्त पाई, संयुक्त मन्त्री, स्वागतसमिति, ३४ वां अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलनं, पो० मणिपाल, ता० उदीपी, जि० दक्षिण कनाडा, (Mr. U. A. Pai, Joint Secretary, Reception Committee, 34th. A. I. Ayurvedic Congress, P. O. Manipal, Udipi, Dt. S. Kanara).

यह अधिवेशन २८ दिसम्बर से आरम्भ होगा। अ० भा० आयुर्वेदशिक्षा-सम्मेलन के लिए श्रीयुत पं० पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर (अमरावती) सभापति निर्वाचित हुए हैं। महासम्मेलन सभापति का निर्वाचन अभी शेष है। उसकी सूचना अगले अङ्क में निकलेगी।

शिक्षासम्मेलन—सभापति श्री हिर्लेकर जी बड़े ही उत्साही, विद्याव्यसनी, कर्मठ नवयुवक हैं। उनके सभापति निर्वाचित होने से विद्यापीठ निश्चय ही अग्रगति करेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं। इस समय विद्यापीठ के सामने दो अत्यन्त महत्वपूर्ण योजनायें हैं—(१) विद्यापीठ-विद्यालय की स्थापना तथा (२) उस विद्यालय के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की रचना। ये दोनों कार्य इतने महान् हैं कि इनका भार श्री हिर्लेकर जी के मजबूत कन्धों के अतिरिक्त अन्य किसी के कन्धों पर रखा ही नहीं जा सकता था। हमको पूरी आशा है कि वे इस भार को वहन करने में सर्वथा समर्थ होंगे और विद्यापीठ-नौका को एक कुशल नाविक की भांति उसके गम्यस्थल पर पहुँचा देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारासभाओं के चुनाव ।

हमारे वैद्य बन्धुओं को यह अच्छी तरह ज्ञात है कि देश में धारासभाओं के निर्वाचन निकट भविष्य में होने वाले हैं। क्यों कि भावी निर्वाचन भारतवर्ष के भाग्य की कसौटी होंगे, उस भारतवर्ष के, जिसकी ६० प्रतिशत जनता अपने जीवन की सुरक्षा और सुख के लिए अहर्निश आयुर्वेद की ओर ताकती रहती है, अतः भारतवर्ष के जीवन और स्वास्थ्य के ठेकेदार वैद्यों का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि उन निर्वाचनों में भारतवर्ष की जनता के प्रतिनिधि कहे जाने वाले ऐसे व्यक्ति निर्वाचित न हो जायें जो, जिसके वे प्रतिनिधि हैं उसके जीवन-रक्षक जीवनशास्त्र आयुर्वेद एवं उसको जीवित रखने वाले वैद्यवर्ग के सम्बन्ध में घातक और अनिष्टकर विधान बना कर, उसके ही जीवन के साथ खिलवाड़ करने लगें। यदि वैद्य लोग इस अवसर पर चूक गये तों सदा ही पददलित होते रहेंगे। उनको देश भर में ऐसा आन्दोलन आरम्भ कर देना चाहिए कि जनता या तो वैद्यों को या आयुर्वेदप्रेमी राष्ट्रवादियों को ही अपना प्रतिनिधि चुनें। जनता पर जितना वैद्यसमाज का प्रभाव है, उतना अन्य किसी का नहीं। इस प्रभाव का सदुपयोग करना चाहिये। वैद्यों को इन चुनावों में स्वय खड़ा होना चाहिए। और यदि उनको अपनी सफलता की आशा न हो तो ऐसे राष्ट्रवादी को अपना मत देना चाहिए जो आयुर्वेद की रक्षा के लिए कृतप्रतिज्ञ हों। जनता को भी केवल वैद्य उम्मेदवार या आयुर्वेदप्रेमी राष्ट्रवादी को अपना मत देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। जो उम्मीदवार यह लिखित प्रतिज्ञा न करे कि वह धारासभा में पहुँच कर आयुर्वेद की रक्षा और उन्नति के लिए अपना जीवन अर्पण कर देगा उसे मत कभी न देना चाहिए। इस सम्बन्ध में महामण्डल की ओर से भी एक निवेदन प्रकाशित हुआ है।

पत्रिका के सम्बन्ध में ।

पत्रिका का आकार छोटा हो जाने से अनेक क्षेत्रों में आपत्ति और रोष प्रकट किया गया है। परन्तु युद्धकालीन परिस्थितियों के कारण हम आकार बढ़ाने में असमर्थ थे। देहली में पत्रिकाकार्यालय आने से पूर्व पत्रिका के लिए कागज का कोई कोटा निश्चित न था। यहां आने पर बड़ी कठिनता से प्रतिमास २ रीम न्यूजप्रिंट कागज की स्वीकृति मिली। कागज का कोटा निश्चित होते ही हम कानूनी बन्धनों में बंध गये। हम को यह सरकारी आदेश मिला कि अब पत्रिका में न्यूजप्रिंट के अतिरिक्त अन्य कोई कागज नहीं लगा सकते। प्रधान कार्यालय को लिखा गया तो वहां से भी यही आदेश आया कि जितना कोटा निश्चित हुआ है, उसी के अन्दर पत्रिका निकालो। अतः तब हमारे पास इसके अतिरिक्त और कोई उपाय न था कि हम पत्रिका को बन्द न करके उसका आकार छोटा करदें और प्रतिमास सदस्यों को भेजते रहें। निदान, हमने ऐसा ही किया। इसके लिए हमें दोष देना व्यर्थ है। समय ही इसके लिए उत्तरदायी है। अतः पाठकों को अपनी मनोवृत्ति बदल लेनी चाहिए। अब कागज का कोटा बढ़ते बढ़ते ५ रीम हो गया है, जिससे पत्रिका का आकार कुछ बढ़ा दिया गया है। निकट भविष्य में ही कागज पर से नियन्त्रण हट जायगा और पत्रिका अपने पूरे आकार में निकलने लगेगी। इस मास से उसका स्वरूप भी परिवर्तित कर दिया गया है। अब आयुर्वेदीय साहित्य के वैज्ञानिक और खोजपूर्ण लेखों को समुचित स्थान दिया जायगा। लेखकों को अपनी उत्कृष्ट रचनायें प्रकाशनार्थ अवश्य भेजने की अनुकम्पा करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका का विशेषाङ्क ।

हमारा विचार है कि सन् १९४६ के आरम्भ में पत्रिका का एक विशेषाङ्क निकाला जाय। इसके लिए चोटी के विद्वानों के अत्युत्कृष्ट लेखों की आवश्यकता है। लेख तीन मास के भीतर हमारे कार्यालय में आ जाने चाहिये।

अ० भा० वैद्य-डाइरेक्टरी ।

हमने पत्रिका के अगस्त और सितम्बर के अङ्कों में लिखा कि हम आगामी फरवरी मास में एक वैद्य-डाइरेक्री प्रकाशित करना चाहते हैं। इस डाइरेक्टरी के शीर्षक अगस्त की पत्रिका में प्रकाशित कर दिये गये हैं। प्रत्येक वैद्य या आयुर्वेदीय संस्था का पूरा नाम और पता इनमें से किसी भी शीर्षक के नीचे केवल एक स्थान पर साधारण टाइप में मुफ्त छापा जायगा। यदि कोई वैद्य या संस्था अपना नाम और पता एक से अधिक स्थानों पर या किसी मोटे टाइप में छपाना चाहे तो उसे एक इन्दराज को छोड़ कर शेष इन्दराजों के साधारण टाइप में छपाने के लिए १) प्रति इन्दराज और मोटे टाइप (सवायम) में छपाने के लिए २) प्रति इन्दराज देना होगा। कृपया अपने नाम और पते शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

अपने को देखें ।

(प्र० सं०)

'वैद्य' के जून-जुलाई के अङ्क में 'अपने को देखें' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है। इस लेख में एक कहानी गढ़ी गई है, जिस का सारांश यह है कि गढ़वाल के जंगली और असभ्य ग्राम का रहने वाला एक बुद्धू परीक्षार्थी विद्यापीठ की भिषक्परीक्षा में बैठ गया और परीक्षाफल निकलने से पूर्व ही हमारे लेखक महोदय का नाम सुनकर 'हिमालय हर्बल इन्स्टिट्यूट' पहुँचा, इस आशा से कि दो तीन महीने वहां रहकर ट्रेनिंग प्राप्त कर ले, जिससे वह पूर्ण वैद्य बन जाय। परन्तु लेखक महोदय के प्रश्न करने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि वह नितान्त अयोग्य है। उसकी अयोग्यता को देखकर वे इतने खिन्न हुये कि विद्यापीठ उनको एक "व्यर्थ की संस्था" प्रतीत होने लगी और विद्यापीठ के स्नातक "नामधारी" वैद्य।

इस कहानी के सहारे लेखक महोदय ने हमारी संस्था की खिल्ली उड़ाई है। उनका कहना है कि "विद्यापीठ के अधिकांश परीक्षार्थियों का यही हाल है" और यदि महामण्डल उनकी शुभसम्मति के अनुसार चलने को तैयार नहीं तो "विद्यापीठ व्यर्थ की संस्था समझ कर बन्द कर दी जाय"। आगे चलकर वे लिखते हैं "मैं ऐसे आयुर्वेदाचार्यों को जानता हूँ जिन्हें हिन्दी, संस्कृत या अंग्रेजी कोई भाषा शुद्ध लिखनी या बोलनी नहीं आती। ये लोग महामण्डल के गौरव को मिट्टी में मिला रहे हैं।" अन्त में उन्होंने महामण्डल के कर्णधारों से प्रार्थना की है कि वे "अपने को देखें"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा यह पूर्ण विश्वास है कि लेखक महोदय ने पहले "अपने को अच्छी तरह देख लिया होगा" तभी वे ऐसा उपदेश देने के लिये उद्यत हुये हैं। क्योंकि वे विद्यापीठ के स्नातक नहीं हैं, अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शल्यचिकित्सा आदि आयुर्वेद के आठों अंगों का सैद्धान्तिक और क्रियात्मक ज्ञान उन्होंने अवश्य कर लिया होगा। तभी तो गढ़वाल का बुद्धू देहाती सीधा उनके इंस्टिट्यूट में पहुँच गया। परन्तु यह पता नहीं कि वह इसलिये वहां से लौट आया कि वैद्य जी ने उसे अपने इंस्टिट्यूट में ट्रेनिङ्ग देने के अयोग्य समझा य. इसलिये निराश होकर लौट आया कि हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट नाम की कोई संस्था ही उसे लाहौर शहर के अन्दर नहीं मिली।

लेखक महोदय की हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी की योग्यता की छाप तो प्रत्येक पाठक के मस्तिष्क पर अवश्य पड़ ही गई होंगी, क्योंकि उन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं और लेख भी। उनके कई लेख पत्रिका में भी प्रकाशित होचुके हैं। यदि सम्पादकीय अनधिकार चेष्टा से हिन्दी भाषा शैली का ज्ञान तो उस अनुवाद से अवश्य हो ही जायगा, जो उन्होंने 'हम इन सांपों को जानते थे' वाले लेख में सांपों के संस्कृत नामों का किया है।

लेखक महोदय का यह विश्वास है कि उन्होंने जो कहानी गढ़ी है वह केवल विद्यापीठ के स्नातकों पर ही चरितार्थ होती है, अन्य किसी संस्था के स्नातकों पर नहीं। और मेडिकल कालेजों के स्नातक तो सर्वज्ञ होते हैं, उनका तो कहना ही क्या?

विद्यापीठ की 'प्रशंसा' करने के बाद उन्होंने पत्रिका की भी 'प्रशंसा' की है। वे लिखते हैं—"अप्रैल १९४५ का अंक मेरे सामने है। टाइटिल समेत २४ पृष्ठों में से ग्राहक के लिये कुल साढ़े ३ पृष्ठों की पाठ्यसामग्री है। शेष पृष्ठों में विज्ञापन, सूचनायें, यात्राविवरण आदि हैं।" पाठकों को यह अच्छी तरह ज्ञात होगा कि कागज की कमी के कारण गत ६ मासों से हम कोई पाठ्यसामग्री नहीं दे रहे, केवल समाचार और सूचनायें देते हैं। फिर भी लेखक महोदय को इस अंक में न मालूम साढ़े तीन पृष्ठ की पाठ्यसामग्री कहां से मिल गई। मालूम होता है वे 'हम इन सांपों को जानते थे' वाले लेख को पाठ्यसामग्री समझ बैठे हैं। यदि ऐसा है तो यह उनका भ्रम है। हमने तो उसे सांपों सम्बन्धी एक सूचनामात्र समझकर प्रकाशित किया है। लेख का यह रूप नहीं होता। इसमें तो बिना इस बात का ध्यान किये, कि हम क्या लिख रहे हैं आयुर्वेदीय पुस्तकों में आये सांपों के नाम और पर्याय एकत्र संग्रहीत कर दिये हैं। इस लेख में जो सांपों की संख्या दी है वह भी भ्रमात्मक है, क्योंकि पर्याय जाति नहीं होते। "अमरा निर्जरा देवाः" देवताओं के पर्याय हैं, न कि जाति। इन नामों के पढ़ने से कोई भी पुरुष उस नाम की सर्पजाति का स्वरूप ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। यदि लेखक महोदय इस लेख को अपने सांपों सम्बन्धी अनुभव सहित लिखते और सांपों की विशिष्ट जातियों के चित्र भी देते तो पाठकों का कुछ लाभ भी होता, और वास्तव में ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता भी है। यदि इस प्रकार का कोई लेख चित्र तथा अनुभवपूर्ण हमारे पास आवेगा तो निस्संदेह हम उसे लेख रूप में अपनी पत्रिका में छाप देंगे।

लेखक महोदय ने आगे शिकायत की है कि संचालन पत्रिका लेखकों को पारिश्रमिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देती। सम्बन्धित अंक भी लेखकों को सदा नहीं भेजे जाते।' इस सम्बन्ध में हमारा यह कहना है कि 'संमेलनपत्रिका' को तो उल्टा पारिश्रमिक मिलता है। बिना पारिश्रमिक के यह निकल ही नहीं सकती। इसका अस्तित्व महामण्डल के सदस्यों पर निर्भर करता है, जो प्रतिवर्ष ५) या इससे अधिक प्रदान करते हैं। और उसके बदले में यह पत्रिका उनकी निःशुल्क सेवा करती है। जो वैद्य आयुर्वेद की सेवा करना चाहते हैं वे सेवाभाव से प्रतिवर्ष ५) अपनी प्रिय संस्था आयुर्वेद-महामण्डल को समर्पित करके उसके सदस्य बन जाते हैं और उसके अन्दर आकर उसकी उन्नति के विषय में सोचते हैं, तथा परामर्श देते हैं। यदि वे पत्रिका में अपना लेख भी छपाते हैं तब भी उन्हें पारिश्रमिक की इच्छा नहीं होती, क्योंकि वे तो सेवाभाव से संगठन में शामिल होते हैं, न कि अहसान करने के लिये लेख भेजते हैं। सम्बन्धित अंक न मिलने की भी शिकायत करने का उन्हें कोई अवसर नहीं मिलता, क्योंकि सदस्य होने के नाते पत्रिका का प्रत्येक अंक नियम से उनके पास पहुँचता ही रहता है। आयुर्वेद के नाम पर जो कुछ भी त्याग करने को तैयार नहीं, जो दूर से ही कीचड़ उछालने को तैयार हैं, पर करने धरने को कुछ नहीं, जो दूसरों के छिद्रान्वेषण करते हैं, पर 'अपनी ओर देखते नहीं' वे ही इस प्रकार की शिकायत किया करते हैं। ऐसे अनात्मत्यागी और सेवाभावविहीन पुरुषों का लेख पत्रिका में जब हम छापते हैं तो हमें ऐसा प्रतीत होता है मानो हम लेखक पर बड़ी कृपा कर रहे हों। परन्तु निःशुल्क पत्रिका भेजने में फिर भी हमें संकोच होता है।

श्रीमान् माधवाचार्यकृत

आयुर्वेदाचार्य श्री गुलराज शर्मा मिश्र कृत अर्थविद्योतिनी तथा भावार्थप्रकाशिनी संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेदप्रकाश

यह एक ही अध्याय की टीका नहीं है, किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ (छहों अध्याय) की ऐसी सरल टीका है कि इसके पढ़ने वाले छात्र आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदविशारद और आयुर्वेदभिषक् परीक्षाओं को सहज में पास कर सकते हैं। यह टीका इस लिए लिखी गई है कि आयुर्वेद महाविद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों को अच्छी सहायता दे सके। इस एक ही ग्रन्थ के पास रखने से रसकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसेन्द्रसारसंग्रहादि किसी भी रसग्रन्थ की आवश्यकता नहीं रहती। विद्वान् टीकाकार ने नाना तन्त्रों के उद्धरण दे देकर विषय को नितान्त स्पष्ट कर दिया है। इस ग्रन्थ की विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इतने पर भी कागज की महंगाई आदि की ओर न देखकर इसका लागतमात्र मूल्य ४) ही रक्खा गया है।

बसवराजयिम्— नित्यनाथ, पूज्यपादादि सिद्धों के अचूक रसों का प्राचीन संग्रह अवश्य देखिये। मूल्य ५)

मिलने का पता—प्राणाचार्य श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी,
आचार्य—श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदमहाविद्यालय, सीताबर्डी, नागपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आ० महासम्मेलन-योजना-समिति के दो शब्द ।

(पूर्वतोऽनुवृत्त)

★ हम क्या करें ? ★

(ले०—श्रीयुत क० गणेशदत्त सारस्वत, योजनासमिति-मन्त्री)

पिछले वक्तव्य में वैद्य महानुभावों का ध्यान मैं वर्तमान भारतीय गवर्नमेंट की उस संगठित योजना की ओर आकृष्ट कर चुका हूँ जो सर जाजेफ भोर समिति द्वारा बनाई जा रही है। आपने समाचारपत्रों में पढ़ा ही होगा कि पाश्चात्य पद्धति की चिकित्सा तथा शिक्षा संस्थाओं का जाल देश भर में बिछाया जाने वाला है। आयुर्वेदीय संस्थाओं पर इस योजना का क्या प्रभाव पड़ेगा आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं।

आपको प्रतिदिन अनुभव होता होगा कि पाश्चात्य संस्कृति से अभिभूत शिक्षित कहे जाने वालों की धारणा आयुर्वेद के सम्बन्ध में किस प्रकार की है। आगामी वर्ष से चिकित्सा और स्वास्थ्य सम्बन्धी शासनाधिकार सारे देश में ऐसे व्यक्तियों के हाथों में आने वाला है जो भारतीय जनता के प्रतिनिधि बनकर सत्ताधिरूढ़ होंगे। उन्हें अनुनय-विनय से अपने पक्ष में आप कहां तक ला सकेंगे आप विचार लें। अपनी योग्यता और उपयोगिता द्वारा जनमत पर अपना प्रभाव डाल कर जनबल से शासनधिकारियों की दृष्टि में अपना प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त करना वास्तव में आपके लिए श्रेयस्कर होगा अथवा नहीं यह भी आपको गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

बन्धुवर ! आयुर्वेद और वैद्यों की वर्तमान तथा भावी परिस्थिति पर विचार आरम्भ करने का समय क्या अब भी टाला जा सकता है ? कोई भी विचारणीय समस्या उपस्थित होने पर प्रायः ये शब्द मुख से सहसा निकल पड़ते हैं — हम क्या करें ?

"हम क्या करें" ये कभी कर्त्तव्यशून्यता के शिथिल निःश्वास होते हैं और कभी कर्तव्यशीलता के दिगन्त प्राणसंचारक गर्जन। आइये ! हम — आप यह मान कर कि हमारे हृदय का साधक पित्त अभी निस्तेज नहीं हुआ है अपना कर्त्तव्य पथ स्वयं निर्माण करने का यत्न करें।

सब से पहले हमें अपने सामर्थ्य का परिचय प्राप्त करना चाहिए। उसी के अनुसार ही हमें अपना कार्यक्रम बनाना होगा। करोड़ों नर-नारियों की सेवा आज भी लाखों वैद्य कर रहे हैं। कौन कहां है और क्या कर रहा है इतना तो हमें जानना ही होगा। देश में कितनी चिकित्सा तथा शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थायें हैं – यह सूची भी हमारे पास होनी चाहिए। हमें यदि जीवित रहना है तो अपने वैयक्तिक और सामूहिक मतभेद चाहे वह कितने ही मर्मस्पर्शी क्यों न हों कम से कम आपत्काल तक के लिए दूर रख छोड़ने होंगे। अपने सामर्थ्य का परिचय सदा एक संस्था द्वारा संगठित होकर ही स्वयं प्राप्त होता है और दूसरों को कराया जाता है। नि० भा० आ० महासम्मेलन आपकी एक पुरानी और शाखा-प्रशाखा-युक्त संस्था है। हजार दो हजार सदस्यों की संस्था का बल देशव्यापी वैद्यसमूह का बल नहीं कहा जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) आपको स्वयं इस संस्था का सदस्य बनना चाहिए और अधिक से अधिक दूसरे वैद्यों को भी साथ लेना चाहिए।

(२) आपको इस संस्था के अधिकारियों को अधिकारपूर्ण शब्दों में आयुर्वेद की सङ्गठित सेवा करने का आदेश करना चाहिए और स्वनिर्मित कर्मपथ पर अपनी संस्था के साथ-साथ चलना आरम्भ करना चाहिए।

(३) आप जितने कर्मवीर वैद्यों और आयुर्वेदप्रेमियों से परिचित हों उनके शुभनाम और पूर्ण पते आपको मेरे पास भेजने का कष्ट करना चाहिये।

(४) आप जिस प्रान्त अथवा देशी राज्य के हों वहां के प्रान्तीय सम्मेलन (अथवा मण्डल) के अधिकारियों के साथ आपको अपना सम्पर्क स्थापित करना चाहिये और प्रान्तीय संस्था को जागृत तथा कर्मठ बनाना चाहिये।

(५) आपको जिन शिक्षा संस्थाओं का परिचय हो वहां के संचालकों को संस्था का स्वरूप उन्नतिशील बनाने की प्रेरणा देनी चाहिए और उनके साथ पूर्ण सहयोग करना चाहिये। नि० भा० आ० महासम्मेलन और प्रान्तीय सम्मेलन पर आपका और शिक्षा संस्थाओं का पूर्ण अधिकार है। आपको इन प्रतिनिधि संस्थाओं से सहायता और सहयोग लेना चाहिए। प्रान्तीय और देशी राज्यों के अधिकारियों से अपने प्रतिनिधियों द्वारा अपनी संस्थाओं के लिये हर प्रकार की सहायता और सुविधा प्राप्त करनी चाहिये।

(६) आपके प्रान्त या राज्य में जितनी रसशालायें हैं उनके अध्यक्षों को प्रेरित करना चाहिये कि वे पारस्परिक सम्पर्क बढ़ावें और सब मिल कर आयुर्वेद की सेवा करें। जिस विद्या के आधार पर वे अपना व्यवसाय चला रहे हैं उस विद्या का ही लोप यदि हो जावेगा तो उनका व्यवसाय कब तक चल सकेगा, इतना समझना और आत्मरक्षा का उपाय करना बुद्धिमान् व्यवसायियों के लिए साधारण सी बात है।

अन्त में मैं नि० भा० आ० महासम्मेलन के प्रान्तीय मन्त्रि-महोदयों, तथा महामण्डल और विद्यापीठ से सम्बद्ध संस्थाओं के सञ्चालक महोदयों से विशेष अनुरोध करता हूं कि आप अब अविलम्ब ही इस वक्तव्य में किये गये निवेदनों पर ध्यान देने की कृपा करें और मुझ से इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार करें। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि प्रत्येक प्रान्त तथा देशीराज्य के कर्मवीर वैद्य महानुभाव अब अपने महासम्मेलन से काम लेना आरम्भ करदें और इस विश्वास से कर्मपथ पर अग्रसर हों कि उनके आदेशानुसार उनकी संस्था के पदाधिकारी किसी क्षण भी शिथिल नहीं पाये जायेंगे। आप में स्फूर्ति आते ही समाज के सभी अङ्ग प्रत्यङ्ग सप्राण और कर्मशील हो उठेंगे।

आपने यदि निकट भविष्य में जागृति का परिचय दिया और कुछ कर दिखाने का बीड़ा उठाया तो आप विश्वास रक्खें कि वैद्य समाज ऐसे वेग से अपने अधिकार प्राप्त करने के लिये उमड़ पड़ेगा कि आप ही क्या सारा देश चकित हो उठेगा। संकट की प्रेरणा क्षुद्र चींटी को भी काटना सिखा देती है — हम आप तो सर्वसाधनसम्पन्न मनुष्य हैं। सङ्कट निकट आ गया है — आंख खोल कर देखिये — सचमुच आ गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिये एक अनुपम औषधि—

❀ महिला जीवन रस ❀

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम, कानपुर इस अपूर्व औषधि को बहुत दिनों से बना कर काम में ला रहा है। सैकड़ों रुग्णायें इसे सेवन कर मनोवांछित लाभ उठा चुकी हैं। आयुर्वेद की महात्तम औषधि का अधिकाधिक प्रचार हो इसलिये इसकी निर्माण-विधि पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है:—

निर्माण-विधि—हीरा भस्म ५ रत्ती, पन्ना भस्म ६ रत्ती, माणिक्य भस्म ७ रत्ती, पुखराज भस्म ८ रत्ती, नीलम भस्म ६ रत्ती, वैडूर्य भस्म १० रत्ती, गोमेद भस्म ११ रत्ती, मोती भस्म १२ रत्ती, प्रवाल भस्म १३ रत्ती, वैक्रान्त भस्म ७॥ तोला, स्वर्ण माक्षिक भस्म ७॥ तोला, रौप्य माक्षिक भस्म ७॥ तोला सब को एक में पीसे और सबसे तिगुना सम भाग पारा गंधक से बना कज्जली रस डाल बकरी के दूध से घोट सुखा पर्पटी बनाले। फिर इसको बांझ ककोड़े के काढ़े से पीस सुखा सकोरे में बन्द कर २० विनवा कण्डों की आंच में फूंके। इस प्रकार १६ दफे इसी के काढ़े से पीस कर फूंके। बस औषधि तैयार हो गई।

यह औषधि आयुर्वेद की अनुपम देन है। स्त्रियों के लिये इससे अधिक अमृत स्वरूप औषधि अब तक ईजाद ही नहीं हुई है। प्रदर, प्रसूत, मासिक धर्म की खराबियां, गर्भाशय की खराबियां, स्त्रियों की किसी भी कारण से उत्पन्न कमजोरी को ठीक करने में इसकी सानी की कोई भी औषधि है ही नहीं। जिनके बच्चा नहीं होता उनके पेट (उत्पादक अङ्गों) की तमाम खराबियों को दूर कर गर्भ स्थापन योग्य कर देता है। जिससे अवश्यमेव सन्तान होती है। गर्भावस्था में इसको सेवन करते रहने से गर्भपात नहीं होता, बच्चा पैदा होते समय अधिक कष्ट नहीं होता, साथ ही बच्चा पुष्ट, दीर्घायु, देखने में सुन्दर और बुद्धिमान् पैदा होता है। अतः ऐसी स्त्रियों के लिये जिन्हें गर्भपात हो जाता है या बच्चे नहीं जीते अथवा बच्चा होने के समय अत्यन्त तकलीफ होती है उनके लिये तो यह एक ईश्वरीय देन है। इसके सेवन करने वाली स्त्री को बुढ़ापा के लक्षण देर में प्रगट होते हैं तथा जोरदार नहीं होते, क्योंकि यह एक उत्कृष्ट रसायन है। स्त्रियों को हर अवस्था और हर मौसम में पूर्ण लाभप्रद है। बनाकर लाभ उठाइये। यह आयुर्वेद का शास्त्रीय योग है, जिसे आश्रम ने नाम की सुबिधा के लिये महिलाजीवन रस नाम से पेटेन्ट औषधि के रूप में प्रचारित किया है. आश्रम इस औषधि की ४० मात्रा की १ शीशी ६) में और ३ शीशी २६) में देता है। वैद्य मात्र से अनुरोध है कि अमृत स्वरूप इस औषधि को बना कर यश लाभार्थ अवश्य प्रयोग करें। कोई बात मालूम करनी हो तो नीचे पते से पत्रव्यवहार करें।

उच्च श्रेणी की आयुर्वेदीय तथा पेटेन्ट औषधियों के निर्माता—

आयुर्वेद-सेवा-आश्रम २७, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद का इतिहास

❀ प्राचीन भारतवर्ष के विश्वविद्यालय ❀

[लेखक—श्रीयुत डा० राधाकुमुद मुखर्जी, वैद्यवैभव (बनारस), इतिहासशिरोमणि (बड़ौदा), एम० ए०, पी० एच० डी०, पी० आर० एस०, एम० एल० सी०, प्रोफेसर तथा इतिहासविभाग के प्रधान, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ]

(अ० भा० आयुर्वेदाध्यापक-शिक्षापरिषद्, आवडी, मद्रास, में २५ तथा २६ सित० १९४१ को पढ़ा गया)

(अंग्रेजी से अनूदित —सं०)

प्रारम्भ में यह समझ लेना आवश्यक है कि प्राचीन भारत में शिक्षा सर्वसाधारण के लिये ऐसे विस्तृत ढंग से व्यवस्थित नहीं की जाती थी जिसे "सामूहिक" जैसा कोई नाम दिया जा सके और जो आगे चलकर विश्वविद्यालय जैसी एक महान् संस्था के रूप में परिणत हो सके। इसके विपरीत इस देश में देशी शिक्षा का आदर्श उसके पवित्र और गुप्त रखने का ही रहा है जिसका अर्थ व्यक्ति की आत्मिक उन्नति था जो केवल गुरु और शिष्य के निरन्तर घनिष्ठ सम्बन्ध से ही उपलब्ध हो सकती है। गुरु के व्यक्तिगत सम्बन्ध और निर्निद्र निरीक्षण का शिष्य की शिक्षा पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता था। शिक्षा शब्द को उसके शाब्दिक और शुद्ध अर्थ में ही स्वीकार किया जाता था, जिसमें शिष्य के अन्दर सुप्तावस्था में विद्यमान गुणों और शक्तियों को तथा उसके व्यक्तित्व को जाग्रत, समुन्नत और प्रभावशाली बनाने का अर्थ भी निहित होता था। इस प्रकार उस प्राचीन काल में शिक्षा को व्यक्ति की प्राकृतिक और स्वाभाविक शक्ति को उन्नत करने का साधन मात्र समझा जाता था। उस समय शिक्षाप्रणाली सामूहिक व्यायाम और शिक्षण के आधार पर संचालित कोई निर्जीव वस्तु नहीं मानी जाती थी। दुर्भाग्यवश इस यन्त्र और पदार्थ-वाद के युग में शिक्षा भी जीवन के बहुत से अन्य क्षेत्रों के ही समान एक बहुत बड़ी सीमा तक यान्त्रिक हो गई है। शिक्षा के इस प्रकार यान्त्रिक होने का कारण यह है कि इस बात को स्वीकार कर लिया गया है कि प्रकृति ने व्यक्तियों के अन्दर जो मानसिक, शारीरिक और चरित्र सम्बन्धी विभिन्नतायें उत्पन्न की हैं उनका शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है, इसलिये शिक्षाप्रणाली को स्थिर करने में उनका ध्यान नहीं रक्खा जाना चाहिये, अपितु उसको एक 'श्रेणी' अथवा वर्ग की शिक्षा का आधार मानकर स्वीकार करना चाहिये जिसमें व्यक्ति अपनी विशेषतायें और विभिन्नतायें छोड़कर उस 'श्रेणी' का एक समान सदस्य बन जाता है। यह शिक्षाप्रणाली ठीक ऐसी है जैसे किसी चिकित्सालय में विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त विभिन्न अवस्थाओं में पड़े हुये सब रोगियों की केवल एक ही औषधि से और एक ही पथ्य और उपचार से चिकित्सा करना। चिकित्सा के ऐसे मूर्खतापूर्ण तरीके का क्या फल होगा इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। इस प्रकार विभिन्न रोगों से ग्रस्त बहुत से रोगियों की एक जैसी चिकित्सा करने का फल तो यही होगा कि रोगी का शीघ्र से शीघ्र अन्त हो जायगा। किन्तु यदि किसी विशेष रोगी की चिकित्सा उसे एक पवित्र वस्तु मानकर उसके स्वयं अपने शारीरिक रोग के अनुसार की जाय तो यह देखना है कि जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति अपने मानसिक और चारित्र्य दोषों को दूर करने के लिये सहायता चाहते हैं उनकी व्यक्तिगत चिकित्सा की कितनी अधिक आवश्यकता है। शारीरिक रोगों की तरह इन रोगों का निश्चय करना और समझना आसान नहीं है। बड़े से बड़े सुव्यवस्थित वैज्ञानिक ढंग के शिक्षण और व्यायाम आदि से भी यह अति कठिन है कि किसी व्यक्ति के शरीर के कद (ऊंचाई) में एक इञ्च की भी वृद्धि की जा सके। फिर यह तो अत्यन्त ही कठिन है कि किसी मस्तक के लघुरूप को बढ़ा कर बड़ा किया जाय या किसी व्यक्ति के संकुचित हृदय और स्वभाव को विस्तृत और उन्नत किया जाय। भारतवर्ष ने शिक्षा को हमेशा आत्मिक उन्नति के साधन के रूप में ग्रहण किया है जो जीवन के प्रधान लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अपने गुरु से सम्पर्क स्थापित करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का सर्व प्रथम व्यक्तिगत उद्देश्य होना चाहिये। इस प्रकार प्राचीन भारत की शिक्षाप्रणाली शिष्य और उसके योग्य गुरु के व्यक्तिगत सम्बन्धों पर आधारित थी। शिष्य के लिये पाठशाला अपने गुरु का घर या आश्रम होता था और इसी प्रकार की पाठशाला में व्यक्तिगत सम्बन्धों को सुचारु और सम्पूर्णरूप से व्यक्त भी किया जा सकता है। ये आश्रम बड़े २ नगरों के कोलाहल और दूषित वातावरण से कहीं दूर स्वच्छ, सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से सुशोभित किसी सघन किन्तु शान्त और एकान्त पवित्र वन में बने होते थे। भारत ने अपने उच्चतम विचारों का निर्माण ही पवित्र वनों में किया है। इन विचारों का संग्रह वन में लिखी जाने वाली उन अमूल्य पुस्तकों में किया गया है जिनको 'आरण्यक' नाम से पुकारा जाता है। इन पुस्तकों का पठन-पाठन उस एकान्त और शान्त वातावरण में हो सकता है, जो केवल जंगलों में ही उपलब्ध हो सकता है। भारत की सभ्यता का जन्म नगरों में नहीं अपितु ग्रामों में हुआ। वह सभ्यता वनों की उपज है, सघन और पदार्थवादी नगरों की नहीं। इस विषय को विश्वविख्यात कवि स्व० श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जिनकी मृत्यु से भारत ने एक विद्वद्रत्न खो दिया है, सुन्दर और रोचक शब्दों में अत्यन्त उपयुक्त ढंग से इस प्रकार व्यक्त किया है—

"सब से विचित्र बात, जो हम भारतवर्ष में देखते हैं, यह है कि इसकी सम्पूर्ण सभ्यता का उद्गमस्थान वन है, न कि नगर।

भारतवर्ष में जहां कहीं भी प्राचीनतम और सबसे अधिक आश्चर्य-जनक तत्त्व मिले हैं, उनसे यही विदित होता है कि यहां के निवासी ऐसे घनिष्ठ सम्पर्क में नहीं आये थे जिससे सब मिल कर एक सुदृढ़ संगठन बन जाता। यहां वृक्षों और पौधों, नदियों और झीलों को मनुष्यों के साथ निकट सम्बन्ध में रहने का पर्याप्त समय मिला था।

इन वनों में यद्यपि मनुष्यसमाज था तथापि उनके बीच बहुत खुला भूभाग था, पर्याप्त पृथक्ता थी, और भीड़भाड़ का सर्वथा अभाव था। फिर भी, एकान्तवास ने भारतीय मस्तिष्क पर किसी प्रकार आलस्य की छाप नहीं छोड़ी अपितु उसको और अधिक स्वच्छ बनाया। भारत के प्राचीन दो युगों वैदिक काल और बौद्धकाल को जन्म देने वाला वन ही था।

वैदिक ऋषियों के समान ही भगवान् बुद्ध ने भी अपने शिक्षामृत की वृष्टि भारत के अनेक वनों में की।

सभ्यता की जो धारा उसके वनों से प्रवाहित हुई उसकी बाढ़ समस्त भारत में फैल गई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार वास्तविकता बतलाती है कि शिक्षा और उद्योग के विषय में भारतवर्ष 'पारिवारिक प्रणाली' में ही विश्वास करता था जिससे वस्तु की आवश्यकतानुसार ही सीमित उत्पत्ति हो सके। उसका ध्येय यह कभी नहीं था कि बड़े २ कारखानों में गुणों का ध्यान रक्खे बिना एक जैसा सामान बहुत बड़ी संख्या में निर्माण किया जाय! आखिर सब कलाओं सम्बन्धी काम यन्त्र की उपज नहीं, अपितु मनुष्य के हाथ में प्रदत्त दैवी शक्ति की उपज है। मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण गुरु के व्यक्तिगत ध्यान तथा व्यवहार पर बहुत कुछ निर्भर करता है। मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट रचना है जो स्वयं उसके रूप का एक लघुरूप है और उसका व्यक्तित्व निर्माण स्वयंचालित यान्त्रिक ढंग से नहीं होना चाहिये। मानसिक और आत्मिक उन्नति केवल बाह्य यन्त्रों या संस्थाओं के प्रयोग से नहीं हो सकती। और न यह केवल पाठशालाओं, मन्दिरों या सामूहिक प्रार्थनाओं के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

संस्थागत अथवा यान्त्रिक शिक्षा मानसिक एवं नैतिक उन्नति के लिये घातक है। प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार की शिक्षा अपने ही ढंग से अपने गुरु के निकटतम रहकर उसके आदेशानुसार प्राप्त करना चाहिये। शिष्य अपने गुरु का 'अन्तेवासी' होता है और उसकी शिक्षा 'ब्रह्मचर्य' कहलाती है, ब्रह्मचर्य जिसका अर्थ है जीवन, चारित्र्य और अनुशासन का विकास, आत्मोन्नति का विधान।

इस स्थिति का वर्णन उन शब्दों में किया जा सकता है जिनका प्रयोग मैंने अपनी 'प्राचीन भारतीय शिक्षा' (Ancient Indian Education) नाम की पुस्तक में किया है, यथा :—

"प्राचीन भारतीय शिक्षा का सर्वप्रधान सिद्धान्त यह था कि गुरु और शिष्य अपने बीच सुदृढ़ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करके एक ही कुटुम्ब के दो सदस्यों की भांति एक ही घर में रहें, गुरु के घर में जो उन दिनों पाठशाला का काम भी देता था। इस सिद्धान्त से ऐसी विशाल शिक्षा संस्थाओं का निर्माण होना सम्भव नहीं था, जो व्यक्तियों के अन्दर विशिष्ट विभिन्नताओं की उपेक्षा करके श्रेणियों (classes) में सामूहिक शिक्षा देती हैं और इस प्रकार शिक्षा की सामूहिक उत्पत्ति करती है। किन्तु शिक्षा आत्मविद्या को उन्नत करने वाला एक कोमल विधान है। यह मानसिक उन्नति और चारित्र निर्माण का एक मार्ग है जिसको कृत्रिम शिक्षा के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। शिक्षा की भांति धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन के क्षेत्र में भी भारतवर्ष इस प्रकार की संस्थाओं के बाह्य और यांत्रिक उपकरणों में विश्वास नहीं करता था। और यही कारण है कि भारत ने कभी गिर्जाघरों की भांति किसी प्रकार की धार्मिक संस्थाओं का निर्माण नहीं किया। धार्मिक जीवन और आत्मिक उन्नति का भार किसी संस्था पर नहीं छोड़ दिया गया अपितु गुरु और शिष्य के व्यक्तिगत सम्बन्ध पर छोड़ दिया गया था, जिसका बाह्य जगत् से कोई सम्बन्ध नहीं था। मनुष्य का आन्तरिक धार्मिक जीवन पूर्णतः स्वतन्त्र था, जिस पर उसका केवल अपना ही सर्वाधिकार था। समाज का उसपर कोई अधिकार न था। जैसा देखा गया है आत्मिक उन्नति 'चित्तवृत्ति-निरोध' पर प्रधान रूप से निर्भर करती है। इस लिए मस्तिष्क को विक्षुब्ध करने वाले बाह्य जगत् के संपूर्ण प्रभाव-मार्गों को बन्द करदेना चाहिये, जिससे अन्तः शान्ति के वातावरण में आध्यात्मिक उन्नति स्वतन्त्र रूप से हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु इतना होने पर भी भारतवर्ष में मन्दिर, मठ, तीर्थ और अन्य प्रकार के धार्मिक स्थानों का, जिनमें जाकर लोग धार्मिक कार्य के लिए एकत्र हो सकें, प्रभाव न था। यह इस कारण से था कि इन में जाकर एकत्र होने वाले विभिन्न व्यक्तियों पर उनके बाह्य रूप का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता था और उनके धार्मिक जीवन के मार्ग में किसी प्रकार की बाधायें नहीं पड़तीं थी। हिन्दू धर्म सामूहिक प्रार्थना में विश्वास नहीं करता। झुण्ड में भी शान्ति रहती है। किसी धार्मिक त्यौहार के दिन यात्रियों से भरे मन्दिर में भी प्रत्येक यात्री अपने आपको इस स्थिति में पाता है कि वह अपने ही विशेष ढंग से, अपनी इच्छानुसार स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना कर सके। भगवान् चैतन्य के विषय में एक प्रभावित कर देने वाली कहानी कही जाती है जो इस प्रकार है कि पुरी के जगन्नाथ जी के मन्दिर में जो नित्यप्रति यात्रियों की भीड़ के लिये सुप्रसिद्ध है चैतन्य महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी की मूर्त्ति से कुछ दूर स्वतन्त्रतापूर्वक मन्दिर के एक एकान्त कोने में आसन ग्रहण करते थे और वहां वे नित्य भगवान् के ध्यान में आत्मविस्मृत हुए देखे जाते थे।

इससे यह विदित होता है कि प्राचीन भारतवर्ष में मन्दिरों और मठों का प्रादुर्भाव, उसके धार्मिक सिद्धान्तों तथा विचारों से, जिन्होंने विद्या और धर्म के क्षेत्र में पाश्चत्य ढङ्ग के संगठन पर इस भय से रोक लगा दी थी कि कहीं वे भी 'यन्त्रमय' न हो जायें, असम्बद्ध नहीं है। विद्या और आध्यात्मिकता के लिए 'यन्त्रवाद' घातक है। क्योंकि यहां तो मस्तिष्क और आत्मा को जीवित प्राणी की भांति स्वाभाविक रूप से उन्नत होने के लिए स्वतन्त्र छोड़ देना आवश्यक है।

(क्रमशः)

आयुर्वेदशास्त्र के संस्कृत ग्रन्थ व ग्रन्थकार (५)

ज्वरतिमिरभास्कर

रचनाकाल ई० स० १४८६, ग्रन्थकर्त्ता—कायस्थचामुण्ड।

अनुवादक—वैद्य श्री के० एम० वाकणकर, आयुर्वेदाचार्य, विद्यालङ्कार, ग्वालियर।

ज्वरतिमिरभास्कर नामक ग्रन्थ का लेखक कायस्थ चामुण्ड नामक वैद्य था। इस ग्रन्थ में ज्वरप्रकार, उनके नाम, चिकित्सा आदि का वर्णन है। उक्त ग्रन्थ के अध्याय नामकरण से ग्रन्थ की उपयुक्तता सिद्ध होती है। इस ग्रन्थ में निम्नलिखित १६ अध्याय हैं *

(१) ज्वरप्रभेद (२) नाड़िकादिप्रभेद (३) औषधादिपरिक्रम (४) साधारणज्वर चिकित्सा (५) वातपित्तश्लेष्मज्वरचिकित्सा (६) द्वंद्वजज्वरचिकित्सा (७) सन्निपातज्वरचिकित्सा (८) आगन्तुकज्वरभेद (९) सन्ततादिविषमज्वरभेद (१०) शीतदाहादिविषमज्वरप्रभेद (११) सप्तधातुगतज्वरोपक्रम (१२) जीर्णज्वरप्रतिकार (१३) शोधनादिप्रभेद (१४) अजीर्णद्विद्वादशज्वरभेद (१५) ज्वरलक्षण (१६) ज्वरोपद्रवचिकित्सा।

प्रत्येक अध्याय में विषय का विस्तृत विवेचन किया गया है। उदाहरणार्थ "आगन्तुक ज्वरभेद अध्याय" में इन ज्वरों पर भी विचार किया गया है — ग्रहज्वर, क्रोधज, विषोद्भव, शोकोद्भव, कामज्वर, भयोद्भवज्वर तथा शापोद्भवज्वर।

* यह नाम भाण्डारकर प्राच्य विद्यामंदिर में जो पोथी है (नं० ४५५-१८९५-९८) उस पर से लिखे गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानधर्म या धार्मिक कृत्य करने से रोगी को आराम पहुँचता है यह कल्पना आज भी पूर्वकाल इतनी नहीं, पर स्थिर है। शोधनादिप्रभेद अध्याय में दान सम्बन्धी उल्लेख ग्रंथकार ने किया है वह इस प्रकार हैः—

कलशमरुणमग्रं सर्पिषा सम्भृतं वा, मधुजलगुडतैलैस्तन्दुलद्रोणसंस्थं ।
सितसिचयजुगेनावेष्टितं वंशवृत्तश्रुतविमलतमाय ब्राह्मणाय प्रदद्यात् ॥
सर्पिः यवतिलैर्होमः सोमचूडस्य तुष्टये, सुवर्णदक्षिणां यच्छन् मन्त्रमेतदुदीरयेत् ।
महेश देवदेवेश वासुदेव परात्पर, कुम्भेनानेन दत्तेन ज्वरः प्रणश्यतु ॥

प्रस्तुत ग्रंथ में ब्राह्मण, क्षत्रिय वर्गानुसार ज्वर के भी विप्रज्वर, क्षत्रियज्वर, वैश्यज्वर व शूद्रज्वर ऐसे चार प्रकार लिखे हैं। १५ वें अध्याय में इन चार ज्वरों के प्रकारों का वर्णन है। निम्न श्लोक देखिये—

अथ नाशकरं वक्ष्ये (क्ष्यै) ब्राह्मणादि चतुर्विधम् । रौद्रो विप्रश्च माहेन्द्रः क्षत्रियो विट् ज्वरेश्वरः ।
शूद्रश्च कालगंभीरस्तेषां लक्षणमुच्यते । तीक्ष्णो वेगः क्षुधालौल्यं शुचिद्वेष्टो घृतप्रियः ॥
मूत्रं च किंशुकाभासं पाठशीलोतिजल्पकः, बहुश्वासी तृषाक्लान्तो नरो रौद्रज्वरार्दितः ।
स्नानं होमं जपं कृत्वा तस्य शान्तिं प्रपद्यते ॥ इति विप्रः ॥
तीव्रज्वरस्तृषार्तश्च रक्तता मूत्रनेत्रयोः, कुरुते युद्धवार्तां च उत्तिष्ठति बलेन यः ।
सावष्टम्भी महाश्वासी क्षुद्द्वेषी मधुगन्धवाक्, मुखे स्वेदयुतो यस्तु माहेन्द्रज्वरपीडितः ॥
ग्रहहोमं जपं दानं महेशलपन चरेत् ॥ इतिक्षत्रियः ॥
मध्यवेगी स्वप्नशीलः पीतता गात्रनेत्रयोः, हृदुष्णं शीततान्यत्र कण्ठे स्वेदोतिविह्वलः ॥
मौनी च बहुमूत्री च नरो ज्वरेश्वरार्दितः, दैवव्यपाश्रयं कर्म तच्छान्त्यै कारयेद्बुधः ॥ इति वैश्यज्वरः ॥
बहिः शीतोन्तरुष्णश्च दन्तजिह्वादयोऽसिताः, हृच्छूलश्चातिसारी स्यादुन्मादो मत्स्यगन्धधृक् ।
प्रणयी क्रोधनो भीरुरन्नेच्छुर्विकलेन्द्रियः, ज्वरोयं कालगंभीरस्तेनाविष्टो न जीवति ॥ इति शूद्रज्वरः ॥

कायस्थचामुण्ड ने ग्रंथ के अन्त में जो श्लोक ❋ लिखा है उससे स्पष्ट हो जाता है कि वह मेदपाट यानी मेवाड़ देश के राजा राणाकुंभ के पुत्र राजमल्ल के समय में उसके पास था राजमल्ल राणा कुंभ के पश्चात् ई० सं० १४८४ में गद्दी पर बैठा। कायस्थ चामुण्ड का आश्रयदाता राजमल्ल व मेवाड़ की गद्दी पर बैठने वाला राजमल्ल एक ही व्यक्ति है, ऐसा प्रो० गोडे ने एक लेख में सिद्ध किया है। भांडारकर इन्स्टिट्यूट अनाल्स वर्ष १२ पृ० २६६

ग्रंथ के अन्त में जो ग्रंथ लेखन काल लिखा है उससे विदित होता है कि ज्वरतिमिरभास्कर ग्रन्थ कायस्थ चामुण्ड ने सम्वत् १५४५ ई० स० १४८६ में लिखा। मेवाड़ का राजा राजमल्ल ई० स० १४८४ से १५०६ तक गद्दी पर रहा। इसलिये ज्वरतिमिरभास्कर ग्रन्थ का रचनाकाल १४८४ से १५०६ के बीच में होना चाहिये। तथापि ग्रन्थकार ने स्वतः ही रचनाकाल का स्पष्ट उल्लेख कर दिया है इसलिये राजमल्ल मेवाड़ का राजा था व वहीं पर कायस्थ चामुण्ड नामक वैद्य लेखक था, ऐसा जो प्रो० गोड़े ने लिखा है वह सत्य ही प्रतीत होता है।

❋ देशे श्रीमेदपाटे रसयुगशरभूमिमानवर्षे दशम्यां । शुक्लायामाश्विनस्य त्रिदशगुरुदिने योगिनोपत्तनस्थः । भूपे श्रीराजमल्ले निवसति वसुधामण्डले कुम्भसूनुः । कायस्थश्चण्डनामा ज्वरतिमिरहरं भास्करं संविधत्ते ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायनशास्त्र

क्षार-निर्माण-प्रकार

(ले० – साहित्याचार्य वैद्य श्री घनानन्द पन्त विद्यार्णव, बाजार सीताराम, देहली)

वैसे तो सब प्रकार के उद्भिदों में सब ही समय सब अवस्थाओं में कुछ न कुछ क्षार मिलता ही है, पर जिस समय उद्भिद् अपनी परिपक्वावस्था या युवावस्था में होता है, तब उसमें अधिक क्षार मिलता है। ऊसर भूमि में उत्पन्न उद्भिदों में भी क्षार अपेक्षया अधिक मिलता है। क्षार बनाने के लिये हरे वृक्ष को ही काम में लेना चाहिये। स्वतः शुष्क या गलितपत्रादि में क्षार कम निकलता है।

यवक्षार बनाना हो तो — जौ की बाल में जब दूध भरा हो तब काट कर सुखादे फिर नीचे लिखी रीति से क्षार बनाले। क्षार वृक्ष को काट कर टुकड़े २ करके अच्छी तरह सुखा कर साफ स्वच्छ लीपी हुई जगह में एकत्र कर आग लगादे। जब लकड़ी जलती जाय तो उसके चारों तरफ के अधजले टुकड़ों को समेट लौटा पौटा कर अच्छी तरह जला कर स्वच्छ सफेद राख बनाले। ध्यान रहे यदि राख में अधजले कोयले या राख की काली रह जाय तो क्षार काला होता है, स्वच्छ नहीं होता है, कम भी निकलता है। फिर उक्त राख को चलनी से छान ले ताकि उसमें पत्थर अधजले कोयले आदि न रह जायें, जो कि पानी का रङ्ग खराब करते हैं। मैले पानी से बने क्षार का रङ्ग भी मैला ही होता है।

तब क्षार की राख को चोगुने जल में इस प्रकार घोलना कि राख पतली रबड़ी जैसी हो जाय, फिर उसको हाथ से या किसी अन्य चीज से जिसका कि रंग राख में न मिल जाय, भली प्रकार आलोडन कर शेष जल डाल कर थोड़ी देर फिर आलोडन कर रखदे। इतने में यदि राख में अध-जला भाग रह जाय तो वह पानी के ऊपर आ जाता है, उसे कपड़े से या चलनी से छान कर अलग रखदे। फिर जला कर राख बनाले। अब उक्त घोल को ५-६ घन्टे वैसे ही रहने दे। बाद में उक्त जल को खूब आलोडन कर प्रथम ही से चारों कोने चारों ओर बंधे कपड़े में मय राख के पानी को टपकाने के निमित्त सब ही एक बार डाल दे। कपड़े के नीचे पानी नितारने के लिये प्रथम से ही दो-तीन बर्तन तैयार रहें, ताकि कपड़े से छना या टपका पानी बरबाद न हो जाय। इस प्रकार थोड़ी देर बाद जब मैला पानी स्वच्छ पानी में बदल जाय तब अन्य बर्तन में स्वच्छ जल को ले लेवें और गन्दले जल को धीरे २ ऊपर डाल दे ताकि गंदला पानी नीचे न निकले, अब उस स्वच्छ जल को कलई के बरतन में चूल्हे के ऊपर उबाल दे। जब पकते २ क्षार रबड़ी के समान हो जाय और उसमें झाग आने लगे तब उसमें से गाढ़ा निकाल कर कलई या चीनी के बरतन में नितार कर धूप में सुखालें। नितरा हुआ पानी फिर उबाल ले। क्षार को चूल्हे पर ही बिल्कुल सूखने न दे। चूल्हे पर सुखाने से क्षार जल जाता हैं, कठिन हो जाता है, गुण भी बदल जाता है।

यदि क्षार को अधिक स्वच्छ बनाना हो तो पकने पर झाग शुरू हों तो उतार कर जाड़े के दिनों में पत्थर के बरतन में रात में खुली जगह रखदे, प्रातः ऊपर का पानी नितार ले नीचे कूजे की मिश्री जैसे जमे क्षार को धो कर सुखाले। बस क्षार बन गया। शीशी में रख लें।

यवक्षार का प्रयोग—हमारे अनुभव से यवक्षार रक्तवर्धक व हृद्य भी है। अस्तु! १-२-३ वर्ष के बच्चों का जहां यकृत् व प्लीहा बढ़ी हो तो यवक्षार की २-३ रत्ती की मात्रा दिन में तीन बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्री मिला कर पानी से दें। भोजन लघु दें। इससे दूध पचता है, हाजमा भी ठीक होता है, मलमूत्र साफ होता है। कुछ दिन बाद बच्चा स्वस्थ, रक्त, वर्ण, उत्साह युक्त हो जाता है, पाखाना पीला होने लगता है, दस्त पच कर आता है, यहां तक कि अच्छा होने पर भी बच्चा फिर २ दवा लेने का आग्रह करता है।

द्रव्यगुणविज्ञान

द्रोण-पुष्पी

(ले०—वैद्यराज श्री पं० गणेशदत्त शर्मा शास्त्री, मथुरा।)

नाम—सं० द्रोणपुष्पी, हिन्दी—गूमा, मारवाड़ी—दड़वल, बङ्गाली — घलघसिया, मराठी—तुंवा, पंजाबी—बढवानी, अंग्रेजी–ल्यूकस लीनी फोलिया Leucas Lini Folia)।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग। **मात्रा**—३ माशे से ६ माशा।

उत्पत्तिस्थान तथा स्वरूप—

यह वनौषधि प्रायः सब जगह प्राप्त होती है। किन्तु विशेषतया यू० पी०, पंजाब तथा राजपूताना (मारवाड़), गुजरात एवं बंगाल में पाई जाती है। यह औषधि पर्वतीय समतल भूमि में उत्पन्न होती है। इसका पौधा लगभग दो फुट से सवा तीन फुट तक का होता है। इसकी जड़ आधे फुट तक नीचे जमीन में गढ़ी रहती है। जड़ सफेद रंग की तथा छिलका उतारने पर श्वेत मिश्रित पीलेपन को लिये हुए रहती है। इसकी टहनी रेखायुक्त तथा अन्दर से सावकाश (पोली) होती है। इसका पुष्प सफेद रंग का तथा अनेक घटकों का समूह होता है एवं अत्यन्त हलका होता है, इसके पत्ते कुछ लम्बाई लिये हुए हरित होते हैं।

प्रयोग—यह औषधि प्रायः कई एक रोगों में काम आती है, किन्तु विशेषतया विषम ज्वर (मलेरिया) में अति प्रभावशाली सिद्ध हो चुकी है। हमारे यहां इस औषधि का प्रयोग कई एक रोगियों पर हो चुका है। यह साधारण तथा सुलभ औषधि होते हुए भी अपने उत्कृष्ट गुणों द्वारा हजारों लाखों रोगियों को प्रतिवर्ष जीवन प्रदान करती है। वर्तमान वर्ष के मलेरिया प्रकोप में इसके जितने प्रशंसात्मक तथा चामत्कारिक गुण देखे गये हैं, उनका यहां संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

इसका प्रयोग शीतपूर्व मलेरिया में तथा शीतरहित केवल ज्वर में होता है। इसकी हमारी विशेष अनुभूत विधि यह है कि—१ तोला–द्रोण पुष्पी, १॥ माशे–काली मिर्च, १॥ माशे—सौंफ। इनको आधा पाव जल में पीस ठंडाई जैसी बनालें और फिर आधा तोला मिश्री मिला कर ज्वर से छः घण्टे पूर्व, ढ़ाई २ घण्टे के अन्तर से दो खुराक पी लेनी चाहिये तथा उस दिन अन्न का भोजन न करे, केवल दूध या साबूदाना अथवा सैंधा नमक, काली मिर्च के साथ मुनक्का (भुनी हुई) में लेवें। इस तरह भयङ्कर से भयङ्कर मलेरिया ज्वर आठ दिन प्रयोग करने से सर्वथा नष्ट हो जाता है। औषधि प्रयोग करने से पूर्व कोष्ठ-शुद्धि कर लेना परमावश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा प्रयोग—इसका यह है कि—एक सेर द्रोण पुष्पी को सोलह सेर जल में रात को भिगो दे, और प्रातः नलिकायन्त्र (भबका) द्वारा अर्क निकाल लें। पींछे दूसरे दिन उसी समस्त अर्क में एक सेर द्रोण पुष्पी भिगो फिर उसी प्रकार यन्त्र द्वारा अर्क निकाल लें। प्रायः तीसरी बार करने से तीन बोतल अर्क निकलता है। इसकी मात्रा आधा तोला से दो तोले तक ज्वर से पूर्व तीन तीन घण्टे से तीन बार पीनी चाहिये। इसे १५ दिन पीने से मलेरिया ज्वर नष्ट होता है। इससे हृदय तथा मस्तिष्क एवं अन्य अवयवों पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है। यह मलेरिया ज्वर की अनुभूत तथा अचूक सिद्ध औषधि है।

यदि ज्वर में शीत न लगे किन्तु दाह, वमन, घबड़ाहट, तृषा आदि उपद्रव हों तो इसका प्रयोग इस प्रकार करना चाहिये—१ तोला—द्रोण पुष्पी, आधा तोला—धनिया।

इनको आधा पाव जल में पीस कर कपड़ छान कर आधा तोला मिश्री मिला कर ज्वर से पूर्व तीन २ घण्टे पर दो बार पी लेना चाहिये।

इसका तन्त्रान्तरों में निम्न प्रकार से वर्णन है—

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु पित्तकृज्ज्वरनाशनम्।
कामलार्शःकफश्वासकृमिजिद्भेदनं गुरु।
सतीक्ष्णलवणं चैव रूक्षोष्णं वातपित्तलम्॥ इति

कामला, पाण्डु रोग में इसका चूर्ण ६ माशा की मात्रा में गौ मूत्र के साथ अथवा कुटकी, धनियां, कासिनी के साथ पीस ठंडाई की तरह छान कर २ तोला मिश्री, १ तोला अर्क गुलाब मिला कर सुबह शाम देने से पाण्डु में शीघ्र लाभ होता है।

अर्श रोग में इसकी ७ पत्ते तथा ७ पत्ती नीम की, सात काली मिरच, २ छोटी हरड़ एकत्र पीस छान, थोड़े पानी में प्रातः सायं देने से अर्श में विशेष लाभ होता है।

श्वास रोग में १ तो० द्रोणपुष्पी, १ तोला काकड़ा सिंगी, १ तोला कचूर, १ तोला ४ रत्ती उन्मत्त बीज, एकत्र पीस कर बब्बूलत्वक् क्वाथ में १२ गोली बनावें। १ प्रातः, १ दुपहर, १ शाम देने से श्वास में शीघ्र चामत्कारिक लाभ देखा गया है। खटाई, उड़द की दाल, बैंगन, मूली तथा हरे धनिये से परहेज करना चाहिये।

———

ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर। (स्थापित १९२३ ई०)

(१) दमानाशक (रजि०) — खांसी, श्वास, और राजयक्ष्मा की अचूक औषधि। कीमत ३२ मात्रा १), १२५ मात्रा ३)
(२) अमृतविलासवटी (रजि०) — बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष के सम्पूर्ण रोगों की एक ही औषधि। कीमत २५ मात्रा १), १०० मात्रा ३)
(३) गुप्त रोग का दारू (रजि०) — स्त्रियों के मासिक धर्म की खराबी को दूर करके सन्तान पैदा करती है। कीमत १४ मात्रा २), ५०) मात्रा ६)
(४) डाइवटी (रजि०) — मधुमेह की अचूक औषधि। कीमत २५ मात्रा ३), १०० मात्रा १०)। डाक-व्यय सबका पृथक्।

पताः— डा० जी०डी० शर्मा, बी० एल०, एम०एस०, बी० आर० एम० पी०, पी० ए० सी०, अध्यक्ष, ईश्वर मेडिकल हाल, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगविज्ञान

निदानपञ्चक

[ले०—श्रीयुत रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्य, गुरुकुल कांगड़ी]

प्रतिपाद्य विषय पर अनेक आर्ष सूत्रों तथा उनके विस्तृत व्याख्यानों के रहते इस लेख की आवश्यकता क्यों पड़ी, ऐसा प्रश्न पाठकों के मन में उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। अतः मूल विषय पर कुछ लिखने के पहले इस स्वाभाविक प्रश्न का उत्तर दे देना लेखक का प्रथम कर्तव्य है। मेरा विश्वास है कि यदि मैं अपनी कठिनाइयों को, जिनका अनुभव मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में किया है, पाठकों के समक्ष रख दूं तो उक्त प्रश्न का निपटारा स्वयं ही हो जावेगा। प्रत्येक विद्यार्थी के समान मुझे भी श्रीमाधवकर कृत "माधव-निदान" नामक ग्रन्थ सर्वप्रथम देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, और पढ़ने को मिला, उसके साथ ही उसकी मधुकोश व्याख्या। विद्यार्थी जीवन में परीक्षोत्तीर्ण होना ही एकमात्र लक्ष्य होता है, उसका विकास तो उसके बाद अधीत विषय का मनन करने से होता है। अस्तु प्रस्तुत लेख में पाठकों को लेखक का वही स्वाभाविक उद्गार मिलेगा जो किसी भी जिज्ञासु को हो सकता है।

श्री माधवकर के स्वनामाख्यात ग्रंथ 'माधव-निदान' में रोगों के कारण, रोगोत्पत्ति के पूर्व के सांकेतिक लक्षण, उत्पन्न व्याधि के व्यक्त लक्षण, उपशयानुपशय परिभाषा, तथा अवयवों की विकृति की सम्प्राप्ति का विशद वर्णन है। और इन्हीं वर्णनों का पारिभाषिक नामकरण उक्त व्याधिविनिश्चय ग्रन्थ के प्रथम श्लोक में किया गया है, जो इस प्रकार है:—निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा। सम्प्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पञ्चधा स्मृतम् ॥

इस श्लोक की मौलिकता में किसी प्रकार दोषारोपण करने की गुंजाइश नहीं, क्योंकि पद्योक्त 'निदानपञ्चक' का नामकरण उन ऋषियों का किया हुआ है जो आप्त हैं, और "आप्ताः शिष्टाः विबुद्धाश्च तेषां वाक्यमसंशयम्"। प्रस्तुत लेख में निदानपञ्चक की व्याख्या में जो तोड़-मरोड़ टीकाकारों ने की है, जिससे उसकी व्यावहारिकता में दोष पड़ता है, उसका समालोचनात्मक दिग्दर्शन मात्र करना लेखक का उद्देश्य है। आयुर्वेद शास्त्र व्यावहारिक शास्त्र है, अतः आयुर्वेदशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों की ऐसी व्याख्या, जो व्यावहारिकता में दोष उत्पन्न करे, सर्वथा अग्राह्य होगी।

श्री विजयरक्षित ने उक्त निदान पञ्चक की व्याख्या करने में जिस अव्यावहारिकता का आभास प्रकट किया है उसे हम पाठकों के समक्ष रखते हैं। टीका में आपने कहा है :— "व्याधेर्ज्ञातव्यस्य पञ्चधा ज्ञानोपाया भवन्ति"। यहां विचारना यह है कि रोगों के ज्ञान के उपाय इस निदानपञ्चक को कहना कहां तक युक्तिसंगत है। उपाय शब्द की क्या परिभाषा है। पहले हमें यह देखना चाहिए, क्योंकि यदि हम बिना विचारे उक्त निदानपञ्चक को व्याधिज्ञान का उपाय मान लें तो सुश्रुतोक्त "षड्विधो हि रोगाणां विज्ञानोपायः" तथा चरकोक्त "त्रिविधं खलु रोगविशेषविज्ञानम्" से आरम्भ कर "प्रत्यक्षतस्तु खलु रोगतत्त्वं बुभुत्सुः सर्वैरिन्द्रियैः सर्वानिन्द्रियार्थानातुरगतान् परीक्षेतान्यत्र रसज्ञानात्।" प्रभृति सूत्रों से विरोध होने लगता है। ऐसी परिस्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में "उपाय" शब्द की परिभाषा का निश्चय करना ही होगा। आगे चल कर उक्त टीकाकार महोदय ने यह भी कहा है कि "व्याधिनिश्चियकरणं निदानमिति निदानपञ्चकसामान्यलक्षणम्।"

उक्त दो उदाहरणों से पाठकों को अवश्य मालूम होगया होगा कि श्री विजयरक्षित ने 'निदानपञ्चक' को निश्चित रूप से व्याधिविज्ञान के 'उपाय' या 'करण' प्रतिपादित किया है। आप के समक्ष पूर्वोक्त आर्ष सूत्र द्वारा उपदिष्ट इन्द्रियादि व्याधिविज्ञान के 'करण' तथा 'उपाय' हैं ऐसा प्रमाण भी उपस्थित है। अतः इन दोनों का समन्वय करना आपका कार्य है। निदानादि का करणत्व स्वीकार करना युक्तिसंगत नहीं, क्योंकि "व्यापारवद्धि कारणं करणमुच्यते" और निदानादि का व्यापार कोई नहीं बतला सकता। यदि च "लिङ्गज्ञानेन लिङ्गिज्ञानमिति" न्याय से व्याधि के आभ्यन्तर विकृतिरूप लिङ्ग के बोधक निदानादि हैं ऐसा प्रतिपादन करें, तो भी निदादि का व्याधिबोधकत्व होने पर भी करणत्व स्वीकार करना युक्तियुक्त न होगा, क्योंकि वह्नि का लिङ्ग धूम वह्निज्ञान के प्रति 'करण' है ऐसा नहीं कहा जा सकता। "यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निरिति व्याप्तिज्ञानं तत्र करणम्" ऐसा शास्त्रो में प्रतिपादित है। और तार्किकों ने भीकहा है—'व्यापारस्तु परामर्शः करणं व्याप्तिधीर्भवेत्। अनुमायां ज्ञायमानं लिङ्ग तु करणं न हि।' साथ ही, सब निदानादि में तो लिङ्गत्व भी नहीं है, क्योंकि निदानपञ्चक के अन्तर्गत सम्प्राप्ति तो बोध्या है, बोधिका नहीं। उदाहरणार्थ चरकोक्त सूत्र देखें—"सम्प्राप्तिर्जातिरागतिरित्यनर्थान्तरं व्याध्योः।" अतः निदानपञ्चक व्याधिज्ञान के 'उपाय' या 'करण' नहीं, बल्कि विज्ञानविषय हैं।

आगे चल कर श्री विजयरक्षित ने कहा है—"न च कृतकरणत्वं समस्तपक्षे वाच्यम्। एते समस्ता व्यस्ताश्च व्याधिबोधकाः।" अब आप इस की व्यावहारिकता पर विचार करें। यदि आप से कोई कहे कि हाथी का ज्ञान सूंड़, कान, नाक, पैर आदि अवयवों के सामूहिक तथा वैयक्तिक ज्ञान से होता है तो आप क्या कहेंगे। आप यह अवश्य कहेंगे कि वैयक्तिक अवयव से तो अवयवमात्र का ही ज्ञान हो सकता है, हाथी का पूर्ण ज्ञान तो सामूहिक ज्ञान से ही होगा। यदि ऐसा न करें तो लोकोक्त "अन्धेन नीयमानानामन्धानामेव श्रेयसे। न चक्षुष्मतामित्यलं जरतां दूषणाविष्करणेन।" जैसा उपहास होगा।

अब तक मैंने निदानपञ्चक का करणत्व स्वीकार करने में आपत्ति तथा उन्हें ज्ञान का विषय प्रतिपादित करने में युक्ति प्रदर्शित की है। अब पाठकों के सामने निदानपञ्चक की व्यावहारिक विवेचना उपस्थित करूंगा 'निदान' शब्द की निरुक्ति दो तरह से करते हैं—"निर्दिश्यते व्याधिरनेनेति निदानम्" अथवा "निश्चित्य प्रतिपाद्यते व्याधिरनेनेति निदानम्।" निदान के पर्यायवाची शब्द हैं निमित्त, हेतु, आयतन, प्रत्यय, उत्थान, कारण आदि। पर्यायवाची शब्द एकार्थवाची शब्द को कहते हैं (भिन्नानुपूर्वीमत्वे सति एकार्थप्रतिपादकत्वं पर्यायत्वम्)। निदान का दूसरा सरल पर्याय हुआ 'कारण'। कारण उसे कहते हैं जिससे कार्य की सिद्धि हो। कहा भी है "अन्यथा-सिद्धिशून्यत्वं कारणत्वम्"। कारण तीन तरह के होते हैं, (१) समवायिकारण (२) असमवायि-कारण और (३) निमित्तकारण। उदाहरणार्थ, एक घट के बनाने में कपाल, कपालमालासंयोग और कुम्भकार इन तीन की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार एक रोग की उत्पत्ति में तीन कारण होते हैं—(१) उत्पादक या कोपक (२) दोष और (३) दूष्य। उक्त तीन कारणों में समवायिकारण का कार्य के साथ नित्य सम्बन्ध रहता है, यथा घट कार्य के साथ समवायिकारण मृत्कपाल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या व्याधिकार्य के साथ समवायिकारण दोष दूष्य का। उपर्युक्त पर्यायवाची शब्दों में निमित्त पद उक्त समवायिकारण दोष दूष्य के वारणार्थ ही प्रयुक्त हुआ है। अब निदान की परिभाषा पर आपका ध्यान आकर्षित करता हूं। आचार्य गणनाथसेन ने निदान की परिभाषा इस प्रकार की है:—"बाह्यं निमित्तं रोगाणां निदानमिति कीर्त्तितम्। विधाय धातुवैषम्यं साक्षाद्वा रोगकारि तत्।" अर्थात् रोग के बाह्य कारण मिथ्याहारविहाराभिघातजीवाणु प्रभृति को निदान कहते हैं, जो साक्षात् या धातुओं में वैषम्य उत्पन्न करके रोग उत्पन्न करने वाले होते हैं। स्पष्टार्थ यह है कि उक्त मिथ्याहारविहारादि से दोष कुपित होकर धातुओं में वैषम्य उत्पन्न कर रोग पैदा करते हैं। इसके अतिरिक्त, अभिघात, विष, अग्नि, प्रभृति से दोषों तथा धातुओं में विकृति उत्पन्न हुए बिना भी रोग उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार धातुवैषम्य उत्पादन कर जो रोग पैदा करते हैं उन्हें निज तथा धातुवैषम्य उत्पादन किये बिना ही जो रोग पैदा कर देते हैं उन्हें आगन्तुज कहते हैं। कहा भी है—'द्विविधा प्रकृतिरेषा नागन्तुनिजविभागात्। मुखानि तु खल्वागन्तोर्नखदशनपवनाभिघाताभिचारशापबधबन्धनव्यधनवेष्टनपीडनरज्जुदहनशस्त्राशनिभूतोपसर्गादीनि। निजस्य खलु मुखं वातपित्तश्लेष्मिकं वैषम्यम्।" (च० सू० अ० २०)

इस प्रकार धातुओं में विषमता उत्पन्न कर जो रोगोत्पादन करते हैं उन्हें "सामान्य निदान" कहते हैं और जो साक्षात् रोगों का उत्पादन करते हैं उन अभिघात प्रभृति को "विशिष्ट निदान" कहते हैं। भगवान् चरक ने भी कहा है "आगन्तुर्हि व्यथापूर्वमुत्पन्नो जघन्यं वातपित्तश्लेष्मणां वैषम्यमापादयति। निजे तु वातपित्तश्लेष्माणः पूर्वं वैषम्यमापद्यन्ते जघन्यं व्यथामभिनिर्वर्तयन्ति च" (च० सू० अ० २०)। सूक्ष्म दृष्टि से ये पुनः तीन प्रकार के होते हैं, यथा—"द्वयोस्तु खलु आगन्तुनिजयोः प्रेरणमसात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः प्रज्ञापराधः परिणामश्चेति।" अर्थात् (१) असात्म्येन्द्रियार्थसंयोग (इन्द्रियों के अर्थ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध का अयोग, अतियोग और मिथ्यायोग), (२) प्रज्ञापराध (वाणी, मन और शरीर की प्रवृत्तियों का अयोग, अतियोग और मिथ्यायोग) तथा (३) परिणाम (शीत, उष्ण, वर्षा प्रभृति समय के लक्षणों के अयोग, अतियोग और मिथ्यायोग)। अभिघात, अधर्म आदि की गणना भी प्रज्ञापराध के अन्तर्गत ही की गई है। आचार्य चरक ने कहा है—"कालबुद्धीन्द्रियार्थानां योगो मिथ्या न चाति च। द्वयाश्रयाणां व्याधीनां त्रिविधो हेतुसंग्रहः।" च० सू० अ० १)। बाह्य हेतु ही निदान है इसके समर्थन में और भी अनेक आर्ष वचन हैं यथा—"आभ्यन्तरं तु निदानं दोषदूष्याश्च।" जिस प्रकार घट के प्रति कुलालादि बाह्य कारण ही निमित्त कारण हैं, उसी प्रकार रोगों के प्रति बाह्य कारण मिथ्याहारविहाराभिघातजीवाणु प्रभृति ही निदान हैं। यदि दोष दूष्य ही निमित्त होते तो इनका पृथक् निर्देश क्यों होता? इसलिए बाह्य निमित्त ही निदान है यह सिद्धान्त दृढ़ हुआ।

वंगसेन ने भी कहा है—"येनाहारविहारेण रोगाणामुद्भवो भवेत्। क्षयो वृद्धिश्च दोषाणां निदानं हि तदुच्यते।" इसमें दोष और निदान का पृथक् निर्देश है और भी ऋषियों ने कहा है—"त्रिविधान्येतानि विकारस्य धातुवैषम्यस्य बाह्यानि कारणानि, नव सन्त्याभ्यन्तराणि कारणानि।" सुश्रुत सूत्रस्थान अध्याय २४ में एक सूत्र आया है—"सर्वेषां च व्याधीनां वातपित्तश्लेष्माण एव मूलम्।" यहां यह शङ्का उठ सकती है कि 'सब व्याधियों का मूल वात, पित्त, कफ है' ऐसा क्यों कहा गया? इसका समाधान यह है कि वात, पित्त, कफ व्याधि के समवायिकारण हैं, जिस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि घट का समवायिकारण मिट्टी है। यही कारण है कि ऋषियों ने यहां निदान पद का प्रयोग नहीं किया है। और वहीं पर कहा भी है कि "यथा हि कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेणावस्थितं सत्त्वरजस्तमांसि न व्यतिरिच्यन्ते एवमेवेहेत्यादि।"

श्री माधवकर ने निदान की परिभाषा नहीं लिखी, और उनके टीकाकर भी केवल यही कह कर कि "तस्मिन्निदानादिभिः पर्यायैरभिधायमानत्वमिति" आगे बढ़ गये हैं। यहां समझ में नहीं आता कि केवल पर्याय कह देने से ही परिभाषा का ज्ञान कैसे हो सकेगा। यदि हम किसी व्यक्ति का परिचय केवल उनका नाम लेकर देना चाहें तो उस व्यक्ति का पूर्ण ज्ञान कैसे हो सकेगा? इन्द्र के स्वरूप का वर्णन क्या इन्द्र के पर्यायवाचक मघवा, बिडौजा, पाकशासन आदि नाम गिनाने से हो सकता है? आगे चल कर श्री विजयरक्षित ने निदान की परिभाषा का संकेत "सेतिकर्तव्यताको रोगोत्पादको हेतुर्निदानम्" इस पंक्ति से किया है। 'इतिकर्तव्यता के साथ रोगोत्पादक हेतु को निदान कहते हैं' यह निदान की परिभाषा कैसे हुई? परिभाषा तो उसे कहते हैं जिससे किसी वस्तु का पूर्ण ज्ञान हो जाय। उक्त पद से रोगोत्पादक हेतु कौन है यह पता नहीं चलता, और वह स्वयं रोगोत्पादक है नहीं, अतः यहां अव्याप्ति दोष आ जाता है। इसीलिए तो आचार्य गणनाथसेन ने "बाह्यं निमित्तं रोगाणां निदानमिति कीर्तितम्।" ऐसी परिभाषा कही है।

(अपूर्ण)

लौह भस्म
१८) सेर

अभ्रक भस्म
३०) सेर

सुविपुल ईंधन से तैयार होने वाली इन दोनों दिव्य भस्मों के निर्माण का प्रबन्ध हमने ईंधनबहुल देहात में किया है। हमारी योजना है कि इन भस्मों को अच्छी और सबसे सस्ती कीमत में देकर इनके प्रयोग और प्रचार में वृद्धि की जाये। अनेक वैद्यों ने हमारी इन भस्मों को प्रयोग कर पूर्ण सन्तोष प्रकट किया है। आप भी एक आने का टिकट भेज, नमूना मुफ्त मंगा, प्रयोग कर देख सकते हैं। ¼ सेर से कम कोई भी भस्म पार्सल से नहीं भेजी जाती।

आसाम (कामरूप देश) की असली कस्तूरी

"कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा" अर्थात् आसाम की कस्तूरी सर्वश्रेष्ठ है। इसी सर्वश्रेष्ठ कस्तूरी के संग्रह का हमने आसाम में विशेष प्रबन्ध किया है। एक बार नमूना के लिये अवश्य मंगाकर देखिये। वर्तमान मूल्य ४२) तोला है।

पता—आयुर्वेद सेवा आश्रम, २७ कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक लेखमाला

पञ्चकर्मविनिश्चय

(संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद—संपादक द्वारा)

[लेखक—श्रीयुत कविराज ज्योतिषचन्द्र सरस्वती, देहली ।]

पहला अध्याय

अब हम पञ्चकर्मविनिश्चय अध्याय की व्याख्या करेंगे जैसी कि आत्रेय आदि महर्षियों ने की है। पहले हम यह बतलायेंगे कि आयुर्वेद में पञ्चकर्म किन्हें कहा गया है। स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन और वस्तिकर्म को पञ्चकर्म कहते हैं। विरेचन के दो भेद हैं—कायविरेचन और शिरोविरेचन। तथा वस्तिकर्म के तीन भेद हैं—आस्थापन, अनुवासन और उत्तरवस्ति। इसके अतिरिक्त, स्नेहन और स्वेदन के पञ्चकर्म से पूर्व किये जाने के कारण उनको पूर्व कर्म निर्धारित कर वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन और शिरोविरेचन इन पांचों को दोषनिर्हारक होने के कारण शरीरसंशोधक पञ्चकर्म कहा गया है। चरक सिद्धिस्थान कल्पनासिद्धि अध्याय में 'का कल्पना पंचसु कर्मसूक्ता' इस शिष्यप्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान् आत्रेय ने स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन और वस्ति का क्रम बतला कर यह कहा है कि ये ही पञ्चकर्म हैं, इस प्रकार उन्होंने स्नेहन और स्वेदन को भी पञ्चकर्मों का अङ्ग माना है। चक्रपाणि ने भी "तेन पञ्चकर्माङ्ग-स्नेहस्वेदप्रयोगमेव प्रागाह" ऐसा कह कर उसी अर्थ का समर्थन किया है।

पुनः पञ्चकर्मीयसिद्धि अध्याय में भी वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन और शिरोविरेचन इन्हीं पांच कर्मों के करने न करने सम्बन्धी निश्चय से तथा अध्याय के अन्त में "इति पञ्चविधं कर्म विस्तरेण निदर्शितम्" ऐसे कहने से स्पष्टतः इन्हीं को पञ्चकर्म कहा गया है। ऐसी परिस्थिति में 'पञ्चकर्म' पद का उक्त दोनों प्रकार का अर्थ ठीक मालूम पड़ता है। स्नेहन और स्वेदन के पञ्चकर्म में सहायक होने के कारण तथा पूर्वकर्म होने के कारण उनका भी पञ्चकर्म का अङ्ग होना ठीक ही प्रतीत होता है।

पञ्चकर्म कराने की आवश्यकता होने पर भी निम्नलिखित पुरुषों को पञ्चकर्म नहीं कराना चाहिए, ऐसा चरकाचार्य ने कहा है; यथाः—

> चण्डः साहसिको भीरुः कृतघ्नो व्यग्र एव च। सद्वैद्यनृपतिद्वेष्टा तद्द्विष्टः शोकपीडितः॥
> यादृच्छिको मुमूर्षुश्च विहीनः करणैश्च यः। वैरी वैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनः सुशङ्कितः॥
> भिषजामविधेयश्च नोपक्रम्या भिषग्विदा।" इति (सि० अ० २)

अर्थात् क्रोधी, साहसी, डरपोक, कृतघ्न, व्याकुल, वैद्य और राजा से द्वेष करने वाला अथवा वैद्य और राजा के द्वेष का पात्र, शोक से पीड़ित स्वेच्छाचारी, मरणासन्न, इन्द्रियहीन, शत्रु, वैद्याभिमानी, श्रद्धारहित, शङ्काशील और वैद्य का कहना न मानने वाला पुरुष बुद्धिमान् वैद्य द्वारा चिकित्सा किये जाने के योग्य नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां क्रोधी, साहसी और डरपोक की पञ्चकर्म चिकित्सा का निषेध इसलिए किया गया है कि उन पर विधिपूर्वक औषधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता। कृतघ्न पापी होने के कारण अचिकित्स्य है। पञ्चकर्म कालसापेक्ष हैं अर्थात् निश्चित समय पर कराये जाते हैं, अतः व्यग्र (विभिन्न कार्यों में लगे हुए पुरुष) की चिकित्सा का निषेध किया गया है। वैद्य और राजा से द्वेष करने वाले अथवा वैद्य और राजा से द्वेष किये जाने वाले तथा वैरी में शत्रुभाव होने के कारण उनको पञ्चकर्मचिकित्सा के अयोग्य माना गया है। शोक पीड़ित की मन की दीनता से तथा मरणासन्न के मानसिक और शारीरिक बल की हीनता से औषधि के वेग को सहन करने के अयोग्य होने के कारण उनका निषेध किया गया है। स्वेच्छाचारी जो उसे अच्छा लगता है वही करता है, अतः नियम से न चलने के कारण उसकी चिकित्सा का निषेध किया गया है। इन्द्रियहीन को पञ्चकर्म कराना कठिन है। अपने को वैद्य समझने वाले मूर्ख को यथाविधि पञ्चकर्म कराने से भी बुराई मिलती है। श्रद्धाहीन और शङ्काशील को कर्म कराने से क्रिया सफल नहीं होती। वैद्य का कहना न मानने वाला अनुशासनोल्लङ्घन के कारण हानि उठाता है। अतएव इनका पञ्चकर्म निषिद्ध माना गया है।

श्रीज्योतिषचन्द्रसरस्वतीविरचित पञ्चकर्मविनिश्चय का पहला अध्याय समाप्त।

दूसरा अध्याय

अब हम आत्रेयादि महर्षियों के कथनानुसार स्नेहविनिश्चय अध्याय की व्याख्या करते हैं।

पञ्चकर्मसम्बन्धी जिज्ञासा में स्नेहन आदि की विधि भी बता देनी चाहिये, अतः सबसे पहले स्नेहाध्याय ही लिखा है। उसमें भी पहले स्नेह का स्वरूप बताना आवश्यक है। स्नेह के उत्पत्तिस्थान दो प्रकार के हैं—स्थावर और जंगम। वृक्षादि स्थावर द्रव्यों से जो स्नेह (चिकनाई) पैदा होता है वह स्थावर स्नेह कहलाता है और पशु आदि जंगम प्राणियों से जो स्नेह पैदा होता है वह जंगम स्नेह कहलाता है। तिल और एरण्ड आदि से उत्पन्न स्नेह स्थावर और दही, दूध, घी, चर्बी, मज्जा, नवनीत आदि जंगम प्राणियों से पैदा होने के कारण जंगम स्नेह कहलाते हैं। स्थावरों में तिल का तेल श्रेष्ठ होता है। विरेचकों में एरण्डतेल श्रेष्ठ होता है और जंगमों में गाय का घी श्रेष्ठ होता है। सब स्नेहों में घी, तेल, चर्बी, और मज्जा ये चार स्नेह सर्वोत्तम हैं। उनमें भी गाय का घी संस्कारानुवर्ती होने के कारण सर्वोत्तम होता है। कहा भी है—

"नान्यस्नेहस्तथा काश्चत् संस्कारमनुवर्तते। यथा सर्पिरतः सर्पिः सर्वस्नेहोत्तमं मतम्॥
स्नेहाद्वातं शमयति पित्तं माधुर्यशैत्यतः। घृतं तुल्यगुणं दोषं संस्कारात्तु जयेत् कफम्॥

(च० नि० अ० १)

अर्थात् कोई भी दूसरा स्नेह इतना संस्कारानुवर्त्ती नहीं है जितना कि घी; अतः घी सब स्नेहों में उत्तम माना गया है। घी चिकनाई के कारण वात का शमन करता है, मधुरता और शीतलता के कारण पित्त का शमन करता है, तथा अन्य औषधियों के संस्कार से अपने ही तुल्य गुणधर्म वाले कफ का भी शमन कर देता है।

स्नेह के गुण—

घी के गुण—घी पित्त और वायु का शमन करता है। रस, वीर्य और ओज को बढ़ाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दाह को शान्त करता है। शरीर को कोमल बनाता है। स्वर और वर्ण को साफ करता है। तथा जठराग्नि को बढ़ाता है।

तेल के गुण—तेल वातहर होते हुये भी गर्म होने के कारण कफ को नहीं बढ़ाता। बल बढ़ाता है। मलने से त्वचा को मुलायम बनाता है। शरीर के अङ्गों को मजबूत बनाता है। तथा योनि का शोधन करता है।

चर्बी के गुण—शस्त्रादि से विद्ध, भग्न (टूटे हुये) और आहत (चोट लगे हुये) अङ्ग में, योनिभ्रंश में, कान की पीड़ा में, शिरःपीड़ा में पुरुषत्व बढ़ाने के लिए, तथा व्यायाम से शरीर के रूक्ष हो जाने पर चिकनाई लाने के लिये, चर्बी का प्रयोग होता है।

मज्जा के गुण—जिनका बल, वीर्य, रस, कफ, चर्बी या मज्जा क्षीण हो गया है, उनके स्नेहन के लिये मज्जा का प्रयोग होता है। यह विशेषतया हड्डियों को शक्ति प्रदान करता है।

किसको स्नेहन कराना चाहिये।

इस प्रकार स्नेहों का स्वरूप बताकर चिकित्सित में स्नेहन क्रिया का वर्णन करने से पहले यह बताना आवश्यक है कि स्नेह का प्रयोग कहां करना चाहिये! स्वेदन के पश्चात् जिनका संशोधन करना है उनका पहले स्नेहन कर लेना चाहिंये। वातविकारों में मन्यास्तम्भ को छोड़ कर शेष सभी में, नित्य व्ययाम करने वालों, मद्य पीने वालों तथा मैथुनरति वालों को स्नेहन की आवश्यकता होती है। मानसिक परिश्रम करने वालों तथा रूक्ष शरीर वालों को भी स्नेहन कराना चाहिये। सुश्रुत ने रूक्ष का लक्षण इस प्रकार लिखा है। (चि० अ० २१):—

"पुरीषं ग्रथितं रूक्षं कृच्छ्रादन्नं विपच्यते। उरो विदह्यते वायुः कोष्ठादुपरि धावति॥
दुर्वर्णो दुर्बलश्चापि रूक्षो भवति मानवः।"

अर्थात्, जिस मनुष्य का पखाना गांठदार और सूखा सा हो, भोजन कठिनता से पचता हो, हृदय में दाह होता हो, वायु कोष्ठ से ऊपर को चढ़ती हो तथा वर्ण और बल क्षीण होगया हो, उसे रूक्ष कहते हैं।

किसको स्नेहन नहीं कराना चाहिये।

अजीर्ण, उदर, नवज्वर और अरोचक के रोगी, दुर्बल, अति स्थूल, मूर्च्छा, मद, वमन, और तृषा युक्त, थकित, मद्यपान से व्याकुल, वस्ति, विरेचन और वमन कराये हुये, गर्भिणी, तालुशोषयुक्त, विष खाये हुये तथा आम वाले मनुष्य को स्नेहन नहीं देना चाहिये। रूक्षणयोग्य पुरुषों को भी संशोधन काल के अतिरिक्त और किसी समय स्नेहन न देना चाहिये। रूक्षणयोग्य व्याधियों का निर्देश चरक (सू० अ० २१) में इस प्रकार किया गया है:—

"अभिष्यन्दा महादोषा मर्मस्था व्याधयश्च ये। ऊरुस्तम्भप्रभृतयो रूक्षणीया निदर्शिताः।"

अर्थात् महादोषल अभिष्यन्द और मर्मस्थ व्याधि तथा ऊरुस्तम्भ प्रभृति रूक्षणीय माने गये हैं।

बढ़े हुए कफ में भी स्नेहन से कोई लाभ नहीं, तथा जिनके मुख और गुदा से स्राव होता हो उनको भी स्नेहन नहीं कराना चाहिये। मरुप्रदेश को छोड़ कर अन्य प्रदेशों की प्रसूता स्त्रियों को दस दिन तक स्नेहन नहीं कराना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेह पीने का समय।

ऋतु भेद से—शरद् ऋतु में अर्थात् कार्तिक और मार्गशीर्ष में घी पीना चाहिये। वैसाख में चर्बी और मज्जा पीना चाहिये। आषाढ़ और श्रावण में तेल पीना चाहिये। उस उस ऋतु में भी सामान्यतया सब स्नेह न अधिक गर्म और न अधिक ठंडे समय में ही पीने चाहिये। पुरुष—भेद से भी कालव्यतिक्रम होता है। वात और पित्त की अधिकतावाला रात में जब गर्मी अधिक हो तभी पीवे। और कफ की अधिकतावाला दिन में शीत की अधिकता होने पर तथा ऐसे दिन जब आकाश में बादल न छाये हुए हों, स्नेह पीवे। सुश्रुत ने भी कहा है:—

"शीतकाले दिवा स्नेहमुष्णकाले पिवेन्निशि। वातपित्ताधिको रात्रौ वातश्लेष्माधिको दिवा॥ इति।

यहां 'वातपित्ताधिकः' से 'वाताधिक' 'पित्ताधिक' और 'वातपित्ताधिक' इन तीनों का ग्रहण होता है। और 'वातश्लेष्माधिक' से 'वातश्लेष्माधिक' और 'श्लेष्माधिक' का ग्रहण होता है।

दोष भेद से—दोष भेद से भी घी सभी को पीना चाहिये जैसा कि सुश्रुत में कहा है:—

"केवलं पैत्तिके सर्पिर्वातिके लवणान्वितम्। देयं बहुकफे चापि व्योषक्षारसमायुतम्॥"

अर्थात् पैत्तिकरोग में केवल (अन्य द्रव्य से अमिश्रित) घी, वातिक रोग में लवणमिश्रित घी, तथा अधिक कफ वाले रोग में व्योष (सोंठ, मिर्च, पीपल) और क्षार मिश्रित घी देना चाहिये।

संशमन के लिये मध्यान्ह आदि समय में भोजन काल में भूख की इच्छा वाला मनुष्य स्नेहपान करे। और संशोधन के लिए रात का भोजन पचने पर प्रातः काल ही स्नेह पीना चाहिये। प्रातः काल संशमनस्नेह कोष्ठ—उपलेपक दोष के क्षय न होने के कारण उस दोष से मिलकर दोषों को कुपित करता है, अतः उस काल में उसका निषेध ठीक ही है। वाग्भट ने कहा है कि "शोधन-स्नेह अधिकमात्रा में देना चाहिये तथा शमनस्नेह मध्यमात्रा में"। सुश्रुत ने तो तपाये हुये सोने की चमक की भांति पीले लाल रङ्ग वाले भगवान् सूर्य के उदयाचल के शिखर पर विराजमान होने के समय स्नेहपान का विधान बतलाया है। (क्रमशः)

———

सच्चे मोती।

वैद्यो ! हकीमो !! तथा फार्मेसीवालो !!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन मोती वगैरा, जो दवा के काम के लिये सर्वोत्तम हैं तथा जो भारतवर्ष के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पताः—नगीनदास वीरचन्द जवेरी, ४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायचिकित्सा

शीतला (चेचक)

[ले०—श्रीयुत क० एम० के० मुखर्जी, कलकत्ता]

(अंग्रेजी से अनूदित — सम्पादक द्वारा)

अतिप्राचीनकाल से आयुर्वेद में शीतला की मान्यता है। परन्तु आयुर्वेद इससे रक्षा का उपाय विशेषरूप से 'चेचक के टीके' को नहीं बताता। छोटी शीतला और बड़ी शीतला दोनों ही की सुन्दर चिकित्सा आयुर्वेद-पद्धति से की जा सकती है, और सैकड़ों शीतलाग्रस्त रोगी आयुर्वेदीय चिकित्सा ही कराते हैं। पाश्चात्य देशों में तथा कुछ समय से भारतवर्ष में भी, इस बात का जोरों से प्रचार हो रहा है कि 'टीका' ही इस भयानक रोग से बचने का एक मात्र उपाय है; तथा जनता को इस पक्ष का बनाया जा रहा है।

भारतवर्ष मानव शीतलारसवेधविज्ञान को जानता था। परन्तु वर्तमानकाल में यह कर्म उपेक्षित हो गया है। इसके परिणाम बड़े भयानक होते थे, तथा शीतलारसविद्ध प्राणियों को पुनः शीतला का शिकार होता पाया गया। फिर भी, आयुर्वेदीय चिकित्सा के परिणाम आधुनिक पाश्चात्य टीका के परिणामों की अपेक्षा अधिक प्रभावोत्पादक तथा चिरस्थायी होते थे। वास्तव में, टीका का विरोध भी उतनी ही तेजी से हो रहा है, जितना कि उसकी प्रभावोत्पादकता का प्रचार। और आश्चर्य नहीं कि यदि किसी देश ने कानून बना कर टीका लगवाना अनिवार्य कर दिया तो वहां एक टीका-विरोधी संघ स्थापित हो जाय और भद्र-अवज्ञा आरम्भ करदे।

यह कहना नितान्त सत्य है कि इस रोग की भयानकता तथा उससे त्राण पाने का एक मात्र उपाय 'टीका' बताये जाने के व्यापक प्रचार से जनता जितनी सन्देह और भय से इसकी ओर आकृष्ट होती है उतनी अपने किसी दृढ़मूल विश्वास से नहीं।

सारांश यह है कि सम्पूर्ण संसार टीका को शीतला प्रतिरोध का उपाय मानने का विरोधी है। वर्तमानकाल में तो यही विचारणीय विषय है कि विज्ञानवेत्ता और चिकित्साशास्त्रवेत्ता कब इस मनःश्रान्तिकर प्रश्न का निपटारा करते हैं। जितना ही जल्दी वे इसे तय करेंगे उतना ही उन भयाकुल प्राणियों के लिये, जिनमें से अधिकतर 'अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक बार मर चुकते हैं' अच्छा होगा। परन्तु यह सत्य है कि 'टीका-प्रथा' ने जनता के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाल दिया है, और उसे हटाना कोई साधारण काम नहीं है।

देशी मानव शीतलारस विधान का परित्याग कर दिया गया है। अब देखना यह है कि आधुनिक गोशीतलारसविधान उतना ही अथवा उससे अधिक प्रभावशाली क्यों नहीं होता? यह बात भी न भुला देनी चाहिये कि आधुनिक शीतलारस भी खतरे से खाली नहीं है। संसार के कतिपय अंकशास्त्रवेत्ताओं ने यह बात स्पष्टतया प्रमाणित करदी है कि जिस व्याधि से मुक्ति दिलाने के लिये इस टीका-विधान की सृष्टि की गई है उस व्याधि से टीका कहीं अधिक घातक है। हम अपने अनुभव से भी यह बात कह सकते हैं कि विशेषतया छोटे बच्चों के मामले में टीका पूर्णतया खतरे से खाली नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु जिस टीके का इतने दिनों से प्रचार हो रहा है, उसके साथ न्याय न करके एक दम प्राणदण्ड दे देना भी ठीक नहीं है। यह असर करता हो या न करता हो, इसे खतरा-रहित अवश्य बना देना चाहिये। बड़े-बड़े नगरों में शीतला के व्यापक प्रसार से जनित जनभीति के समाचार प्रायः सुनने में आया करते हैं। सम्बन्धित राज्याधिकारी अथवा म्युनिसिपल बोर्ड अपने योग्य नियुक्त प्रतिनिधियों द्वारा निःशुल्क अथवा अल्पव्यय में शीतला की रोक थाम के लिये टीके का नियमित प्रचार करते हैं। ऐसे टीकाकेन्द्रों अथवा प्रतिनिधियों से अधिक लाभ इस लिये नहीं होता क्योंकि उनके कर्म का ढंग असावधानतापूर्ण तथा असुरक्षित होता है। यह अत्यन्त गम्भीर विचार का विषय है कि मृत्युभयग्रस्त जनसमुदाय भी इस प्रकार के उपहार का स्वागत नहीं करता। स्वभावतः प्रथम टीका में तो उचित सावधानी बरती जाती है और उससे बचने का भी अधिक प्रयत्न नहीं किया जाता। परन्तु इसकी पुनरावृत्तियों से लोग घबराते हैं। उनकी ऐसी प्रवृत्ति का एक कारण यह भी है कि टीके की अमोघता की कोई अवधि भी नहीं है। निःशुल्क टीका लगाने से भी टीके की कार्यशक्ति में सन्देह होने लगता है, जो श्रद्धानाश का दूसरा कारण है।

अतः इस आपत्तिजनक टीके के वास्तविक परिणामों की परीक्षा करने के लिये इन बुराइयों, दुरुपयोगों एवं विचारों का त्याग एवं परिवर्तन तथा योग्य अधिकारियों की देख-रेख में टीके की व्यवस्था करना आवश्यक है। अन्यथा यदि जनसमाज अनिश्चित उपयोगिता के विदेशी द्रव्यों के अपने शरीर में प्रविष्ट किये जाने का विरोध करता है, तो यह उसके आरोग्यज्ञान के अभाव का चिन्ह नहीं है। जनता से प्रतिवर्ष अनन्तकाल के लिये अपने शरीरों को गुदवाते रहने के लिये कहने की बजाय यह अच्छा हो कि उसके विश्वास-आकर्षण के लिये टीके के प्रभाव की अक्षुण्णता का समय निर्धारित कर दिया जाय। इस सम्बन्ध में टीके के प्रभावों और विधानों के योग्यतर अनुसन्धानों की अधिक आवश्यकता है।

भारतवर्ष में आयुर्वेद अपने प्रतीकारात्मक तथा प्रशमात्मक साधनों से, जो अत्यन्त विचार पूर्वक निर्धारित किये गये हैं, सम्पन्न होकर विराजमान है। स्वस्थवृत्त एवं सदाचार के सात्त्विक आदर्शों पर आधारित इसकी ऋतुचर्या और दिनचर्या अजेय दुर्ग हैं। शीतलाविष के प्रतीकार के लिये अनेक प्रभावकारी योगों की सलाह दी जा सकती है। इनमें से एक तो सर्वविदित है। कंटकारी मूल का क्वाथ प्रत्येक ऋतु में निर्भयतया दिया जा सकता है। जनता अन्य भी कई प्रकार की चीजें बरतती है। उनमें से कुछ तो बेढंगी मालूम पड़ सकती हैं। परन्तु जनता उन्हें पीढ़ियों से अपनाये हुये हैं; अतः उनमें कुछ सत्य अवश्य होगा। अपने ही अंगूठों का छीलन पानी के साथ बड़ी श्रद्धा से पिया जाता है। खटमल केले के अन्दर रखकर खाया जाता है। इन चीजों के बहिष्कार से पूर्व इनका वैज्ञानिक अनुसन्धान होना आवश्यक है। आयुर्वेद में जैव चिकित्सा का भण्डार भरा पूरा है तथा प्राण्यङ्गों की भी चिकित्सा में सहायता ली गई है।

भारतवर्ष में एक सर्वसामान्य रिवाज प्रति दिन प्रातःकाल पानी के साथ मसूर की दाल के कुछ दाने और दो तीन नीम की पत्तियां खाने का है। ये सभी इलाज बड़े सस्ते, आसान और अहानिकर हैं। इस बात का पता लगाना चाहिए कि इस सम्बन्ध में मसूर की दाल क्या कार्य करती है? अनभिज्ञ पाठकों की जानकारी के लिये यह बता देना आवश्यक है कि आयुर्वेद में शीलता (Pox) का नाम 'मसूरिका' है, क्योंकि इसके दाने विस्तार और रूप-रंग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसूर की दाल के अनुरूप होते हैं। नीम आयुर्वेद के अनुसार शीतला चिकित्सा का प्रधान अंग है, यह सर्वविदित है। नीम की वायु, नीम की गन्ध, नीम का स्पर्श, नीम की प्रत्येक वस्तु प्रतीकार और प्रशम के गुण रखती है। वास्तव में, मानव जाति की इस कुरूपतापादक व्याधि की चिकित्सा में नीम सर्वप्रधान है। इस की प्रभावोत्पादकता का निदर्शन आसानी से किया जा सकता है। नीम पित्त को शान्त करता है, और शरद् ऋतु में शरीर में संचित विकृत पित्त ही शीतला का प्रधान कारण है। अतः शीतला की ऋतु में पटोलपत्र, निम्ब वेतसाग्र आदि तिक्त पदार्थों को भोजन के साथ मिलाने का विधान है। म्युनिसिपल बोर्डों तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्डों को चाहिये कि वे अपनी सीमा में सार्वजनिक मार्गों तथा गलियों के उभयपार्श्व में नीम के वृक्ष लगवा दें। नीम की स्वास्थवर्द्धक वायु से देश के संपूर्ण वायुमण्डल में विषप्रतिषेधक शक्ति उत्पन्न हो जायगी हमारे नगरपिता इस साधारण से प्रस्ताव पर क्यों ध्यान देने लगे ? परन्तु वर्तमान काल में सार्वजनिक संस्थाओं में वैद्यों का भी प्रतिनिधित्व है, निःसंदेह वह प्रतिनिधित्व साम्प्रदायिक आधार पर नहीं है। क्या ये आयुर्वेदज्ञ सार्वजनिक स्वास्थ के ठेकेदार के रूप में अपनी मांगें पेश नहीं कर सकते ? और क्या वे आयुर्वेद के पक्ष में ऐसे उपयोगी सुझाव उपस्थित नहीं कर सकते, जो भविष्य में देश के स्वास्थ्य और सुख सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं के हल का आधार बन सकें।

इस व्याधि को 'कुरूपतापादक' कहते समय हमारे ध्यानपथ में उन गंभीर रोगियों के विकृत चित्र थे, जिन की चिकित्सा करने का अवसर हमें मिला था। सफल चिकित्सा हो जाने के पश्चात् भी शीतला के उपहार स्वरूप जो भौंड़ा चेहरा मिलता है वह काफी मनःखेदकारक होता है। यदि इसकी विभिन्न अवस्थाओं में उचित सावधानी बरती जाय तो शरीर और मुखमण्डल की सुन्दरता को नष्ट करने वाले शीतला के दाग आसानी से दूर किये जा सकते हैं। रोपण और त्वक्सवर्णता विधान आयुर्वेद की विशेषतायें हैं। अन्य लाभों के अतिरिक्त महापिण्डतैल के मर्दन से उपयुक्त लाभ भी होता है। मुखमण्डल के धब्बों को मिटाने के लिये तथा सुन्दरतावृद्धि के लिये शाल्मलीकण्टक-चूर्ण और श्वेतशङ्खचूर्ण अत्युत्तम प्रमाणित हुये हैं। मुखमण्डल को सुन्दर बनाने के लिये उसे नित्यप्रति हरे नारियल के पानी से धोना चाहिये।

नक्कालों से सदैव सावधान रहें

संसार में सर्वप्रथम आयुर्वेदिक-इन्जैक्शनों का आविष्कार करने वाली

५२ वर्ष पुरानी भारत की एकमात्र रसायनशाला

जी. ए. मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी (रजि०) झांसी (यू. पी.)

(स्थापित सन् १८९३ ई०)

द्वारा निर्मित विशुद्ध और प्रामाणिक—मिश्रा-आयुर्वेदिक-इन्जैक्शन

ही प्रयोग कर लाभ उठावें। सूचीपत्र, नियमादि मुफ्त मंगावें।

मैनेजर—जी. ए. मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी, झांसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदराष्ट्रपति-यात्रा ।

(केरल—द्राविड़—कर्णाटक में)

(जुलाई के अंक से आगे)

दोपहर से वैद्यों की सभा का आयोजन किया गया था । वैद्य लोग बड़ी दूर दूर से आकर एकत्र हुए थे । कुछेक ने तार पत्रादि भेज कर अपनी अनिवार्य अनुपस्थिति के लिये क्षमा मांगी थी । सभापति जी ने अंग्रेजी में भाषण दिया, जिसका अनुवाद वैद्य परमेश्वरम् पिल्ले ने किया । सभापति जी को अनेक संदेह दूर करने पड़े और अनेक प्रश्नों का उत्तर देना पड़ा । त्रिवेन्द्रम् में राजकीय आयुर्वेद कांग्रेस के संगठन के लिये एक कमेटी बनाई गई । एक आजीवन सदस्य और कई अन्य सदस्य बने । क्योंकि सभा बहुत देर तक होती रही, अतः सभापति जी अपने साथियों के साथ बिना भोजन किये ही कोट्टायम के लिये चल दिये, जिससे वहां के कार्य के लिए समय पर पहुँच सकें । कोट्टायम् त्रिवेन्द्रम् से लगभग सौ मील है । आयुर्वेदसञ्चालक महोदय त्रिवेन्द्रम् में प्रत्येक कार्य और सभा में उपस्थित रहे । परन्तु सभापति जी की बाहर की यात्रा में उनके साथ जाने में उन्होंने अस्वास्थ्य के कारण असमर्थता प्रकट की । उन्होंने यह भी बताया कि सभापति जी के आगमन के समय कोई प्रदर्शन क्यो नहीं किया गया था तथा श्रीमान् महाराजा साहब और राजमाता एवं महारानी श्रीमती सेतु पार्वतीबाई के साथ मुलाकात का प्रबन्ध क्यों नहीं किया गया था । राज्योत्तराधिकारी की मृत्यु के कारण राज्य में सर्वत्र शोक मनाया जा रहा था, ऐसी अवस्था में कोई भी प्रदर्शन या मुलाकात असंगत ही रहती । अतः डा० रविवर्मा के विचार में ऐसी बात आई कि जिससे सभापति जी के आगमन का उद्देश्य और अभिप्राय सफल हो जाय और उनके आगमन की पुनरावृत्ति पर वे हार्दिक क्षमा याचना कर लें । कोट्टायम् आठ प्रसिद्ध मूस परिवारों में से एक परिवार का स्थान है । ये परिवार पीढ़ियों से आयुर्वेद के प्रतिष्ठित वैद्य चले आ रहे हैं । मूस-परिवार के भवन में ही स्वागत का प्रबन्ध किया गया था । परन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि आदेश देने के बाद भी कोई वैद्यसभा न हो सकी । कुछ नवयुवक स्थानीय वैद्यों से सम्पर्क स्थापित करने के पश्चात् दल दूसरे दिन प्रातः ओलेशा के लिए रवाना हो गया । ओलेशा में भी एक मूस-परिवार रहता है । एक बार पहले, जब श्रीयुत मूस आयुर्वेदसंचालक थे, सभापति जी उनके संपर्क में आये थे । उन्होंने सभापति जी का हार्दिक स्वागत किया और उनके महान् कार्य के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए आश्रयदाता सदस्य बन गये । उनके साथी कुछ अन्य वैद्य भी आयु० कांग्रेस के सदस्य बन गये । तत्पश्चात् दल कोट्टायम् आया, जिसे पहले निराशा हो चुकी थी । यहां स्थानीय और अन्यस्थानीय एकत्रित वैद्यों की सभा में दिये गये सभापति जी के भाषण का श्रीयुत परमेश्वरम् पिल्ले ने अनुवाद किया । यहां भी कुछ सदस्य बनाये गये । ता० २६ क्विलोन के कार्यक्रम के लिए निश्चित हुई । त्रिवेन्द्रम् यहीं होकर इसीलिए गये थे कि यहां के प्रबन्धकर्ताओं को दूसरे दिन तैयार रहने के लिए कहते चलें । २६ ता० को कमध्यान्ह के समय सूचना मिली कि विश्वविद्यालय में दीवान के सुझाव के अनुसार सभापति जी के भाषण के लिए जो सभा अगले दिन होने वाली थी वह अनिवार्य कारणों से नहीं हो सकेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति जी इसके लिए ३, ४ दिन तक नहीं ठहर सकते थे। अतः उन्होंने डेरा उखाड़ना ही उचित समझा। चलते समय वे आयुर्वेद के संचालक महोदय से भी मिले, जिन्होंने बड़े प्रेम से उन्हें विदा किया। सभापति जी श्री परमेश्वरम् पिल्ले के साथ क्विलोन पहुँचे। श्री परमेश्वरम् पिल्ले ने सभापति जी के दुभाषिये का काम किया तथा सभापति जी की यात्रा को पूर्णतया सफल बनाने के लिए बड़ा उद्योग किया। क्विलोन में वैद्य लोग दूर दूर से आकर एकत्र हुए थे। नागरिकों की संख्या भी अच्छी थी। सभापति जी को दो अभिनन्दन-पत्र दिये गये। श्रीयुत पिल्ले ने मलायलम् में सभापति जी का संदेश सभा को सुनाया। एक वैद्य आश्रयदाता सदस्य भी बने। सभा की समाप्ति पर एक चायस-पीति भी हुई। तत्पश्चात् वैद्य लोग 'यात्रि-बंगले' पर सभापति जी से मिले तथा उनके साथ संगठनविषय पर वार्तालाप किया। प्रतिष्ठित नागरिक तथा म्युनिसिपल चेयरमेन श्री पिल्ले ने सभापति जी के आगमन को सफल बनाने का उत्तरदायित्व ले रखा था। इसी अवसर पर ऐलोपैथिक डाक्टरों की एक संस्था 'आल त्रावणकोर मेडिकल सर्विस सोसाइटी' ने सभापति जी के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए तथा आर्त्त मानवजाति की अधिक गौरवपूर्ण सेवा करने के हेतु दीर्घायुष्यप्राप्ति की शुभकामना प्रकट करने के लिए' एक छपा हुआ कार्ड सभापतिजी को भेंट किया। दूसरे दिन प्रातःकाल सभापति जी त्रिचनापल्ली के लिए गाड़ी में सवार हो गये। श्रीयुत पिल्ले तथा 'मलायला-राज्यम्' के संपादक (जो त्रावणकोर राज्यपरिषद् के सदस्य भी हैं) ने सभापति जी के सुखसौविध्य का निरन्तर पूर्व ध्यान रखा। सभापति जी ने विश्वविद्यालय में आयुर्वेद को स्थान दिलाने सम्बन्धी अपने प्रस्ताव के सम्बन्ध में संपादक महोदय से वार्तालाप किया। सम्पादक महोदय ने इस विषय को अपने लोकप्रिय पत्र में, जिसको सरकार बहुत महत्व देती है, उठाने का वचन दिया। इस सम्बन्ध में पत्र को एक लेख देने का वचन भी सभापति जी ने दे दिया। उन्होंने सम्पादक महोदय को एक प्रेस-वक्तव्य भी दिया। राज्य में यात्रा-काल में सभापति जी के सुखसौविध्य का सारा प्रबन्ध सरकार ने किया था। (क्रमशः)

महेशानन्द एण्ड सन्स, शिलाजीत-विशेषज्ञ नन्दप्रयाग—गढ़वाल (यू० पी०)

प्रिय महोदय, हमारा कार्यालय अपने उत्कृष्ट शिलाजीत के लिए समस्त भारतवर्ष में पिछले ५० वर्षों से सुविख्यात है। यह वही कार्यालय है जिसमें सन् १८९४ ई० से निरन्तर शुद्ध शिलाजीत आयुर्वेदिक पद्धति से तैयार किया जाता है। यही कारण है कि अनेक विक्रेताओं के होते हुए भी हमारे शिलाजीत की शुद्धता व श्रेष्ठता का लोहा सारा देश मानता है और प्रमाणस्वरूप हजारों वैद्यों, डाक्टरों, संस्थाओं व मान्य सज्जनों के प्रशंसापत्र हमारे यहां सुरक्षित रक्खे हुए हैं।

अपने कार्यालय के स्वर्णजयन्ती के सुअवसर पर हमने उत्तम शिलाजीत का मूल्य घटाकर २०) सेर कर दिया है। इस सुविधा से अनेक वैद्य व औषधालय अनुपम लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक बार परीक्षार्थ मंगाकर इस दिव्य महौषधि के प्रचार करने की कृपा करें।

विशेष विवरण जानने के लिये सूचीपत्र मंगाइये। कृपाकांक्षी—गोविन्दप्रसाद नौटियाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन ★

स्थायी समिति और कार्यकारिणी समिति का संयुक्त अधिवेशन

स्थान—महामण्डलकार्यालय (३६, ग्रे स्ट्रीट, हाटखोला — पो०, कलकत्ता)
समय—ता० ३०-६-४५, ३॥ बजे से।

महासम्मेलनसभापति कविराज एम० के० मुखर्जी के अतिरिक्त, जो कि सभापति के आसन पर विराजमान थे, निम्नलिखित सदस्यमहानुभाव उपस्थित थे—श्रीयुत वैद्य गुलाबदत्त शर्मा (रामगढ़), वैद्य रामप्रसन्न मिश्र (कलकत्ता) तथा कलकत्ता के कविराज श्री शैलेन्द्रचन्द्र चौधरी, रमणीरंजन भट्टाचार्य, सत्यकिङ्करसेन, रवीन्द्रदेव भट्टाचार्य, किशोरीमोहनदास, विजयकाली भट्टाचार्य, जुगलकिशोर सेन, प्रेमानन्ददास गुप्त, लोचनानन्द ठाकुर, प्रभाकर चटर्जी, मनोरञ्जन वेदान्ततीर्थ, राजेन्द्रनाथ सां० ती०, यादवेश्वर भट्टाचार्य तथा सत्कारी राय।

निम्नलिखित अनुपस्थित सदस्यों की पत्रद्वारा प्राप्त सम्मतियां पढ़ कर सुनाई गईं—श्रीयुत बंशीधर शर्मा (अजमेर), एल० आर० मलेकर (बम्बई), दलपतराम दवे (अहमदाबाद), एस० ए० कल्याणी, डी० के० भारद्वाज (बंगलौर), नटराजशास्त्री (त्रिचनापल्ली), हरिदत्त शास्त्री (लाहौर), ब्रह्मदत्त शर्मा (भुसावल), प्र० मन्त्री, सिन्ध प्रा० आ० महा० तथा बालकृष्ण शास्त्री (कानपुर)।

निम्नलिखित शोकप्रस्ताव पास हुआ—"यह सभा देशभक्तराज शुद्धायुर्वेदपक्षपाती स्व० श्री सुभाषचन्द्र वसु की मृत्यु को अपूरणीय क्षति समझती है तथा उस अमर आत्मा की शान्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करती है।" निश्चय हुआ कि इस प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि शोकसन्तप्त वसुपरिवार के पास भेजदी जाय।

निम्नलिखित सम्बद्धसंस्थाओं तथा सदस्यताओं की स्वीकृति हुई:—सम्बद्धसंस्थायें—केरल आयुर्वेदिक कारपोरेशन लि०, इर्नाकुलम्; आन्ध्रराष्ट्र आरोग्यप्रचारक संघ, टिनाली, गन्टूर। प्रान्तीय-मन्डल—आयुर्वेदिक डाक्टर्स एसोसियेशन (लङ्का); महाराष्ट्र प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल; महाविदर्भ-प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल। संरक्षकसदस्य—हकीम नारायणदास वैद्य, हैदराबाद (दक्षिण), वैद्य रामेश्वरराव हैदराबाद (दक्षिण)। आश्रयदाता सदस्य—वी० एस० पंड्या, तन्जौर; वैद्य एस० ए० कल्याणी, बंगलौर; वैद्य टी० एल० कान्ताराव, पेडापलम्; वैद्य लालाशंकर, सिकन्दराबाद; वैद्य शान्तिप्रसाद जैन, देहली; वैद्य अम्बालाल जोशी, जोधपुर। आजीवनसदस्य—वैद्य गुलराज शर्मा, नागपुर; वैद्य मणिशंकर लक्ष्मीशंकर, नलिया (कच्छ); डा० वियेश्वर शर्मा, एल्लोर; वैद्य सूर्यकान्त शर्मा, खाटू (राज०); क० लक्ष्मीनारायण मिश्र, भट्यािना (मेरठ); वैद्य पुरुषोत्तमदेव, करांची; डा० के० एडमन्ड पेरारा, मिगाहठेन्ना (लंका); वैद्य महेशदत्तशर्मा, कालका तथा बहुत से मान्य सदस्य।

स्थायीसमिति के दो रिक्त स्थानों के लिये श्रीयुत के० एस० आर० प्रसाद राव, खन्डावल्ली (पू० गोदावरी), तथा श्रीयुत पं० नारायण जी वैद्यशास्त्री, बीकानेरशहर, निर्वाचित हुये। (सदस्यों द्वारा उच्चतर सदस्यता स्वीकार कर लेने से ये स्थान रिक्त हुये थे)।

विद्यापीठ — कार्यकारिणी के जिन सदस्यों ने इस वर्ष अपना सदस्यता — शुल्क नहीं भेजा था उनके स्थानों पर तथा असाधारण सदस्यों के स्थानों पर जो स्वतः ही विद्यापीठ कार्यकारिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सदस्य हैं, निम्नलिखित नये सदस्यों का चुनाव हुआ—वैद्य चक्रपाणि शास्त्री, मथुरा; वैद्य शिवशर्मा, मेरठ; वैद्य चन्द्रशेखरानन्द, देहली; क० अनन्त त्रिपाठी शर्मा, पार्लाकीमेदी; वैद्य गङ्गाधर नीलकण्ठ ओलदे, ग्वालियर; वैद्य पी० एच० देशपाण्डे, पूना; वैद्य एन० माधव मेनन, मद्रास; वैद्य रामधन शर्मा, आगरा; एस० नारायण आयंगर, मथुरा; वैद्य दुर्गादत्त शास्त्री, बनारस; शान्तादेवी वैद्या, लखनऊ; वैद्य जगदीशप्रसाद शर्मा, देहली।

तदनन्तर निम्नलिखित कार्यालयीय प्रस्ताव स्वीकृत हुयेः—

१—बंगलौर के वैद्य श्री डी० के० भारद्वाज को अ० भा० आयुर्वेद कांग्रेस के सहायकमन्त्रिपद पर निर्वाचित किया जाय।

२—प्रान्तीय मन्त्रियों की नियुक्ति के लिये निम्नलिखित व्यवस्था की जायः—
(अ) वैद्य प्रतापकुमार पोंपटभाई कों बम्बई प्रान्त का मन्त्री नियुक्त किया जाय।
(ब) सभापति जी को अधिकार दिया जाय कि वे उन प्रान्तों में, जहां संगठित प्रान्तीय मण्डल नहीं हैं, योग्य प्रान्तीय मन्त्री नियुक्त करलें।

३—प्रधानमन्त्री को अधिकार दिया जाय कि वे सभापति जी के परामर्श से चालू आर्थिक वर्ष के लिये एक योग्य आडिटर (आय-व्यय-निरीक्षक) की नियुक्ति करलें।

४—आफिस-असिस्टेंट श्री अरुणांशुविमल मुखर्जी की तत्परतापूर्ण सेवाओं को, जो उन्होंने किसी प्रकार का अवकाश लिये बिना, एक वर्ष से अधिक तक की हैं, ध्यान में रखते हुये उनकी एक मास के सवेतन अवकाश (Privelege league) की प्रार्थना, जिस तारीख से वे लेना चाहें, स्वीकार की जाय।

५—अ० भा० आयुर्वेदकांग्रेस के प्रान्तों का विभाजन भाषा के आधार पर होने के कारण तथा बरार प्रान्त के छोटे होने से सङ्गठन में असुविधा होने के कारण, मराठीभाषी नागपुर डिवीजन बरार प्रान्त में मिला कर महाविदर्भ प्रान्त नाम रख दिया गया है; और 'महाविदर्भप्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल' नाम से ही बरारप्रान्तीय शाखा की स्थापना होकर उसकी स्वीकृति हो गई है।

६—धारासभाओं आदि में विश्वविद्यालयीय क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में बने नियमों के आधार पर, नई नियमावली के अनुसार, अ० भा० आयुर्वेद कांग्रेस की प्रबन्धसमिति में विद्यापीठस्नातकों का प्रतिनिधित्व विद्यापीठ के रजिस्टर्ड स्नातकों में से होगा तथा इस प्रकार के रजिस्ट्रेशन का शुल्क २) निश्चित किया गया है। ऐसे निर्वाचित सदस्यों कों महासम्मेलन का सदस्य बनना पड़ेगा।

७—मतदाता — सूची और नई नियमावली का मूल्य १) और ।।) रखना स्वीकृत हुआ।

तब प्रधानमन्त्री ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया जो सहर्ष स्वीकृत किया गयाः—

"इस वर्ष अब तक हमने सब दिशाओं में समुचित प्रगति की है। सभापति जी इस वर्ष की अपनी दूसरी लम्बी यात्रा से वापस आगये हैं। उनकी यात्राओं तथा प्रयत्नों के परिणाम महासम्मेलन के लिये सदा ही शुभ फलदायक रहे हैं। केरल, उड़ीसा तथा लङ्का में भी अब महासम्मेलन की शाखायें स्थापित हो गई हैं। स्थापित प्रान्तीय मण्डलों तथा सम्बद्ध संस्थाओं के द्वारा संगठन को दृढ़ बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। हमारे संसार में चारों ओर जीवन और उत्साह के चिन्ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिगोचर हो रहे हैं। स्वामी हरिशरणानन्द जी का उत्तर आगया है। उनका कहना है कि स्व० शंकरदाजी पदे स्मारक कोष के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत होने के पश्चात् उस समितिका, जो नियुक्त की गई थी, कोई अधिवेशन नहीं हुआ और न उसने रुपया हीं एकत्र किया। लखनऊ अधिवेशन की स्वागतसमिति से २५०) प्राप्त हो गये हैं। इस अदायगी के लिये हमारे उप सभापति श्रीयुत पं० शिवराम जी द्विवेदी एम० एल० ए० विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। इसके लिये उन्होंने सभापति जी को लखनऊ आने के लिये निमन्त्रित किया था। उन्होंने यह विश्वास दिलाया है कि शेष ६१) देने का प्रबन्ध भी वे शीघ्र ही कर देंगे। कविराज प्रतापसिंह जी ने पोस्टल कैश सर्टिफिकेट महामण्डल के नाम कराना स्वीकार कर लिया है। निधिसमिति के मन्त्री कविराज हरिरंजन मजुमदार एम० ए० को सभापति जी ने यह अधिकार दे दिया है कि वे इस मामले को अपने हाथ में ले लें, तथा इसी प्रकार के अन्य मामलों को भी जिनका सम्बन्ध ऐसे परिचित या अपरिचित व्यक्तियों से है जो महासम्मेलन के धन अथवा संपत्ति को अपने अधिकार में किये हुये हैं। मजुमदार जी के कथनानुसार, कविराज प्रतापसिंह जीं ने कैशसर्टिफिकेट डाकविभाग को दे दिये हैं। विलम्ब का कारण डाकविभाग का आलस्य तथा कविराज प्रतापसिंह जी का देहली से बनारस चला जाना है। हम आशा करते हैं कि यह मामला शीघ्र ही तय हो जायगा, तथा दूसरे महानुभाव भीं, जिनका सम्बन्ध अन्य कैश-सर्टिफिकेटों से है, कटुता बचाने के लिये, आवश्यक कार्यवाही करेंगे। इस वर्ष विद्यापीठ की आठ नौ हजार रुपये की बचत को जमा करने का भी आदेश जारी किया जा चुका है और उस पर अमल हो रहा है। हमारे प्रधान संपादकमहोदय, आयुर्वेद महासम्मेलनपत्रिका के लिये, जो कागज-नियन्त्रण आज्ञाओं के कारण पूरा कागज नहीं पारही, न्यूसप्रिंट का कोटा बढ़ाने के लिये निरन्तर उद्योगशील रहे हैं। इन कठिन परिस्थितिओं के समय भी हम अपने कार्यों को यथाशक्ति अल्पव्ययसाध्य बना रहे हैं। किसी ही मद में स्वीकृत व्यय से अधिक व्यय होने की सम्भावना है। आनुमानिक आयव्यय-पत्र बनाते समय दो मदों पर समुचित विचार नहीं किया गया था। फिर भी विधान के मुद्रण तथा योजनासमिति के व्यय के सम्बन्ध में हम सीमा का उल्लंघन न होने देंगे। विभिन्न मदों के लिए स्वीकृत धनों में सामंजस्य लाया जा सकता है। यदि इस ढंग से भी काम न चलेगा तो आवश्यक मदों के लिये अतिरिक्त स्वीकृति प्रदान करनी होगी।"

मुसाब्रल के वैद्य ब्रह्मदत्त शर्मा का प्रस्ताव संशोधित रूप में निम्नप्रकार से स्वीकृत हुआः—"निकट भविष्य में अखिल भारत में केन्द्रीय एवं प्रान्तीय असेम्बलियों के चुनाव होने वाले हैं। उनमें भाग लेने के लिये प्रत्येक प्रान्तीय आयुर्वेदमण्डल को अभी से प्रयत्न करना चाहिये, तथा प्रभावशाली वैद्यों और ऐसे आयुर्वेदाभिमानी सज्जनों को निर्वाचित करना चाहिये, जो केन्द्रीय या प्रान्तीय धारासभाओं में जाकर आयुर्वेदोन्नति के लिये कार्य करने का वचन दें।"

क्योंकि मतपत्र पहुँचने की अन्तिम तारीख ३० सितम्बर घोषित की गई थी, परन्तु उस दिन रविवार होने से डाकखाने की छुट्टी थी और मतपत्र नहीं दिये जा सके थे, अतः सभापति जी के आदेशानुसार अधिवेशन दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दिया गया।

स्थगित अधिवेशन १ अक्टूबर को ४ बजे से उसी स्थान पर आरम्भ हुआ। सभापति जी के अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य महानुभाव उपस्थित थे—कविराज किशोरी मोहनदास,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन वे०, जुगलकिशोरसेन, सत्यकिंकर सेन, सत्कारीराय, लोचनानंद ठाकुर, प्रेमानंददास, विजयकाली भट्टाचार्य, यादवेश्वर भट्टाचार्य, शैलेन्द्रचन्द्र चौधरी, तथा वैद्य रामप्रसन्न मिश्र।

प्रधानमन्त्री ने उस दिन आये हुये मतपत्रवाले बिजिनेस रिप्लाई एनवलप उपस्थित किये। सभापति जी ने आदेश दिया कि उनमें से केवल वे ही लिफाफे स्वीकार किये जायें जो डाकखाने की मुहर के अनुसार ३० सितम्बर के भीतर ही आगये हों।

इसके पश्चात् मतपत्रों की गणना हुई। महासम्मेलन और शिक्षासम्मेलन के लिये सर्वाधिक मत प्राप्त करने वालों की नामावली नीचे दी जा रही है:—

महासम्मेलन-सभापति	प्राप्तमत	शिक्षासम्मेलन-सभापति	प्राप्तमत
१ श्री कविराज एम. के. मुखर्जी	४३३	१ श्री पं० पुरुषोत्तमशास्त्री हिर्लेकर	२०१
२ श्री पं० शिवशर्माजी	२६१	२ ,, कवि० ज्योतिश्चन्द्र सरस्वती	१३४
३ श्री ए० लक्ष्मीपतिजी	२४५	३ ,, कविराज एम. के. मुखर्जी	१३२
४ ,, पं० रामप्रसाद जी	२०५	४ ,, पं० शिवशर्माजी	१२३
५ ,, पं० शिवरामजी द्विवेदी	१६२	५ ,, पं० रामप्रसाद जी	१०४
६ ,, पं० पुरुषोत्तम जी हिर्लेकर	६६	६ ,, पं० मनोहरलाल जी	३६
७ ,, यादवजी त्रिकमजी आचार्य	६३	७ ,, कविराज उपेन्द्रनाथदासजी	३१
८ ,, पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	३५	८ ,, वैद्य नन्दकिशोर शर्मा	२५

रात्रि के ८ बजे अधिवेशन समाप्त होगया। सम्पूर्ण कार्यवाही सर्वसम्मति से हुई।

—विजयकाली भट्टाचाय, प्रधानमन्त्री।

मलेरिया बुखार के लिये कुनीन की जगह क्या इस्तेमाल करेंगे?

— ऊंझा फार्मेसी की —

एल्स्टो पिल्स (सप्तपर्णावटी)

सप्तपर्ण (Alstonia Scholaris) कालमेघ, कुटकी आदि के घनसत्त्वों से बनाई गई है। डीमक वो० २ पृ० ३८७-८८ पर लिखा है कि सप्तपर्ण की छाल में डीटेन नाम का सत्त्व है। मलेरिया, जीर्णज्वर, शीतज्वर और विषमज्वर में यह कुनीन-सल्फ से हजारगुनी अच्छी है। ६ या १२ गोली में ज्वर दूर हो जाता है। कीमत में भी दूसरी दवाइयों से सस्ती पड़ती है। सैकड़ों वैद्यों, डाक्टरों और धर्मार्थ औषधालयों ने आजमाइश करके इसे मलेरिया बुखार के लिए अक्सीर साबित किया है।

कीमत ४२ गोली ॥‌=), ५०० गोली (१० तो०) ३॥)

विवरण के लिए पैम्फिलिट मुफ्त मंगाइये।

ऊँझा फार्मेसी लिमिटेड, ऊँझा (उ० गुजरात)

हर जगह हमारे एजेन्ट या व्यापारी के यहां मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति की यात्रा (दक्षिण-महाराष्ट्र-महाविदर्भ)

(गताङ्क से आगे)

अगस्त की दो तारीख को सभापति महोदय का श्री पुरुषोत्तम जी शास्त्री और अन्य महानुभावों के साथ सिकन्दराबाद में भव्य स्वागत हुआ। स्थायी समिति के सदस्य, श्री सूर्यप्रसाद जी, जो निजाम राज्य के आयुर्वेद कालिज के प्रधान अध्यापक हैं, बहुत से अन्य वैद्यों के सहित पहले ही स्टेशन पर उपस्थित हो गये थे। ये सब लोग सभापति जी के साथ खास हैदराबाद तक गये, जहां स्टेशन पर अन्य बहुत से लोग उनके स्वागत के लिए आये हुए थे। उदासी बाबा पूर्णदास जी भी स्वयं स्टेशन पर गये थे ताकि वे अपने इस सम्मानित अतिथि को अपने साथ अपने मठ में लाकर ठहरावें। इसलिए श्री सभापति जी ने अपनी पार्टी के सहित मोटर में बैठकर उनके मठ की ओर प्रस्थान किया। उसी दिन शाम को श्री सभापति जी के व्याख्यान के लिए वैद्यों और डाक्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में सभापति जी ने यह बताते हुए कि आने वाली दुनिया में आयुर्वेद-विज्ञान एक बार फिर संसार की समस्त चिकित्सा-पद्धतियों पर विजय प्राप्त करेगा आयुर्वेद का संदेश सुनाया। वैद्यों और आयुर्वेद प्रेमी जनता ने एक मानपत्र अर्पण किया। श्री गयाप्रसाद जी इस सभा के सभापति थे। इस मानपत्र के उत्तर में भाषण देते हुए श्री सभापति जी ने वैद्यसमाज के संगठन पर जोर दिया, जिसके फल स्वरूप निजामराज्य के वैद्य समाज को संगठित करने के निमित्त एक समिति की स्थापना की गई।

दूसरे दिन सभापति जी ने महन्त महाराज श्री पूर्णदास जी के सभापतित्व में सनातनधर्म आयुर्वेद सभाभवन में एक सभा में भाषण दिया। इस मनोहर भाषण में सभापति जी ने आयुर्वेद की विशेषताओं और कार्यों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् वे राज्य के एक नव-निर्वाचित हिन्दू मन्त्री दीवान बहादुर एस० अरावामुड्ड आयंगर के सम्मान में दिये जाने वाले एक भोज में नियत समय से कुछ पीछे पहुँचे। भोज में राज्य के उच्च कर्मचारी ही आमन्त्रित किये गये थे। वे सभापति जी के आगमन की प्रतीक्षा करते रहे। सभापति जी के आगमन पर महन्त पूर्णदास जी ने, जो उनके साथ थे, पार्टी के सदस्यों से उनका परिचय कराया। आयुर्वेद के सिद्धान्तों पर बातचीत करके इस अवसर का सदुपयोग किया गया, जिसको सरकारी अस्पताल के सबसे बड़े डाक्टर ने भी बड़े ध्यान से सुना और आयुर्वेद विषय पर सभापति जी के साथ विचारविमर्श करने के लिए उन्होंने एक समय नियत किया। शाम को वैद्य लोगों की एक स्वतन्त्र सभा हुई जिसमें सभापति जी ने नवनिर्मित समिति को और कुछ अन्य लोगों को सफल संगठन करने के उपाय बताये।

४ तारीख को सभापति जी को निजामराज्य के कालिज और डिस्पेन्सरी (औषधालय) का निरीक्षण करने के लिए आमन्त्रित किया गया। यह संस्था अभी प्रारम्भिक अवस्था में है और अच्छी उन्नति कर रही है, राज्य ने आयुर्वेद को उत्साहित करना अभी प्रारम्भ किया है। आयुर्वेद सलाहकार बोर्ड के मन्त्री वैद्य शंकरप्रसाद जी सभापति जी के निरीक्षण के समय तक उनके साथ रहे उन्होंने सभापति जी को प्रत्येक बात समझायी। विद्यार्थियों को एक छोटा सा कर्तव्य पालन का संदेश दिया गया। अतिथि-पुस्तक में अपनी सम्मति लिखते हुए सभापति जी ने राज्य की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से संस्था को पूर्ण उन्नत बनाने के लिए प्रत्येक आर्थिक सहायता देने पर जोर दिया। उपस्थित वैद्य समाज को सभापति जी ने संगठन द्वारा आयुर्वेदोचित अधिकार प्राप्त करने का उपदेश दिया। शाम का प्रोग्राम दक्षिण-आयुर्वेदाश्रम-फार्मेसी में था। वहां स्वागत समिति के मन्त्री वैद्य दिवाकर जी थे जो वहां के कार्यवाहक प्रबन्धकर्ता भी हैं। फार्मेसी में सभापति के ठहरने के लिए सब उचित प्रबंध किया हुआ था, किन्तु महन्त बाबा पूर्णदास जी ने जो राज्य के अन्दर आयुर्वेद की उन्नति के लिए राज्य से प्रत्येक प्रकार की सहायता प्राप्त करने का प्रबन्ध कर रहे हैं, सभापति जी को अपने साथ ले जाने के लिये बाध्य किया ताकि वे उनकी उपस्थिति का आयुर्वेद की उन्नति के लिए उपयोग कर सकें। रसायनशाला का निरीक्षण करने के पश्चात् सब वैद्य और कुछ गण्यमान्य सज्जन रसायनशाला के विशाल भवन में एकत्र हुए। अपने प्रारम्भिक जीवन के थोड़े से वर्षों में ही यह संस्था दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर बढ़ रही है। प्रबन्ध सब प्रकार से ठीक था। संस्था के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए प्रधान प्रबन्धक ने एक विवरण में कहा कि अन्य कई बातों के साथ साथ इस संस्था का ध्येय आयुर्वेद की उन्नति करना है जिस के लिये सम्पूर्ण आय का आधा भाग व्यय किया जायगा। इस धन से एक चिकित्सालय की स्थापना और अन्य प्रकार की जन सेवायें करने का मन्तव्य है और इस दिशा में कुछ कार्य आरम्भ भी हो चुका है जो दक्षिण-आयुर्वेद-सेवासंघ की संरक्षकता में हो रहा है। तत्पश्चात् दक्षिण-आयुर्वेदिक-वैद्यक-स्नातक संघ ने पूर्ण आयुर्वेदिक शिक्षा का, (जिस दिशा में वह कार्य कर रहा है) प्रतिनिधित्व किया। सभापति ने संयुक्त उत्तर देते हुए तीनों संस्थाओं की उनके पवित्र उद्देश्य के लिये प्रशंसा करते हुए सब की सफलता की कामना प्रकट की। तब सेवा-संघ ने उपस्थित सज्जनों को एक विशाल प्रीतिभोज दिया। शाम को आयुर्वेद राष्ट्रपति श्री मुखर्जी के सभापतित्व में वैद्य पुरातत्न शास्त्री दिलहर ने 'मनुष्य जीवन और आयुर्वेद' विषय पर एक लम्बा और प्रभावशाली व्याख्यान दिया। श्रोतागण एक बड़ी संख्या में उपस्थित हुए थे। शास्त्री जी का भाषण धाराप्रवाही और हास्ययुक्त था और इस कारण श्रोताओं को विषय की शुष्कता का अनुभव नहीं हुआ। सभापति जी ने कार्यवाही समाप्त करते हुए शास्त्री जी के कथन का समर्थन किया और उन लोगों की निन्दा की जो आयुर्वेद का अध्ययन करने के लिये संस्कृत पढ़ने की नितान्त आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। उस दिन शाम को दोनों व्याख्याताओं ने अति सुन्दर भाषण दिये। इसी दिन शुद्ध आयुर्वेद प्रणाली पर संस्थापित अभया-आयुर्वेद-अनुसंधान नाम की संस्था के सञ्चालक डाक्टर मालकोटे और उनके भाई सभापति जी से मिलने आये। यह संस्था पहिले मैसूर में आयुर्वेद-कांग्रेस की शाखा निखिल-कर्णाटक-आयुर्वेद मण्डल के प्रधान वैद्य पं० पार्थनारायण जी की देख रेख में काम करती थी। ५ तारीख को साढ़े दस बजे प्रातः माननीय मन्त्री आयंगर जी के साथ बातचीत का प्रबन्ध किया गया। महन्त बाबा जी सभापति जी के साथ थे और बाद को शास्त्री जी तथा आयुर्वेद सलाहकार बोर्ड के मन्त्री भी आकर सम्मिलित हो गये। दोनों के बीच खुली बातचीत के दर्मियान सभापति जी ने उन आवश्यक और प्रधान बातों पर बल दिया जिनको आयुर्वेद की सर्वतोमुखी और शुद्ध शिक्षा की उन्नति के लिये ध्यान में रखना आवश्यक है। सहृदय मन्त्री महोदय सभापति जी से पूर्ण सहमत हुये। पश्चात् सभापति जी ने मन्त्री महोदय के पास विभिन्न रियासतों ने आयुर्वेद के लिये जो २ प्रयत्न किये हैं उनका स्वयं अपने अनुभव पर आधारित एक विवरण पत्र तथा आयुर्वेद सम्बन्धी अन्य महत्वपूर्ण नोट लिखकर भेज दीं। शाम को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति के सदस्य श्री सूर्यप्रसाद जी ने सभापति जी को अन्य सब वैद्यों के साथ सिकन्दराबाद में अपने घर चायपान के लिये आमन्त्रित किया । यह एक हार्दिक स्वागत था । चायपान के पश्चात् एक सार्वजनिक सभा में सभापति जी ने श्रोताओं को अपने प्रभावशाली भाषण द्वारा आयुर्वेद का संदेश सुनाया । महन्त बाबा जी सभापति थे । राष्ट्रपति जी को एक मानपत्र दिया गया ।

इसके पश्चात् सब आयुर्वेदिक संस्थायें सभापति का अभिनन्दन करने में एक दूसरे से होड़ करने लगीं ।

(क्रमशः)

नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-परीक्षाणामवशिष्टं फलम् ।

[जूनमासीयपत्रिका २८ पृष्ठे जुलाईमासीयपत्रिका च १८ पृष्ठेऽवलोकनीया]

भिषक्परीक्षाफलम् ।

क्रमाङ्काः	नामानि	प० फलम्
१०५०	श्रीसत्यनारायण	उत्तीर्णः प्रथमखण्डे
१०६१	डी.एस.वरदाचारी	१,३,५,६,७,८,९
१०८९	लक्ष्मण शास्त्री	१,२,३,४,५,६,९
१०९०	वेदान्त स्वामी	१,२,४,५,६,८,९
	गण्टूर केन्द्रे	
३४९	जी०वी०एल० नारायण	३,४,५,६,७,८,९
३५०	शेषचार्युलु	१,३,६,७,८,९,
३५१	हनुमतराव	१,२,४,५,६,७,९
३५३	जागर्थ मूडीनारायण स्वामी	उत्तीर्णः तृ० श्रेण्याम्
३५४	मल्लिकार्जुन शाकिन	,, ,,
३५५	भावनारायणमूर्ति	उ० द्वि०
३५८	दिवीसीतारामांज-नेयाचार्य	१,२,४,५,६,७,८,९,
३५९	दिवी रामाचार्य	उ० तृ०
३६०	दिगलामद्रिराजू	उ० तृ०
३६१	गोपालाचार्युलु	उ० द्वि०
३६२	वेंकट नरसिंहाचार्य	२,३,४,६,७,८,९
३६३	अलेकादासोजी	१,२,३,४,६,९
३६४	लक्ष्मणाचार्युलु	उ० तृ०
	बेजवाड़ा केन्द्रे	
७०६	नन्दुल मृत्युंजय	प्रथमखण्डे उत्तीर्णः

क्रमाङ्काः	नामानि	परीक्षाफलम्
७०८	जगनन्दन रामा स्वामी	प्र०खं०ड०
७०९	पूरे रामाकोटी	उ० तृ०
७१०	राघवाचार्य	उ० तृ०
७११	राममूर्ति	उ० द्वि०
७१२	गोपालराव	उ० तृ०
७१३	सीताराम	उ० तृ०
७१४	शेषाचार्युलु	१,२,६,७,८,९,
७१५	रमनजनायालु	उ० तृ०
७१७	श्रीनिवासाचार्युलु	उ० तृ०
७१८	शेषाचलपति	उ० द्वि०
७१९	सत्यनारायण	उ० द्वि०
७२०	रामचन्द्र कृष्णमूर्ति	उ० तृ०
७२१	रामसुभैया	१,२,३,४,५,६,९,
७२२	लक्ष्मी नरसिंहमूर्ति	उ० द्वि०
	राजमहेन्द्री केन्द्रे	
८४९	सत्यनारायणमूर्ति	उ० प्रथमखंडे
८५०	वेंकट रामावतारम्	,, ,,
८५४	श्री बोम्बकण्ठ	उ० तृ०
८५५	सत्यनारायणशर्मा	उ० द्वि०
८५६	सुसर्ल विश्वनाथम्	उ० तृ०
८५७	कुनकेरी विष्णुमूर्ति	उ० तृ०
८५८	वेल्लवेंकटराव	१,२,४,५,६,७,८,९
८५९	लंकवेंकट सत्याराव	१,२,३,६,८,९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८६० अच्युतरामय्य उत्तीर्णः प्रथमखण्डे
८६१ सूर्यनारायण " "
८६२ उदयभास्करराव उ० तृ०
८६३ वीरभद्रराव उ० तृ०
८६४ वेंकट रमण उ० तृ०
८६५ वड्डी अप्पाराव १,४,७,८,६,
८६६ शिष्टा वेंकटराम उ० प्र०
८६७ नरसिंह मूर्ति उ० द्वि०
८६८ किशनावलभद्रराव उ० प्र० खण्डे
८६६ श्रीराम दुगला १,२,३,५,६,८,
८७० नायडू नरसिंहराव उ० प्र० खण्डे
८७१ सूर्य नारायण मूर्ति उ० तृ०
८७२ कृष्णमूर्ति १,२,३,५,६,७,६
१०६३ शिवराममूर्ति उत्तीर्णः प्रथमखण्डे

एल्लोर केन्द्रे

१०६३ रामचन्द्रराव उ० द्वि०
१०६४ सूर्यलिंगम् उत्तीर्णः प्रथमखण्डे
१०६५ गंगैयादास १,३,४,६,७,८,६
१०६६ श्री रामचन्द्र १,२,३,४,६,७,८,६
१०६७ रंगाराव १,३,४,६,७,८,६,
१०६८ सूर्यनारायण राजू उ० तृ०

नैल्लौर केन्द्रे

१०७० अनन्त मोदितमराम उ० द्वि०
१०७१ बैन गोपालराव उ० तृ०

तिरुपति केन्द्रे

१०७२ कलापति चंगय्या १,२,३,५,६,७,८
१०७३ पी० चेनचय्या उ० तृ०

तुंगभद्रा केन्द्रे

१०७४ गोंकारमैया १,२,३,४,६,७,८,६,
१०७५ श्री यम साम्बसेति उ० द्वि०
१०७७ स्वामी रामाचार्य उ० द्वि०
१०७८ भुजंग अड़पके उ० प्र०
१०७६ के०वी० रमणय्या उ० प्र०
१०८० ए० महावल सेट्टी उ० प्र०
१०८१ केहरिणय्य सेट्टी उ० प्र० खण्डे
१०८२ नरसिंह करपुर " "
१०८३ मोनय्य सेट्टी " "
१०८४ एम०एस० कनिवप्पगौड़ " "
१०८५ वितल्लसेत्ती " "

वि० द्र०—येषां परीक्षार्थिनां नामानि सक्रमाङ्कानि न प्रकाशितानि ते सर्वेऽनुत्तीर्णाः।

- विद्यापीठ—मन्त्री।

नूतन समाचार।

शिक्षासंमेलन के सभापति निर्वाचित।

मुझे यह समाचार देते हुए परम हर्ष होता है कि अन्य चार उम्मेदवारों के अपने अपने नाम वापस ले लेने के कारण विधानानुसार वैद्यभूषण पंडित पुरुषोत्तम सखाराम शास्त्री हिलेंकर, अमरावती (बरार) अ० भा० आयुर्वेदशिक्षासंमेलन के सभापति निर्वाचित हुये हैं।

—एम० के मुखर्जी, सभापति अ० भा० आयुर्वेदमहामण्डल।

बंगाल प्रान्तीय आयुर्वेदमहामण्डल।

ता० ६-१०-४५ को वार्षिक अधिवेशन हुआ। प्रान्त का भविष्य अन्धकारमय होते हुये भी वर्ष में अच्छी प्रगति हुई। प्रान्तीय मण्डल ने आयुर्वेदीय चिकित्सा-सहायता-कार्य पर विशेष ध्यान दिया, जो अब भी जारी है। ३६६।-) की बचत अच्छा लक्षण है। आगामी वर्ष के लिये कविराज सुरेन्द्र कुमार दास सभापति तथा कविराज जुगलकिशोर सेन प्रधान मन्त्री निर्वाचित हुये।

शैलेन्द्रचन्द्र चौधरी (मु० पू० प्र० मंत्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल प्रान्तीय आयु० महामण्डल ने अ० भा० आयु० महामण्डल के प्रधानमन्त्री श्रीयुत कविराज विजयकाली भट्टाचार्य को महासंमेलन के आजीवन सदस्य कविराज धीरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य के साथ दक्षिण भारत में आयुर्वेद की दशा का अध्ययन करने के लिये भेजा है। एक मास बाद प्रधानमंत्री जी बंगाल लौट आवेंगे और कविराज धीरेन्द्रनाथ जी आयुर्वेद कांग्रेस के आगामी अधिवेशन तक कार्यक्रम जारी रखने के लिये वहीं रहेंगे।

—जुगलकिशोर सेन, प्रधान-मन्त्री।

निवेदन

इस समय जबकि देशमें केन्द्रीय और प्रान्तीय धारासभाओं के आम चुनाव होने वाले हैं, भारतवर्ष के करोड़ों नर नारियों के ८०-९० प्रतिशत भाग की आयुर्वेदीय चिकित्सा द्वारा दुःख दर्द से रक्षा का प्रश्न अत्यन्त अनुपेक्षणीय है। अब समय है, जबकि निर्वाचन में सहायता चाहने वाले उम्मेदवारों तथा दलों की चिकित्सा-सुविधा सम्बन्धी सामान्य नीति की परिभाषा कर देनी चाहिये। वैद्य समाज और साधारण जनसमाज में मतदाताओं को इस महत्वपूर्ण प्रश्न को ध्यान में रखना है। युक्त प्रान्त, उड़ीसा, बंगाल आदि प्रान्तों में कुछ वैद्यों के कांग्रेस टिकिट पर चुनाव लड़ने का संभावना है। उन प्रतिष्ठित वैद्यों से, जो जनसेवा के लिये प्रसिद्ध हो चुके हैं, मेरा नम्र निवेदन है कि चाहे वे किसी राजनैतिक सिद्धान्त के हों, उन्हें चुनाव में खड़ा होना चाहिये। उम्मेदवारों को अपना मत देते समय मतदाताओं को विशेषतया इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि उन उम्मेदवारों या दलों की चिकित्सा सम्बन्धी नीति क्या है। भारतवर्ष का राजनैतिक भाग्य आगामी चुनावों से बंधा है। उसकी युद्धोत्तर-योजनाओं में हमारी रोग-प्रपीडित भाग्यहीन मातृभूमि के लिये आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली की उपयोगिता, जोकि उसके अल्पव्ययसाध्य एवं कार्यकारी होने के कारण प्रमाणित हो चुकी है, उपेक्षित नहीं होने दी जा सकती। वास्तविक स्वतंत्रता तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि वह देश की संस्कृति पर सम्यक्तया आधारित न हो तथा जब तक देश भोजन, वस्त्र और चिकित्सा में स्वतन्त्र न हो। —एम० के० मुखर्जी

आवश्यक सूचनायें।

१—अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन का वर्ष दिसम्बर में समाप्त हो रहा है। अतः सदस्यों, सम्बद्ध संस्थाओं और ग्राहकों को अपना १९४६ का शुल्क ३१ दिसम्बर १९४५ तक अवश्य भेज देना चाहिये।

२—सब प्रकार के महासम्मेलन-सदस्यों, महासम्मेलन के प्रान्तीय आयुर्वेद-मण्डलों और महासम्मेलन-सम्बद्ध-संस्थाओं को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिये:—

प्रधानमन्त्री, नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन-कार्यालय,
३९, ग्रे स्ट्रीट, हाटखोला—पो०आ०, कलकत्ता।

३—विद्यापीठसम्बद्धसंस्थाओं, विद्यापीठस्वीकृत अध्यापकों तथा विद्यापीठ-परीक्षार्थियों को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिये:—

मन्त्री, नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठ-कार्यालय, चिमनी मिल, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका—ग्राहकों और पत्रिकाके विज्ञापनदाताओं को अपना शुल्क निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिये:—

प्रधान सम्पादक, आयुर्वेदमहासम्मेलनपत्रिका-कार्यालय,
चिमनी मिल, देहली।

५—शुल्क यथास्थान भेजना चाहिये। यथास्थान शुल्क न भेजने से सम्बन्धित व्यक्तियों और संस्थाओं को विलम्ब के कारण जो हानि उठानी पड़ेगी उसके लिये उत्तरदायी उपर्युक्त कार्यालय नहीं होंगे।

६—प्रत्येक पत्र में और मनीआर्डर के कूपन में पत्रव्यवहारकर्त्ता को अपना पूरा नाम और पूरा पता सुवाच्य और स्पष्ट अक्षरों में अवश्य लिख देना चाहिये। कूपन में यह भी लिख देना चाहिये कि रुपया किस उद्देश्य से भेजा है। ऐसा न करने वाले पत्रव्यवहारकर्त्ता के काम में विलम्ब होना सम्भव है। इस विलम्ब के लिये कार्यालय उत्तरदायी न होंगे।

७—कर्णाटकमें होने वाले ३४वें अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन में उपस्थित किये जाने के लिये प्रस्ताव २० नवम्बर तक महासम्मेलन-कार्यालय में पहुँच जाने चाहिये प्रस्ताव की तीन तीन प्रतिलिपियां आना आवश्यक हैं।

प्रधानमन्त्री, अ० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन, कलकत्ता।

विद्यापीठीयाः सूचनाः।

१—१९४५ तमे वर्षे उत्तीर्णानां प्रमाणपत्राणि दिसम्बरमासपर्यन्तं प्रस्तुतानि भविष्यन्ति। उपप्रमाणपत्राणि (Provisional certificates) मुद्राद्वयात्मकं नष्टप्रमाणपत्रप्रतिलिपयश्च (Duplicate certificates) सार्द्धद्विमुद्रात्मकं शुल्कं गृहीत्वैव प्रदीयन्ते नान्यथा।

२—यैरध्यापकमहाभागैः स्वकीयः १९४५ तमवर्षीय : पत्रिका-शुल्कः सदस्यशुल्को वा न प्रेषितस्तेषां छात्राणां प्रमाणपत्राणि कार्यालयात् न प्रेषयिष्यन्ते।

३—परीक्षाफल-प्रमाणपत्र-प्रमाणपत्रप्रतिलिपिप्रभृतिविषयकपत्रव्यवहारे स्वकीय-पितृ-परीक्षा-केन्द्र-वत्सर क्रमाङ्क-गुरुनामानि कार्यालयशुल्कप्राप्तिपत्रसंख्या तिथिश्चावश्यं लेखनीयानि। पत्रव्यवहारसङ्केतश्च सम्पूर्णः सुस्पष्टश्च लेख्यः। सर्वैरेव धनप्रेषकैर्धनादेशकूपने (Money order coupon) धनप्रेषणाभिप्रायोऽपि सुवाच्याक्षरैर्लेख्यः।

४—विद्यापीठीयव्यवस्थानुकूलं स्वीकृताध्यापकानामन्तेवासिन एव परीक्षाप्रवेशाधिकारं लभन्ते नेतरेषाम्।

५—आवेदनपत्राणि नवम्बरमासारम्भादारभ्य दिसम्बरमासस्य पंचदशदिवसपर्यन्तमेव सशुल्कं समागतानि स्वीक्रियन्ते। तदनन्तरम् एकमुद्रात्मकेन विलम्बशुल्केन सह जनवरीमासस्य पंचदशतमतिथिपर्यन्तमप्यागतानि स्वीकृतानि स्युः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—चतुस्त्रिंशत्तनिखिलभारतीयायुर्वेदमहासंमेलनावसरे सम्पत्स्यमाने निखिलभारतीयायुर्वेदशिक्षासंमेलने उपस्थातुं प्रस्तावाः नवम्बरमासस्य १५ दिवसपर्यन्तं विद्यापीठ-कार्यालये प्रेषितव्याः।

७—या विद्यापीठसम्बद्धसंस्थाः १६४६ तमेवर्षेऽपि विद्यापीठसम्बद्धा भवितुमिच्छन्ति ताः पञ्चरूप्यकमितं सम्बद्धसंस्थाशुल्कं नवम्बरमास एव प्रेषयेयुः। याश्च संस्थाः विद्यापीठेन नूत्नं सम्बन्धं स्थापयितुमिच्छन्ति ताः सम्बद्धताशुल्केन सार्धं स्वपूर्णपरिचयमपि प्रेषयेयुः।

८—परीक्षावेदनपत्राणि रजिस्ट्रीद्वारा कार्यालये प्रेषणीयानि। अरजिस्ट्रीकृतानि आवेदनपत्राणि यदि कार्यालये न प्राप्स्यन्ति तदा तज्जन्यहनिरुत्तरदायी परीक्षार्थी एव स्यान्न तु कार्यालयः।

६—अस्मिन्वर्षे परीक्षावेदनपत्राणि कार्यालयात् अदत्तपूर्णडाकव्ययं प्रेषयिष्यन्ते, न तु रजिस्ट्रीद्वारा। असत्सु तेषु प्राप्तेषु त्वरितं कार्यालयः संसूचनीयः।

१०—कार्यालय-सम्बन्धी पत्रव्यवहारो व्यक्तिगतनाम्ना न कार्यः।

११—संस्कृत-हिन्दी-आङ्गलभाषा इत्येता एव तिस्रो भाषा पत्रव्यवहारे व्यवहार्याः, नेतराः।

विद्यापीठ—मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज प्रकाशित अत्युत्तम वैद्यक ग्रन्थ

१—**सचित्र रसरत्नसमुच्चय**—अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित ५)

२—**मेघविनोद**—सरल हिन्दी। आयुर्वेद का अपूर्व ग्रन्थ है, पहली बार छपा है ४)

३—**चरकसंहिता**—श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया तथा श्रीवाग्भट-शिष्याचार्यवर-जेज्जटविरचितया निरन्तरपदव्याख्यया च संवलिता। आयुर्वेदाचार्येण श्री० पं० हरिदत्तशास्त्रिणा संशोधिता। दो जिल्दों में सम्पूर्ण। मूल्य ११)

४—**भैषज्यरत्नावलिः**— श्रीगोविन्ददासप्रणीता। कविराजश्रीज्ञानेन्द्रनाथमित्रैः संस्कृता परिवर्द्धिता च। आयुर्वेदाचार्य-कविराज-श्रीनरेन्द्रनाथशास्त्रिणा विरचितया रत्नोज्ज्वलाख्यया संस्कृतटीकया समलंकृता। मूल्य ८)

५—**चक्रदत्तः**—श्रीशिवदासेन कृतया तत्त्वचन्द्रिकासमाख्यया टीकया समलंकृतः। ३॥)

६—**त्रिदोषविमर्शः**—गीर्वाणवाण्यात्मकस्त्रिदोषविषयको निबन्धश्चरकसुश्रुतान्तर्गतत्रिदोषवाक्यसंग्रहश्च। ले० पण्डितो धर्मदत्तः। मूल्य १॥)

७—**रसेन्द्रचूडामणिः**—श्रीसोमदेवविरचितः। मूल्य २)

८—**सुश्रुतसंहिता** (सचित्रा)—मूलमात्रम्। मूल्य ३)

९—**माधवनिदानम्**—मधुकोशव्याख्यया समुल्लसितम्, परिशिष्टनिदानेन च संयोजितम्। २॥

१०—**अष्टाङ्गहृदयम्** — विद्वद्वरश्रीमदरुणदत्तकृता सर्वाङ्गसुन्दराख्या टीका तथा मोद्गल्यटिप्पणी च। ६)

११—**रसहृदयतंत्रम्**—भगवद्गोविन्दपादविरचितं तथा मुग्धावबोधनीव्याख्यासहितम् २।)

१२—**रसेन्द्रसारसंग्रहः**—मूलमात्र, गुटका। १)

१३—**भावप्रकाशनिघंटु**—श्री पं० विश्वनाथजी कृत सरल हिन्दी अनुवाद। अनुवाद में कोई बात छूटने नहीं पाई। अत्यन्त विस्तृत तथा उपयोगी। ४॥)

१४—**चरकसंहिता**—श्री जयदेवविद्यालङ्कारकृत सरलहिन्दी अनुवादसहित। द्वितीयसंस्करण। सम्पूर्ण मूल्य २५)

१५—**योगरत्नाकार**—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। १५

१६—**भैषज्यरत्नावली**— श्री जयदेव विद्यालङ्कारकृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीयावृत्ति। संपूर्ण पुस्तक १८०० पृष्ठों में समाप्त है। मू० १०), दो बढ़िया जिल्दों में।

१७—**गुणों का खजाना** — स्वा० परमानन्दकृत। इसमें अनेक आजमाये हुए फकीरी नुसखे हैं। २)

१८—**शल्यतन्त्र** (सचित्र)—श्री अत्रिदेवकृत, सरलहिन्दी में। शल्य (चीरफाड़ जर्राही) विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ। ४)

१९—**ज्वरतिमिरभास्कर**—कायस्थचण्डविरचित तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४)

२०—**सचित्र रसेन्द्रसारसंग्रह**—कविराज श्री विद्याधरकृत हिन्दी अनुवाद। जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण ६०० पृष्ठ। ४)

२१—**नवनावनीतक**—१७०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ। सरलहिन्दी अनुवाद सहित। ३)

२२—**भावप्रकाश**—केवल ज्वराधिकार। श्री पं० हरिदत्त जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित १।)। इनके अतिरिक्त हमारे यहां सब प्रकार के चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ बहुत रियायत से मिलते हैं। प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता—

मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदोद्धारक श्रीयादवजी त्रिकमजी आचार्य (बम्बई) द्वारा लिखित

सिद्धयोग संग्रह

पहला संस्करण समाप्त ।

द्वितीय के आर्डर रिजर्व हो रहे हैं।

इस ग्रन्थ के विषय में हमारे पास भारत के बड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों व डाक्टरों के जो प्रशंसा-पत्र व सर्टिफिकेट आये हैं, यदि उन्हें एकत्र छापा जाय तो मूलग्रन्थ के समान ही इसका अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार हो सकता है। उपयोगिता की दृष्टि से इस ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा हुई है, उतनी आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की आज तक नहीं हुई — यदि यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। प्रथम संस्करण के छपते-छपते ही हमारे पास इतने आर्डर जमा हो गये कि १००० प्रतियां और बढ़ा कर कुल २००० प्रतियां छापनी पड़ीं और वे सब ही हाथोंहाथ छः महीने के अन्दर ही बिक गईं। जिस शीघ्रता से इस ग्रन्थ की बिक्री हुई उस अनुपात से आयुर्वेद के किसी भी प्रकाशन की नहीं हुई होगी। ६२५ आर्डर एडवांस जमा हैं श्रीयादवजी महाराज द्वारा ही परिवर्द्धित व संशोधित द्वितीय संस्करण ३-४ महीनों में छप जायेगा। यह प्रथम संस्करण से भी उपयोगी होगा। इसकी ३००० प्रतियां छपेंगी जो कि बहुत जल्दी ही समाप्त हो जायेंगी। इसका मूल्य वही २।।) डाक व्यय सहित। १) या समग्र मूल्य पेशगी भेज कर आर्डर बुक करा लेने वाले बुद्धिमानों को भी यह समय पर मिल सकेगा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन,

कलकत्ता, पटना, झांसी और नागपुर।

नोट—पुस्तक युद्धकालीन हेडआफिस पटना में ही छपी है। अतः पुस्तक मंगाने वाले सज्जनों को पटना ही पत्र लिखना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

071528

योग्य वैद्यों की आवश्यकता

१—"सचित्र आयुर्वेद" के लिए सहायक सम्पादक चाहिये, जो आयुर्वेद और पाश्चात्य चिकित्सा के पूर्ण ज्ञान के साथ लेखन-कला का भी पूर्ण पंडित हो। हिन्दू-यूनिवर्सिटी के स्नातक को विशेषता दी जायगी। वेतन—१५०)-१०)-२५०) रु०।

२—कलकत्ता बिक्री-केन्द्र के लिये ख्यातिप्राप्त चिकित्सक की आवश्यकता है। सुचिकित्सक के साथ व्यवहार-कुशल होना भी आवश्यक है। वेतन—१००)-५)-१५०) रु०। रोगियों के घर जाने की फीस लेने का भी अधिकार रहेगा। अधिक अवस्था और जयपुर के स्नातक को विशेषता दी जायगी।

३—पटना के धर्मार्थ औषधालय के लिए प्रधान चिकित्सक क आवश्यकता है। रोगी के घर देखने की फीस लेने का अधिकार रहेगा। वेतन—७५)-५)-१२५) रु०। धर्मार्थ औषधालय के अनुभवी को विशेषता दी जायगी।

४—आकोला (बरार) बिक्री-केन्द्र के लिए व्यापार-कुशल वैद्य की आवश्यकता है, जो औषध-बिक्री के काम का अनुभवी हो। वेतन—८०)-५)-१३०) रु०। महाराष्ट्र भाषा-भाषी को विशेषता दी जायगी।

नोट—प्रत्येक प्रार्थी को अपनी योग्यता को लिखित रूप में देना चाहिये। व्यक्तिगत रूप से मिलने की आवश्यकता नहीं है; न किसी की सिफारिश की आवश्यकता है।

अध्यक्ष—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन,

अस्थायी हेड आफिस, पटना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक भस्में आश्चर्यजनक

सस्ते मूल्यों पर

स्टाक समाप्त होने पर इन भावों पर फिर माल न मिल सकेगा।
अतः शीघ्रता कीजिये, अन्यथा पछताना पड़ेगा।

हमारे कार्यालय में निम्नलिखित भस्में निम्न अंकित परिमाणों में इस समय तैयार पड़ी हैं। इनको शीघ्र विक्रय करने के विचार से हमने इसे लागत मात्र प देने का निश्चय किया है।

गारण्टी; हम इस बात की पूरी गारण्टी देते हैं कि हमारी भस्में सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार केवल उपलों से तैयार की गई हैं और पूर्ण गुणकारी हैं। अन्य कई फार्मेसियों की भांति लकड़ी से अथवा पत्थर के कोयलों से तैयार नहीं की जातीं।

नाम भस्म	वर्तमान स्टाक	रियायती भाव	नाम भस्म	वर्तमान स्टाक	रियायती भाव
अभ्रक बज्रभस्म (१० पुटी)	२मन	२७) सेर	प्रवाल भस्म	१॥ मन	३८) सेर
,, ,, (३० पुटी)	२। ,,	४५) ,,	मण्डूर भस्म	२॥ ,,	२०) ,,
अभ्रक श्वेत भस्म	३ ,,	१०) ,,	स्वर्ण माक्षिक	१॥। ,,	२३) ,,
कान्त लोह भस्म	२ ,,	२५) ,,	लोह भस्म	३ ,,	१८) ,,
कपर्दिका भस्म(पीली कौडी)	३ ,,	८) ,,	शंख भस्म	३ ,,	७) ,,
गोदन्ती भस्म	५ ,,	३॥) ,,	शृंग राज भस्म	१॥ ,,	१२) ,,
त्रिवंग भस्म	३५ सेर	४२) ,,	मुक्ता शुक्ती भस्म	२ ,,	६) ,,

नोटः—(क) कोई भी भस्म उपरोक्त भावों पर आधा सेर से कम न भेजी जावेगी। कम वजन के आर्डर साधारण सूचीपत्र के भाव पर सप्लाई होंगे।

(ख) वर्तमान स्टाक के समाप्त होने पर हम उपरोक्त भावों पर बाद के आर्डरों की सप्लाई के जिम्मेवार न होंगे।

(ग) हमारे कारखाने में हर प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियां, भस्में रस, कूपीपक्व रसायनें, आसवारिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तेल, पर्पटी, सर्वथा शास्त्रविधि अनुसार बड़े भारी परिमाण में मशीनों द्वारा तैयार होती हैं। इसके अतिरिक्त वनस्पति तथा खनिज द्रव्य भी बहुत सस्ते मूल्य में भेजे जाते हैं।

• किसी भी अन्य स्थान से कोई औषधि मंगाने से पहिले हमारे भाव अवश्य देखें।

काश्मीर आयुर्वेदिक वर्क्स, नं० २, जी. टी. रोड, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार का पता— 'साधना' ढाका। टेलीफोन—१२२ ढाका।

महान् वैज्ञानिक का

आयुर्वेद को दान।

आयुर्वेद का पुनरुद्धार और देशविदेशों में प्रचार।

अब वैद्यों को स्वयं औषधियां तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। साधना औषधालय हर समय उनकी सेवा के लिए तैयार है। यहां पर शुद्ध शास्त्रीय विधि से औषधियां तैयार की जाती हैं और उचित मूल्य पर बेची जाती हैं। महायुद्ध के कारण भी औषधियों के मूल्य में वृद्धि नहीं की गई। वैद्यों को चाहिये कि वे दवाइयां बनाने के झंझट में न पड़ कर अपना समय और दिमाग रोगियों की चिकित्सा में लगावें।

साधना की सभी शाखाओं में रोगियों को चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श मुफ्त दिया जाता है।

अध्यक्ष—डा० योगेशचन्द्र घोष एम.ए.
आयुर्वेदशास्त्री, एफ०सी०एस०(लन्दन),
एम० सी० एस० (अमेरिका),
भागलपुर कालेज के केमिस्ट्री के
भूतपूर्व अध्यापक।

साधना औषधालय ढाका (बंगाल)

(शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों की प्रसिद्ध निर्माणशाला)

सारे संसार में इसकी शाखायें और एजेन्सियां हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Reg. L. N. 5082
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
0 29458

आपकी शुभाशीर्वादयुक्त शुभ कामना

के लिये

आपका प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

कलकत्ता

सन् १८८४ ई० में संस्थापित होकर सन् १९४४ ई० की समाप्ति पर ६० वर्षों की सेवाओं के बाद "हीरक जयन्ती" के स्मरणीय अवसर पर आदरणीय आयुर्वेद के कर्णधार, प्रत्येक भारतीय वैद्य, आयुर्वेद हितैषी, आयुर्वेद पत्रकार, आयुर्वेदिक औषधालय, आयुर्वेदिक पुस्तकालय, आयुर्वेदिक विद्यालय, आयुर्वेद शिक्षक, आयुर्वेद विद्यार्थी तथा विभिन्न आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से आयुर्वेद की निरन्तर सेवा के हेतु
प्रोत्साहन प्राप्ति के लिये
प्रार्थना करता है।

कृपया शुभाशीर्वाद प्रेषित कर अनुग्रहीत करें।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि० कलकत्ता

युद्धकालीन प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ—देवघर (S. P.)

शाखाएं—

(१) हाथरस (U. P.) (२) नागपुर (C P.)

सेलडिपो—

पटना (Bihar)

प्रकाशक—क० आशुतोष मजुमदार, नई देहली। मुद्रक—[illegible] प्रेस, देहली।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri